शेक्सपियर
के नाटक

- मच एडो अबाऊट नथिंग
- ऑल्स वेल देट एण्डस् वेल
- किंग हेनरी VI पार्ट I
- किंग हेनरी VI पार्ट II
- किंग हेनरी VI पार्ट III
- एण्टनी एण्ड क्लियोपाट्रा
- मेरी वाइव्स ऑफ् विण्डसर
- लव्स् लेबर्स लॉस्ट
- किंग रिचर्ड III
- किंग हेनरी VIII
- कोरियोलेनस
- टीटस एण्ड्रोनीकस
- टोइलस एण्ड क्रेसीडा





पुस्तकायन

शेक्सपियर के नाटक

कथानक लेखक
प० गंगा प्रसाद उपाध्याय
सम्पादक
स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती

अन्यत्र प्राप्ति स्थान

- डॉ० रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान
  विज्ञान परिषद् भवन
  महर्षि दयानन्द मार्ग
  इलाहाबाद २११००२
- गोविन्दराम हासानन्द
  ४४०८ नई सड़क
  दिल्ली ११०००६

मूल्य : ५०-००

प्रकाशक . पुस्तकायन (सुबोध पॉकेट बुक्स का उपक्रम) २/४२४० ए, अंसारी रोड, नई दिल्ली ११०००२ / संस्करण : १९८५
मुद्रक : अजय प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा दिल्ली ११००३२
SHAKESPEARE KE NATAK

क्रम

कथानकों के लेखक

श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी के सशक्त लेखक थे (जन्म ६ सितम्बर, १८८१—मृत्यु २९ अगस्त, १९६८)। परम्परा के अनुसार उनकी शिक्षा-दीक्षा उर्दू के माध्यम से हुई और बाद को उनकी रुचि हिन्दी लेखन की ओर अंकुरित हुई। हिन्दी व्याकरण के वे अग्रिम लेखक हैं, जिन्होंने अंग्रेजी पद्धति पर व्याकरण लिखी—इसे इण्डियन प्रेस प्रयाग ने प्रकाशित किया। सन् १९१३-१४ में उन्होंने इण्डियन प्रेस के आग्रह पर शेक्सपियर के नाटकों के कथानकों को छः भागों में लिखा। आज यह कथा-साहित्य सत्तर वर्ष पुराना हो चुका है; किन्तु इसका ऐतिहासिक मूल्य सदा रहेगा। हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यास-लेखक मुंशी प्रेमचन्द जी इलाहाबाद ट्रेनिंग कॉलेज में श्री गंगाप्रसाद जी के सहपाठी थे। दोनों पहले उर्दू में लिखते थे, बाद को हिन्दी के क्षेत्र में आये। मुंशी प्रेमचन्द जी की कहानियों के प्रारम्भिक हिन्दी अनुवाद मुंशी जी की लेखनी के नहीं हैं—कहानियाँ उनकी हैं, किन्तु भाषा अनुवादक की। बाद को मुंशी प्रेमचन्द जी ने स्वयं हिन्दी में लिखा, और यशस्वी हुए। इस दृष्टि से श्री गंगाप्रसाद जी का स्वयं का लिखा यह कथा-साहित्य (हिन्दी शेक्सपियर) मुंशी जी के हिन्दी कथा-साहित्य के पहले का है। सन् १९१८ के पश्चात् के लेखन में इस कथानक साहित्य के लेखक पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय के नाम से विख्यात हुए और उन्होंने दर्शन साहित्य की विशेष सेवा की। १९३१ के कलकत्ता अधिवेशन में 'आस्तिकवाद' पुस्तक पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उन्हें मंगलाप्रसाद-पुरस्कार भेंट करके समादृत किया।

इसमें सन्देह नहीं कि संसार की सभी भाषाओं में शेक्सपियर के

नाटकों के अनुवाद उपलब्ध है, और उसके नाटकों की आलोचना पर भी समीचीन साहित्य है। हिन्दी साहित्य के पाठकों को शेक्सपियर के सम्पूर्ण कथानकों से प्रथम परिचय उपाध्याय जी के माध्यम से हुआ। वर्त्तमान हिन्दी के प्रारम्भिक युग की यह रचना है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, विज्ञान परिषद् आदि संस्थायें इसी युग की थी। प्रयाग के इण्डियन प्रेस ने हिन्दी साहित्य की अच्छी सेवा की। यहीं से महावीरप्रसाद द्विवेदी युग की रचनाओं ने वर्त्तमान प्रौढ़ युग को अंकुरित किया। उपाध्याय जी के इन शेक्सपियरी कथानकों को उसी दृष्टिकोण से मापना चाहिए, न कि आजकल की उदात्त उन्नत शैली से।

उपाध्याय जी ने अपने प्रत्येक भाग के कथानकों के प्रारम्भ में समीक्षात्मक छः भूमिकायें दी हैं। इसका भी इतिहास की दृष्टि से अपना निराला मूल्य है, किन्तु पुरानी पड़ जाने के कारण हमने इन्हें निकाल दिया है। कई हिन्दी सेवी विद्वानों ने संस्कृत के नाटकों के हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किए, जिनका मूल्याकन संस्कृत वाङ्मय की शास्त्रीय पद्धति पर किया जाता था—पर शेक्सपियर के नाटकों को हम कालिदास और भवभूति की कसौटी पर नहीं जाँच सकते हैं। श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का यह कथानक-साहित्य फिर से सम्पादित करके भेंट किया जा रहा है।

ये कथानक उपाध्याय जी ने उस समय लिखे, जब वह गवर्नमेण्ट हाई स्कूल, बाराबंकी (अवध) में अध्यापक थे। १९१७ में वह एक वर्ष प्रतापगढ गवर्नमेण्ट स्कूल में रहे। फिर उन्होने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया, और १९१८ मे वे दयानन्द एंग्लो वैदिक हाई स्कूल प्रयाग के मुख्य अध्यापक होकर आ गये। वहाँ से सेवा-निवृत्त होकर प्रयाग नगरी को ही उन्होंने अपना साहित्यिक क्षेत्र बनाया। प्रयाग में ही २९ अगस्त, १९६८ में ८७ वर्ष की आयु मे उनकी मृत्यु हो गयी।

नयी दिल्ली —स्वामी सत्यप्रकाश-सरस्वती
२०-११-८४

शेक्सपियर और उसके नाटक

वारविकशायर (Warwickshire) के स्थान स्ट्रेटफार्ड आंन एवन (Stratford on Avon) मे शेक्सपियर का जन्म १५६४ ई० में हुआ। वस्ती के गिरजे में नवजात शिशु के बपतिस्मा की तारीख २६ अप्रैल, १५६४ दी हुई है। इस तारीख से दो-चार दिन पहले ही शेक्सपियर पैदा हुआ होगा, क्योंकि पुरानी परम्परा थी कि नवजात शिशु का जल्दी से जल्दी बपतिस्मा-संस्कार करा दिया जाय। इसी आधार पर २३ अप्रैल,१५६४ शेक्सपियर की जन्मतिथि स्वीकार कर ली गयी है। बच्चे की माँ का नाम मेरी (Mary) था जो रोबर्ट आर्डन (Robert Arden) की पुत्री थी। पिता का नाम जौन शेक्सपियर(John Shakespeare) था। कवि की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा 'स्ट्रेटफोर्ड ग्रामर स्कूल' मे हुई। २८ नवम्बर, १५८२ को शेक्सपियर का विवाह स्ट्रेटफोर्ड की महिला एन हैथवे (Anne Hathway) के साथ हुआ। उसकी प्रथम सन्तान पुत्री सूसन(Susanna) थी, जिसका बपतिस्मा २६ मई, १५८३ को हुआ। फिर २ फरवरी, १५८५ को दो यमल पुत्र हेमनट (Hamnet) और जूडिय हुए। १५६२ तक का वृत्तान्त अज्ञात है। इस वर्ष उसका लन्दन रहना निश्चित है। शायद वह १५८७ मे लन्दन आया हो। १५६२ में उसका नाटक खेलने मे रुचि लेना प्रमाणित हो चुका है। थोड़ी-सी ख्याति भी उसे मिल गयी थी। पर उसका कोई नाटक छपा नहीं था। १५६३ में उसकी कविता (Venus and Adonis) ने लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया। यह रचना अर्ल आव् साउथम्पटन को समर्पित की गयी थी। उसके जीवन काल में ही इस काव्य के ८ संस्करण छपे थे। १५६४ में उसकी एक और लम्बी कविता ल्यूक्रीस (Lucrece) छपी। यह भी साउथम्पटन को समर्पित की गयी। इस प्रकार कवि को

राजघराने के इस रईस का संरक्षण प्राप्त हो गया था, यह स्पष्ट है। अब उसके नाटक भी खेले जाने लगे—ग्रेइन में २८ दिसम्बर, १५९४ को 'भूल-भुलैयाँ' नाटक खेला गया। फिर लॉर्ड चेम्बरलेन की कम्पनी द्वारा इसके अन्य खेल केम्प और बारबेग (Kemp and Burbage) के साथ खेले गये। १५९८ ई० तक शेक्सपियर दुःखान्त और सुखान्त नाटकों के लिए विख्यात हो गया, और समालोचकों ने इसे अंग्रेज़ी साहित्य का मूर्धन्य नाटककार मान लिया।

शेक्सपियर की कम्पनी बरबेग (Burbage) के नाटक-गृह 'थियेटर' में खेल खेला करती थी। १५९९ में बरबेग ने नाटक-भवन गिरा दिया, और 'ग्लोब' (Globe) नाम से दूसरा नाटक-भवन टेम्स नदी के दक्षिण तट पर बनाया। शेक्सपियर की कम्पनी ने इस नाटक-गृह के व्यवसाय में हिस्से खरीद लिये। १६०३ में राजा जेम्स ने शेक्सपियर कम्पनी को अपने प्रभुत्व में ले लिया। 'The King's Majesty's Servants' नाम से सरकारी संस्था बनी। राजदरबार में इस कम्पनी को अभिनय दिखाने का सुयोग प्राप्त हुआ। शेक्सपियर भी इसमें साझीदार था। शेक्सपियर को काफ़ी धन मिलने लगा, और उसने इससे लन्दन में और स्ट्रेटफोर्ड में जायदाद बनाना आरम्भ किया। बाद को शेक्सपियर ने थियेटर का काम छोड़ दिया, और स्ट्रेटफोर्ड में दिन व्यतीत करने लगा। मार्च १६१६ में उसने अपनी सम्पत्ति की वसीयत लिखी, और सूसन को उसका उत्तराधिकारी बनाया। २३ अप्रैल, १६१६ को इस महाकवि और मूर्धन्य नाटककार की स्ट्रेटफोर्ड में मृत्यु हो गयी।

शेक्सपियर के नाटकों का इतिहास

शेक्सपियर का नाटक 'भूलभुलैयाँ' (Comedy of Errors) सबसे पहले २८ दिसम्बर, १५९४ ई० को ग्रे की इन (Gray's Inn) में खेला गया। सन् १५९८ तक शेक्सपियर अपने दुःखान्त (Tragedy) और सुखान्त (Comedy) दोनों प्रकार के नाटकों के लिए प्रसिद्ध हो गया था। उसके सुखान्त नाटकों में वेरोना नगर के दो भद्रपुरुष (Two Gentlemen of Verona), भूलभुलैयाँ (Comedy of Errors), निष्फल प्रेम (Love

Labour Lost), ग्रीष्म रात का स्वप्न (A Midsummer Night's Dream) और वेनिस नगर का व्यापारी (The Merchant of Venice) थे। दुःखान्त नाटकों में द्वितीय रिचार्ड, तृतीय रिचार्ड, चतुर्थ हेनरी, राजा जॉन, टीटस एण्ड्रोनिकस (Titus Andronicus) और रोमियो और जूलियट (Romeo and Juliet) थे। छः वर्ष पहले नाटक के क्षेत्र में जो व्यक्ति नौसिखिया माना जाता था, आज अपने नाटकों के लिए विख्यात हो गया। १५९७-९८ तक शेक्सपियर अपनी नाट्यकला में चरमसीमा को पहुँच गया था। उसके नाटक अब तक खेले ही जाते थे—छपे नहीं थे। केवल एक नाटक टीटस एण्ड्रोनिकस १५९४ में छपा था। इसके मुखपृष्ठ पर शेक्सपियर का नाम भी नहीं दिया गया था। १५९७-९८ में उसके नाटकों को पढ़ने के लिए उत्सुकता बढ़ी। विलियम जेगर्ड नामक एक प्रकाशक को धन कमाने की लालच लगी, और उसने शेक्सपियर के नाटकों को इस प्रलोभन से छापना प्रारम्भ किया। शेक्सपियर के नाटकों के खेले जाने के लिए नये थियेटर बने। नाटकों में शेक्सपियर स्वयं भी भाग लेता था, पर धीरे-धीरे उसने स्वयं खेलना बन्द कर दिया। उसके अन्तिम दिवस स्ट्रेट-फोर्ड-अपॉन-एवन (Stratford-upon-Avon) नामक छोटी सी नगरी में बीते। शेक्सपियर की स्मृति में यहाँ आज भी उसके प्रशंसक प्रतिदिन आते रहते हैं। साहित्यिकों का यह तीर्थस्थान बन गया है। मृत्यु के पूर्व शेक्स-पियर ने वसीयत लिखकर अपनी सम्पत्ति का अधिकांश सूसन (Susanna) नामक अपनी लड़की को दे दिया, जिसका विवाह शेक्सपियर के चिकित्सक से हुआ था। शेक्सपियर की पत्नी अशिक्षित थी, और सम्पत्ति की देखभाल करने की योग्यता भी उसमें न थी। सन्तोष के लिए शेक्सपियर ने अपनी पत्नी को सूसन का अभिभावक और संरक्षक बना दिया। २३ अप्रैल, १६१६ को शेक्सपियर की मृत्यु हो गयी। निकट के कब्रिस्तान में उसका शव दफनाया गया। उसकी समाधि को देखने के लिए सहस्रों यात्री प्रतिवर्ष आते हैं।

नाटक-क्षेत्र में अवतरण

शेक्सपियर के नाटकों के लिखे और खेले जाने का प्रामाणिक विवरण नहीं मिलता—यह आश्चर्य की बात है। छठा हेनरी शायद १६२३ में छपा।

फ्रान्स और इंग्लैण्ड के बीच युद्ध हुआ करते थे। इन युद्धों के विवरणों के आधार पर लिखे गये नाटक कई और भी कम्पनियाँ खेलती थीं। कहा जाता है कि उन नाटकों में और शेक्सपियर के नाटकों में साम्य था। इसी आधार पर बहुत से आलोचकों ने कई नाटकों का मूल रचयिता शेक्सपियर को नहीं माना है। १५६४ के बाद शेक्सपियर मुख्यतया चैम्बरलेन (Chamberlain) कम्पनी के लिए काम करने लगा था। उसकी अपनी भी एक नाटकशाला थी—द थियेटर (The Theatre)। पहले वह दूसरों का सहयोग लेता भी रहा हो, पर अब वह स्वयं अपने नाटक लिखता, उन्हें परिमार्जित करता और अपनी कम्पनी में खेलता था।

ऐतिहासिक नाटक

उसके ऐतिहासिक नाटकों में तृतीय रिचार्ड (Richard III) १५६४ का है, और फिर उसने अपने नाटक चतुर्थ, पंचम और षष्ठ हेनरी (Henry IV, V, VI) लिखे जो बड़े लोकप्रिय हुए। राजा जॉन (King John) १५६४ में लिखा गया, पर यह लोकप्रिय नहीं हुआ था, १६२३ में जाकर यह छपा।

कुछ नाटकों का रचनाकाल यह समझा जा सकता है—द्वितीय रिचार्ड, १५६५; तृतीय रिचार्ड,१५६४; चतुर्थ हेनरी—प्रथम भाग, १५६६-६७; चतुर्थ हेनरी-द्वितीय भाग १५६७-६८; पंचम हेनरी, १५६६। इन नाटकों में चतुर्थ हेनरी का प्रथम भाग बहुत ही सफल और रोचक माना गया है। पंचम हेनरी बिल्कुल नई शैली का नाटक है। यह नाटक पंचम हेनरी पर ही मुख्यतया केन्द्रित है—इस रचना में आदर्श राजा के रूप में पंचम हेनरी को मानकर चित्रण करने का प्रयास नाटककार ने किया है। शेक्सपियर का यह अन्तिम ऐतिहासिक नाटक है—पंचम हेनरी लिखकर शेक्सपियर ने सम्भवतया स्वीकार कर लिया था कि इससे उत्तम नाटक लिखा ही नहीं जा सकता।

दुःखान्त नाटक

शेक्सपियर के दुःखान्त नाटकों (Tragedy) में प्रारम्भिक नाटक रोमियो और जूलियट (१५६६) है, जो सदा ही उसका अत्यन्त सफल दुःखान्त नाटक माना जायगा। ब्रूक (Brooke) नामक कवि के एक लम्बे

खण्डकाव्य (१५९२ मे लिखित) के आधार पर यह लिखा गया था। शेक्सपियर के जीवन काल में ही इस नाटक के चार संस्करण प्रकाशित हो गये थे—इससे इस नाटक की लोकप्रियता स्पष्ट है।

शेक्सपियर के प्रारम्भिक सुखान्त नाटक

शेक्सपियर जहाँ अपने दुःखान्त नाटकों के लिए विख्यात है, वहाँ वह अपनी कॉमेडी (Comedy) या सुखान्त नाटकों के लिए भी।

ग्रे की इन (Gray's Inn) में १५९४ ई० में प्रथम बार शेक्सपियर का भूलभुलैयाँ (Comedy of Errors) नाटक खेला गया। शेक्सपियर का यह प्रयास बहुत सफल रहा और जनता मनोरंजन के लिए ऐसा ही नाटक चाहती थी। इससे सर्वथा भिन्न शेक्सपियर का निष्फल प्रेम (Love's Labour Lost) नामक नाटक है, जो १५९४ की रचना है। *यह जनता के लिए लिखा भी नहीं गया था—केवल मित्र-मण्डली के विनोद* और हास के लिए इसकी रचना हुई थी। फिर भी यह अपने व्यंग्यों और गीतों के लिए बहुत ही लोकप्रिय रहा।

वैरोना नगर के दो भद्रपुरुष (Two Gentlemen of Verona) नामक नाटक अधिक सफल न हो पाया। सुखान्त नाटकों में यह शेक्सपियर का सबसे छोटा नाटक है। शायद ही यह कभी खेला गया हो। १७६२ में गैरिक (Garrick) ने इसमें संशोधन किए और तब यह खेलने योग्य बना।

सुखान्त प्रेम-नाटकों (*Romantic Comedy*) में ग्रीष्म रात का स्वप्न (A Midsummer Night's Dream) बहुत ही सफल रहा। यह १५९५ की रचना है। राजघराने के पारिवारिक विवाह के अवसर के लिए यह मूलतः लिखा गया था। मानवीय प्रवृत्तियों का सच्चा चित्रण होने के कारण यह नाटक सदा यशस्वी रहेगा।

हास्य-प्रिय सुखान्त नाटक (*Joyous Comedies*)

शेक्सपियर के परिहासपूर्ण नाटकों में दो अधिक लोकप्रिय रहे—'The Taming of the Shrew', १५९८ और विण्डसर की हंसमुख स्त्रियाँ (The Merry Wives of Windsor), १५९९; पर ये रचनायें न तो नाटक की दृष्टि से, न काव्य की दृष्टि से शेक्सपियर की गरिमा के अनुकूल रहीं।

हास-परिहास की दृष्टि से शेक्सपियर के सफल नाटक बात का बतंगड़

(Much Ado about Nothing, १५९८-९९), जैसी तुम्हारी इच्छा (As You Like It, १६००) और बारहवीं रात (Twelfth Night, १६०१-०२) माने जा सकते है। ये तीनों रचनायें उत्कृष्ट हैं। कला, परिहास और प्रेम वार्तायें तो है ही, साथ ही साथ मानव मनोवृत्तियों पर इनमें तीखे व्यंग्य भी है। समस्त चित्रणों की पृष्ठभूमि वास्तविक है। अंग्रेजी साहित्य में इन रचनाओं से पूर्व ऐसी कोई नाटिकायें लिखी ही नही गयी थी।

प्रौढ़ दुःखान्त नाटक

इंगलैण्ड के जीवन में परिवर्तन आ रहा था। ऐतिहासिक राष्ट्रीय नाटकों का युग समाप्त हो रहा था। नये युग की माँग के अनुसार शेक्सपियर का पुनः ध्यान दुःखान्त नाटकों की ओर गया। 'बारहवीं रात' लिखने के बाद शेक्सपियर ने पुनः दुःखान्त नाटको की ओर ध्यान देना आरम्भ किया। ऐतिहासिक और दुःखान्त नाटकों का मिला-जुला जूलियस सीजर (१५९९) नाटक समझा जा सकता है।

सन् १६००-०१ में शेक्सपियर ने हैमलेट (Hamlet) लिखा। कीड (Kyd) की एक पुरानी नाटिका १५८८-८९ की थी जो अब अप्राप्त है—उसी को आधार बनाकर शेक्सपियर ने यह अभूतपूर्व नाटक रच डाला। ऐतिहासिक नाटकों से यह सर्वथा भिन्न, अत्यन्त सशक्त दुःखान्त नाटक है।

आथेलो (Othello) नाटक सर्वप्रथम १ नवम्बर, १६०४ को कोर्ट (राजदरबार) में खेला गया। यह हैमलेट से सर्वथा भिन्न नाटक था। हैमलेट में राजाओं और राजकुमारों के दुःखान्त का वर्णन है, पर आथेलो में गृहस्थी की दुःखान्त कहानी है। मूल कहानी को बाद मे कुछ परिवर्तित भी कर दिया, जब मार्गरेट ह्यूज (Margaret Hughes) इस नाटक में डेस्डिमोना (Desdemona) बनी। मार्गरेट नाटक मे भाग लेने वाली प्रथम महिला थी।

१६०६ ई० मे क्रिसमस के अगले दिन राजा लियर (King Lear) नामक नाटक कोर्ट में खेला गया। यह आथेलो से भी भिन्न था—पुरानी मूल कहानी पर यह आश्रित था, और एक प्रकार से इसमें वास्तविकता कम और कल्पना अधिक थी। शेक्सपियर का यह नाटक कभी सफल नही रहा।

मैकविथ (Macbeth) की रचना १६०६ ई० की है। यह जल्दी में लिखा गया शेक्सपियर का सबसे छोटा नाटक है। राजा जेम्स के आग्रह पर लिखा गया था। राजा का साला क्रिश्चियन (डेन्मार्क का) इंग्लैण्ड आया, तो उसके आतिथ्य में नाटक दिखाने की बात उठी। शेक्सपियर से नया नाटक तैयार करने को कहा गया। इस प्रसंग में मैकविथ लिखा गया। इस खेल का ही कुछ परिवर्तित रूप फोलिओ (Folio) में छपा हुआ है, जो आज प्रामाणिक माना जाता है।

शेक्सपियर के दुःखान्त नाटकों की समाप्ति तीन नाटकों से होती है— (१) अथेन्स का टाइमन(Timon of Athens)(रचनाकाल १६०५-०६); (२) एण्टोनी और क्लिओपाट्रा (Antony and Cleopatra)(रचनाकाल १६०७-०८); (३)कोरिओलेनस(Coriolanus)(रचनाकाल १६०८-०६)। सर थॉमस नॉर्थ (Sir Thomas North) ने प्लूटार्क (Plutorch) की पुस्तक लाइव्ज (Lives) का अनुवाद किया था। उसी पुस्तक से शेक्सपियर ने इन तीनों नाटकों के कथानक लिये। टाइमन तो वस्तुतः अस्त-व्यस्त ही लिखा गया था—किसी और नाटककार ने बाद को खेल के लिए इसे ठीक से सजाया। फिर भी प्रत्येक दृश्य में शेक्सपियर की कला व्यक्त होती है। एण्टोनी और क्लिओपाट्रा सर थॉमस नॉर्थ के गद्य का केवल नाटकीकरण है। इसके कुछ दृश्य इजीप्ट के हैं—फिर रोम के, फिर रोम से स्थानान्तरित होकर ग्रीस में, और फिर इजीप्ट में—इस प्रकार की हेरा-फेरी से यह नाटक अभिनय के योग्य नहीं रह गया है। पर वस्तुतः इस नाटक की विशेषता इसकी कवितायें हैं इस दृष्टि से यह अद्वितीय रचना है।

कॉरियोलेनस (Coriolanus) की रचना १६०८-०६ की है। यह सफल और समर्थ नाटक है। इस नाटक को लिखकर, ऐसा लगता है कि शेक्सपियर ने दुःखान्त नाटकों से विदाई ली हो।

तीखे सुखान्त नाटक

शेक्सपियर के तीन नाटक तीखे सुखान्त (Bitter Comedies) कहे जाते हैं—(१) वही भला, जिसका अन्त भला (All's Well That Ends Well)—१६०२-०३ का; (२) ट्राइलस और क्रैसीडा (Troilus and Cressida)—१६०२; (३) जैसे को तैसा (Measure for Measure)

—१६०४। ये नाटक शेक्सपियर ने अपनी रुचि से नहीं लिखे थे। नाटक कम्पनी के आग्रह पर या उनकी जबरदस्ती से बे-रुचि के लिखे गये थे। यही इन सुखान्त नाटकों का तीखापन या उनकी कटुता है। जैसे को तैसा नाटक तो एक प्रकार से दुःखान्त ही है। ऐसा होना स्वाभाविक था, क्योंकि उस वर्ष (१६०४) शेक्सपियर ने आथेलो(Othello) नामक दुःखान्त नाटक की रचना भी की थी। दुःखान्तता का उस पर रंग चढ़ा हुआ था। ट्रॉइलस और क्रैसीडा (Troilus and Cressida) को दुःखान्त या सुखान्त कहना अर्थात् वस्तुतः वह किस वर्ग का है, यह निश्चय करना ही कठिन है।

वही भला है, जिसका अन्त भला नाटक एक पुराने सुखान्त नाटक 'Love Labours Wonne' की छाया में लिखा गया है। यह साधारण कोटि का नाटक है।

दुःखान्त-सुखान्त नाटक (Tragi-Comedies)

शेक्सपियर के कई सुन्दर नाटकों में दुःखान्त और सुखान्त दोनों की मिश्रित भावनायें हैं।

(१) पेरिक्लीज, टाइर का राजकुमार (Pericles, Prince of Tyre, १६०८ ई०)—नाटक कम्पनी को एक पुराना नाटक मिल गया था, उसे ही शेक्सपियर ने सुधार दिया। यह उसका मौलिक नाटक नहीं है।

(२) सिंबेलिन (Cymbeline)—रचनाकाल १६०९-१०। ब्लैक फ्रायरों (Blackfriars) के लिए इस नाटक की रचना की गई थी। (सेण्ट डोमिनिक सम्प्रदाय के साधु विशेष को उनके श्याम शिरोवेश के कारण ब्लैक फायर कहते हैं)। यह नाटक गानों और ध्वनियों की गडगड़ाहट के लिए प्रसिद्ध है। सन् १६३४ में जब राजदरबार में दिखाया गया तो इसे राजा चार्ल्स ने बहुत पसन्द किया था।

(३) शरद ऋतु की कहानी (The Winter's Tale) १६११ की रचना है। सिंबेलिन से कहीं अच्छी है। इसमें विस्मयकारक दृश्यों की प्रधानता है। इसकी लोकप्रियता इस बात से स्पष्ट है कि नाटकशालाओं पर प्रतिबन्ध लगाये जाने से पूर्व यह कम-से-कम ६ बार राजदरबार (कोर्ट) में दिखाई गई थी।

(४) तूफान (The Tempest)—यह सन् १६११ की रचना है। इसे

पूर्णतया शेक्सपियर की मौलिक रचना कहा जा सकता है। यह वस्तुतः शेक्सपियर की अन्तिम निजी रचना है, जिसके कथानक के लिए वह किसी का ऋणी नहीं है। यह रचना सिंवेलिन और शरद ऋतु की कहानी, दोनों से काफ़ी भिन्न है। यह नाटक राजदरबार में दो बार दिखाया गया, राजकुमारी ऐलीज़ाबेथ के विवाह पर (१६१३ ई०) आगन्तुक अतिथियों का इस खेल से मनोरंजन किया गया।

अन्तिम काल में सहकारिता में लिखे गये नाटक (Collaborations)

दो नाटक ऐसे हैं, जिन्हे शेक्सपियर ने फ्लेचर (Fletcher) के सहयोग से लिखा। किंग्स कम्पनी (King's Company) में फ्लेचर प्रमुख नाटक लेखक था। इन नाटको मे पहला तो अष्टम हेनरी (Henry VIII) है। १६१३ में यह 'ग्लोब' नाटकशाला में बड़ी धूमधाम और शान से खेला गया। (इससे पूर्व जब यह दिखाया जाने वाला था कि अकस्मात् नाटक-भवन में आग लग गई)। कहा जाता है कि इस नाटक का आधा भाग फ्लेचर का लिखा हुआ था।

सन् १६३४ में एक नाटक दो भद्र राजपुरुष (The Two Noble Kinsman) शीर्षक शेक्सपियर के नाम से छपा, पर फ्लेचर ने दावा किया और इसे अपनी रचना बताया। शेक्सपियर के नाटकों के संग्रह 'फोलिओ' में इसे सम्मिलित नहीं किया गया है।

शेक्सपियर के नाटकों के संकलन

शेक्सपियर के जीवन काल में उसके १६ नाटकों का संकलन प्रकाशित हुआ था, और आथेलो नाटक अकेला भी (१६२२) छपा। १६२३ में उसके सभी नाटकों का संकलन फोलिओ(Folio) नाम से छपा (इसमे पेरिक्लीज़ नाटक नहीं था)। प्रथम फोलिओ काफी भव्य छपा था—इसमें शेक्सपियर का चित्र भी था, और उसकी कुछ कवितायें भी उसमें थी। पर इसमे सभी प्रकार की त्रुटियाँ, छापे की अशुद्धियाँ आदि थी। आज इस प्रथम फोलिओ का बड़ा मूल्य समझा जाता था। अगर कोई अपनी प्रति बेचे तो उसे १० हजार से ५० हजार डालर तक मिल सकते हैं।

द्वितीय फोलिओ १६३२ मे छपा। यह प्रथम फोलिओ का संशोधित संस्करण है। तृतीय फोलिओ के २ छापे मिलते हैं, १६६३ का और १६६४

का। चतुर्थ फोलिग्रो १६८५ में छपा, यह तृतीय फोलिग्रो का ही पुनर्मुद्रण है। फोलिग्रो शृंखला में यह अन्तिम है।

बाद को १७०६ में रोवे (Rowe) संस्करण छपा। १७२५ में अलेक्जेण्डर पोप ने सात सुन्दर जिल्दों में शेक्सपियर के नाटक छापे। डॉ० जॉनसन का संस्करण ८ खण्डों मे है, जिसमें विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियाँ और आलोचनायें भी हैं। इसके अनन्तर तो शेक्सपियर के नाटकों के संस्करणों की बाढ़-सी आ गयी। मेलोन के वेरिग्रोरम (Malone's Variorum, १७६०) में शेक्सपियर के नाटक और कवितायें दोनों हैं। क्रेग (W. J. Craig) के सम्पादकत्व में ऑक्सफोर्ड से सभी नाटकों और कविताओं को एक जिल्द में प्रकाशित किया गया। आज तो बाजार में अनेक संकलन एक जिल्द मे सम्पूर्ण नाटकों के मिलते हैं; जैसे न्यूयार्क का Avenel Books वाला संकलन। शेक्सपियर का 'ग्लोब' संस्करण (Globe, १८७४) काफ़ी प्रामाणिक माना जाता है। कैम्ब्रिज से ६ खण्डों में प्रकाशित (१८६३-६६) है, और गम्भीर साहित्यिकों के लिए अत्यन्त उपयोगी समझा जाता है। इसके आधार पर अनेक लोकप्रिय संस्करण छापे गए हैं। मेथुअन एण्ड कम्पनी लि० (Methuen and Co. Ltd.) लन्दन ने शेक्सपियर इनसाइक्लोपीडिया (A Shakespeare Encyclopaedia) केम्पबेल (Oscar James Campbell) के सम्पादकत्व में छापा जिसमें शेक्सपियर के नाटकों से सम्बन्ध रखने वाली सभी बातों का अकारादि क्रम से विवरण है। यह ग्रेट ब्रिटेन में सर्वप्रथम १९६६ में छपा था।

नयी दिल्ली
२० नवम्बर, १९८४

—सत्यप्रकाश सरस्वती

पात्र-परिचय

बात का बतंगड़ (Much Ado About Nothing) का घटना-स्थल मेसिना (Messina) है। डॉन पेड्रो (Don Pedro) एरागन (Arragon) का राजकुमार है, और डॉन जॉन उसका अवैध भाई है। क्लौडियो (Claudio) फ्लोरेन्स का युवक लॉर्ड है; वह डॉन पेड्रो के अभिन्न मित्रों में से है। पादुआ (Pedua) का युवक लार्ड बेनेडिक (Benedick) भी पेड्रो का उसी प्रकार मित्र है, जैसा कि क्लौडियो। मेसिना का प्रमुख शासक लिओनेटो (Leonato) है, एण्टोनिओ (Antonio) उसका भाई है। डॉगबेरी (Dogberry) और वर्जीस (Verges) दो मूर्ख अफसर हैं। हीरो (Hero) लिओनेटो की बेटी है, और बीट्रिस (Beatrice) उसकी भतीजी।

वही भला जिसका अन्त भला (All's Well That Ends Well) नाटक की घटना-स्थली कुछ फ्रान्स और कुछ दृश्यों में टस्केनी (Tuscany) है। इसके पात्रों में प्रमुख (१) फ्रान्स का राजा, (२) फ्लोरेन्स का ड्यूक, (३) बर्ट्रेम (Bertram) जो रूजिलॉन (Rousillon) का काउण्ट है, और लेफ्यू (Lafeu) है। बर्ट्रेम की माता रूजिलॉन की काउण्टेस (ताल्लुकेदारिन) है। इसका संरक्षण हेलेना (Helena) नामक एक भद्र महिला को प्राप्त है। पात्रों में एक विधवा वृद्धा भी है, और डायना (Diana) उस विधवा की बेटी है। वायलेण्ट (Violenta) और मेरिआना (Mariana) उस विधवा की सखियां और पड़ोसी हैं।

छठा हेनरी, प्रथम भाग (Henry VI, Part I) नाटक की घटना-स्थली इंग्लैण्ड, और कभी फ्रान्स है। इसके प्रमुख पात्र हैं—(१) छठा राजा हेनरी, (२) ड्यूक आव् ग्लोस्टर, जो राजा का चाचा है और उसका संरक्षक, (३) थॉमस ब्यूफोर्ट (Thomas Beaufort), जो राजा का

चाचा और ड्यूक आव् एक्जीटर (Exeter) था, (४) ड्यूक ऑव् बेडफोर्ड, जो राजा का चाचा और फ्रान्स की गद्दी का उत्तराधिकारी था, (५) हेनरी ब्यूफोर्ट, राजा का बाबा और विंचेस्टर का पहले बिशप और बाद को कार्डिनल बना। (६) जॉन ब्यूफोर्ट, जो सोमरसेट (Somerset) का अर्ल और बाद को वहीं का ड्यूक बना। (७) रिचार्ड (Richard) का ज्येष्ठ पुत्र रिचार्ड प्लैंटाजीनेट (Richard Plantagenet) कैम्ब्रिज का भूतपूर्व अर्ल, और बाद का ड्यूक आव् यॉर्क (York) बना। (८) राइग्नीर (Reignier, रेनियर) एन्जू (Anjou) का ड्यूक था और नेपल्स का तथाकथित राजा। इसकी बेटी का नाम मारगरेट (Margaret) था, और वह राजा हेनरी को ब्याही गयी। (९) जॉन का प्यूसेल, जो बाद को जॉन आव् आर्क नाम से प्रसिद्ध हुई। इनके अतिरिक्त अनेक लार्ड और राजदरबारी।

छठा हेनरी, द्वितीय भाग (Henry VI, Part II) की घटना-स्थली इंग्लैण्ड के विभिन्न स्थान। प्रमुख पात्र हैं—(१) राजा हेनरी, (2) उसका चाचा ड्यूक आव् ग्लोस्टर (Gloster) हम्फी (Humphrey), (३) कार्डिनल ब्यूफोर्ट (Beaufort), राजा का बाबा और विंचेस्टर का बिशप, (४) रिचार्ड प्लैंटाजीनेट (Plantagenet), ड्यूक आव् यार्क, (५) उसके बेटे एडवर्ड (Edward) और रिचार्ड, (६) रानी मारगरेट (हेनरी की पत्नी), (७) इलियोनोर (Eleonor) ग्लोस्टर की डचेस, (८) मारगेरी जूरडेन (Margery Jourdain) नामक जादूगरनी।

छठा हेनरी, तृतीय भाग (Henry VI, Part III) नाटक के तृतीय दृश्य की स्थली फ्रान्स में, शेष इंग्लैण्ड में। इसके प्रमुख पात्र—(१) छठा राजा हेनरी, (२) उसका पुत्र एडवर्ड (Edward)—प्रिन्स आव् वेल्स, (३) ग्यारहवा लुईस (फ्रान्स का राजा), (४) हेनरी के अनेक राजदरबारी, (५) रानी मारगरेट, (६) लेडी ग्रे जो बाद को चतुर्थ एडवर्ड की पत्नी बनी, (७) बोना—फ्रान्स की महारानी की बहिन।

एण्टनी और क्लियोपाट्रा (Antony and Cleopatra) नाटक की घटना-स्थली रोमन साम्राज्य के विभिन्न स्थान हैं। प्रमुख पात्र हैं—(१) तीन प्रतियोगी—सेण्ट एण्टनी (Antony), ऑक्टेवियस सीज़र

(Octavis Caesar), और एम० एमिल लेपिडस (M. Aemil Lepidus), (२) सेक्सटस पोम्पीअस (*Sextux Pompeius*), एण्टनी के अनेक मित्र, (३) सीज़र (Caesar) के अनेक मित्र (४) ईजिप्ट की रानी क्लिओपाट्रा, (५) ऑक्टेविआ—जो सीज़र की वहिन और एण्टनी की पत्नी है; (६) *क्लिओपाट्रा के नौकर (७) अनेक सैनिक, सेवक और गुप्तचर।*

विण्डसर की हँसमुख स्त्रियां (Merry Wives of Windsor) के दृश्यों की घटना-स्थली विण्डसर (Windsor) और उसके निकट *के स्थान है। नाटक के मुख्य पात्र निम्न है—(१) सर जॉन* फाल्स्टाफ् (Sir John Falstaff), (२) फेन्टन (Fenton), (३) शैलो (नगरी का न्यायाधीश), (४) स्लेण्डर (Slendor) शैलो का चचेरा भाई, (५) *श्री फोर्ड, और श्री पेज (Ford and Page)—विण्डरसर के दो भद्र* पुरुष, (६) विलियम पेज (श्री पेज का पुत्र), (७) सर ह्यू इवान्स (वेल्स का पादरी), (८) फाल्स्टाफ् के विभिन्न साथी, (९) डॉ० केइअस—*चिकित्सक, (१०) श्रीमती फोर्ड, श्रीमती पेज, उसकी पुत्री श्रीमती एन* पेज (फेण्टन की प्रेमिका), (११) नौकर-चाकर सिम्पल (Simple), रूवी (Rugby) आदि।

निष्फल प्रेम (Love's Labor Lost) की घटना-स्थली नेवेरे (Navarre)—एक उपवन, और उसमें राजमहल। प्रमुख पात्र—(१) नेवेरे का राजा फर्डिनेण्ड (Ferdinand), (२) राजा के साथ सहायक—लॉर्ड वेरन (Baron), लार्ड लांगाविले (Longaville) और लार्ड ड्यूमेन (Dumain), (३) फ्रांस की राजकुमारी के सहायक—लार्ड बॉयट (Boyet), लार्ड मरकेड (Mercade), (४) डॉन एड्रिआनो डि अरमाडो (Don Adriano de Armado)—एक खफ्ती स्पेनवासी, (५) सर नेथेनिअल (Sir Nathaniel)—एक पादरी, (६) होलोफर्नीज (Holofernes)—स्कूल अध्यापक, (७) फ्रांस की राजकुमारी और उसकी सहायक—रोज़ालिन (Rosalined), मेरिया (Maria) और केथेराइन (Katherine)।

तृतीय रिचार्ड (Richard III) (उसका जीवन और मृत्यु)—घटना-स्थली—इंग्लैण्ड। प्रमुख पात्र—(१) चतुर्थ एडवर्ड (King

Edward, IV), (२) एडवर्ड, प्रिन्स आव् वेल्स, जो राजा होने पर पंचम एडवर्ड कहलाया, (३) राजा के पुत्र—रिचार्ड (Richard)—ड्यूक आँव् यार्क, जार्ज (George)—ड्यूक आव् क्लेरेन्स, रिचार्ड-ड्यूक आँव् ग्लोस्टर, जो बाद को राजा बनने पर तृतीय रिचार्ड कहलाया, (४) हेनरी—लार्ड आव् रिचमण्ड (Richmond), जो बाद को राजा सप्तम हेनरी कहलाया (५) कार्डिनल बाउचर (Boucher)—कैण्टरबरी का बड़ा पादरी, (६) टॉमस राँथराम (Thomas Ratheram)—यार्क का बड़ा पादरी, (७) अन्य अनेक लॉर्ड और अर्ल और नाइट, (८) चतुर्थ एडवर्ड की महारानी एलिजाबेथ (Elizabeth), (९) राजा षष्ठ हेनरी की विधवा मार्गरेट (Margaret), (१०) चतुर्थ राजा एडवर्ड की माता यॉर्क की डचेस, (११) लेडी एन (Anne), प्रिन्स आव् वेल्स एडवर्ड की विधवा—इसका बाद को ड्यूक आव् ग्लोस्टर (Gloster) के साथ विवाह हुआ।

आठवाँ हेनरी (Henry VIII) नाटक की घटना-स्थली लन्दन और वेस्टमिनिस्टर है, एक दृश्य में किम्बल्टन (Kimbolton) भी। प्रमुख पात्र हैं—(१) राजा अष्टम हेनरी, (२) कार्डिनल वोल्जे (Wolsey), (३) कार्डिनल कॅम्पियस (Campeius), (४) केपुसिअस (Capucius)—राजा पंचम चार्ल्स का राजदूत, (५) क्रेनमर (Cranmer)—कैण्टरबरी का आर्क बिशप (बड़ा पादरी), (६) अनेक ड्यूक, अर्ल, रईस, और नाइट ("सर" की उपाधिधारी), (७) राजा का चिकित्सक डॉ० बट्स (Dr. Butts), (८) राजा हेनरी की पत्नी रानी केथरीन (Ketherine), (९) एन बुलेन (Anne Bullen) जो बाद को रानी बनी—रानी की प्रतिष्ठित संगिनी।

कोरियोलेनस (Coriolanus) नाटक की घटना-स्थली प्रसिद्ध नगरी रोम और वॉलशियानो (Volsciano) और एण्टीओटस (Antiates) की रियासतें हैं। प्रमुख पात्र है—(१) केइअस मारसियस कोरिओलेनस (Caius Marcius Coriolanus)—रोम का कुलीन व्यक्ति, (२) टिटस लार्टिअस (Titus Lartius) और कोमिनिअस (Cominius)—वोलशियनों के विरुद्ध लड़ने वाले जनरल, (३) मिनिनिअस एग्रिपा (Menenius Agrippa)—कोरियोलेनस का मित्र, (४) सिसिनियस विल्यूटस (Sicinius Velutus) और जूनियस ब्रूटस (Junius Brutes)—प्रजा के अधिकारों का न्याय करने वाले मजिस्ट्रेट, (५) तरुण मार्सिअस (Marcius)—कोरियोलेनस का बेटा, (६) ट्यूलस आफिनिअस (Tullus Aufinius)—वोलशिअनों का सेनापति; इसके सहयोगी लेफ्टिनेण्ट और इसके साथ के षड्यन्त्रकारी, (७) वॉल्यूम्निआ (Volu-

mnia)—कोरिओलेनस की माता, (८) वर्जिलिआ (Virgilia)—कोरिओलेनस की पत्नी, (९) वलेरिया (Valeria)—वर्जिलिया की दोस्त, (१०) सीनेट के अनेक सदस्य (रोमनों और वोलशियानों के), सैनिक और प्रजा के व्यक्ति।

टीटस एण्ड्रोनीकस (Titus Andronicus) अभिनय के दृश्यों की घटना-स्थली—रोम और उसके निकट के ग्राम। प्रमुख पात्र—(१) सेटर्निनस (Seturninus)—रोम के भूतपूर्व महाराजा का पुत्र, जो बाद को स्वयं महाराज घोषित हुआ, (२) बेसिएनस (Bassianus)—सेटर्निनस का भाई, लेविनिआ (Levinia) का प्रेमी, (३) टीटस एण्ड्रोनिकस—रोमन रईस, गोथों के विरुद्ध युद्ध करने वाला सेनापति (४) मार्कस एण्ड्रोनिकस (Marcus Andronicus)—प्रजा का न्याय-पोषक वकील और टीटस का भाई, (५) ल्यूसिअस (Lucius), क्विण्टस (Quintus), मार्टिअस (Martius), म्यूटिअस (Mutius)—एण्ड्रोनिकस के बेटे, (६) लूसिअस का तरुण पुत्र, (७) पब्लिअस (Publius) मार्कस एण्ड्रोनिकस का बेटा, (८) टमोरा (Tamora)—गोथों की रानी, (९) अलार्बस (Alarbus) डेमेट्रिअस (Demetrius), किरोन (Chiron)—टमोरा के बेटे (१०) लेविनिआ (Lavinia)—टीटस एण्ड्रोनीकस की बेटी, (११) अनेक सीनेट-सदस्य, वकील, सैनिक और सेवक।

ट्रोइलस और क्रेसीडा (Troilus and Cressida) नाटक की घटना-स्थली—ट्राय (Troy) और इसके निकट का यूनानी सैनिक कैम्प। प्रमुख पात्र—(१) प्रिअम (Priam)—ट्रॉय का राजा, (२) हेक्टर (Hector), ट्रोइलस (Troilus), पेरिस (Paris), डाइफोबस (Deiphobus), और हेलेनस (Helenus)—सब राजा प्रिअम के पुत्र, (२) मार्गेरिलन (Margerilon)—राजा प्रिअम का अवैध पुत्र, (३) ईनिअस (Aeneas), और एण्टिनॉर (Antenor)—ट्रोजन के सेनापति, (४) कैलचस (Calchus)—ट्राजन का पुजारी—ग्रीसवासियों का पक्ष लेने वाला, (५) क्रेसिडा (Cressida)—कैलचस की पुत्री, (६) पेण्डेरस (Pandarus)—क्रेसिडा का चाचा, (७) अगेममनोन (Agememnon)—ग्रीसवासियों का सेनापति, (८) मनेलोअस (Manelous), अगेममनोन का भाई, (९) हेलेन (Helen)—मनेलोस की पत्नी, (१०) एण्ड्रामेकी (Andromache)—हेक्टर की पत्नी, (११) केसेण्ड्रा (Cassandra)—प्रिअम की बेटी—भविष्य वक्ता, (१२) बहुत से ग्रीक सेनापति और सेवक।

वात का वतंगड़

(MUCH ADO ABOUT NOTHING)

मसीना के महल में हीरो और बीटरिस नाम की दो युवतियां रहती थी। हीरो का बाप लियोनेटो मैसीना का राजा था। बीटरिस लियोनेटो की भतीजी थी।

हीरो एक गम्भीर स्त्री थी परन्तु उसकी बहन बीटरिस हसमुख और चचल थी। वह नित्यप्रति अपनी वहन को अपने हास्य-प्रहसन द्वारा खुश किया करती थी। संसार में छोटी से छोटी भी घटना ऐसी न थी जो बीटरिस के हास्य का विषय न हो सकता हो।

जिस समय का इतिहास हम वर्णन कर रहे है उस वक्त कुछ उच्च श्रेणी के वीर पुरुष किसी युद्ध से लौटकर लियोनेटो से मिलने के लिए मसीना मे आये। इनमें आरागन (हस्पानिया) का राजा डौन पैडरो और उसका मित्र क्लौडियो भी था जो फ्लोरेंस का शासक था। इन दोनों के साथ एक रसिक मनुष्य वैनीडिक भी था जो पेडुआ का राजा था। इस युद्ध मे इन सब ने बडी वीरता दिखाई थी और विजय पाकर खुशी मनाने के लिए वे मैसीना में आये थे जहा कुछ दिनो रहने का उनका विचार था।

ये लोग पहले भी मैसीना मे आये थे और हीरो तथा बीटरिस से उनका परिचय हो चुका था।

जिस समय डौन पैडरो और उसके साथी लियोनेटो के समीप आये उसने कहा—

"महाशय लियोनेटो ! फिर आपको कष्ट उठाना पडा। संसार चाहता है कि खर्च से बचता रहे। परन्तु आप नही बच सकते !"

लियोनेटो—आपके शुभागमनरूपी कष्ट मुझको नित्य हुआ करें। क्योंकि ऐसी दशा में कष्ट के अभाव से शान्ति ही शेष रह जाती है। जब आप यहां से चले जाते है तब दुःख ही रह जाता है क्योंकि आनन्द तो चला ही गया।

डौन पैडरो—(हीरो की ओर संकेत करके) क्या यह आपकी लड़की हैं?

लियोनेटो—इसकी माता ने कई बार मुझसे यही कहा था।

बैनीडिक—क्या आपको इस बात मे सन्देह था कि इनकी माता से पूछना पड़ा?

बैनीडिक की इसी प्रकार को हास्यप्रद बातें सुनकर बीटरिस बोल उठी—

"बैनीडिक! तुम अभी कह ही रहे हो! भला कोई सुनता भी है कि वैसे ही कहे जाते हो?"

बैनीडिक—आहा! घृणादेवी! आप अभी जीवित है?

बीटरिस—क्या घृणा कभी मर भी सकती है जब उसके भोजन के लिए बैनीडिक जैसे मनुष्य मौजूद हों। यदि आप उसके सामने जायं तो आदर-सत्कार भी घृणा में परिवर्तित हो जायगा!

बैनीडिक—सिवा तुम्हारे और सब स्त्रियां मुझे चाहती हैं। परन्तु मुझे किसी से स्नेह नही है।

बीटरिस—यह तो स्त्रियों का भाग्य है। नही तो आप जैसे हानिकारक जीव उनको अपने प्रेमालाप से बड़ा कष्ट दिया करते! मुझे यह पसन्द है कि कुत्ता भौंकता रहे परन्तु यह पसन्द नही कि कोई मुझसे प्रेमालाप करे।

बैनीडिक—ईश्वर करे आपका ऐसा ही स्वभाव रहे नही तो किसी के मुंह को नोच खाओ।

बीटरिस—तुम जैसों का मुंह तो नोचने से भी अधिक भद्दा न मालूम होगा!

बैनीडिक को एक स्त्री के मुख से ऐसी हसी की बातें सुनने से क्रोध आ गया। क्योंकि जो मनुष्य हसी किया करते हैं वे दूसरो की हंसी सुनने से चिढ़ भी बड़ी जल्दी जाते है। बैनीडिक जब पहले मैसीना में आया था

सब भी देख चुका था कि बीटरिस उसको खूब चिढ़ाया करती थी। इस प्रकार जब कभी यह दोनों कहीं मिल जाते और परस्पर वार्तालाप हो जाता तो इन सब बातों का यही परिणाम होता कि अन्त में वे एक दूसरे से अप्रसन्न होकर ही पृथक् होते थे। परन्तु इन दोनों का वाग्युद्ध कभी बन्द नहीं होता था।

बीटरिस युद्ध का समाचार पूछते समय कहा करती थी कि महाशय बैनीडिक इतने वीर हैं कि उनके मारे हुए पुरुषों को मैं खा सकती हूं। अर्थात् इनसे एक मनुष्य भी न मर सका होगा। बैनीडिक इस बात से तो अप्रसन्न न हुआ क्योंकि वह वास्तव में एक वीर पुरुष था और बीटरिस के कथन मात्र से कायर सिद्ध नहीं हो सकता था। परन्तु जब बीटरिस ने उससे एक बात ऐसी कह दी जो उस पर फबती थी तो वह नाराज हो गया। क्योंकि काने को काना कह देने से वह चिढ़ ही जाता है। बीटरिस ने कहा—"तुम तो राजा के भांड हो।" भांडपना बैनीडिक में था ही। इसलिए उसे यह बात बुरी मालूम हुई कि एक स्त्री मेरे दोषों को इस प्रकार प्रकाशित करे।

सुशीला हीरो पाहुनों के सन्मुख बड़ी शान्ति से बैठी रहा करती थी। राजा क्लौडियो उसको बड़े ध्यान से देखा करता था। और उसके रूप तथा लावण्य पर मोहित हो गया था। परन्तु डौन पैडरो को बीटरिस और बैनीडिक की बातें सुन-सुनकर बड़ी हंसी आती थी और एक दिन उसने लियोनेटो से कहा—

"यह तो बड़ी चंचल स्त्री है। क्या ही अच्छा हो अगर इसका बैनीडिक से विवाह हो जाय।" लियोनेटो ने उत्तर दिया—

"महाशय ! अगर इन दोनों का सम्बन्ध हो जाय तो एक सप्ताह में ही वह बकते-बकते पागल हो जायगे।"

यद्यपि लियोनेटो के विचार में इन दोनों का जोड़ा मिलाने के योग्य नहीं था परन्तु डौन पैडरो के मन में अभी यह बात बनी रही कि किसी न किसी प्रकार इनका विवाह हो जाना चाहिए।

जब पैडरो क्लौडियो के साथ राजमहल में चला तब उसे मालूम हुआ कि बीटरिस और बैनीडिक के विवाह के अतिरिक्त एक और विवाह

होने वाला है। क्योंकि जब क्लौडियो महल से बाहर आया तो उसने हीरो की इतनी प्रशसा की कि पैंडरो को यह निश्चय हो गया कि वह हीरो को चाहता है। उसने क्लौडियो से पूछा—

"क्या आपका हीरो पर प्रेम है?"

क्लौडियो—महाराज! जब मैं पहले मैसीना मे आया था उस समय मैं युद्ध पर जा रहा था और स्नेह करने का अवकाश नही था। परन्तु अब शान्ति के समय में वीर रस की जगह श्रृंगार रस ने ले ली है। और अब जो मैं हीरो को देखता हू तो उसकी ओर मेरा मन आकर्षित हुआ जाता है।

पैंडरो को क्लौडियो और हीरो का सम्बन्ध ऐसा उचित मालूम हुआ कि उसने लियोनेटो से प्रार्थना करके यह विवाह स्वीकार करा लिया। और हीरो भी उससे विवाह करने पर राजी हो गई क्योंकि क्लौडियो बड़ा वीर और गुणी पुरुष था। जब ये सब बातें निश्चय हो गईं तब विवाह सस्कार के लिए एक तिथि नियत कर दी गई।

यद्यपि विवाह के दिन निकटस्थ ही थे परन्तु क्लौडियो को एक-एक घड़ी सौ वर्षों की बराबर बीतती थी। क्योंकि युवक मनुष्य जिस बात को करना चाहते हैं उसको जल्दी ही करना चाहते हैं और चाहे उसके होने में थोड़ा ही समय क्यों न हो, उनको बहुत बड़ा मालूम होता है। इस समय में क्लौडियो का जी बहलाने के लिए पैंडरो ने एक और उपाय सोचा वह यह था कि किसी प्रकार ऐसी बात करनी चाहिए जिससे बैनीडिक बीटरिस से प्रेम करने लगे और बीटरिस भी बैनीडिक को चाहने लगे। इसी के लिए लियोनेटो ने भी यह बात मान ली। और तो और सुशीला हीरो भी क्लौडियो के कहने से इस बात पर राजी हो गई कि जो कुछ मुझसे बन सकेगा, मैं भी इस सम्बन्ध मे यथाशक्ति कोशिश करूंगी।

अब सवाल यह था कि किस प्रकार इस काम को करना चाहिए। पैंडरो की समझ में एक बात आई कि सब लोग बैनीडिक को झूठ-मूठ यह बात निश्चय करा दें कि बीटरिस उससे प्यार करती है। और हीरो बीटरिस को यह विश्वास दिला दे कि बैनीडिक उसके प्रेमरोग से पीड़ित है।

पहले पैंडरो, क्लौडियो और लियोनेटो ने अपना कार्य्य आरम्भ

किया। जब बैनीडिक बाग की एक कुंज में बैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था, उस समय वे सब लोग एक निकट की कुंज में जाकर टहलने लगे जिससे उन की सब बातें बैनीडिक को सुनाई दे सकें। पर उसे यह बात मालूम न हो कि यह बातें मुझे सुनाने के लिए कही जा रही हैं। पैडरो लियोनेटो से कहने लगा—

"लियोनेटो! आपने आज मुझसे यह क्या बात कही कि तुम्हारी भतीजी बीटरिस बैनीडिक से प्रेम करती है!"

क्लौडियो—चुप! बैनीडिक सुनता होगा! मुझे तो यह आशा न थी कि बीटरिस किसी मनुष्य को भी चाहती हो।

लियोनेटो—मुझे भी यही खयाल था। परन्तु यह बड़ी विचित्र बात है कि बीटरिस बैनीडिक से इतना प्रेम करती है। दिखलाने को तो वह उससे बहुत लड़ती है और उसे खूब ही चिढ़ाती है।

बैनीडिक ने दूर से जो यह बात सुनी तो मन में आश्चर्य करने लगा। परन्तु लियोनेटो ने फिर कहा—

"क्या बताऊं, कुछ समझ में नहीं आता। परन्तु इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि बीटरिस का बैनीडिक के लिए अगाध प्रेम है।"

पैडरो—वह बहाना तो नहीं करती?

क्लौडियो—हां, शायद यही बात हो।

लियोनेटो—नहीं-नहीं, ऐसा बहाना कोई नहीं करता। यह तो सच ही प्रतीत होता है।

पैडरो—अच्छा, उसका प्रेम आपको किस प्रकार जान पड़ा?

क्लौडियो—हां, यह तो बताओ।

लियोनेटो—मेरी लड़की ने यह कहा था क्या आपने नहीं सुना!

क्लौडियो—हां, वे तो मुझसे भी कहती थी!

पैडरो—मुझे बड़ा आश्चर्य होता है मैं तो यही समझता था कि बीटरिस का हृदय कभी इस योग्य नहीं है जिसमे किसी का प्रेम समा सके।

लियोनेटो—हां, और विशेष कर बैनीडिक का जिसको वह साफ़-साफ़ गालियां देती है।

बैनीडिक इस बात को सुनकर मन में कहने लगा कि इसमें कुछ कपट-छल

मालूम होता है परन्तु एक बात से छल प्रकट नही होता क्योंकि यदि कोई छल होता तो सफेद डाढ़ी वाला वृद्ध लियोनेटो इसमें सम्मिलित न होता।

पैंडरो ने फिर पूछा—

"क्या बीटरिस ने अपने प्रेम की कथा बैंनीडिक को सुना दी है?"

लियोनेटो—नही-नही। वह कहती है कि मैं कभी यह बात प्रकट न करूंगी।

क्लौडियो—आपकी पुत्री ने भी यही कहा था। बीटरिस कहती है कि मैं सबके सामने उसकी हसी कर चुकी हूं। इसलिए अब किस मुंह से कहूं कि मैं तुमको प्यार करती हूं।

लियोनेटो—वह कहती ही कहती है। मुझे निश्चय है कि वह बीस बार रात मे सोते से उठेगी और सफे के सफे लिख डालेगी। प्रेम बडा प्रबल है।

क्लौडियो—हा! हा! मैं आप को बताता हू। आपकी लडकी कहती थी। बीटरिस ने एक पत्र लिखा।

लियोनेटो—फिर क्या?

क्लौडियो—जब देने का समय आया तो अपने निर्लज्जपन पर लज्जित हो गई और फाड डाला। कहने लगी, 'मुझे विश्वास है कि बैंनीडिक सुनते ही मुझसे हसी करने लगेगा।' फिर वह कहने लगी—
'बैंनीडिक! बैंनीडिक! दया करो।'

लियोनेटो—मेरी लड़की ने तो बहुत सी बातें बताई हैं। वह कहती है कि अगर बैंनीडिक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की तो वह आत्मघात कर लेगी!

पैंडरो—फिर यह अच्छा होगा कि बैंनीडिक से हमी लोग इस बात को कह दें।

क्लौडियो—कहने मे प्रयोजन? बैंनीडिक ऐसा कठोर है कि बिचारी रमणी को खूब ही कष्ट देगा।

पैंडरो—यह बैंनीडिक की दुष्टता है। क्योंकि वह बड़ी अच्छी स्त्री है।

ग्रौर उसका चालचलन भी निस्सन्देह है।

क्लौडियो—ग्रौर वह बुद्धिमती भी है।

पैडरो—सिवा इस बात के कि वह वैनीडिक को चाहती है ग्रौर सब बातों से उसकी बुद्धिमत्ता प्रतीत होती है।

लियोनेटो—जब बुद्धि ग्रौर प्रेम में लड़ाई होती है तब प्रेम ही की जय होती है। मुझे बीटरिस के लिए शोक है। क्योंकि वह मेरी भतीजी है ग्रौर मैं उसका सरक्षक हू।

पैडरो—जो वह मुझसे इतना हित प्रकट करती तो मैं ग्रवश्य उसे ग्रपनी ग्रर्धांगिनी बना लेता। मेरी तो यही राय है कि वैनीडिक को इस बात की सूचना दे दी जाय। देखें वह क्या कहता है?

लियोनेटो—क्या इससे कुछ लाभ होगा?

क्लौडियो—हीरो तो यही कहती है कि वह मर जायगी ग्रौर कभी वैनीडिक से न कहेगी। क्योंकि हंसी कराने से मर जाना ग्रच्छा है।

पैडरो—हां उसका विचार ठीक है क्योंकि ग्रगर उसने ग्रपने प्रेम का प्रकाश किया तो वैनीडिक ग्रवश्य उससे घृणा करेगा। क्योंकि वह बड़ा दुष्ट है।

क्लौडियो—ग्रादमी तो भला है!

पैडरो—बाहर से तो भला ही जान पड़ता है।

क्लौडियो—मैं तो उसे बुद्धिमान् समझता हूं।

पैडरो—बात तो ग्रच्छी कहता है।

क्लौडियो—बहादुर भी है।

पैडरो—झगड़ा भी नहीं करता। परन्तु लियोनेटो! मुझे तुम्हारी भतीजी के लिए शोक है। चलो वैनीडिक के पास चलें ग्रौर उसे इस बात से सूचित कर दें।

क्लौडियस—नहीं-नहीं! महाराज! इस समय न कहिए।

पैडरो—ग्रच्छा जाने दो! हीरो से सब बातें मालूम हो जायंगी! वैनीडिक मेरा मित्र है। मैं चाहता हूं कि वह यह बात जान ले कि वह इस युवती के योग्य नहीं है।

ये बातें करके वे लोग बाग़ से भोजनशाला की ग्रोर चले गये।

बैनीडिक कुंज से निकला और अपने मन में सोचने लगा—

"यह बात हंसी की नहीं है। क्योंकि वे बड़ी गम्भीरता से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने यह सब हीरो से सुना होगा। उनको बीटरिस पर तरस आता है। इससे जान पड़ता है कि उसकी अवस्था शोचनीय हो गई है। ये लोग मुझे बुरा-भला कहते हैं और समझते हैं कि अगर मुझे बीटरिस के प्रेम का पता चल गया तो मैं उसकी हंसी करूंगा। इनका यह भी खयाल है कि बीटरिस बिना प्रेम का प्रकाश किये ही मर जायगी। वे कहते हैं कि स्त्री तो रूपवती है। इसको मैं भी मानता हूं। बुद्धिमती भी है। सदाचारिणी भी है। ये लोग कहते हैं कि मुझसे प्रेम करना उसकी मूर्खता है। पर मैं तो मैं इसको मूर्खता नहीं कहता! अगर वह मुझसे प्रेम करती है तो क्या मैं उससे न करूंगा। मुझे कभी विवाह करने की इच्छा नहीं थी और मैं विवाह का बड़ा विरोधी था। पर क्या इच्छाओं में परिवर्तन नहीं होता? जो खाना मनुष्य को जवानी में अच्छा लगता है वह बुढ़ापे में नहीं भाता। जब मैंने कहा था कि मैं क्वारा ही मर जाऊंगा तब मुझे यह क्या मालूम था कि मेरा विवाह हो जायगा।"

जब बैनीडिक महाशय विचार कर रहे थे तब वहां पर बीटरिस भी आ गई और कहने लगी—

"अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं आपको भोजन का निमन्त्रण देने आई हूं।"

बैनीडिक—सुन्दरी, मैं आपका अनुगृहीत हूं। आपने बड़ा कष्ट किया।

बीटरिस—इस धन्यवाद के लिए मैंने इतना ही कष्ट किया है जितना आपने धन्यवाद देने में। अगर मुझे कष्ट होता तो मैं न आती।

बैनीडिक—तो यहां आने में आपको हर्ष हुआ है?

बीटरिस—हां, उतना ही हर्ष हुआ जितना आपको भोजन खाने में होगा।

बैनीडिक का अभी से यह खयाल होने लगा कि जो कुछ पैडरो और क्लौडियो ने कहा वह सब ठीक है। उसे बीटरिस के मुंह पर प्रेम के चिह्न दिखाई देने लगे क्योंकि जो कुछ मनुष्य के मन में होता है उसी के अनुकूल बाहर भी दिखाई देता है। अब उसने कहा कि "मैं अवश्य बीटरिस को प्यार करूंगा; अभी जाकर उसकी तसवीर लिये आता हूं।"

वैनीडिक को जाल मे फसाने के बाद अब इन लोगों ने वीटरिस के फासने का यत्न किया और हीरो ने अपनी दो सहेलियो मारगरेट और अर्सला को साथ लेकर वही काम करना आरम्भ किया जो क्लौडियो आदि ने किया था। जिस समय वीटरिस पैंडरो और क्लौडियो से बातें कर रही थी उस समय मारगरेट ने जाकर उससे कहा—

"श्रीमती जी ! हीरो और अर्सला आपके विषय मे चुपचाप कुछ वात कर रही है। अगर तुम चाहो तो बाग की कुंज में जाकर इसको सुन सकती हो।"

यह वही कुंज थी जहा वैनीडिक पहले दिन बैठा पुस्तकावलोकन कर रहा था।

जब हीरो को मालूम हो गया कि वीटरिस आ गई तब वह अर्सला से यो कहने लगी—

"अर्सला ! मैं जानती हूं कि वह एक दुष्टा स्त्री है। वह कभी किसी का ख़याल नही करती।"

अर्सला—फिर क्या आपको दृढ विश्वास है कि वैनीडिक वीटरिस को चाहता है ?

हीरो—पैडरो और मेरे स्वामी दोनो कहते थे।

अर्सला—क्या उन्होंने आपको इसकी सूचना देने के लिए कहा है ?

हीरो—उन्होने तो मुझसे यही प्रार्थना की थी कि मैं वीटरिस को इस वात से सूचित कर दूं। परन्तु मैंने उनसे कह दिया है कि अगर आप वैनीडिक का भला चाहते हैं तो कभी वीटरिस को इसका पता भी न लगना चाहिए।

अर्सला—क्यों ? आपने ऐसा क्यो कहा ? क्या आपके ख़याल में वैनीडिक वीटरिस के योग्य नही है ?

हीरो—हे ईश्वर ! वैनीडिक ऐसा ही योग्य है जैसा एक आदमी को होना सम्भव है। वीटरिस बड़ी कठोर स्त्री है। उसकी आखो मे घृणा वरसती है। वह अपनी बुद्धि के आगे किसी को नहीं समझती। उसे किसी का प्रेम नहीं है।

अर्सला—मेरा भी यही विचार है, कि उससे यह वात नही कहनी चाहिए।

नहीं तो वह व्यर्थ बैनीडिक को चिडाया करेगी।

हीरो—तुम सच कहती हो। चाहे कितना ही बुद्धिमान्, रूपवान् या योग्य पुरुष क्यों न हो, बीटरिस उसकी हंसी ही उड़ाया करती है। यदि कोई सुन्दर मनुष्य हो तो कहती है कि यह मेरी बहन सी मालूम होती है। अगर काला हो तो कहती है, कि ईश्वर ने धब्बा डाल दिया। यदि लम्बा हो तो कहती है कि बरछी के समान लम्बा है। यदि छोटा हो तो कहती है कि बौना है। यदि बातून हो तो कहती है कि बक्की है। यदि शान्त हो तो कहती है कि गूंगा है। इस प्रकार हर एक मनुष्य के दोष निकाल देती है और उनके गुणों को छोड देती है।

अर्सला—ठीक है, ठीक है। उसमें यह बड़ा दोष है।

हीरो—पर उससे कहे कौन? मैं कहूं तो मुझसे लड़ पड़ेगी, मुझमें हंसी करेगी। इसलिए बैनीडिक को राख में दबी हुई आग के समान सुलगने दो।

अर्सला—अच्छा कह तो देना चाहिए। देखें वह क्या कहती है?

हीरो—नहीं नहीं; इससे तो यह अच्छा है कि मैं बैनीडिक के पास जाऊं और उससे कह दूं कि तुम इससे हित न करो। मैं अवश्य कोई ऐसा उपाय सोचूंगी जिससे उसका प्रेम छूट जाय। मैं अपनी बहन में कुछ झूठ-मूठ दोष लगा दूंगी। क्योंकि दोषों के मालूम होने से स्नेह दूर हो जाता है।

अर्सला—नहीं! नहीं! ऐसा मत कीजिए, नहीं तो आपकी बहन बदनाम हो जायगी। ऐसी मूर्ख भी नहीं है। जब सोचेगी तब बैनीडिक जैसे योग्य पुरुष का तिरस्कार न करेगी।

हीरो—मेरे प्यारे क्लौडियो को छोड़कर वह इटली भर में सबसे योग्य पुरुष है।

अर्सला—श्रीमतीजी! मुझे क्षमा कीजिए। मैं तो समझती हूं कि बैनीडिक सबसे योग्य पुरुष है।

हीरो—हां वह बहुत प्रसिद्ध पुरुष है।

अर्सला—यह सब उसकी योग्यता का फल है। श्रीमतीजी! आप के विवाह में कितने दिन रहे हैं?

हीरो—कल होगा, चलो वस्त्र तैय्यार करो।

यह कहती हुई हीरो तो सहचरी सहित चली गई। बीटरिस, जो कान लगाये इन दोनों की बातें सुन रही थी, अपने मन मे कहने लगी कि "अगर यह बात सच है तो मैं अवश्य बेनीडिक से प्यार करने लगूंगी। जब वह इस प्रकार मुझे चाहता है तो मुझे कठोर नहीं बनना चाहिए।"

इन दोनों शत्रुओं का इस प्रकार आपस में मिल जाना बड़ा ही उत्तम दृश्य था। परन्तु अब हीरो की आकस्मिक विपत्ति का हाल सुनना चाहिए। क्योंकि दूसरे दिन जबकि हीरो का विवाह होने वाला था एक बड़ी दुर्घटना हो गई जिसके कारण हीरो और उसके योग्य पिता लियोनेटो को बड़ा कष्ट हुआ।

विवाह के एक दिन पहले डौन जौन ने, जो जौन पैडरो का भाई था और जो उसके साथ युद्ध से लौटकर आया था, पैडरो के पास आकर कहा—

"यदि आपको अवकाश हो तो मैं कुछ कहना चाहता हूं!"

पैडरो—क्या एकान्त में?

जौन—हां, क्लौडियो को साथ ले लीजिए। क्योंकि इस बात से इनका सम्बन्ध है।

पैडरो—क्या बात है?

जौन—(क्लौडियो से) क्या आपका विवाह कल होगा?

पैडरो—हां, तुम को तो मालूम है।

जौन—मैं नहीं कह सकता कि जो बात मुझे मालूम है वह इन को भी मालूम है या नहीं?

क्लौडियो—यदि कोई विघ्न हो तो बताओ!

जौन—शायद आप खयाल करेंगे कि आपकी मेरी शत्रुता है। मेरे भाई को आप से प्रेम है और इन्ही ने इस विवाह का प्रस्ताव किया था परन्तु वधू अयोग्य है।

पैडरो—कहो, बात क्या है?

जौन—स्त्री सती नहीं है।

क्लौडियो—कौन? क्या हीरो?

जौन—हां वही। लियोनेटो की हीरो! तुम्हारी हीरो! सब जगत् की हीरो!

क्लौडियो—असती!

जौन—हां, असती। यह तो नम्र-से-नम्र शब्द है। वह तो इससे भी बुरी है। आप सोच न कीजिए। आज आधी रात के समय मेरे साथ चलिए और जो कुछ मैं दिखलाऊं वह देख आइए। फिर अगर हीरो पर आपका प्रेम हो तो अवश्य विवाह कर लीजिए। परन्तु आपको योग्य तो यही है कि उसको त्याग दीजिए।

क्लौडियो—क्या यह बात है?

पैडरो—मुझे तो यकीन नहीं आता।

जौन—अगर आप उस बात को जानना नहीं चाहते जिसको मैं दिखलाना चाहता हूं, तो जाने दीजिए। पर अगर आप मेरे साथ चलेंगे तो दिखला दूंगा।

क्लौडियो—अगर आज रात को मैं कुछ बात देख लूं तो फिर कल विवाह न करूंगा! बल्कि कल समस्त सभा में इसे बदनाम करूंगा।

पैडरो—यदि मुझे विश्वास हो गया कि हीरो असती है तो मैं भी कल इसको बदनाम करने में तुम्हारा साथ दूंगा।

सच बात यह है कि हीरो असती नहीं थी किन्तु जौन एक दुष्ट आदमी था। वह पैडरो और क्लौडियो से शत्रुता रखता था। इसके अतिरिक्त उस में स्वाभाविक नीचता भी थी। उसे यह बात पसन्द न आई कि क्लौडियो का विवाह ऐसी योग्य स्त्री के साथ हो जाय। इसलिए उसने पैडरो और उसके मित्र को कष्ट देने के लिए हीरो को बदनाम करने की ठान ली और उस कार्य्य को पूरा करने के लिए ब्रोकियो नामी एक दुष्ट आदमी को कुछ रुपया देने का वादा करके कहा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिस से यह विवाह न हो सके। ब्रोकियो ने उत्तर दिया कि मैं अवश्य इस कामको कर सकता हूं।

जौन—किस प्रकार?

ब्रोकियो—मैंने आप से कहा था कि हीरो की सहेली मारगरेट मुझसे प्रेम करती है।

जौन—हां ! मुझे याद है।

ब्रोकियो—मैं उससे कह दूंगा कि रात्रि के समय वह हीरो की खिड़की से होकर मुझ से बातचीत करले। मारगरेट अवश्य मुझसे बात करने आवेगी। और हीरो के वस्त्र भी धारण कर सकती है, यदि मैं उससे कह दूं।

जौन—हां, यह तो अच्छा उपाय है।

ब्रोकियो—परन्तु आप को कोशिश चाहिए। आप उसी समय क्लौडियो को लेकर दूर से दिखला दीजिए कि हीरो किसी अन्य पुरुष से रात के समय बातें कर रही है। क्लौडियो इसके असतीत्व को देख कर झट अपना मन फेर लेगा। कहो कैसी कही ?

जौन—बहुत अच्छी ! बहुत अच्छी ! हर्रा लगे न फिटकरी, रंग आवे चोखा ! पर देखो अपनी बात से मत हट जाना, नहीं तो मुझे बड़ी लज्जा उठानी पड़ेगी।

इस प्रकार जब जौन, क्लौडियो और पैडरो को साथ लेकर हीरो के मकान की ओर आया तो हीरो की सहेली मारगरेट अपनी स्वामिनी के वस्त्र पहने हुए खिड़की से झांकर ब्रोकियो से बातें कर रही थी।

क्लौडियो को यह चाल मालूम न थी। उसे विश्वास हो गया कि यह हीरो ही है। इसलिए यह देखकर उसको बड़ा क्रोध आया और जितना प्रेम वह हीरो से करता था उतनी ही उससे घृणा करने लगा। अब उसने दृढ़ प्रतिज्ञा करली कि दूसरे दिन धर्ममन्दिर में जाकर हीरो की क़लई खोलूंगा। राजा पैडरो ने भी यह बात स्वीकार करली। क्योंकि उसे यह बहुत बुरा मालूम हुआ। निस्सन्देह किसी स्त्री का इससे अधिक दोष नहीं हो सकता कि विवाह की रात को अपनी खिड़की में होकर वह एक अजनबी आदमी से बात करती पकड़ी जाय !

दूसरे दिन प्रातःकाल जब विवाह संस्कार का समय आया और सब लोग धर्ममन्दिर में एकत्रित हुए, उस समय क्लौडियो ने बड़े जोर से क्रोध में आकर हीरो के दोष वर्णन करना शुरू किया। निर्दोष हीरो चुपचाप सुन रही थी और कहती थी—"क्या मेरे स्वामी का स्वास्थ्य अच्छा है ? आप इतना क्रुद्ध क्यों होते हैं ?"

क्लौडियो ने पैडरो से कहा—

"आप क्यों चुप खड़े है आप भी साफ़-साफ़ कहिए।"

पैडरो—मैं क्या कहूं। मुझे तो लज्जा आती है, कि ऐसे योग्य मित्र का विवाह एक असती स्त्री से कराने मे मैंने सहायता दी !

लियोनेटो—अरे क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं ! या वास्तव में यह बातें हो रही है ?

जौन—अजी यह सब सत्य है।

बैनीडिक—यह तो विवाह सा नही मालूम होता !

हीरो—सच ? हाय परमात्मा !

क्लौडियो—लियोनेटो ! देखो यह मैं खड़ा हू। यह राजा है ! यह उनके भाई है ! और यह हीरो का मुह है !

लियोनेटो—यह तो सब कुछ है, फिर क्या ?

क्लौडियो—मैं आपकी लड़की से एक बात पूछता हूं। आप इसका ठीक-ठीक उत्तर इनसे दिला दीजिये।

लियोनेटो—बेटी ! सच-सच कह दो।

हीरो—ईश्वर मेरी रक्षा करे ! किस प्रकार का प्रश्न है ?

क्लौडियो—अपने नाम को धब्बे से बचाओ !

हीरो—मेरे नाम पर कौन धब्बा लगा सकता है ?

क्लौडियो—हीरो ही हीरो के नाम पर धब्बा लगा सकती है। वह कौन आदमी था जिससे तुम कल रात बारह और एक बजे के भीतर खिड़की मे हो कर बातें कर रही थी ? अगर तुम सती हो तो ठीक-ठीक बताओ !

हीरो—उस समय मैं किसीसे बात नहीं करती थी।

पैडरो—फिर तो तुम सती नही हो। लियोनेटो, सुनो ! मैंने, मेरे भाई ने, और इस मेरे दुखिया मित्र ने इसको एक आदमी के साथ बातें करते देखा और सुना; और उस दुष्ट ने निर्लज्ज होकर साफ-साफ़ कह दिया कि सहस्रों बार हममे बातचीत हुई है।

जौन—धिक् ! धिक् ! धिक् ! महाशय ! रहने दीजिए ! ये बातें कहने योग्य नहीं है। हीरो ! मुझे आपके इस असतीत्व पर शोक है।

हीरो को इन बातों के सुनने से इतना दुःख हुआ कि वह मूर्छा खाकर गिर पड़ी और सबने यही जाना कि हीरो मर गई। पैंडरो और क्लौडियो दोनों धर्ममन्दिर से चले गये और उन्होंने यह भी न देखा कि हीरो और उसके पिता लियोनेटो को कितना दुःख है। क्योंकि क्रोध के मारे उनका हृदय पाषाण से भी कठोर हो गया था।

बैनीडिक वहीं रह गया था। उसने बीटरिस की सहायता से हीरो को मूर्छा से जगाया। बीटरिस को अपनी बहन की इस आपदा पर बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि उसको भली प्रकार ज्ञात था कि हीरो बड़ी सदाचारिणी स्त्री है। उसको इस दोषारोपण पर बिलकुल ही विश्वास नहीं आया। वह अपने मन में कहने लगी कि लोग झूठ बोलते हैं।

परन्तु हीरो का बाप लियोनेटो सन्दिग्ध आत्मा का पुरुष था। वह डौन जौन जैसे सज्जन की साक्षी को झूठा नहीं मान सका। जिस समय हीरो मूर्छित पड़ी हुई थी वह लज्जा के मारे चिल्लाने लगा। वह कहने लगा—"मौत! मौत! आज मेरी लाज रख ले। हे हीरो, तू अब आखें मत खोलना। क्योंकि ऐसा लज्जा का काम करके मर जाना ही उचित है।"

जब बीटरिस के परिश्रम से हीरो ने कुछ आंखें खोलीं तो लियोनेटो ने फिर कहा—

"हाय! यह तो जीवित है। अरी क्यों उठती है? धिक्-धिक्! समस्त संसार धिक्-धिक् कर रहा है। भला यह इस बात का कैसे निषेध कर सकती है। हीरो आखें मत खोल! हीरो, अब तेरा जीवन व्यर्थ है। जो मैं जानता कि तू इस लज्जा के होने पर भी जीवित रहेगी तो तुझे चुपके-चुपके मार डालता! मैंने कभी इस बात पर रंज नहीं किया ईश्वर ने मुझे केवल एक ही लड़की दी। हाय! तू मेरे क्यों पैदा हुई? और मैंने तुझे स्नेह से क्यों पाला? अगर मैं किसी फ़कीर की लड़की को गोद ले लेता और वह आज ऐसी निर्लज्ज हो जाती तो मैं यह कह सकता था कि यह मेरे वश की नहीं है। परन्तु क्या किया जाय। मैं अपनी लड़की के ऊपर अभिमान करता था। मैं अपनी लड़की की प्रशंसा किया करता था। हाय! आज वह डूब गई। स्याही के गड्ढे में डूब गई। उसके माथे

पर कलंक का टीका लग गया; जिसके धोने के लिए सात समुद्रों का पानी भी काफी नहीं है।

बैनीडिक—श्रीमन्! सन्तोष कीजिए। मुझे तो इतना आश्चर्य हुआ है कि कुछ कह ही नहीं सकता।

बीटरिस—अपने जीवन की सौगन्ध, मेरी बहन को झूठा दोष लगाया गया है।

बैनीडिक—क्या कल तुम हीरो के साथ सोई थी?

बीटरिस—नहीं-नहीं। कल तो नहीं। लेकिन साल भर से रोज साथ सोती रही हूं।

लियोनेटो—ठीक! ठीक! क्या दो राजे झूठ बोलेंगे। क्या क्लौडियो झूठ बोल सकता है? वह तो इसे प्राणों से भी अधिक चाहता था! इसको यहां से ले जाओ और मर जाने दो।

पुरोहित, जो अब तक चुपका खड़ा यह भयानक दृश्य देख रहा था, एक बुद्धिमान् मनुष्य था। उसने बहुत से आदमियों की आंखें देखी थीं, वह सच और झूठ की पहचान कर सकता था। वह कहने लगा—

"कुछ मेरी भी सुनो। मैं बड़ी देर से चुपका खड़ा हूं और हीरो के मुंह की ओर ताक रहा हूं। मैंने देखा है कि पहले तो लज्जा के मारे इसका मुंह लाल हो गया, परन्तु फिर थोड़ी देर में वह सब लाली जाती रही, जिससे प्रकट होता है कि यह लड़की निर्दोष है। इसकी आंखों में एक प्रकार की चमक है, जो अपराधियों की आंखों में नहीं होती। मुझे तो यही जान पड़ता है कि कुछ धोका हो गया है। अगर ऐसा न हो तो कह देना कि मैंने धूप में बाल श्वेत किये हैं।"

लियोनेटो—पुरोहित जी! यह नहीं हो सकता। भला झूठ बोलकर एक अपराध की जगह दो अपराध करना कौन सी अच्छी बात है।

पुरोहित—देवि! वह कौन मनुष्य है जिसके साथ रहने का तुम पर दोष लगाया गया है?

हीरो—यह तो वे ही जान सकते हैं जो दोष लगाते हैं। मुझे क्या मालूम? अगर मैंने किसी पुरुष के दर्शन भी किये हों तो ईश्वर मुझ पर दया न करे। पिताजी! अगर आपको सिद्ध हो जाय कि कल रात को मैं

किसी पुरुष से बात करती थी तो कुत्तों की मौत मार डालना !

पुरोहित—इन राजों का स्वभाव कैसा है ?

बेनीडिक—दो तो बड़े धर्मात्मा है। तीसरा जौन, जो जारज है, दुष्ट है और दुष्टतायें किया करता है।

लियोनेटो—मेरी समझ में कुछ नही आता। अगर वह सच कहते हैं तो इन्हीं हाथों से मैं इसके टुकड़े-टुकड़े किये डालता हूं। यदि उनका कहना झूठ है तो अभी मेरी भुजाओं में बल है, मैं उनको इसका मजा चखा दूंगा।

पुरोहित—अच्छा मेरी बात मान लीजिये। वे सब देख गये है कि हीरो मर गई। अब यही प्रसिद्ध कर दो और समाधि बनवा दो।

लियोनेटो—इससे क्या होगा ?

पुरोहित—इससे यह होगा कि जो क्रोध करते हैं वे तरस खायंगे। इससे कुछ लाभ होगा। लोग शोक मनावेंगे और अपने किये पर पछतायंगे। जब क्लौडियो सुनेगा कि हीरो मर गई तो उसका क्रोध शान्त हो जायगा और उसे अपनी प्यारी की फिर याद आवेगी। इससे बहुत बड़ा लाभ होगा। परन्तु यदि मेरा यह सब कथन मिथ्या हुआ तो कम से कम एक बात तो हो ही जायगी, अर्थात् हीरो बदनामी से बच जायगी। अगर तुम चाहो तो उसको किसी मन्दिर में रहने दो।

बैनीडिक के समझाने से लियोनेटो ने यह बात मान ली और हीरो को छिपा लिया। वह कहने लगा—

"डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत है।"

अब बीटरिस और बैनीडिक वहा रह गये। बैनीडिक ने कहा—

"प्यारी बीटरिस ! क्या तुम उस समय से रोती ही हो ?"

बीटरिस—अभी तो और रोऊंगी।

बैनीडिक—मैं समझता हूं कि तुम्हारी बहन पर झूठा दोष लगाया गया है।

बीटरिस—मैं उस पुरुष को कितना चाहूंगी जो इसको झूठा सिद्ध कर दे।

बैनीडिक—क्या ऐसा करने के लिए कोई उपाय है ? मैं तुमको सबसे अधिक चाहता हूं।

बीटरिस—मैं भी कहती हूं कि तुम से ज्यादा और कोई मुझे प्यारा नहीं है। चाहे विश्वास न करो, मैं झूठ नहीं बोलती। मुझे अपनी बहन का बड़ा दुःख है।

बैनीडिक—तलवार की सौगन्ध! तुम मुझे बड़ी प्यारी हो। जो कहो सो कर सकता हूं।

बीटरिस—क्लौडियो के प्राण ले लो।

बैनीडिक का क्लौडियो बड़ा मित्र था, इसलिए उसने उत्तर दिया—"कदापि नहीं। कदापि नहीं।"

बीटरिस—क्या क्लौडियो दुष्ट नहीं है जिसने मेरी बहन को बदनाम किया? आज मैं मर्द होती तो क्या कुछ न करती।

बैनीडिक—बीटरिस, सुनो, सुनो!

परन्तु बीटरिस ने एक न सुनी और यही कहती रही—

"क्लौडियो दुष्ट है। बिचारी निर्दोष और सुशील स्त्री हीरो को दोष लगाता है। उसका अपमान करता है। हे ईश्वर! तू आज मुझे पुरुष बना दे कि मैं क्लौडियो से इसका बदला ले लूं। या किसी ऐसे मित्र को भेज दे जो मेरे हित के लिए यह काम करे। क्योंकि आजकल बीरों की वीरता सभ्यता के मारे नष्ट हो गई है और वे दुष्टों को दण्ड देना नहीं चाहते। अच्छा, मैं अगर पुरुष नहीं हो सकती तो दुःख के मारे मर सकती हूं।"

बैनीडिक—इस हाथ की सौगन्ध, तुम मुझे प्यारी हो।

बीटरिस—तो इसी हाथ से मेरी सहायता करो।

बैनीडिक—क्या तुमको निश्चय है कि यह क्लौडियो का दोष है?

बीटरिस—हां!

बैनीडिक—अच्छा लो, जाता हूं। आज वह अपने किये का फल पावेगा!

इधर तो बीटरिस के कहने से बैनीडिक ने क्लौडियो को युद्ध करने के लिए बुलाया, उधर वृद्ध लियोनेटो ने भी पैडरो और क्लौडियो दोनों से युद्ध की इच्छा की[1]। क्लौडियो ने लियोनेटो को तो वृद्ध पुरुष समझकर

१. यूरोप में पहले यह नियम था कि यदि किसी बात में दो पुरुषों को सन्देह होता था तो उसका लड़के निश्चय कर लेते थे, जो जीतता था उसी की बात सच्ची समझी जाती थी।

टाल दिया, परन्तु वह बैनीडिक से युद्ध करने पर राजी हो गया और यदि ईश्वर की सहायता न आ जाती तो अवश्य एक न एक मारा जाता।

जब यहां युद्ध की तैयारियां हो रही थी उसी समय एक मजिस्ट्रेट बोकियो को पकड़े हुए लाया। उसने बोकियो को किसी अन्य मनुष्य से वे सब बातें कहते सुना था जो उसके और डोन जोन के बीच में हुई थी और जिनके कारण हीरो और उसके सम्बन्धियों की यह गति हुई।

बोकियो ने क्लौडियो के सामने पैडरो से वर्णन किया कि रात के समय जो स्त्री खिड़की में उससे बातें कर रही थी वह हीरो की सहचरी मारगरेट थी जो हीरो के कपड़े पहने हुए थी। अब तो हीरो के विषय में क्लौडियो और पैडरो को कुछ भी शंका नहीं रही। यदि कुछ रही होगी तो वह इस वजह से दूर हो गई कि बोकियो के पकड़े जाने की खबर सुनते ही डौन जोन वहां से भाग गया, जिससे सब लोग जान गये कि जोन का इस दुष्टता में अवश्य कुछ मेल है।

जब क्लौडियो को मालूम हुआ कि मैंने अपनी प्यारी के अकारण प्राण ले लिये तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह हीरो की याद करके चिल्लाने लगा। वह कहने लगा कि जब मैं बोकियो की बातें सुन रहा था तो मेरे शरीर में विष जैसा फैलता जाता था।

जब क्लौडियो ने लियोनेटो के पैरों पर सिर रख कर क्षमा चाही और कहा कि आप जो कुछ दण्ड मुझे देना चाहे उसे सहन करने के लिए मैं तैयार हूं क्योंकि मैंने अपनी प्यारी पर दोषारोपण करके बड़ा भारी अपराध किया है।

लियोनेटो ने कहा कि मैं तुम्हारे लिए एक प्रायश्चित बतलाता हूं, उसे करना स्वीकार करो। हीरो की एक चचेरी बहन और है, जो रूप में बिलकुल हीरो के समान है। उससे तुम विवाह कर लो। क्लौडियो ने कहा कि "मैं तैयार हूं, चाहे वह काली-कलूटी ही क्यों न हो।"

परन्तु उसको उस रात बड़ा रंज रहा और वह रात भर हीरो की कल्पित समाधि के पास जाकर रोता रहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल क्लौडियो अपने इष्ट-मित्रों सहित विवाह के लिए धर्ममन्दिर में गया और लियोनेटो ने एक लड़की को लाकर, जिसके मुंह

पर घूघट पड़ा हुआ था, कहा—"लो यह लडकी हीरो की चचेरी बहन है।"

क्लौडियो ने बिना देखे हुए उस लडकी का हाथ पकड कर कहा—"अगर तुम चाहो तो मैं तुमको अपनी स्त्री बनाना अगीकार करता हूं।"

लडकी ने घूघट उतार कर कहा—"मैं तो जीवन भर तुम्हारी ही स्त्री थी।"

अब तो सबने पहचान लिया कि यह लडकी जिसका क्लौडियो से विवाह होने वाला था, हीरो की चचेरी बहन नही, किन्तु हीरो ही थी। क्लौडियो खुशी के मारे फूला न समाया और पैंडरो ने कहा—

"अरे यह क्या हीरो नही है ? वही हीरो जो मर गई थी।"

लियोनेटो ने उत्तर दिया—

"हीरो तो उसी समय तक मरी थी जब तक उसका अपयश जीवित था।"

पुरोहित ने कहा कि विवाह सस्कार के बाद हम आपको ये सब बातें समझा देंगे; और संस्कार की कार्य्यवाही आरम्भ की। परन्तु उसी समय बैनीडिक और बीटरिस दोनो ने अपने विवाह की इच्छा प्रकट की। लियोनेटो, क्लौडियो आदि ने उनको अब बतला दिया कि किस प्रकार धोका देकर बैनीडिक और बीटरिस का आपस मे स्नेह कराया गया था। उस समय उनको ज्ञात हुआ कि एक दूसरे के प्रेम की कथा केवल जी के लुभाने के लिए थी। परन्तु अब वे दोनों विवाह का इरादा कर चुके थे। इसलिए इस सम्बन्ध पर अप्रसन्न न हुए और क्लौडियो का हीरो से तथा बैनीडिक का बीटरिस से विवाह कर दिया गया!

उसी समय एक दूत ने आकर खबर दी कि दुष्ट डौन जौन मैसीना से भागते हुए पकड़ा गया। इसका सबसे उचित दण्ड यही समझा गया कि वह विवाह के आनन्दो को देखकर डाह की अग्नि मे भस्म हो।

वही भला जिसका अन्त भला

(ALL'S WELL THAT ENDS WELL)

रोसिलन देश में एक राजा था जिसकी मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र ब्रतराम उसकी गद्दी पर बैठा। फ्रान्स के महाराज को ब्रतराम के पिता से बड़ा स्नेह था। इसलिए जब उसने इस मृत्यु की खबर पाई तो उसी समय ब्रतराम को पेरिस की राजसभा में उपस्थित होने की आज्ञा दी जिससे वह अपने प्रिय मित्र के पुत्र के साथ दया का व्यवहार करके उस को उत्साहित कर सके।

ब्रतराम अपनी विधवा माता के साथ रोसिलन में था, जब कि फ्रान्स की राजसभा से लेफ़ू नामक एक सभ्य उसे महाराज के पास ले चलने के लिए आया। फ्रान्स में उस समय राजतन्त्र राज्य था और सभा का निमन्त्रण आज्ञा के रूप में था, जिसका उल्लंघन करना किसी मनुष्य के अधिकार में न था, चाहे वह कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो। इसलिए यद्यपि ब्रतराम की माता को अपने पुत्र के वियोग में बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि वह अभी विधवा हुई थी, परन्तु राजनिमन्त्रण को अस्वीकार करना उसकी शक्ति के बाहर था। इसलिए, लेफ़ू के आते ही उसने लड़के के भेजने की तैयारियां कर दीं। लेफ़ू ने रानी को बहुत ढाढ़स बंधाया और कहा कि फ्रान्स-नरेश बड़े दयालु हैं, वे आपके साथ पतिवत् व्यवहार करेंगे और आपके पुत्र के साथ पितृवत्। लेफ़ू ने यह भी कहा कि महाराज थोड़े दिनों से बीमार हैं और वैद्यों ने कह दिया है कि रोग असाध्य है। रानी को महाराज के रोग की बात मालूम करके बड़ा खेद हुआ और उसने कहा—

"शोक है कि इस समय जिरार्ड-डि-नार्बन जीवित नहीं है, जो

वह अवश्य महाराज को नीरोग कर देता। क्योंकि वह एक बड़ा वैद्य था और भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा कर सकता था। अगर आज जिराई जीवित होता तो महाराज के रोग की अवश्य मृत्यु हो जाती।"

लेफू—हां महारानी! महाराज के मुह से भी मैंने उसकी बड़ी प्रशंसा सुनी है। उन्होने उसको बहुत याद किया था। अगर मौत की कोई दवा हो सकती तो जिराई अवश्य आज जीवित होता!

रानी के पास एक लड़की थी, जिसका नाम हैलीना था। लेफू ने हैलीना की ओर देखकर पूछा, "क्या यह जिराई-डी-नार्बन की कन्या है?"

रानी—जी हा! यह अपने बाप की इकलौती बेटी है। इसका पिता मरते समय इसे मेरी देखरेख मे छोड़ गया था। यह एक सुशील और सुशिक्षित लड़की है, और मुझे आशा है कि यह एक अच्छी स्त्री बनेगी! इसका बाप बड़ा योग्य पुरुष था और उसी के गुण और स्वभाव इसमें भी है।

हैलीना इस समय रो रही थी। इसलिए रानी ने उसे समझाया और कहा कि अपने मृत पिता के लिए इतना शोक करना उचित नही है।

अब व्रतराम अपनी माता के पास से चल दिया। रानी ने अपने पुत्र के वियोग के समय बड़ा अश्रुपात किया और बहुत कुछ अशीस देकर लेफू से प्रार्थना की कि "महाराज! आप इसको उपदेश करते रहना, क्योंकि अभी यह अशिक्षित है और राजसभा के योग्य नही है।"

चलते समय व्रतराम हैलीना से भी मिला और कहा कि ईश्वर तुमको खुश रक्खे! मेरी माता जी की सेवा किया करना और सर्वदा उसका मान करना।

हैलीना को छिपे-छिपे बहुत दिनो से व्रतराम से प्रेम था, जिसकी इस राजकुमार को खबर तक न थी। इसलिए इस समय जो अश्रुपात वह कर रही थी वह अपने मृत पिता के लिए नहीं था, किन्तु व्रतराम के लिए था, जिसका अब उससे वियोग हो रहा था। यद्यपि हैलीना अपने पिता पर बड़ी भक्ति करती थी, परन्तु इस समय उसे अपने मृत पिता का किञ्चित् भी ध्यान नहीं रहा था, किन्तु अपने प्यार के वियोग में

शोकातुर हो रही थी।

यद्यपि हैलीना बहुत दिनों से व्रतराम के प्रेम में आसक्त थी, परन्तु वह जानती थी कि व्रतराम रोसिलन का राजा है और पेरिस के एक कुलीन तथा प्राचीन कुल में उत्पन्न हुआ है। उसके सब पूर्वज बड़े प्रतिष्ठित और माननीय पुरुष थे। परन्तु मैं एक साधारण वंश की लड़की हूं। मेरा पिता कोई प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध पुरुष नहीं था। ऐसा ख्याल कर के वह समझती थी कि हम दोनों का किसी प्रकार का सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है। इसलिए यद्यपि उसे विवाह की आशा न थी किन्तु वह अपने प्यारे की ओर प्रेम की दृष्टि से देखा करती, और कहा करती थी कि व्रतराम मुझसे इतना ऊंचा है कि उससे स्नेह करना किसी ऊंचे चमकते हुए ग्रह से प्रेम करने के समान है, जिसकी प्राप्ति की कुछ भी आशा नहीं है।

व्रतराम के वियोग से उसका हृदय बड़ा व्याकुल हुआ, क्योंकि यद्यपि उसे विवाह की आशा न भी हो, तथापि एक शान्ति उसके लिए बहुत काफी अर्थात् वह नित्य प्रति सोते-जागते, चलते-फिरते, अपने प्यारे के दर्शन कर सकती थी। वह बैठ जाती और उसके मनोहर मुंह की तसवीर अपने हृदयरूपी पट पर इस प्रकार खींच लेती कि उसकी एक-एक रेखा उसकी स्मृति पर अंकित हो गई थी।

हैलीना के पिता जिरार्ड-डी-नार्बन ने मरते समय अपनी बेटी के लिए सिवा थोड़ी-सी ओषधियों के और कुछ नहीं छोड़ा था। ये ओषधियां उसने अपने आयु भर के परिश्रम से इकट्ठी की थी और इनसे भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा हो सकती थी। इनमें से एक ओषधि उसी रोग की थी जिससे लेफ़ू के कथनानुसार फ्रान्स-नरेश पीड़ित हो रहा था। जिस समय हैलीना ने महाराज के रोग की कथा सुनी, उस समय इस साधारण रमणी के हृदय में उत्साह उत्पन्न हो गया और उसने इरादा किया कि पेरिस चलकर राजा की चिकित्सा करनी चाहिए। यद्यपि हैलीना के पास बड़ी अच्छी-अच्छी ओषधियां थी, परन्तु एक बड़ा भय यह था कि जब बड़े-बड़े वैद्यों ने राजा के रोग को असाध्य कहकर छोड़ दिया है तब राजा इस अशिक्षित लड़की की दवाओं पर कब विश्वास करेगा।

लेकिन हैलीना को इन दवाओं पर अपने पिता से भी अधिक विश्वास था और वह समझती थी कि यदि इन ओषधियों से राजा अच्छा हो जाय तो मैं अपने प्यारे व्रतराम की स्त्री हो सकूँगी।

व्रतराम के जाने के पश्चात् उसकी माता को एक नौकर द्वारा ज्ञात हुआ कि हैलीना चुपके-चुपके एक कोने में बैठी हुई ऐसी बातें कर रही थी जिनसे प्रकट होता था कि उसको राजा (व्रतराम) से प्रेम है, और उसका निश्चय पेरिस को जाने का है। रानी ने नौकर से कह दिया कि हैलीना को बुला लाओ।

हैलीना—महारानी ! क्या आज्ञा है ?

रानी—हैलीना ! तुम जानती हो कि मैं तुम्हारी माता के समान हूँ।

हैलीना—आप मेरी पूज्य स्वामिनी हैं।

रानी—नहीं-नहीं। माता ! माता क्यों नहीं ? जब मैंने 'माता' शब्द कहा तो तुमको इतना रंज हुआ मानो तुमने सांप देखा है। 'माता' शब्द में ऐसी कौन सी बात है जो तुम इतना चौंकती हो ! मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हारी माँ हूँ और उन्हीं के समान गिनती हूँ जिन्होंने मेरे उदर से जन्म लिया है। तुम मेरी लड़की हो।

हैलीना—मैं नहीं हूँ।

रानी—मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हारी माता हूँ।

हैलीना—रानी ! क्षमा कीजिए, रोलिसन का राजा मेरा भाई नहीं हो सकता ! मैं एक साधारण स्त्री हूँ। वह प्रतिष्ठित पुरुष है। मेरा वंश नीच है। उसके पूर्वज प्रसिद्ध थे। वह मेरा स्वामी है। और मैं उसकी एक दासी हूँ और मरणपर्यन्त रहूँगी। वह मेरा भाई नहीं हो सकता !

रानी—और मैं तुम्हारी माता भी नहीं हो सकती ?

हैलीना—रानी ! तुम मेरी माता[1] हो। मेरी बड़ी अभिलाषा है कि तुम मेरी माता हो जाओ। लेकिन मेरा स्वामी मेरा भाई न हो। आप हम दोनों की माँ हो जायो, पर मैं उसकी बहिन न होऊं।

---

१. अंग्रेजी में सास को भी माता कहते है और बहू को बेटी।

रानी—हां हैलीना !' तुम मेरी बेटी या पतोहू हो सकती हो। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। तुम्हारा यही तात्पर्य जान पड़ता है। मैं अब तुम्हारी बात समझ गई हूं। अब मैं जान गई कि तुम क्यों अश्रुपात कर रही हो। तुम मेरे बेटे को चाहती हो ! अब स्पष्ट कह दो कि क्या यह बात ठीक है ? देखो, तुम्हारे मुंह तथा आंखों से यही प्रकट होता है।

हैलीना—महारानी ! क्षमा करो।

रानी—क्या तुम मेरे बेटे को चाहती हो ?

हैलीना—क्या श्रीमती जी उनको नहीं चाहती ?

रानी—बात मत बनाओ। मैं चाहती हूं। परन्तु मेरा चाहना और बात है। ठीक-ठीक कहो, क्या तुम उसे चाहती हो ?

हैलीना—तो महारानी ! मैं ईश्वर और आप दोनों की साक्षी देकर कहती हूं कि मैं आपके पुत्र से प्रेम करती [illegible]। मैं एक दरिद्र वंश की हूं। परन्तु मेरा पिता सच्चा आदमी था। ऐसा ही सच्चा मेरा प्रेम है। आप नाराज न हूजिए। आपके पुत्र की, इस बात से कुछ हानि नहीं कि मैं उससे स्नेह करती हूं। मैं न तो उसके पीछे पड़ती हूं और न उससे विवाह की प्रार्थना करूंगी, जब तक इसकी अधिकारिणी न बनूं। मैं जानती हूं कि मेरा यह प्रेम व्यर्थ है। मैं भारतवर्षीयों के समान उस सूर्य्य की उपासना करती हूं जो मुझको देखता तो है परन्तु यह नहीं जानता कि मैं उपासिका हूं। रानी जी कृपा कीजिए। इस मेरे प्रेम के कारण मुझसे अप्रसन्न न हूजिए।

रानी—क्या तुम्हारा पेरिस जाने का विचार नहीं है ?

हैलीना—है।

रानी—क्यों ?

हैलीना—मैं सच-सच कहूंगी ! आपको मालूम है कि मेरे पिताजी मुझे कुछ औषधियां बतला गये थे। उनमें राजा के रोग की भी दवा है।

रानी—क्या पेरिस जाने का यही प्रयोजन था ?

हैलीना—आपके पुत्र के कारण मैंने यह विचार किया, नहीं तो पेरिस, फ्रान्स-नरेश या दवाओं का मुझे स्मरण भी नहीं था।

रानी—हेलीना ! तुम समझती हो कि राजा तुम्हारी दवा करेगा ? क्योंकि वैद्यों ने कह दिया है कि यह रोग असाध्य है ।

हैलीना—मेरा आत्मा कहता है कि मैं अपने परिश्रम में अवश्य साफल्य प्राप्त करूंगी ।

रानी—क्या तुमको विश्वास है ?

हैलीना—हां-हां ! मैं तो यही समझती हूं ।

रानी—अच्छा, मैं तुमको आज्ञा देती हू । मार्गव्यय के लिए धन ले जाओ । नौकर-चाकर साथ ले जाओ । मैं रोलिसन में रहकर तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करूंगी ! तुम कल चली जाओ । मैं तुम्हारी यथाशक्ति सहायता करूंगी !

हैलीना पेरिस मे जा पहुंची । उसका लेफ़ू से परिचय हो चुका था, इसलिए उसीकी सहायता से राजा के भी दर्शन हो गये । राजा ने पूछा—

"लड़की ! क्या तुम मेरे पास आई हो ?"

हैलीना—श्री महाराज ! मेरे पिताजी का नाम जिराडॅ-डी-नार्बन था । वे अपने काम में बड़े दक्ष थे !

राजा—मैं उसे जानता हू ।

हैलीना—बस-बस, अब श्रीमान् के सम्मुख उनकी प्रशंसा करना अनावश्यक है । मरते समय उन्होंने मुझे बहुत सी ओषधियां बताई थीं । उनमें से एक ऐसी है जिसके लिए वह कह गये हैं कि इसे आंख की पुतलियों से भी अधिक रखना । मैंने सुना है कि आपका स्वास्थ्य अच्छा नही है । इसलिए आपकी चिकित्सा करने आई हू ।

राजा—हम तुमको धन्यवाद देते हैं । परन्तु जब हमारे बड़े से बड़े वैद्यों ने जवाब दे दिया और हमारे रोग को असाध्य ठहरा दिया तो हमको ऐसा अविश्वासी नही होना चाहिए कि असाध्य रोग की इधर-उधर दवा करते फिरें ।

हैलीना—मेरा जो कर्त्तव्य था मैंने किया, अब मैं श्रीमान् को कष्ट नही दूंगी ।

राजा—मैं तुमको उसी प्रकार धन्यवाद देता हूं जैसे एक मरता हुआ

मनुष्य उन लोगों को देता है जो उसे जीते रहने के लिए आशीष देते हैं। मैं खूब जानता हूं कि तुम मुझे चंगा नहीं कर सकती हो।

हैलीना—इस बात की जांच करने में तो कोई हानि नहीं है। ईश्वर बहुधा छोटे आदमियों से बड़े काम कराता है।

राजा—अच्छा जाओ! मैं तुम्हारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं हूं।

हैलीना—महाराज! मैं कोई धोकेबाज नहीं हूं। आप मेरा विश्वास न कीजिए, किन्तु ईश्वर पर विश्वास कीजिए। मुझे आशा है कि मैं अवश्य आपको अच्छा कर दूंगी।

राजा—क्या तुमको इतना विश्वास है? अच्छा कितने दिन में अच्छा करोगी?

हैलीना—जितनी देर में सूर्यदेव के घोड़े दो बार आकाश में अपना दैनिक वृत्त बना सकें और दो बार प्रकाश के दीपक को समुद्र में बुझा सकें। या जितनी देर में जहाज वाला २४ बार बालू को शीशे में बदलकर यह कह सके कि इतने मिनट गुज़र गये!

राजा—अगर तेरी दवा ने काम न किया तो क्या दण्ड?

हैलीना—श्रीमान् मुझको कुत्तों की मौत मरवा डालें! परन्तु यदि मैंने अच्छा कर दिया तो आप मुझे क्या इनाम देंगे?

राजा—बोल, क्या चाहती है?

हैलीना—क्या आप उसे पूरा करेंगे?

राजा—अवश्य-अवश्य! मुझे अपने राज की शपथ है!

हैलीना—जिस मनुष्य से मैं विवाह करना चाहूं आप उसीको मुझे ग्रहण करने की आज्ञा दें। मैं आपके राजवंश में से किसीसे विवाह की प्रार्थिनी न हूंगी! परन्तु ऐसे मनुष्य को मांगूंगी जिसको दे देना आपके अधिकार में है।

राजा ने स्वीकार कर लिया और हैलीना को आशातीत सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि अभी दो दिन भी न होने पाये थे कि राजा का रोग बिल्कुल जाता रहा और वह चंगा हो गया। अब राजा ने एक बड़ी सभा की जिसमें अपने राज्य के सब योग्य युवक पुरुषों को बुलाया और हैलीना को आज्ञा दी कि इनमें से जिस किसीको चाहो अपना पति बना लो। हैलीना

ने थोड़ी ही देर में अतराम की ओर संकेत करके कहा—

"स्वामिन् ! मैं यह तो कहने के योग्य नहीं हूं कि आप मेरे हैं। हां मैं यह कह सकती हूं कि आयुपर्यन्त मैं आप की आज्ञाकारिणी रहूंगी।"

राजा—हां अतराम ! अब यह तेरी स्त्री है, तू इसको अंगीकार कर !

अतराम—मेरी स्त्री ! महाराज ! मेरी प्रार्थना है कि इस काम में आप मुझे अपनी आंखों से काम लेने दें।

राजा—क्या तुझे नहीं मालूम कि इसने मेरे साथ क्या भलाई की है ?

अतराम—हां, महाराज ! पर मुझे यह नहीं मालूम कि इसके साथ विवाह क्यों करूं !

राजा—क्या तुझे मालूम है कि इसने मुझे मृत्यु से बचाया है ?

अतराम—परन्तु इससे यह बात सिद्ध नहीं होती कि मेरा कुल नष्ट हो जाय। मैं जानता हूं कि इसका बाप एक तुच्छ आदमी था। नीच कुल की कन्या से मेरा क्यों विवाह कराते हैं ? आप मुझसे घृणा कर सकते हैं, परन्तु घृणा से अपमान अच्छा नहीं है।

राजा—ऐसा मत कहो। गुणी मनुष्य नीच कुल में उत्पन्न हुआ भी गुणी ही है। यदि एक मनुष्य कुलीन हो परन्तु गुणी न हो तो उसका कुलीन होना व्यर्थ है। यह रूपवती और बुद्धिमती है, यही गुण आदमी को प्रतिष्ठित करते हैं। यदि तू इस रमणी को स्वीकार करे तो इसमें जो त्रुटियां हैं उनको मैं पूरा कर सकता हूं। रूप और बुद्धि तो इसमें है ही। रहा धन और मान। यह मैं दूंगा !

अतराम—मुझे इससे स्नेह नहीं है और न हो सकता है।

राजा—(हैलीना से) यदि तुम किसी अन्य को चुनना चाहो तो शायद तुमको कष्ट होगा ?

हैलीना—महाराज ! मुझे हर्ष है कि आप अच्छे हो गये। शेष बात को जाने दीजिए !

राजा—नहीं-नहीं ! यहां मेरी प्रतिज्ञा भंग हो रही है। इसलिए मैं अपनी शक्ति से काम लूंगा। हे अभिमानी लड़के ! तुझे इसको ग्रहण करना पड़ेगा ! अपनी घृणा को रोक और मेरी आज्ञा का पालन कर। अगर ऐसा नहीं करेगा तो मैं तुझे अपनी दृष्टि से गिरा दूंगा।

ग्रौर मैं तुझसे इस बात का बदला लूंगा !

ग्रतराम—महाराज ! क्षमा कीजिए, मैं ग्रब ग्रापकी ग्राज्ञा का पालन करता हू । जिस स्त्री से मैं घृणा करता था उसीको मैं देखता हूं कि महाराज प्रशंसा करते हैं। इससे ग्रधिक कुलीनता क्या हो सकती है ?

राजा—ग्रच्छा, इसे ग्रहण कर ग्रौर मैं तुझे तेरे राज्य के बराबर देश ग्रौर दूंगा !

ग्रतराम—मैं स्वीकार करता हू ।

इस प्रकार उसी दिन राजा की ग्राज्ञा से ग्रतराम ग्रौर हेलीना का विवाह हो गया। परन्तु ग्रतराम को हेलीना से कुछ भी प्रेम न था। राजा उसे विवाह करने पर तो मजबूर कर सकता था, परन्तु प्रेम करने में मजबूर करना ग्रसम्भव था।

विवाह के थोड़े दिनो पीछे ही ग्रतराम ने हेलीना द्वारा पेरिस से जाने की ग्राज्ञा चाही। जब ग्राज्ञा मिल गई तो ग्रतराम ने उससे कहा—

"मैं इस विवाह के लिए तैयार नही था, इसलिए मेरा चित्त बडा विक्षिप्त हो गया है। इस कारण ग्रगर मैं इस समय कुछ करना चाहूं तो ग्राश्चर्य न करना।"

हेलीना बिचारी क्या ग्राश्चर्य करती। उसे यह जानकर बडा रंज हुग्रा कि ग्रतराम उसे त्याग कर विदेश-यात्रा करना चाहता है। ग्रतराम ने हेलीना को हुक्म दिया कि मेरी माता के पास चली जाग्रो ग्रौर उनको यह पत्र दे देना। मैं ग्रब कभी तुमसे न मिलूगा। हेलीना ने विनयपूर्वक उत्तर दिया कि—

"महाराज, मैं इसका क्या उत्तर दे सकती हूं। मैं तो ग्रापकी ग्राज्ञाकारिणी दासी हूं, ग्रौर सदा ऐसी ही रहूंगी।" ग्रतराम को हेलीना के गिड़गिड़ाने पर कुछ भी तरस न ग्राया ग्रौर बिना किसी शिष्टाचार के वह वहां से चला गया।

हेलीना बिचारी ग्रब ग्रतराम को माता के पास चली गई। उसने ग्रपना कार्य्य सिद्ध कर लिया। राजा की जान बचा ली, ग्रपने प्यारे ग्रतराम से विवाह भी कर लिया, परन्तु ग्रब वह उसी दुःख की मारी

फिर निराश होकर अपनी सास के पास लौट आई। घर पहुंचते ही उसे अतराम का ऐसा पत्र मिला जिसको पढ़कर उसके हृदय के दो टूक हो गये। एक पत्र उसकी मां के लिए था जिसमें लिखा था—

"मैंने तुम्हारे पास तुम्हारी पतोहू को भेज दिया है। उसने राजा को चंगा और मुझे नष्ट कर दिया। मैंने उसके साथ विवाह तो कर लिया परन्तु पतिवत् व्यवहार नहीं किया और मैंने इस "नहीं" को अनन्त बनाने की शपथ की है। आपको मालूम होगा कि मैं भाग गया, इसलिए मैं पहले ही से सूचना दिये देता हूं। यदि संसार में जगह हुई तो मैं हमेशा उससे दूर रहूंगा। प्रणाम के पश्चात्

आपका अभागा पुत्र—अतराम।"

एक पत्र हैलीना के लिए था जिसका तात्पर्य यह था—

"यदि तुझे मेरे हाथ की अंगूठी मिल जाय जिसे मैं कभी नहीं उतारूंगा तो उस समय तू मुझे अपना पति कह सकती है परन्तु यह समय कभी नहीं आने का।"

इसके आगे लिखा था—

"जब तक मेरी स्त्री नहीं। फ्रान्स में मेरा कुछ भी नहीं।"

अतराम की माता ने हैलीना को आदर के साथ लिया और बड़े प्यार से रक्खा परन्तु हैलीना को शोक के मारे कल न पड़ी। उसकी सास ने बहुत कुछ समझाया कि "अब मेरा लड़का तो चला गया, तुम्हीं लड़के के समान हो! तुम ऐसी गुणवती हो कि ऐसे बीस लड़के तुम्हारी खुशामद करें।" परन्तु हैलीना को सन्तोष न आया। वह टकटकी लगाकर पत्र की ओर देखती और कहती "हाय! मेरा स्वामी चला गया। सदा के लिए चला गया।" फिर वह कहने लगी "हाय! मेरा स्वामी केवल मेरे कारण देश-विदेश मारा-मारा फिरता है। ऐसी दशा में मुझे धिक्कार है अगर मैं यहां रहूं। इसलिए अब मैं यहां से चली जाऊंगी।"

दूसरे दिन प्रातःकाल रोसिलन की रानी जब उठी तो उसने अपनी पतोहू को घर में न पाया। थोड़ी देर पीछे उसे एक पत्र मिला जिसमें लिखा हुआ था कि मेरे इतनी जल्दी चले जाने का कारण यह है कि मुझे यह जानकर बड़ा शोक हुआ है कि मेरा पति मेरे कारण घर नहीं आ सकता।

इस अपराध के प्रायश्चित्त के लिए मैं सेण्ट-प्राण्ड के मन्दिर में यात्रा करने जा रही हूं। आप अपने पुत्र को लिख दीजिए कि जिस स्त्री से तुम इतनी घृणा करते थे वह चली गई।"

व्रतराम पेरिस छोड़कर फ्लोरेंस चला गया और वहां के राजा की सेना में भरती हो गया। वहां उसने युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई और बड़े पद पर नियुक्त होने को ही था कि उसे अपनी माता का पत्र मिला कि "अब तुम चले आओ, क्योंकि हैलीना यहां से चली गई।" यह देखकर व्रतराम ने घर को लौटने का विचार किया। उसी समय हैलीना एक यात्रिणी के वेष में फ्लोरेंस पहुंच गई।

सेण्ट-प्राण्ड के मन्दिर का रास्ता फ्लोरेंस होकर था। जब हैलीना फ्लोरेंस में आई तो उसने सुना कि यहां एक ऐसी विधवा है जो सेण्ट-प्राण्ड के जाने वाले यात्रियों को बड़े सत्कार से रखती है। इसलिए वह उसके पास चली गई। इस वृद्धा ने उसको आदर से लिया और कहा कि अगर तुम राजा की सेना को देखना चाहो तो मेरे घर में से देख सकती हो। एक तुम्हारे देश का आदमी भी इस सेना में है जिसका नाम व्रतराम है। हैलीना ने व्रतराम का नाम सुनकर निमंत्रण स्वीकार कर लिया और अपने पति के दर्शन करने के लिए उसके साथ चली गई। वृद्धा ने पूछा—

"क्या यह रूपवान् नहीं है?"

हैलीना—हां, मुझे यह पसन्द है।

इस समय इस विधवा की लड़की डायना ने कहा—

"कैसा ही हो, पर यहां इसने बड़ी वीरता दिखाई है। मैंने सुना है कि वह फ्रान्स से भाग आया है, क्योंकि महाराजा ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह कर दिया था। क्या तुमको कुछ मालूम है?"

हैलीना—हां यह ठीक है।

डायना—प्रेम न करने वाले पति की स्त्री होने से अधिक कौन सा दुःख है?

इस प्रकार यह विधवा और हैलीना व्रतराम के विषय में बातचीत करने लगीं। इसके पश्चात् उसने यह भी सुना कि व्रतराम इस विधवा की लड़की डायना को बहुत चाहता है। और रात को आकर उसकी खुशामद

किया करता है कि गुप्त रीति से तुम मुझको अपने कमरे में आने दो। डायना एक योग्य और सुशिक्षित लड़की थी। यद्यपि इस समय उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी किन्तु वह एक कुलीन वंश की लड़की थी और उसकी माता ने बड़ी मेहनत करके उसे धार्मिक शिक्षा दी थी। इसलिए डायना ब्रतराम के फुसलाने में नहीं आई। डायना को यह मालूम था कि ब्रतराम एक विवाहित पुरुष है, ऐसे पुरुष से प्रेम करना अधर्म है। जिस रात को हेलीना इस विधवा के घर ठहरी हुई थी उस दिन ब्रतराम ने डायना की बड़ी खुशामद की क्योंकि वह उसके दूसरे दिन घर जा रहा था।

विधवा ने यह सब समाचार हैलीना से कह दिया और अपनी पुत्री के धार्मिक जीवन की बड़ी प्रशंसा की। अब हैलीना ने अपने पति की पुनः प्राप्ति का एक उपाय सोचा। उसने विधवा से कह दिया कि ब्रतराम की स्त्री मैं ही हूं। अपनी पुत्री से कह दो कि वह ब्रतराम को अपने कमरे में आने दे। मैं डायना के भेष में उससे मिलूंगी। विधवा को ऐसा करने में संकोच हुआ। तब हैलीना ने कहा—

"अगर आपको मेरे ब्रतराम की स्त्री होने में सन्देह हो तो मैं नहीं समझती कि किस प्रकार आपको निश्चय दिलाऊं। परन्तु इससे मेरे प्रयोजन की सिद्धि न हो सकेगी।"

विधवा—यद्यपि मेरी दशा इस समय सन्तोषजनक नहीं है। पर मैं एक कुलीन घर की हूं, और ऐसी बातें नहीं जानती। इसलिए ऐसे काम नहीं कर सकती, जिससे मेरे कुल के नाम में बट्टा लगे।

हैलीना—मैं भी यह नहीं चाहती। मेरा विश्वास करो। ब्रतराम मेरा पति है। मैंने ठीक-ठीक कह दिया है। आप एक काम कर सकती हो जिसमें आपकी बदनामी न होगी।

विधवा—वह क्या है?

हैलीना—ब्रतराम के पास एक अंगूठी है जो उसे अपने पूर्वजों से मिली है। इसको वह बहुमूल्य समझता है और अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता है। परन्तु अब उसका अनुराग आपकी पुत्री पर है। स्त्रियों के प्रेम में लोग अमूल्य से अमूल्य वस्तु दे डालते हैं। यदि डायना उस

अंगूठी को व्रतराम से ले ले और मुझे दे दे तो मैं बहुत कुछ धन तुमको दूंगी। इस समय केवल एक थैली रुपयों की देती हूं।

विधवा ने यह बात स्वीकार कर ली और अपनी पुत्री को बतला दिया कि किस प्रकार कार्य्य सिद्ध किया जावे। इस समय हैलीना ने किसी के हाथ व्रतराम से कहला भेजा कि हैलीना मर गई। क्योंकि उसने समझा कि अगर वह अपनी पहली स्त्री के मरने की खबर सुन लेगा तो अवश्य खुल्लमखुल्ला डायना से विवाह का प्रार्थी होगा और इस प्रकार उसे अंगूठी मिल जायगी।

उसी रात को व्रतराम डायना के पास आया और प्रेम की बातें करने लगा। उसने कहा—

"तुम देवी हो!"

डायना—नहीं। मैं डायना हूं।

व्रतराम—हां तो तुम देवी[1] ही हो। परन्तु तुम में प्रेम नहीं है। तुमको वैसा ही होना चाहिए जैसी तुम्हारी मां थीं जब तुमने जन्म लिया था।

डायना—वह उस समय धार्मिक थीं!

व्रतराम—ऐसा ही तुमको भी होना चाहिए।

डायना—मेरी माता का कर्त्तव्य था जैसा कि आपका अपनी स्त्री के साथ है।

व्रतराम—यह न कहिए। मैं उसको विवाह करने पर मजबूर था। परन्तु मैं आपसे स्नेह करता हूं, और सदा आपका सेवक रहूंगा।

डायना—हां, तुम उसी समय तक हमारे सेवक हो जब तक हम तुम्हारी सेवा करती हैं। पर जब तुमने हमारे फूल चुन लिये तो कांटों को हमारा ही हृदय विदीर्ण करने के लिए छोड़ जाते हो।

व्रतराम—मैं शपथ खाता हूं।

डायना—शपथ खाने से बात सच्ची नहीं हो सकती। बुरी बातों के लिए शपथ नहीं रखना चाहिए।

व्रतराम—प्रेम करना बुरी बात नहीं है। मैं झूठ नहीं कहता। प्यारी मुझे

---

१. डायना रोमन लोगों की एक देवी का नाम है।

अपना समझकर मेरे प्राण बचा लो, क्योंकि मैं प्रेमरोगी हूं।

डायना—अच्छा, इस अंगूठी को दे दो।

अतराम—मैं दे देता परन्तु दे नहीं सकता !

डायना—क्या, दे नहीं सकते ?

अतराम—हां, यह मेरे पूर्वजों की निशानी है। इसे खो देने से मुझे बहुत बड़ा अपयश होगा।

डायना—बस बस ! मेरा आत्म-गौरव भी इस अंगूठी से कम नहीं है। मेरा सतीत्व मेरे घर का रत्न है जिसे खो देने से मेरा बड़ा अपयश होगा। यह रत्न मेरे पूर्वजों की निशानी है।

अतराम—(अंगूठी देकर) लो ! अंगूठी लो। मैं, मेरा कुल, मेरा गौरव सब तुम्हीं हो।

डायना—अच्छा, आधी रात के समय मेरा दरवाजा खटखटाना ! मैं ऐसा प्रबन्ध रक्खूंगी कि मेरी माता को खबर न हो। तुम केवल एक घण्टे मेरे पास रह सकते हो। लेकिन देखो, बातें मत करना। मैं इन सब बातों का कारण फिर बतला दूंगी। रात के समय मैं एक और अंगूठी पहनकर आऊंगी और आपको दूंगी जिससे हम दोनों का सम्बन्ध भविष्यत् में मालूम हो सके कि मै तुम्हारी स्त्री हूं।

अतराम—तुमको पाकर मैंने स्वर्ग पा लिया। ज्यों ही मेरी पहली स्त्री मर जायगी, मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूंगा।

डायना—अच्छा अब जाओ।

आधी रात के समय जब अंधेरा हो गया, अतराम डायना के कमरे में गया। वहां हैलीना डायना के भेष में उसका स्वागत करने को तैयार थी। अतराम को यह मालूम नहीं था कि हैलीना ऐसी चतुर है। इसका कारण यह मालूम होता है कि उसने कभी हैलीना के गुणों पर विचार नहीं किया था। हैलीना रूप मे डायना से कुछ कम नहीं थी। परन्तु जिस चीज़ को मनुष्य रोज देखा करते हैं वह उनको साधारण प्रतीत होती है। दूसरी बात यह है कि हैलीना को अतराम से ऐसा अगाध प्रेम था कि वह चुपके-चुपके उसके मुंह की ओर देखा करती थी और कभी कुछ कहती नहीं थी। कहावत है कि गहरे पानी के ऊपर बुलबुले नहीं उठा करते, इसी प्रकार

गहरे प्रेम में बातों की कमी हुआ करती है। यह भी एक कारण था, जिससे व्रतराम का चित्त हैलीना की ओर कभी आकर्षित न हो सका। परन्तु अब हैलीना को ज़रूरत थी कि अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए यथाशक्ति उपाय करे। इसलिए उसने व्रतराम से ऐसी प्रेम की बातें कीं और चुपके-चुपके ऐसा स्नेह प्रकट किया कि व्रतराम मोहित हो गया। चलते समय हैलीना ने अपनी अंगूठी दी और सवेरा होने से पहले ही वहा से विदा कर दिया!

हैलीना ने अब डायना और उसकी माता से पेरिस चलने को कहा। क्योंकि हैलीना के प्रयोजन की सिद्धि के लिए उन दोनों का वहां पर होना आवश्यक था। जब वे वहा पहुंची तो उनको मालूम हुआ कि फ्रान्स-नरेश व्रतराम की माता से भेंट करने के लिए रोसिलन को गया है। इसलिए उन सबने जल्दी से रोसिलन को प्रस्थान कर दिया।

महाराजा का स्वास्थ्य अब तक बहुत अच्छा था। वह हैलीना का बड़ा कृतज्ञ था और उसे याद करता था। इसलिए जब वह रोसिलन पहुंचा तो हैलीना के लुप्त होने की खबर सुनकर बहुत शोकातुर हुआ और कहने लगा—

"देखो, हैलीना तुम्हारे घर का एक रत्न थी, जिसे तुम्हारे लड़के ने अपनी मूर्खता से नष्ट कर दिया। उसने हैलीना की कदर न जानी।"

व्रतराम की माता ने, महाराजा की अप्रसन्नता का खयाल करके कहा—

"महाराज! क्षमा कीजिए। वह लड़का है। लड़कपन में उजड्डपन होता ही है। उसने अपराध किया।"

महाराज—यद्यपि मुझे उस पर बहुत क्रोध आया। और मैं उसे मारने का अवसर खोजता रहा, परन्तु अब मैंने उसे क्षमा कर दिया है।

लेफ़ू—महाराज! उस लड़के ने आपके साथ, अपनी माता के साथ और अपनी स्त्री के साथ बड़ा अन्याय किया परन्तु सबसे बड़ा अन्याय अपने साथ किया कि उसने ऐसे स्त्री रत्न को खो दिया जिसके रूप पर बड़ों-बड़ों की आंखें मोहित हो गईं, जिसकी बातों ने भले-भले कानों को आकर्षित कर लिया और जिसके गुणों ने अच्छों-अच्छों से

प्रशंसा करली।

महाराज ने अब व्रतराम को बुलाया जो अभी फ्लोरेंस से आया हुआ था, और उसे क्षमा कर दिया। परन्तु जिस समय यह बातें हो ही रही थीं, महाराज को फिर क्रोध आ गया, क्योंकि उन्होंने व्रतराम के हाथ में वह अंगूठी देखी जो उसने हैलीना को दी थी। हैलीना कह गई थी कि मैं इसे अपने हाथ से कभी पृथक् न करूंगी। हां, जब मुझ पर कोई विपत्ति पड़ेगी तो अवश्य इसे किसी के हाथ आपकी सेवा में भेज दूंगी। अब वह क्रोध में आकर व्रतराम से कहने लगा—

"अरे दुष्ट! क्या तूने हैलीना से वह चीज भी ले ली जिसकी उसे बड़ी जरूरत थी।"

व्रतराम—यह उसकी अंगूठी नहीं है!

रानी—बेटे। मैंने उसे इसको पहने देखा था। वह इसे बहुत प्यार करती थी।

लेफू—मैंने भी देखा था।

व्रतराम—महाराज! आपको धोका हुआ है। यह अंगूठी कभी उसके पास नहीं थी। फ्लोरेंस में एक स्त्री ने अपने कमरे से यह अंगूठी मेरे पास फेंक दी थी। उसके चारों ओर एक कागज लिपटा हुआ था जिस पर उस स्त्री का नाम था। वह स्त्री बड़ी योग्य थी और उसने समझा कि मैं उससे प्रेम करूंगा। परन्तु जब मैंने अपने विवाह का हाल सुनाया तो वह स्त्री चुप हो गई और मुझसे फिर कभी अपनी अंगूठी न मांगी!

राजा—चाहे किसी ने दी हो, यह मेरी अंगूठी है, यह हैलीना की अंगूठी है। तुम ठीक बताओ कि तुमने उससे किस प्रकार यह अंगूठी छीनी। वह कहती थी कि या तो यह अंगूठी वह तुमको देगी, जब तुम उससे प्यार करोगे, और या वह इसे मेरे पास भेजेगी। सो बताओ तुमने यह अंगूठी कहां पाई?

व्रतराम—उसने इसे देखा तक नहीं।

राजा—झूठ बोलता है।

यह कहकर राजा ने अपने सिपाहियों द्वारा व्रतराम को पकड़वा लिया

क्योंकि उसे यह निश्चय हो गया कि व्रतराम अपनी स्त्री का घातक है।

उसी समय एक नौकर राजा के पास एक पत्र लाया और कहने लगा—"महाराज! फ्लोरेंस की एक स्त्री ने आपकी सेवा में यह प्रार्थना-पत्र भेजा है।"

राजा ने पढ़ा। उसमें यह लिखा हुआ था—

"रोसिलन के अधिपति ने सैंकड़ों शपथें खाईं कि जब मेरी स्त्री मर जायगी तो मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूंगा। मैं कहती हुई शरमाती हूं, परन्तु कहना पड़ता है कि इसी लालच से मैंने अपना सतीत्व नष्ट कर दिया। अब व्रतराम की स्त्री मर गई है। लेकिन यह पुरुष बिना मुझसे मिले हुए यहां चला आया है। आप कृपा करके मेरा विवाह कर दीजिए नहीं तो मेरा जीवन नष्ट हो जायगा और लोग इसी प्रकार स्त्रियों को नष्ट किया करेंगे।

आपकी आज्ञाकारिणी

डायना।"

जब राजा ने व्रतराम से इसका हाल पूछा तो उसने राजा के क्रोध से डरकर इनकार कर दिया। इस पर डायना अपनी माता सहित महाराज की सेवा में उपस्थित हुई और माता ने रोकर कहा—

"महाराज! आज मेरे कुल की नाक कट गई। आप हमारे साथ न्याय कीजिए।"

फिर डायना ने एक अंगूठी दिखलाकर कहा—

"महाराज! यह अंगूठी व्रतराम ने मुझे दे दी थी और मैंने इसके बदले एक अंगूठी दी थी। इससे प्रकट होता है कि मेरा कथन ठीक है।"

राजा ने हैलीना की अंगूठी दिखाकर कहा—

"क्या यही अंगूठी है?"

डायना ने उत्तर दिया कि "भगवन्, यही अंगूठी मैंने व्रतराम को दी थी।"

अब तो राजा ने समझा कि डायना भी हैलीना की अंगूठी का भेद जानती है। इसलिए उसने कहा—

"सच-सच बताओ कि तुमने यह अंगूठी कहां से पाई? नहीं तो अभी

एक-एक को प्राणदण्ड दूंगा।"

इस पर डायना ने उत्तर दिया कि "महाराज, मेरी माता को आज्ञा दीजिए कि उस जौहरी को ले आवे जिससे यह अंगूठी ली गई है।"

डायना की माता को आज्ञा दी गई और थोड़ी देर पीछे वह हैलीना को लेकर कमरे में आई।

राजा हैलीना को देखकर फूला न समाया और कहने लगा—

"अरे क्या मैं स्वप्न देख रहा हू ?"

हैलीना—नहीं महाराज ! नहीं ! (अतराम से) यह आपकी स्त्री की छाया मात्र है। नाम है, वस्तु नहीं !

अतराम—दोनों। दोनों। क्षमा कीजिए।

हैलीना—स्वामिन् ! जब मैं डायना के भेष में थी तो आप मुझ पर बड़े प्रसन्न थे। देखो, यह अंगूठी है और यह पत्र भी आप ही का है जिसमें आपने एक बार लिखा था कि अगर तुम मेरी अंगूठी प्राप्त कर लो तो तुम मुझे अपना पति कह सकती हो। यह सब हो गया !

अतराम—(राजा से) महाराज, अगर हैलीना मुझे समझा दे कि यह सब बातें किस प्रकार हुई तो मैं सदा इससे प्रसन्न रहूंगा।

हैलीना के लिए अब यह बात कुछ कठिन न थी। डायना और उसकी माता इसीलिए वहां आई हुई थीं। जब सब कथा आद्योपान्त कही गई तो सबको बड़ा हर्ष हुआ और हैलीना अपने प्यारे अतराम की चहेती रानी हुई।

राजा डायना से बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि उसने एक दुखिया स्त्री की सहायता की थी और उसने उसका विवाह भी एक योग्य और प्रतिष्ठित पुरुष से करा दिया !

छठा हेनरी

(पहला भाग)

(HENRY VI, PART I)

'पांचवें हेनरी' में यह वर्णन हो चुका है कि उसने न केवल फ्रान्स का राज्य ही ले लिया किन्तु फ्रान्स की राजकुमारी कैथरायन से भी विवाह कर लिया। इंग्लैण्ड में उस समय बड़ा आनन्दोत्सव मनाया गया और समस्त प्रजा अपने अपूर्व सम्राट् पर अभिमान करने लगी। परन्तु डौफिन अर्थात् फ्रांस के युवराज ने हेनरी से विरोध किया और इसलिए हेनरी को फ्रान्स जाना पड़ा। दो वर्ष तक युद्ध होता रहा। परन्तु इन युद्धों से पंचम हेनरी का स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया था इस कारण ३१ अगस्त, सन् १४२२ ई० को विन्सीनिस में उसका देहान्त हो गया।

हेनरी का शव इंग्लैण्ड में लाया गया और सब लोगों को इस अकाल मृत्यु पर बड़ा ही शोक हुआ क्योंकि पंचम हेनरी से पूर्व किसी राजा ने फ्रान्स पर इस प्रकार विजय न पाई थी। इसके समय में इंग्लैण्ड का यूरोप के अन्य देशों में बड़ा मान बढ़ गया था। परन्तु यह उन्नति केवल क्षणिक थी क्योंकि पिछले युद्धों में न केवल राजकोष पर ही खाली हो गया था किन्तु राजसेना भी वीर पुरुषों से वंचित हो चुकी थी। प्रायः सब बड़े-बड़े योद्धा मृत्यु-प्राप्त हो चुके थे। इसलिए हेनरी के मरते ही राज में गड़बड़ी मच गई। अभी उसका मृतक संस्कार भी न होने पाया था और लोगों के आंसू अभी सूखे तक न थे कि एक दूत ने यह कुसमाचार सुनाया कि अंगरेज़ी सेना परास्त हो गई और गाइनी, शेम्पेन, रीम्स, ऑर्लियन्स, पेरिस, गिसर्स और पोइक्टियर्स नामी प्रान्त उसके स्वत्व से निकल गये।

यह सुनकर अंगरेज़ी राजनेताओं को बड़ा दुःख हुआ! हेनरी की मृत्यु के पश्चात् उसका २ वर्ष का पुत्र छठे हेनरी के नाम से गद्दी पर बैठा

ग्रोर बैडफ़र्ड को राजकार्य्य का कर्त्ता नियत किया गया जैसा कि पंचम हेनरी ने मृतक-शय्या पर अपनी इच्छा प्रकट की थी।

बैडफर्ड ने जब यह दुःखमय वार्त्ता सुनी तो झट मे फ्रान्स को जाने की तैयारियां कर दी। उसी समय दूसरे दूत ने आकर खबर दी कि डौफ़िन चार्ल्स (फ्रान्स के युवराज) का रीम्स में राज्याभिषेक हो गया और ओर्लियन्स, ऐञ्जू तथा एलैंकन के जागीरदार उससे मिल गये। परन्तु सबसे बुरी बात जो सुनी गई वह यह थी कि अंगरेजों का एक बड़ा वीर योद्धा टाल्वट फ्रान्स में कैद हो गया। यह घटना इस प्रकार हुई कि १०वीं अगस्त को जब टाल्वट ग्रालियन्स नामी नगर से कुछ दूर पर पड़ा हुआ था उस पर अचानक शत्रु ने आक्रमण किया और उसे अपनी सेना को ठीक करने का अवकाश न मिला। तीन घण्टे तक घोर युद्ध हुआ जिसमें टाल्वट ने ऐसी वीरता दिखाई कि सैकड़ों शत्रु नरकधाम को पहुंचा दिये। उसे देखकर शत्रु-दल में हलचल पड गई और जिसका जिधर मुंह उठा भाग निकला। अगरेजी-सेना अपने योद्धा का नाम ले लेकर शत्रुगण को परास्त करने लगी। उस समय फ्रांस के पराभव में कुछ भी कसर नहीं रही थी परन्तु सर जौन फ़ाल्सटाफ़ नामी एक अंगरेजी सेनापति अपनी कायरता के कारण भाग निकला। और इसी अवस्था में पीछे से आकर एक फरांसीसी ने टाल्वट की पीठ में धोखे से एक ऐसी तलवार मारी कि वह गिर पडा और पकड लिया गया।

टाल्वट की वीरता पर सबको बड़ा भरोसा था और उसी के आश्रय पर अब तक अंगरेज लोग निश्चिन्त बैठे हुए थे, परन्तु अब सब लोग घबड़ा उठे और बैडफ़र्ड ने दश सहस्र सेना के साथ फ्रान्स को प्रस्थान कर दिया।

उस समय बचे-कुचे अगरेज ओर्लियन्स को लेने का प्रयत्न कर रहे थे। यद्यपि टाल्वट कैद हो चुका था परन्तु साल्सवरी अभी स्वतन्त्र था और उसने डौफ़िन का इस वीरता से सामना किया कि एक बार फिर उसे अपनी हार का निश्चय हो गया। साल्सवरी के सामने से भागकर उसने कहा—

"हाय ! मेरे आदमी कैसे कायर हैं। दुष्ट ! अधम ! यहां यह लोग मुझे अकेला शत्रुदल मे न छोड़ देते तो मैं कभी यहां से भागकर पीठ न दिखाता।"

रिगनियर नामी एक दूसरे सैनिक ने उत्तर दिया कि "सालसबरी बड़ा लड़ाकू है। वह इस प्रकार लड़ता है मानो अपने जीवन से थक गया है। दूसरे लोग भूखे शेरों की तरह हम पर टूट रहे हैं।"

एलेंकन—हमारे एक सजातीय विद्वान् ने तीसरे एडवर्ड की लडाई का वर्णन करते हुए लिखा है कि इंग्लैण्ड में वीर ही वीर उत्पन्न होते हैं जिनका एक आदमी हमारे दस वीरों को मार गिरा देता है। ऐसे पतले-दुबले मनुष्यों को देखकर कौन ऐसी आशा कर सकता था कि इनमें इतना बल है। क्या यह सब सैमसन[1] ही हैं।

डौफ़िन चार्ल्स[2] इस समय निराश हो गया और उसने ऑर्लियन्स छोड़ देने का इरादा किया परन्तु इस द्विविधा के समय जोन डार्क नामी एक लड़की वहां पर आई और कहने लगी कि मुझे स्वप्न हुआ है जिसमें मरियम[3] ने प्रेरणा की है कि मैं रणक्षेत्र में जाकर तुम्हारी सहायता करूं, तुम अवश्य विजय पाओगे।

चार्ल्स—मुझे तेरी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ है, परन्तु जब तक तेरे बल की जांच न कर लूं, तेरा विश्वास नहीं कर सकता। मैं तुझसे मल्ल-युद्ध करूंगा। यदि मैं हार गया तो तुझे अपनी सेना का सेनापति नियत कर दूंगा।

जेनडार्क—मैं तैयार हूं।

अभी जोन ने दो-तीन ही हाथ चलाये थे कि चार्ल्स चिल्ला उठा—"बस कर। बस कर! तू बड़ी बुरी तरह मारती है।"

जोन डार्क—ईसा की मां मेरी सहायता कर रही है।

---

१. सैमसन जोरा नामक नगर में मनोह का लड़का था। जिसको ईश्वर ने इतना बल दिया था कि वह शेर को फाड डालता था। एक समय जब उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ लिया तो उसने एक बड़े मकान के खम्भों को हिलाकर उन सबके ऊपर गिरा दिया और स्वयं भी मर गया। (देखो बाइबल Judges १२)
२. डौफ़िन का नाम चार्ल्स था।
३. मरियम ईसा मसीह की मां का नाम है।

चार्ल्स—कोई तेरी सहायता करता हो। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तू बड़ी प्रवीरा है, मैं तेरा राजा होना नहीं चाहता किन्तु मेरी यह इच्छा है कि तू मुझे अपना दास बना ले।

जोनडार्क—नहीं-नहीं! मेरा उद्देश्य पवित्र है। मैं तुझसे विवाह नहीं कर सकती। मुझे केवल विजय-प्राप्ति के लिए आज्ञा हुई है।

यह कहकर उसने डौफ़िन और समस्त सेना को ऐसा उत्तेजित किया कि वे फिर लड़ने पर कटिबद्ध हो गये। और अंगरेजों से जा भिड़े।

इसी समय टाल्बट बन्दीगृह से छुटकारा पाकर सालसबरी के पास जा पहुंचा। सालसबरी ने बड़े हर्ष के साथ उससे कहा—

"टाल्बट! टाल्बट! आप किस प्रकार छूट आये? मुझे आपको देखकर बड़ा हर्ष हुआ है।"

टाल्बट—बैडफ़र्ड के पास एक फ़रासीसी क़ैदी लार्ड पौण्टन था जिसके बदले में फरांसीसी लोगों ने मुझे मुक्त कर दिया। पहले वे मुझे एक साधारण पुरुष के बदले छोड़ देते थे। परन्तु मैंने इस बात को स्वीकृत नहीं किया क्योंकि इससे मेरा अपमान होता था और यश में बाधा पड़ती थी। मैंने कह दिया कि इस अपमान-युक्त छुटकारे से तो मृत्यु ही भली है।

सालसबरी—आपके साथ फरासीसियों ने कैसा व्यवहार किया?

टाल्बट—बहुत बुरा! उन्होंने मुझे बाजार में निकाला, तालियां बजाई गईं और अनेक प्रकार से अपमान किया गया। मैंने भी क्रोध के मारे हाथों से पत्थर उठाकर भीड़-भाड़ को भगा दिया। उन लोगों में मेरी वीरता की ऐसी धाक थी कि वह डरते थे कि कहीं मैं लोहे का शीकचा न तोड़ डालूं। इसलिए उन्होंने चुने हुए सिपाही बन्दूक लिये मेरे ऊपर नियत कर दिये कि यदि मैं हाथ-पैर हिलाऊं तो वे झट मुझे मार डालें।

सालसबरी—मुझे आपके इन कष्टों पर बड़ा खेद है, परन्तु हम लोग शीघ्र ही इसका बदला ले लेंगे।

अभी सालसबरी ने अपना कथन समाप्त भी नहीं किया था कि जोन डार्क से प्रेरित फरांसीसियों की एक गोली सालसबरी के ऐसी लगी कि एक आंख

और एक गाल बिल्कुल उड़ गया और वह बेहोश होकर धरातल में गिर पड़ा।

इतने में जोन डार्क शस्त्र धारण किये आ पहुंची और उसके सम्मुख समस्त अंगरेजी सेना तितर-बितर हो गई। यद्यपि टाल्बट बड़ी वीरता से लड़ा परन्तु उसका साहस व्यर्थ गया और अंगरेजों की हार हुई। वे ऑर्लियन्स को न ले सके और डौफ़िन चार्ल्स ने बड़े समारोह से जेनडार्क की महिमा के गीत गाये। नगर में उसी के नाम के जयजयकार होने लगा। रात भर विजयोत्सव मनाया गया।

थोड़ी देर पीछे बैडफ़र्ड अपनी सेना सहित बरगण्डी के साथ वहां आ गया। और जब इन सबने जोन डार्क की वार्ता सुनी तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने समझा कि इसके ऊपर कोई भूत आ गया है अथवा यह कोई जादूगरनी है जो एक गड़रिये की लड़की होने पर भी उसमें इतना बल है और ऐसे पराक्रम के साथ लड़ती है।

अब इन सबने विचार किया कि रात के समय जब फ़रांसीसी लोग उत्सव में संलग्न हो रहे हैं अचानक इन पर छापा मारना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए टालबट, बरगण्डी और बैडफ़र्ड नगर की दीवारों पर चढ़ गये और थोड़ी देर में नगर को ले लिया क्योंकि फ़रासीसी लोगों को इस आक्रमण की कुछ भी आशा न थी।

प्रातःकाल को फरासीसी लोगों ने टाल्बट के पकड़ने का एक और उपाय किया और ऑवर्न की रानी ने, जो एक प्रसिद्ध रमणी थी, टाल्बट को सहभोज के लिए निमंत्रित किया। टाल्बट को इसके छल-कपट का कुछ भी पता नहीं था इसलिए वह वहां चला गया परन्तु जब टाल्बट वहां पहुंचा तो उसे देखकर रानी अपने नौकर से कहने लगी—

"क्या यही टाल्बट है? क्या इसी ने फ्रान्स का इतना नाश कर दिया है? क्या यही मनुष्य है जिसके नाम से मातायें अपने बच्चों को चुप किया करती हैं? मैं समझती थी कि वह बड़ा भारी लम्बा-चौड़ा आदमी होगा। प्रतीत होता है कि किसी ने झूठ-मूठ उड़ा दिया है। यह तो छोटा सा है।"
टाल्बट—देवि! मैंने आपको व्यर्थ कष्ट दिया। आपको अवकाश नहीं है। इसलिए मैं यहां से जाता हूं।

रानी ने उस समय अपने नौकर द्वारा फाटकों मे ताला डलवा दिया। और कहने लगी—

"अब तुझे मैंने क़ैद कर लिया।"

टाल्वट—क़ैद ?

रानी—हां ! क़ैद ! तूने मेरे देश की बहुत हानि की है। इसीलिए मैंने तुझे यहा बुलाया था। बहुत दिनों से मेरे मकान में तेरी तसवीर टंगी हुई थी परन्तु अब तू स्वयं आ गया। अब मैं तेरे हाथ-पाव बांधकर डाल दूगी और तू मेरे देशवासियों को कुछ भी कष्ट न दे सकेगा।

टाल्वट—ओहो ! ओहो !

रानी—अरे दुष्ट ! तू हंस रहा है। देख तो अब तुझे रोना पड़ेगा।

टाल्वट—मुझे हंसी आ रही है कि श्रीमतीजी ने मेरे चित्र को कुछ और समझ लिया है जिसको आप दण्ड देना चाहती हैं।

रानी—क्या तू टाल्वट नही है ?

टाल्वट—मैं हूं !

रानी—तो क्या इस समय टाल्वट मेरे वश में नहीं है ?

टाल्वट—नही नही ! यह तो मेरा चित्र है। मेरा शरीर तो कुछ और ही है। यदि आप मेरे शरीर को देखतीं तो चकित हो जाती क्योंकि यह इतना वडा है कि आपके इस छोटे मकान में नही समा सकता।

रानी—यह तो असम्भव बात है।

टाल्वट ने इस समय बड़े ज़ोर से बिगुल बजाया जिसको सुनते ही उसके साथी जो किसी गुप्त प्रदेश में छिपे खड़े थे आ उपस्थित हुए और दरवाज़ा तोड़कर घर के भीतर घुस आये। अब टाल्वट कहने लगा—

"आपने देखा ! देवीजी ! मेरे हाथ-पांव ये हैं। जो शरीर अब तक आपके सम्मुख खड़ा था वह तो केवल टाल्वट का चित्र है।"

रानी यह देखकर घबरा गई और टाल्वट से क्षमा मांगी। अन्त में, उसने टाल्वट और उसके साथियों को सहभोज दिया। इस प्रकार अंगरेज़ लोग ओर्लियन्स की लड़ाई में जीत गये।

परन्तु चार्ल्स डौफ़िन और जोन डार्क अभी अंगरेज़ों को निकालने का उद्योग कर रहे थे। अंगरेज़ लोग उस समय रोयें नामी नगर में पड़े हुए थे।

चार्ल्स और जोन ने इस नगर को लेने का इरादा किया और व्यापारियों का भेष धारण करके नाज के बोरों के सहित रोयें के फाटक पर दस्तक दी। द्वारपालों ने पूछा—"तुम कौन हो?"

इन्होंने उत्तर दिया कि "हम दरिद्र व्यापारी हैं और अन्न बेचने आये हैं।" यह सुनकर फाटक खोल दिये गये। और यह लोग नगर में घुस गये। फाटक के खुलते ही फ़रांसीसी सेना घुस पड़ी। और टाल्बट तथा बरगण्डी को बड़ी कठिनाई हो गई। दैवगति और दुर्भाग्य से उस समय बैडफ़र्ड रोगग्रसित हो गया और उसके बचने की आशा न रही। टाल्बट आदि ने चाहा कि उसे किसी सुरक्षित स्थान में भेज दिया जाय, जहां वह युद्ध के कोलाहल से बच सके। परन्तु उसने न मानी और युद्ध जिस स्थान पर हो रहा था वहीं बैठा-बैठा सिपाहियों को उत्तेजित करता रहा। अन्त में जब फ्रान्स वालों को पराजय हुई और चार्ल्स तथा जोन रणक्षेत्र से भागने लगे तो बैडफ़र्ड के मन की शान्ति हुई और हर्षपूर्वक यह कहते हुए उसने प्राण त्याग दिये कि "अब शत्रु को पराभूत हुआ देखकर मुझे बड़ा सन्तोष है। अब मैं सुखपूर्वक मरता हूं।" युद्ध के पश्चात् अंगरेज़ों को अपने ऐसे वीर सेनापति की मृत्यु पर बड़ा शोक हुआ और रो-रोकर उसका मृतक संस्कार किया गया।

अब टाल्बट और बरगण्डी ने पेरिस की ओर कूच किया जिससे वे लोग फ्रान्स देश की राजधानी पर स्वत्व प्राप्त कर सकें। जोन डार्क ने ओर्लियन्स और रोयें में अपना काम बिगड़ा हुआ देखकर बरगण्डी को अपनी ओर मिलाने का उपाय किया। और यह बात सम्भव भी थी। क्योंकि बरगण्डी[१] फ्रांस का प्रान्त है जिसका शासक ड्यूक आफ़ बरगण्डी अंगरेज़ों से जा मिला था। जोन इसे फिर अपने देश की भलाई के विषय में समझाना चाहती थी। इसलिए जब बरगण्डी की सेना पेरिस को जा रही थी तो जोन डार्क ने मार्ग में बरगण्डी से कहा—

१. अंगरेज़ी में राजों को उनके देश के नाम से पुकारते हैं जैसे "बरगण्डी" बरगण्डी के ड्यूक को कहते हैं। "यार्क" यार्क के ड्यूक को इत्यादि।

"वीर बरगण्डी ! फ्रान्स की आशा तुझी से है ! हे बरगण्डी ! मैं तेरी दासी कुछ प्रार्थना करना चाहती हूं।"

बरगण्डी—संक्षेप से कहो ! मुझे अवकाश नहीं है।

जोन डार्क—अपने देश की ओर देख ! उपजाऊ फ्रान्स की ओर देख ! सोच तो सही कि यह सुन्दर नगर किस प्रकार विनष्ट हो रहे हैं। अरे ! अपने देश की ओर उसी दृष्टि से देख जिस प्रकार एक माता अपने मरते हुए पुत्र की ओर देखती है। देख तूने स्वयं अपनी तलवार से अपने ही देश का हृदय किस प्रकार विदीर्ण किया है। अपनी इस तलवार को दूसरी ओर फेर और उन लोगों को मार जो तेरे देश को नष्ट कर रहे हैं। भला अपने देश के मित्रों के साथ इस प्रकार अहित क्यों करता है ? अपनी मातृभूमि के रक्त की एक बूंद से तुझे शत्रु के रुधिर की नदियों की अपेक्षा अधिक पीड़ा होनी चाहिए। इसलिए हे बरगण्डी ! अब लौट आ और अपने देश की रक्षा कर।

बरगण्डी—(मन में)—अरे ! इसके शब्दों में बड़ी आकर्षण-शक्ति है।

जोन डार्क—अगर तू ऐसा नहीं करता तो लोगों को तेरी उत्पत्ति और वंश में सन्देह है। क्योंकि तू ऐसी जाति से जा मिला है जो केवल स्वार्थ के लिए तुझे चाह रही है। यदि टाल्बट जीत गया तो सिवा हेनरी के और कौन राजा होगा ? और क्या उस समय तू इसी प्रकार रहने पायेगा।"

जोन डार्क ने बरगण्डी को ऐसा फुसलाया कि अन्त में वह पिघल गया और अंगरेजों को छोड़कर डौफिन चार्ल्स से आ मिला।

फ्रान्सदेशीय घटनाओं को हम इस समय यहीं छोड़ते हैं और इंग्लैण्ड के विषय में कुछ वर्णन करते है। ऊपर लिखा जा चुका है कि पंचम हेनरी की मृत्यु के पश्चात् उसकी इच्छानुसार बैडफ़र्ड राज-कार्य्यकर्त्ता नियत किया गया। परन्तु वह प्रायः फ्रान्स के झगड़े में फंसा रहा और उसे इंग्लैण्ड में रहने का कुछ भी अवकाश न मिला। उसकी अनुपस्थिति में उसका भाई ग्लोस्टर छठे हेनरी का संरक्षक नियत हुआ।

परन्तु सम्राट् की बाल्यावस्था में इंग्लैण्ड के मंत्रिगण और अन्य प्रसिद्ध पुरुष आपस में लड़ने लगे। ग्लोस्टर और विंचेस्टर के लार्ड पादरी

में बहुत कुछ वैमनस्य हो गया। उन दोनों ने बारी-बारी से बालक इंगलैण्ड-नरेश को अपनी रक्षा में लेने का उद्योग किया। इस प्रकार कई बरसों तक घोर युद्ध होता रहा। इन दोनों के नौकर जहां कहीं मिल जाते परस्पर लड़ाई करते। एक समय इनके झगड़ों से तंग आकर लन्दन के लॉर्ड मेयर (मुख्याधिष्ठाता) ने उनको शस्त्र धारण करने से वर्जित कर दिया। परन्तु वे लोग अब पत्थर इकट्ठे करके अपनी जेबों में भरने लगे और एक दूसरों को मारने लगे। उधर थोड़े दिनों पीछे ग्लोस्टर ने पार्लियामेंट (राजसभा) में विंचेस्टर के पादरी के विरुद्ध अभियोग चलाने की तैयारियां कीं। पादरी ने उस कागज को जिसपर ग्लोस्टर ने, उसके दोष लिखे हुए थे, भरी सभा में राजा के सम्मुख फाड़ डाला। छठा हेनरी अब यद्यपि बड़ा हो गया था और राजसभा में आया करता था परन्तु उसके अशक्त होने के कारण और लोग उनसे डरते नहीं थे और सब अपने को स्वतंत्र समझते थे। पादरी के कागज फाड़ डालने पर ग्लोस्टर और पादरी में बहुत झगड़ा हुआ। हेनरी बिचारे ने बहुत कुछ इनसे प्रार्थना की कि जब आप लोग ही, जो कि राज-काज के करने वाले हैं, आपस में लड़ेंगे तो राज का क्या हाल होगा। पहले तो उन्होंने अपने राजा की बात न सुनी। परन्तु जब हेनरी ने बहुत कुछ उनसे विनती की तो वे मान गये। और थोड़े दिनों के लिए झगड़ा मिट गया।

परन्तु इस समय एक और झगड़ा खड़ा हो रहा था। उसकी कथा इस प्रकार से है। चतुर्थ हेनरी का हाल लिखते हुए यह दिखलाया जा चुका है कि तीसरे एडवर्ड के दूसरे बेटे लाइनल क्लेरेन्स के वंश का एक पुरुष मार्टीमर ग्लेण्डोवर और हैरी हॉटस्पर के साथ मिल जाने के कारण कैद कर लिया गया था। यह मार्टीमर अभी तक बन्दीगृह में ही सड़ रहा था। और हेनरी चतुर्थ तथा उसके लड़के पंचम हेनरी ने उसे इस भय से मुक्त नहीं किया था कि कहीं वह राज लेने का प्रयत्न न करे। पांचवें हेनरी के समय में इसके बहनोई कैम्ब्रिज ने इस को राज देने का कुछ प्रयत्न किया था परन्तु उसका भांडा शीघ्र ही फूट जाने के कारण कैम्ब्रिज को झट से प्राण-दण्ड दे दिया गया। कैम्ब्रिज का पुत्र रिचार्ड जो मार्टीमर का भांजा था और जो उसके पुत्ररहित होने के कारण उसका उत्तराधिकारी

था इस समय गुप्त रीति मे अपना सिर उठाने की कोशिश कर रहा था।

जब मार्टीमर का अन्त समय आया तो उसने रिचार्ड को अपने संरक्षकों द्वारा बुलवाया और कहा—

"मेरी वृद्धावस्था के संरक्षको ! मुझ मरते हुए को इस स्थान पर बिठा दो ! जिस प्रकार बहुत कष्टों के पश्चात् मनुष्य कुछ आराम लेता है इसी प्रकार बहुत दिनों के बन्धन के पश्चात् मेरे शरीर का हाल है। श्वेत केश कह रहे हैं कि अब मार्टीमर का अन्त समय है। ये आँखें उन दीपकों की भांति, जिनका तेल समाप्त हो जाता है, धुंधली हो रही हैं। कन्धे बोझ के मारे दुर्बल हो रहे हैं, पैर अब शरीररूपी भार को धारण करने मे असमर्थ हैं। अब मृत्यु के सिवा और किसी वस्तु की इच्छा नही है। क्या मेरा भाजा रिचार्ड आ रहा है ?"

इसी समय रिचार्ड आ गया, और मार्टीमर ने बड़े प्रेम से उसे छाती से लगाया। अब रिचार्ड ने अपने मामा से कहा—

"मामा ! आज मुझसे और सोमर्सेट से झगड़ा हो गया। जब हम सब बैठे हुए थे तो वह मेरे पिता के लिए अपशब्द कहने लगा। मुझे अपने पिताजी का कुछ भी हाल ज्ञात नही है नही तो अवश्य मैं उसका सिर तोड़ डालता। इसलिए मामाजी बताइए कि मेरे पिताजी को क्यों प्राण-दण्ड दिया गया ?"

मार्टीमर—इसका कारण वही था जिसने मुझे कैद कराया। और जिससे मेरा युवावस्थारूपी पुष्प इस वन्दीगृह में पड़ा-पड़ा सूख गया।

रिचार्ड—स्पष्ट बताइए। मैं नही समझा।

मार्टीमर—यदि मेरी सांस चलती रही तो कहने का प्रयत्न करूंगा। इस वर्तमान सम्राट् के पितामह चतुर्थ हेनरी ने अपने भतीजे रिचार्ड (द्वितीय) को गद्दी से उतार दिया। उसके समय में उत्तरी देश के नार्थम्बरलैण्ड और उसके पुत्र होटस्पर ने राजा के अत्याचारों से तंग आकर मुझे गद्दी पर बिठाने का इरादा किया। मैं वास्तव मे राज्य का अधिकारी था क्योंकि तीसरे एडवर्ड के पहले पुत्र का लड़का रिचार्ड संतानरहित मर चुका था। अब राज मेरा था क्योंकि मेरी माता एडवर्ड के दूसरे लड़के लाइनल के वंश की थी। चतुर्थ हेनरी

· · ाता गाण्ड एडवर्ड का तीसरा लड़का था इसलिए मेरे होते हुए उसका अधिकार नहीं था। परन्तु मेरे सहायक कृतकार्य नहीं हुए और मुझे कैद कर लिया गया। पंचम हेनरी के समय में तेरे पिता कैम्ब्रिज ने, जो यार्क के वंश से था, मेरी बहन अर्थात् तेरी माता से विवाह किया और मेरे कष्टों पर दया करके एक सेना इकट्ठी की। परन्तु भेद खुल जाने पर उसको प्राण-दण्ड दिया गया। इस प्रकार आज मार्टीमर-कुल की समाप्ति होती है।

रिचार्ड—तो मेरे पिताजी के साथ अत्याचार किया गया!

मार्टीमर—हां। अब तू मेरा उत्तराधिकारी है। परन्तु सोच-समझकर काम करना चाहिए क्योंकि वर्त्तमान राजवंश बड़ा प्रबल हो रहा है।

अब मार्टीमर तो मर गया। और रिचार्ड ने राजसभा में जाकर यार्क की जागीर के लिए प्रार्थना की। छठे हेनरी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और रिचार्ड को यार्क का ड्यूक बना दिया गया।

इसके पश्चात् ग्लोस्टर ने राजा से प्रार्थना की कि "आप फ्रान्स को चलिए। वहां आपका राज्याभिषेक होना चाहिए। क्योंकि आपको देखकर फ्रान्स के विद्रोही लोग शान्त हो जायेंगे।" ऐसा विचार करके हेनरी ने फ्रान्स को प्रस्थान किया।

पेरिस पहुंच कर हेनरी का अभिषेक हुआ। ग्लोस्टर, सोमर्सेट और रिचार्ड यार्क उसके साथ थे। अभिषेक के पश्चात् यार्क और सोमर्सेट में फिर झगड़ा हो गया। परन्तु हेनरी ने बड़ी मुश्किल से उनको शांत किया, पर यद्यपि उनके मन में शत्रुता की आग भड़कती रही। इसी समय हेनरी ने सुना कि बरगण्डी डौफ़िन से जा मिला। इस पर हेनरी को बड़ा क्रोध आया और टाल्बट को उसके दमन के लिए भेजा। परन्तु कई बातों का विचार करके वह स्वयं इंग्लैण्ड को लौट गया।

टाल्बट थोड़ी सी सेना लेकर बोर्डो की ओर चला। और नगर के के फाटक को खुलवाने का इरादा किया। परन्तु नगरवासी पहले से ही अंगरेज़ों के विरुद्ध हो रहे थे। उन्होंने टाल्बट की बात न सुनी और छठे हेनरी का स्वत्व अंगीकार नहीं किया। अभी टाल्बट फाटक पर ही खड़ा था कि डौफ़िन की सेना ने आकर उसको घेर लिया।

टाल्वट के पास बहुत थोड़ी सेना थी और शत्रु का सामना करने में असमर्थ थी। उसने यार्क और सोमर्सेट से सहायता की प्रार्थना की परन्तु ये दोनों आपस में झगड़ा कर रहे थे, भला टाल्वट को कैसे सहायता भेजते। यार्क ने उद्योग भी किया कि किसी प्रकार कुछ सेना टाल्वट के पास पहुंचा दी जाय। परन्तु सोमर्सेट ने डाह के मारे सेना भेजने में देर कर दी। क्योंकि हेनरी ने रिचार्ड यार्क को फ्रांस का अध्यक्ष नियत किया था और यदि विजय हो जाती तो इसमें रिचार्ड यार्क का ही नाम होता।

इस समय टाल्वट का पुत्र जौन अपने पिता से मिलने गया, टाल्वट ने सात वर्ष से इसे देखा न था और अब अपना अन्त निकट समझकर उसने इसे इसलिए बुलाया था कि युद्ध-विद्या में कुछ शिक्षा दे सके। जौन अपने पिता से ऐसे समय मिल सका जब टाल्वट शत्रु के बीच में घिरा हुआ था। इसलिए उसने अपने पुत्र से कहा कि जल्दी से भाग जा।

जौन—क्या मैं आपका पुत्र नहीं हूं ? क्या मैं भाग जाऊंगा ? यदि आप मेरी माता से प्रेम करते हो तो मुझे रण मे भगाकर उसका अपमान न कीजिए क्योंकि मुझे भागता हुआ देखकर लोग कहेंगे कि यह टाल्वट का पुत्र नही है।

टाल्वट—अरे भाग भाग ! यदि मैं मर गया तो तू बदला ले सकेगा।

जौन—जो इस प्रकार भागेगा वह बदला कब ले सकेगा ?

टाल्वट—अगर हम दोनों रहे तो दोनों मरेंगे।

जौन—तो आप जाइए। मैं यही रहूंगा। आपके मरने से अधिक हानि होगी। मुझे कोई नही जानता इसलिए मैं मरा भी तो क्या ? आपकी मृत्यु से सब निराश हो जायेंगे। आपके पराक्रम इतने है कि एक बार भागने से उनमे कमी नही आ सकती। परन्तु यदि पहली ही लड़ाई से मैं भाग गया तो बडे अपयश की बात है। यदि आप भागेंगे तो लोग कहेंगे कि यह नीतिज्ञता है। परन्तु मेरे भागने को लोग भय से ही सम्बद्ध करेंगे। मरना अच्छा है परन्तु अपयश के साथ जीना भला नही।

टाल्वट—मैं तुझे भागने की आज्ञा देता हूं।

जौन—मैं भाग नही सकता। मैं लड़ाई करूंगा।

टाल्वट—यदि तू भाग जायगा तो तेरे पिता का नाम जीवित रहेगा।

जौन—केवल अपयश के साथ।

टाल्वट—पिता की आज्ञा से भागने में कुछ दोष नहीं है।

जौन—आप तो मर जायेंगे फिर इसकी साक्षी कौन देगा। यदि मृत्यु का ऐसा ही भय है तो हम दोनों भाग चलें।

टाल्वट—फिर मेरे साथियों का क्या हाल होगा? मेरी श्वेत डाढ़ी में धब्बा लग जाएगा।

जौन—फिर मेरी युवावस्था में क्यों धब्बा लगे? मैं आपके पास से नही जा सकता। चाहे ठहरिए चाहे जाइए!

टाल्वट—अच्छा, यहीं रहेंगे। और यदि भागेंगे तो साथ-साथ स्वर्ग को भागेंगे।

अब युद्ध हुआ और बाप बेटे दोनों इस वीरता से लड़े कि शत्रु के दांत खट्टे हो गये। यदि सोमर्सेट और यार्क की सहायता पहुंच जाती तो फ़रांसिसियों की अवश्य हार होती। परन्तु अकेला टाल्वट क्या-क्या करता। जौन का युद्ध दर्शनीय था। वह जिस ओर से निकल जाता था शत्रु के दल के दल खाली हो जाते थे और काई सी फट जाती थी। एक बार जोन-डार्क ने जौन से कहा कि "आ मुझसे लड़।" परन्तु उसने बड़े अभिमान के साथ उत्तर दिया कि "अंगरेज़ वीर अवला स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाते" यह कहकर वह उसकी ओर से चला गया। एक बार शत्रु ने उसे घेर लिया परन्तु टाल्वट ने आकर उसे बचा लिया। इस प्रकार घण्टों लड़ते-लड़ते यह दोनों थक गये और पहले जौन मारा गया और फिर टाल्वट घायल होकर मर गया। इन दोनों की मृत्यु पर फ़रांसीसियों को बड़ी खुशी हुई क्योंकि अब अंगरेजों के दल में कोई ऐसा बाक़ी नही रहा था जो विजय पा सके। यद्यपि कई वीर पुरुष अभी जीवित थे। परन्तु फूट और डाह के मारे उनकी वीरता निकम्मी हो रही थी। अब चार्ल्स फ्रान्स का राजा हो गया!

परन्तु अभी लड़ाई बन्द न हुई और एँजीर्स के युद्ध में रिचार्ड यार्क ने जोन डार्क को पकड़ लिया। फरांसीसी सेना भाग गई और किसी ने इस युवती के छुड़ाने का प्रयत्न नहीं किया जिसने फ्रान्स को अंगरेजो के स्वत्व

से मुक्त किया था।

अगरेज़ों ने इस अबला के साथ बड़ा अत्याचार किया। उस पर जादूगरनी होने का दोष लगाया गया ! उस समय जादू करना बड़ा दोष माना जाता था और जिस पर इसका सन्देह होता था उसको जीते जी जला दिया जाता था। यही हाल जोन डार्क के साथ हुआ। बहुत से पादरियों ने बैठकर उसको इसी दण्ड के योग्य ठहराया और बहुत बड़ी अग्नि जला कर उसे उस पर फेंक दिया। इस प्रकार इस प्रवीरा कुमारी का जीवन समाप्त हुआ जिसने अपने पराक्रमों से अच्छे अच्छों के दांत खट्टे कर दिये थे। फरासीसियों की कृतघ्नता और अंगरेज़ों के निर्दयीपन ने एक विचित्र आत्मा को संसार से उठा लिया।

इसी युद्ध में ऐन्जू के राजा की लड़की मारगरेट अगरेजी योद्धा सफ़ोक के हाथ लग गई। मारगरेट बड़ी रूपवती थी। उसके रूप को देखकर सफ़ोक का चित्त उसकी ओर आकर्षित हो गया। परन्तु उसका विवाह हो चुका था इसलिए मारगरेट के साथ सम्बन्ध करना असम्भव था। अतएव उसने यह विचार किया कि इस युवती को इंग्लैण्ड की महारानी बनाना चाहिए। मारगरेट ने इस बात को स्वीकार कर लिया। और उसके पिता से इस शर्त पर सन्धि हो गई कि उसको ऐन्जू का राज लौटा दिया जाय।

सफ़ोक ने इंग्लैण्ड में आकर राजा हेनरी को इसके लिए राज़ी किया। उधर रोम से पोप ने भी आग्रह किया कि फ्रान्स और इंग्लैण्ड के युद्ध में सहस्त्रों ईसाइयों का रक्तपात होता है। इसलिए सन्धि हो जानी चाहिए।

यद्यपि ऐसे समय में जब इंग्लैण्ड के हाथ से फ्रान्स का बहुत सा भाग निकल चुका था और यार्क को जोन के मर जाने से फिर कुछ आशा हो चली थी कि गया हुआ राज फिर लौट आवे उसे यह सन्धि अच्छी नहीं लगी, परन्तु उसका कुछ बस नहीं चला। वह कहने लगा—

"क्या हमारे सब कष्टों का यही परिणाम निकला। क्या इतने सेनापतियों तथा योद्धाओं की मृत्यु के पश्चात् जिन्होंने केवल अपने देश के हित के लिए अपने शरीरों को बलिदान कर दिया, हम इस अपमान के साथ सन्धि करेंगे। क्या झूठ, कपट, छल तथा विद्रोह के कारण हमने फ्रान्स के बड़े-बड़े प्रान्त हाथ से नहीं दे दिये, जिनको हमारे पूर्वजों ने रक्त बहा

कर जीता था। शोक ! शोक !"

परन्तु अब हो क्या सकता था। यह सन्धि केवल पोप के आग्रह से की गई थी और विंचेस्टर का लाट पादरी, जो ग्लोस्टर का बड़ा शत्रु था, पोप के इस प्रस्ताव का कारण था। चार्ल्स डौफ़िन भी यही चाहता था कि जिस प्रकार हो सके सन्धि हो जाय, क्योंकि इस समय मुख्य-मुख्य प्रदेश उसके हाथ लग चुके थे। इसलिए इस शर्त पर सन्धि हुई कि चार्ल्स डौफ़िन सदा हेनरी का मित्र रहेगा और उसकी आज्ञा पालन किया करेगा और कभी इंग्लैण्ड-नरेश से वैर न करेगा। यह शर्त केवल नाम मात्र थी क्योंकि सब प्रसिद्ध स्थान चार्ल्स के हाथ में थे, अंगरेजों को कर लेने का भी अधिकार न था। अब सिवा कैले के और कोई फ़ान्स देशीय स्थान उनके पास नहीं रहा था। परन्तु अब यहां उस युद्ध की समाप्ति हो गई जो एडवर्ड (तृतीय) के समय में आरम्भ हुआ था और जिसको शताब्दीय युद्ध (Hundred Years' War) कहते हैं।

छठे हेनरी की मारगरेट के साथ शादी हो गई और इसके बदले में ऐन्जू और मेन नामी दो प्रान्त उसके पिता को दे दिये गये।

छठा हेनरी

(दूसरा भाग)
(HENRY VI, PART II)

हम प्रथम भाग मे बता चुके हैं कि छठे हेनरी और डौफ़िन चार्ल्स में सन्धि हो गई। अब चार्ल्स डौफिन नही रहा किन्तु फ्रान्स का सम्राट् हो गया। मारगरेट सफ़ोक के साथ इंग्लैण्ड में आई जिसका हेनरी ने बड़े समारोह से स्वागत किया और भरी सभा में सब मंत्रियो ने अपनी इस नई महारानी को प्रणाम किया। सबने उसकी चिरायु के लिए असीस दी। इसके पश्चात् सन्धिपत्र पढ़ा गया जिसमे लिखा हुआ था—

"फ्रान्स-नरेश चार्ल्स और इंग्लैण्ड-नरेश हेनरी के एल्ची विलियम डीलापूल सफोक[1] के मध्य मे यह सन्धिपत्र लिखा गया कि हेनरी का विवाह नेपिल्स, सिसली और जरुसलम के राजा की पुत्री मारगरेट से हो और ३०वी मई से पहले पहल वह इग्लैण्ड की महारानी बनाई जाय। और ऐन्जू और मेन जो पहले इसके पिता के अधीन थे फिर उसे लौटा दिये जायं। और मारगरेट हेनरी के खर्च पर इंग्लैण्ड को लाई जाय। यह भी निश्चित हुआ कि उसे कुछ यौतुक न दिया जाय।"

हेनरी ने इस पर बड़ा हर्ष प्रकट किया और डीलापूल को, जो अब तक सफोक का [2]मार्क्विस ही था, ड्यूक बना दिया और मारगरेट को महारानी बनाने के लिए बड़ी-बड़ी तैयारियां की। परन्तु इस विवाह तथा सन्धि से हेनरी के मन्त्रिगण खुश नही हुए। ग्लोस्टर, साल्सबरी, वारिक विंचेस्टर का पादरी और रिचार्ड यार्क ये सब लोग लन्दन के राजमहल

---

१. सफ़ोक का पूरा नाम विलियम डीलापूल था।
२. मार्क्विस का पद ड्यूक से नीचा होता है।

में बैठे-बैठे इस प्रकार वार्त्तालाप करने लगे—

ग्लोस्टर—इंग्लैण्ड के मंत्रिगण ! राज्य के स्कन्ध ! मैं आपके सम्मुख अपना दुःख प्रकाशित करता हूं। यह केवल मेरा ही दुःख नहीं है किन्तु आपका और समस्त जाति का दुःख है। क्या मेरे भाई ने वीरता, धन तथा सेना इस फ्रान्स की विजय के लिए अर्पण नहीं की थी ? क्या उसने जाड़े और गर्मी में इसी के लिए कष्ट नहीं सहे ? क्या बेडफोर्ड ने इसीलिए अपने प्राण नहीं दिये ? क्या वीर यार्क, साल्सबरी वारिक, आप लोगों ने फ्रान्स और नारमण्डी के रणक्षेत्रों में घाव नहीं खाये ? यदि ऐसा है तो क्या इन सब कष्टों का यही परिणाम होना था ? हम लोग रात-दिन कोशिश करते-करते थक गये कि किसी प्रकार फ्रान्स हाथ से न जाये। परन्तु इन सबका परिणाम यह हुआ कि अपयश-सूचक सन्धि करनी पड़ी। क्या इस विवाह से भी अधिक घृणित कोई बात हो सकती थी जिसने हम सबकी वीरता को पानी में मिला दिया। आज कई पीढ़ियों की वीरता का चिह्न फ्रान्स से मिट गया।

साल्सबरी—ईसा की सौगन्ध ऐन्जू और मैंने नारमण्डी की कुंजियां थीं और यह हाथ से चली गईं।

वारिक—मुझे तो रोना आता है कि अब फ्रान्स को कभी न ले सकेंगे। हाय ! जो देश मैंने घाव खाकर जीते थे, वे बात की बात में दे दिये गये।

यार्क—यह सब इसलिए है कि अब सफ़ोक की चलती है। मेरी चलती होती तो मैं कभी इस सन्धि का अनुमोदन न करता चाहे मेरी बोटी-बोटी उड़ जाती। मैंने किसी इतिहास में नहीं पढ़ा कि किसी इंग्लैण्ड-नरेश का विवाह बिना यौतुक के हुआ हो। यहां हमारा सम्राट् अपनी रानी के बदले अपने देशों को बेच रहा है।

ग्लोस्टर—विवाह क्या है हास्य है। देखो सफ़ोक इसके मार्ग-व्यय का कितना रुपया मांगता है। इससे तो वह फ्रान्स में ही क्यों न रह गई।

विंचेस्टर का पादरी—आप बहुत गर्म हो रहे हैं। क्या आप नहीं जानते कि हमारे सम्राट् की यही इच्छा थी ?

ग्लोस्टर—मैं आपकी इच्छा को भले प्रकार समझता हूं। न केवल मेरी बात ही आपको बुरी लगती है किन्तु मेरी उपस्थिति से भी आपको दुःख होता है। अभिमानी पादरी! आपके चेहरे से क्रोध के चिह्न प्रकट हो रहे हैं। यदि मैं यहां रहा तो न जाने क्या मुंह से निकल जायें, इसलिए जाता हूं।

ग्लोस्टर तो चला गया अब विंचेस्टर के पादरी ने कहा—

"ग्लोस्टर महाशय बड़े क्रोध में जाते हैं। आप लोग जानते हैं कि इसको मुझसे वैर है। न केवल मुझसे ही किन्तु आप सब से। यह हेनरी के वंश में निकटतम है और सन्तानाभाव की अवस्था में उसका उत्तराधिकारी भी यही है। इसीलिए यह सब कोप है। आप सब लोग सावधान रहिए और इसकी बातों में न आइए, यद्यपि साधारण लोग इसको "भला! भला!" कहते हैं परन्तु मुझे तो इससे भय होता है।"

बकिंघम—यदि ऐसा है तो हम लोग इसको राजा का संरक्षक न रहने देंगे। हम सब इसको निकाल बाहर करेंगे।

यह कह कर बकिंघम और पादरी सफोक की सम्मति लेने के लिए चले गये। रिचार्ड यार्क अपने मन में सोचने लगा कि "ऐन्जू और मेन तो हाथ से निकल ही गये, पेरिस छिन गया। नारमण्डी भी गया ही सा है। लोगों ने सन्धि कर ली। हेनरी ने एक राजा की कन्या के लिए दो राज्य दे दिये परन्तु इसमें इनका क्या दोष है। हराम का माल हराम में जाता है। यह लोग अपना क्या दे रहे हैं! है सो सब मेरा है। लुटेरे लोग अपनी लूट को बड़ी उदारता से व्यय करते हैं। इष्ट-मित्रों को खिलाते हैं। रण्डी-मुण्डियों को लुटाते हैं। बिचारा माल वाला हाथ पर हाथ धर कर रोता है। यही रिचार्ड[1] यार्क का हाल है। मुझे एक दिन फ्रान्स मिलने की आशा थी। वह तो जाती रही। अब इंग्लैण्ड लेने की कोशिश करनी चाहिए।" यह विचार कर उसने इरादा किया कि आपस के झगड़ों से लाभ उठावे। उसे विश्वास था कि ग्लोस्टर आदि में अवश्य झगड़ा होगा।

१. हम प्रथम भाग में दिखा चुके हैं कि राजगद्दी वास्तव में रिचार्ड यार्क की थी (देखो मार्टीमर का वार्तालाप)।

थोड़े दिन पीछे फ्रान्सदेशीय प्रान्तों के अध्यक्ष पद के लिए झगड़ा हुआ। पहले बेडफ़र्ड फ्रान्स का अध्यक्ष था। दो आदमी अर्थात् सोमरसेट और यार्क इस पद के इच्छुक थे। ग्लोस्टर यार्क की ओर था परन्तु सफ़ोक सोमर्सेट को चाहता था ! हेनरी ने कहा—

"महाशयो ! मेरे लिये तो जैसा यार्क वैसा सोमर्सेट। जो चाहे अध्यक्ष हो मुझे कुछ नहीं कहना।"

यार्क—यदि मैंने फ्रान्स में कोई अयोग्य कार्य किया हो तो आप मुझे अध्यक्ष नियत न कीजिए।

सोमर्सेट—यदि मैं इस पद के अयोग्य हूं तो यार्क को अध्यक्ष कर दिया जाय ! मैं उसके अधीन रहूंगा।

वारिक— चाहे आप योग्य हो या अयोग्य ! यार्क को अध्यक्ष होना चाहिए।

विंचेस्टर का पादरी—वारिक ! अपने बड़ों को बोलने दे।

वारिक—रणक्षेत्र में पादरी बडे नही होते।

साल्सबरी—अच्छा बताइए, सोमर्सेट को क्यों अध्यक्ष होना चाहिए ?

रानी मारगरेट—क्योंकि राज यही चाहते हैं।

ग्लोस्टर—महाराज स्वयं इतने बड़े हैं कि अपनी इच्छा प्रकट कर सकते है। राज-काज में स्त्रियो की आवश्यकता नहीं।

मारगरेट—अगर महाराज बड़े है तो आपके संरक्षक होने की क्या आवश्यकता है ?

ग्लोस्टर—महारानी ! मै राज का संरक्षक हूं। और महाराज की इच्छानुसार इस पद को छोड सकता हूं।

सफ़ोक—तो छोड़ क्यों नही देते ? तुम्ही अब तक राज कर रहे हो। तुम्हारे शासन मे देश की बडी अवनति हुई है। तुम्हारे ही शासन में डौफिन ने फ्रान्स का इतना भाग ले लिया। और सब प्रसिद्ध पुरुष आज तुम्हारे दास बन रहे हैं।

विंचेस्टर का पादरी—तूने प्रजा को लूट लिया और धर्म[1] धन नष्ट कर दिया।

सोमर्सेट—और राज-कोष तेरे मकान और तेरी स्त्री के बहुमूल्य कपड़ों की भेंट हो गया।

मारगरेट—और तूने नगर के नगर फ्रान्स में शत्रु के हाथ बेच दिये।

सफ़ोक—मैं सिद्ध करूंगा कि यार्क इस पद के लिए सबसे अनुचित मनुष्य है।

यार्क—मैं ही क्यों न कह दूं। सबसे पहली अयोग्यता तो यही है कि मैं तेरी खुशामद नहीं कर सकता। दूसरी बात यह कि अगर मैं इस पद पर नियत भी हो गया तो सोमर्सेट धन और सेना मेरी सहायता को न भेजेगा और डोफिन रहा-सहा देश भी ले लेगा। यही हाल तो पेरिस का हुआ था।

बहुत झगड़े के पश्चात् सोमर्सेट फ्रान्स के अंगरेजी प्रान्तों का अध्यक्ष नियत हुआ।

अब ग्लोस्टर के अधःपतन की बारी आई। यद्यपि ग्लोस्टर राजभक्त था परन्तु उसकी स्त्री एलीनर ऐसी न थी। वह लेडी मैकबिथ की भांति इग्लैण्ड की महारानी होना चाहती थी। एक दिन जब ग्लोस्टर अपने घर में बैठा हुआ कुछ सोच-विचार कर रहा था तब एलीनर ने कहा—

"स्वामिन्, किस सोच में हो! आज आपका सिर पके स्वेत की भांति क्यों झुक रहा है। आज आपकी आख पृथ्वी पर क्यों लगी हुई है? आप क्या देख रहे हैं? क्या आपकी दृष्टि हेनरी के राजमुकुट पर है। यदि ऐसा है तो प्रयत्न कीजिए और राजमुकुट धारण कीजिए। हाथ बढ़ाइए और मुकुट उतार लीजिए। हम तुम दोनो इंग्लैण्ड पर राज करेंगे।

ग्लोस्टर—प्यारी! यदि तुम अपने पति से प्रेम करती हो तो ऐसे विचारों को अपने अन्तःकरण से दूर कर दो! ईश्वर न करे कि अपने महाराज से मैं विरोध करूं मेरे दुःख का कारण भयानक स्वप्न

---

१. वह कर जो धर्मसंस्था (Church) को ओर से प्रजा पर धर्मार्थ के लिए लगाया जाता है।

है जो मैंने रात देखा है। मैंने देखा कि मैं संरक्षण से पृथक् कर दिया गया और सफ़ोक और सोमर्सेट मेरे स्थानापन्न हो गये।

एलीनर—यह कुछ भी नहीं है। मैंने रात यह देखा कि मैं और तुम राज-मुकुट पहने हुए बैठे हैं और हेनरी तथा मारगरेट हमको प्रणाम कर रहे हैं।

ग्लोस्टर—एलीनर ! एलीनर ! ऐसे विचारों को दूर कर। क्या तू अपना और अपने पति का नाम विद्रोहियों में लिखाना चाहती है ? हे ईश्वर ! मेरी रक्षा कर।

यह कहकर ग्लोस्टर तो चला गया परन्तु एलीनर अपनी सी कोशिश करती रही। उसने सगुन लेने वालों को बुलाया जिन्होंने कहा कि "हेनरी मारा जायेगा।" फिर उसने सफ़ोक के विषय में पूछा। उन्होंने सगुन विचार कर कहा कि "समुद्र के बीच में उसकी मृत्यु होगी।" सोमर्सेट के सम्बन्ध में सगुन यह निकला कि वह नगर छोड़कर बराबर वनवास करे। एलीनर इस सगुन को निकलवा रही थी बकिंघम ने उसकी बातें सुन ली और राजा हेनरी से सम्पूर्ण वृतान्त कह दिया।

अब क्या था मारगरेट तो पहले से ही उसके विरुद्ध हो रही थी। उसने सफ़ोक से कई बार कह दिया था कि जिस प्रकार हो सके ग्लोस्टर के संरक्षण से महाराज को मुक्त करना चाहिए। भरी सभा में एलीनर पर विद्रोह का अपराध लगाया गया। और जीवन पर्यन्त के लिए मान टापू में क़ैद कर दी गई।

इसके पश्चात् हेनरी ने ग्लोस्टर को संरक्षक पद से अलग कर दिया और स्वतन्त्र हो गया। इस प्रकार ग्लोस्टर ने जो स्वप्न देखा था वह ठीक हो गया। और उसके अध:पतन में केवल इतनी ही कसर रही थी कि अभी उसके प्राणों पर हस्तक्षेप नहीं किया गया। परन्तु अब उसकी भी बारी आई। हेनरी ने बेरी नामी नगर में राजसभा की और ग्लोस्टर को बुलाया। जिस समय ग्लोस्टर ने निमंत्रण की सूचना पाई उसी समय उसका माथा ठनकने लगा। क्योंकि इस सभा के करने में उसकी सम्मति नहीं ली गई। वह समझ गया कि अवश्य दाल में कुछ काला है। बेरी में राजसभा हुई। राजा, रानी, विंचेस्टर का पादरी, सफ़ोक, यार्क, बकिंघम

और अन्य प्रतिष्ठित पुरुष बैठे हुए थे। उनके सामने राजा ने कहा—

"ग्लोस्टर अभी नहीं आये। वह तो कभी पीछे नहीं रहते थे। न जाने क्या कारण हुआ ?"

मारगरेट—क्या तुम देखते नहीं हो कि थोड़े दिनों से उसकी क्या दशा हो रही है। उसका मुंह कैसा चमकता जाता है। और वह कैसा अभिमानी होता जाता है। हम उसे उस समय से जानते हैं जब वह आज्ञा-पालन में तत्पर रहता था। क्या आपने देखा नहीं था, कि टेढ़ी आख होते ही उसका सिर झुक जाता है। और समस्त सभा उसकी राजभक्ति की प्रशसा करती थी। परन्तु अब उसका हाल और है। प्रातःकाल को सब लोग प्रणाम-दण्डवत् किया करते हैं परन्तु यदि हम ग्लोस्टर को मिल जायं तो वह नाक-भौं चढ़ा लेता है। और उचित प्रणाम भी नहीं करता। छोटे पिल्लो के गुर्राने का कोई खयाल नहीं करता परन्तु शेरों की धाड़ से बड़े-बड़े लोग डर जाते हैं। आप जानते हैं कि ग्लोस्टर कोई छोटा आदमी नहीं है जिसके क्रोध का कोई खयाल न किया जाय। पहले तो वह वंश के खयाल से आपसे निकटतम हैं। यदि दुर्भाग्यवश आपको कुछ हो जाय तो वह झट गद्दी पर चढ़ बैठेगा। इसलिए उसके विचारों को देख मुझे तो यही उचित मालूम होता है कि आप उसे अपने पास न आने दीजिए और अपने मन के भावों को उसपर प्रकट न कीजिए। उसने खुशामद से सर्वसाधारण के हृदय को आकर्षित कर लिया है और मुझे भय है कि यदि कहीं उसने सिर उठाया तो सब लोग उसे सहायता देंगे। अभी तो बेटी बाप के है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। विद्रोह की जड़ें अभी गहरी नहीं जमीं। परन्तु यदि इनके उखाड़ने का प्रवन्ध न किया गया तो विद्रोहरूपी वृक्ष अपने विषैले फल दिये बिना न रहेगा। सफ़ोक, वकिंघम और यार्क! मैं आप लोगों से सविनय पूछती हूं कि यदि मेरा कहना असत्य है तो मुझे ठीक रास्ते पर लाइए।

सफ़ोक—महारानी जी ने ठीक कहा है। यदि मुझे आज्ञा दी जाती तो मैं भी आपके ही कथन को कहता। इसकी स्त्री तो महाराज के मारने

का ही प्रयत्न कर रही थी। वह अपने किये को पहुंच गई। परन्तु अब ग्लोस्टर से सावधान रहना चाहिए। गहरी जगह में नदी बिना किसी कोलाहल के बहती है। जब लोमड़ी मेमने को पकड़ती है तो भौंकती नहीं। यही हाल ग्लोस्टर का है। न जाने इस चुप्पे के मन में क्या-क्या बातें काम कर रही हैं।

विंचेस्टर का पादरी—क्या उसने नियम-विरुद्ध छोटे-छोटे दोषों के लिए लोगों को प्राण-दण्ड नहीं दिया?

यार्क—और क्या अपने संरक्षण के समय में उसने फ्रान्स भेजने के लिए प्रजा पर अनुचित कर नहीं लगाया जिसको उसने कभी नहीं भेजा और जिसके कारण नगर के नगर विरुद्ध हो गये?

बकिंघम—यह दोष तो बहुत तुच्छ है। अभी इनसे भी बड़े-बड़े अपराध हैं जिनसे ग्लोस्टर का हृदय कलंकित है और जिनको आप लोग नहीं जानते।

हेनरी—महाशयो! मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूं कि आप मुझसे इतना प्रेम रखते हैं और मेरे मार्ग से कण्टक-निवृत्ति की कोशिश करते हैं। परन्तु मेरा अन्तःकरण यही कह रहा है कि ग्लोस्टर निर्दोष है। वह इतना कोमल-हृदय है कि उसके आत्मा में मेरे अहित की बात नहीं आ सकती। वह तो हंस के समान अपराध-रहित है।

मारगरेट—इस अज्ञान से अधिक हानिकारक क्या हो सकता है? आप उसे हंस कहते हैं। परन्तु उसने वास्तव में हंस के पर लगा लिये हैं, उसकी आन्तरिक दशा बगले के समान है। छली पुरुष इसी प्रकार अपने छलों को छिपाया करते हैं। हमारा भला इसी में है कि इस दुष्ट को अलग कर दिया जाय।

इस समय सोमर्सेट आया और उसने यह दुसमाचार सुनाया कि फ्रान्स के रहे-सहे प्रान्त भी हाथ से निकल गये! इसके पश्चात् ग्लोस्टर आया और कहने लगा—

"महाराज की जय हो! श्रीमान् मुझे क्षमा करें। आने में कुछ देर हो गई।"

सफ़ोक—नहीं ग्लोस्टर! आप जल्दी आये हैं। यदि आप राजभक्त होते

तो अवश्य हम आपसे देरी की शिकायत करते। परन्तु अब मैं आपको विद्रोह के कारण पकड़ता हूं।

ग्लोस्टर—मुझे इससे कुछ भी भय नहीं है। क्योंकि शुद्ध-हृदय मनुष्य कभी नहीं डरते। शुद्ध से शुद्ध नदी भी इतनी शुद्ध नहीं होती जितना मेरा अन्तःकरण विद्रोह से शुद्ध है। मुझ पर कौन दोषारोपण कर सकता है?

यार्क—आप पर यह दोष लगाया गया है कि फ्रान्स में आपने रिश्वत ली और सेना को वेतन नहीं दिया जिससे महाराज की सेना पराजित हो गई।

ग्लोस्टर—कौन है जो यह बात कहता है? मैंने कभी सेना को वेतन से वंचित नहीं किया! और न कभी एक पाई तक रिश्वत ली। ईश्वर जानता है कि मैं इंग्लैण्ड के हित के लिए रातों-रात जागते हुए विचार करता रहा हूं। यदि मैंने एक पैसा भी अनुचित रीति से लिया हो तो ईश्वर न्याय के समय मुझे दण्ड दे। यही नहीं मैंने बहुत सा अपना रुपया सेना को केवल इसलिए दे दिया कि कहीं प्रजा पर अधिक कर न लगाना पड़े। और कभी इस रुपये को मांगा तक नहीं।

विंचेस्टर का पादरी—यही कथन आपका हितकर है।

ग्लोस्टर—ईश्वर जानता है कि मैं सत्य कहता हूं।

यार्क—अपने संरक्षण के समय आपने अपराधियों को ऐसे कठोर दण्ड दिये कि इंग्लैण्ड कठोरता के लिए बदनाम हो गया!

ग्लोस्टर—सब लोग जानते हैं कि यदि मेरे शासन का कोई दोष था तो नम्रता! अपराधी के अश्रुपात पर मेरा हृदय पिघल जाता था। हां, मनुष्य-हत्या के बदले मैं अवश्य प्राण-दण्ड देता था।

सफ़ोक—श्रीमन्, इन दोषों का उत्तर तो आप सरलता से दे सकते हैं, परन्तु आप पर तो इनसे भी घोरतर अपराध लगाये गये हैं जिनसे आपका जल्दी छुटकारा नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपको पकड़कर पादरीजी के हवाले करता हूं।

हेनरी—लार्ड ग्लोस्टर! मुझे पूर्ण आशा है कि आप इन दोषों को असत्य सिद्ध कर देंगे, क्योंकि मेरा अन्तःकरण कह रहा है कि आप निर्दोष हैं।

ग्लोस्टर—महाराज ! यह समय बड़ा बुरा है। ऐश्वर्य की इच्छा ने शुभ गुणों को छिपा रक्खा है। लोगों से दया का भाव उठ गया। श्रीमान् के देश मे न्याय का अभाव हो गया। मैं जानता हूं कि यह सब मेरे प्राण लेना चाहते हैं। यदि मेरी मृत्यु से इस देश में शान्ति हो जाय तो मैं बड़ी खुशी से प्राण देने को उद्यत हूं ! परन्तु मेरी मृत्यु इन लोगों के अत्याचारों की भूमिका है। पादरी की लाल-लाल आंखें मेरे कथन को पुष्ट कर रही हैं। सफ़ोक की चढ़ी हुई भौंहें उसके बैर-भाव को प्रकट कर रही हैं; बकिंघम की वाणी उसके अन्तःकरण को दिखा रही है और यार्क की इच्छा मेरी जान लेने की है। और हे महारानी जी ! आपने बिना किसी कारण के मेरे सिर पर अनेक दोष आरोपण कर दिये हैं। मैं यह नहीं चाहता कि झूठे साक्षी इकट्ठे किये जायं। लोकोक्ति है कि "कुत्ते को मारने के लिए लकड़ी मिल ही जाती है।"

पादरी—महाराज ! इसकी गालियां असह्य हो रही हैं। यदि आपके रक्षकों को इस प्रकार कोसा जाय और कोसने वाले से कुछ न कहा जाय तो न जाने क्या परिणाम हो !

सफ़ोक—क्या इस दुष्ट ने महारानी जी को झूठा कहकर उनका अपमान नहीं किया ?

मारगरेट—परन्तु मैं दुःखी मनुष्य को आज्ञा देती हूं कि जो चाहे सो कहे।

ग्लोस्टर—ठीक कहा ! मैं अवश्य दुःखी हूं।

बकिंघम—यह तो बातें बनाकर दिन भर बिता देगा। इसलिए पादरीजी ! इसे पकड़ लीजिए।

ग्लोस्टर—आज हेनरी प्रबल होने से पूर्व ही अपने सहारे को नष्ट किये देता है। आज भेड़िये गड़रिये को भेड़ों के पास से भगाये देते हैं। हेनरी ! आज मुझे अपना भय नहीं, किन्तु तेरे प्राणों का भय है, क्योंकि ये भेड़िये पहले तुझे ही काटेंगे।

अब ग्लोस्टर को तो लोग पकड़कर ले गये। परन्तु हेनरी शोक के मारे उठने लगा। मारगरेट ने कहा "क्या आप राजसभा से आते हैं ?"

हेनरी—हा मारगरेट ! मेरा हृदय शोक से पूरित हो रहा है। मेरे आंसू निकले आ रहे हैं। मेरा शरीर दुःख से ग्रसित हो रहा है। क्योंकि अशान्ति से अधिक और क्या दुःख हो सकता है। ग्लोस्टर ! मुझे तो तू सच्चा और राजभक्त मालूम होता है। परन्तु हा ! कैसे बुरे ग्रह आये हैं कि ये सब लोग, यहां तक कि महारानी मारगरेट भी तेरी जान लेना चाहती है। तूने इनका कुछ नहीं बिगाड़ा। जिस प्रकार क़साई बछड़े को बांधते हैं और यदि वह भागता है तो उसे मारते हैं इसी प्रकार ये लोग तेरे साथ व्यवहार करते हैं। हाय ! मैं तो यही कहूंगा कि ग्लोस्टर सच्चा राजभक्त है।

यह कहकर हेनरी तो सभा से उठ गया, परन्तु बाकी लोगों ने निश्चय कर लिया कि ग्लोस्टर को मार डालना चाहिए। पहले तो नियमानुसार उस पर अभियोग चलाने का विचार हुआ। परन्तु मारगरेट इससे सहमत न हुई। क्योंकि उसे डर था कि हेनरी ग्लोस्टर को बचाने की कोशिश करेगा। इसलिए यह सलाह हुई कि उसे गुप्त रीति से मरवा डालना चाहिए। इस विचार के अनुकूल सफ़ोक ने घातकों द्वारा उसे मरवा डाला।

इसी समय यह भी खबर मिली कि आयर्लैण्ड के लोगों ने सिर उठाया है और बहुत से अंगरेज राजपुरुषों को मार डाला। उनके दमन के लिए यार्क बहुत सी सेना के साथ भेजा गया। यार्क इस काम से बहुत खुश हुआ, क्योंकि इसकी इच्छा किसी तरह राज्य लेने की थी। उसने यह भी इरादा किया कि कैण्ट के एक प्रसिद्ध पुरुष केड के द्वारा वह इंगलैण्ड में विद्रोह मचावे और अवसर मिलने पर अपनी सेना सहित आकर हेनरी को राजगद्दी से च्युत कर दे।

जब हेनरी को यह पता लगा कि ग्लोस्टर मारा गया तो उसे बहुत शोक हुआ। यद्यपि सफ़ोक और मारगरेट उसकी हत्या को छिपाने लगे, परन्तु राजा को विश्वास हो गया कि यह काम पादरी और सफोक की सलाह से हुआ है। उसकी मृत्यु को सुनते ही राजा मूर्छा खाकर गिर पड़ा। जिस समय उसकी आंख खुली तो सफ़ोक उससे कह रहा था, "महाराज ! सन्तोष कीजिए।" हेनरी ने उत्तर दिया, "अरे सफ़ोक ! क्या तू मुझे सन्तोष दिलाता है। अरे ! अपने विष को मीठी बातों से क्यों छिपाता है?

इन हाथों से मुझे मत छू; क्योंकि यह मुझे साप के समान काटे खाते हैं। और तू मुझे मत देख; क्योंकि तेरी आंखों से मुझे डर लगता है। हाय तूने ग्लोस्टर को मार डाला।"

मारगरेट—आप सफोक को क्यों कहते हैं? यद्यपि सफ़ोक और ग्लोस्टर में शत्रुता थी परन्तु सफ़ोक को उसकी मृत्यु पर शोक है। यदि आज ग्लोस्टर जी जाय तो मैं रोते-रोते अपनी आंखें फोड़ दू।

जिस समय हेनरी इस प्रकार दुःख प्रकट कर रहा था, ग्लोस्टर की मृत्यु की खबर नगर में फैल रही थी। समस्त प्रजा ग्लोस्टर को प्यार करती थी। लोगों को पता लग चुका था कि पादरी और सफोक ने उसे मरवा डाला है। इसलिए वे सब इकट्ठे होकर राजमहल पर आये और साल्सबरी और वारिक के द्वारा राजा को संदेशा भेजा कि या तो सफोक को अभी प्राणदण्ड दे दिया जाय या उसे सदा के लिए देश से निकाल दिया जाय। नहीं तो हम अभी द्वार तोड़कर सफ़ोक को निकाल लेंगे और पत्थरों से उसका सिर कुचल देंगे। जिस समय हेनरी यह सोच रहा था कि क्या किया जाय, उस समय लोगों की भीड़ राजमहल के दरवाजे पर कोलाहल कर रही थी। अन्त में हेनरी ने सफोक को देश-निकाला दे दिया। मारगरेट ने उसकी बहुत सिफ़ारिश की, परन्तु हेनरी ने उनकी बात न सुनी और हुक्म दे दिया कि यदि सफोक परसों तक इंग्लैण्ड में पाया गया तो उसका सिर काट लिया जायगा। इस प्रकार ग्लोस्टर के घातकों में से एक तो देश से निकल गया। अब दूसरे का हाल सुनिए।

विंचेस्टर का पादरी ग्लोस्टर की मृत्यु के पश्चात् ही उन्मत्त हो गया। ईश्वर ने स्वयं ही उसे दण्ड देना चाहा। वह आत्म-अनुताप के मारे चिल्लाने लगा। राजा और अन्य पुरुष उसके पलंग के पास पहुंचे, परन्तु उसने किसी को नहीं पहचाना और ग्लोस्टर की मृत्यु के विषय में बकवाद करता रहा। उसकी अन्त समय की बातचीत यह प्रकट कर रही थी कि निस्सन्देह ग्लोस्टर की मृत्यु का कारण वही था। अन्त में राजा ने कहा—

"पादरी! ईश्वर से क्षमा मांग और अपने हाथों को जोड़" परन्तु इस पादरी का जीवन ऐसा पापमय था कि अन्त समय ईश्वर का नाम भी उसके मुंह से न निकला और उसके हाथ भी आकाश की ओर न उठे। वह—

इसी दुःख में समाप्त हो गया। हेनरी पर इसकी मृत्यु का बड़ा प्रभाव पड़ा और जब वारिक ने कहा "कि इस बुरी मौत से मालूम होता है कि इसने कितने पाप किये थे।" तो राजा ने उत्तर दिया "हम कुछ नहीं कह सकते। क्योंकि वारिक ! हम सब पापी है।"

सफ़ोक को भी फ्रान्स मे ईश्वर ने सुरक्षित न रहने दिया। क्योंकि थोड़े ही दिनो मे वह क़ैद कर लिया गया, और एक नाव पर लोग उसे कैण्ट मे ले आये, जहा वह अपने शत्रु विटमोर के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यह सगुन ठीक हो गया कि सफोक समुद्र मे मरेगा !

हम ऊपर कह चुके हैं कि यार्क ने आयलैण्ड को जाते समय कैण्ट के एक मनुष्य केड को विद्रोह के लिए उभार दिया था। इसलिए अब उसने बहुत से आदमियो को इकट्ठा कर लिया और लन्दन पर चढ़ाई करने की तैयारी करली। उसके दल मे बहुत से गवार मिल गये और केड ने उनके हृदयों को बहुत सी विचित्र आशाओं से भर दिया। उसके साथियो में डिक नामी क़साई और स्मिथ नामी जुलाहा भी था। इनके अतिरिक्त बहुत से नीच जातियो के आदमी थे। उसने अपने लिये एक गढन्त यह गढी कि मेरा बाप लाइनल क्लेरेंस का पुत्र था, जिसे बालकपन मे कोई चुराकर ले गया था, इसलिए उसने राज (विश्वकर्मा) का काम करना आरम्भ किया, और कैण्ट मे रहने लगा ! इस अद्भुत वंशावलि के द्वारा उसने अपने को राज का अधिकारी प्रकट किया और अपने साथियो से कहा कि अगर मैं राजा हो जाऊंगा तो अन्न बड़ा सस्ता कर दूंगा। सब लोग समानता से रहेंगे। ऊंच-नीच मे कुछ भेद न रहेगा। सबने यह सुनकर केड महाराज के जय-जयकार बोले। केड ने इसके उत्तर मे कहा—

"सज्जनो, मैं आपको धन्यवाद देता हू। मेरे राज मे रुपये के सिक्के न होंगे, क्योंकि रुपयों की आवश्यकता ही न होगी। सब मेरा सिर खायंगे। मैं सबको एक से वस्त्र बनवा दूंगा, जिससे सब लोग भाई के समान रहें और मुझे अपना राजा कहे।"

डिक—सबसे पहले हम वकीलो को मारेंगे।

केड—हा हा ! यह जरूर होगा। कैसे अन्याय की बात है कि निर्दोष भेड़ की खाल से कागज बनाया जाय जिस पर लिखकर लोग अपने भाइयों

का सत्यानाश करें। लोग कहते हैं कि मक्खी डंक मारती है, पर मैं कहता हूं कि मोम डंक मारता है क्योंकि मैंने एक बार एक चीज पर मुहर करदी और मुझे कष्ट उठाना पड़ा।

इस प्रकार के मनुष्यों ने विद्रोह का झण्डा उठाया। राज्य की ओर से हम्फरे स्टफर्ड और उसका भाई विलियम स्टफर्ड उनके दमन के लिए भेजे गये। उन्होंने जाकर बहुत समझाया कि जो लोग केड का साथ छोड़ देंगे उनको महाराज क्षमा कर देंगे। परन्तु किसीने उनकी न सुनी। अन्त में ब्लैकहीथ पर लड़ाई हुई। परन्तु हम्फ्रे और विलियम दोनों खेत रहे और उनकी सेना अपने सेनापतियों को मरता देखकर भाग निकली। अब क्या था, विद्रोहियों के दिल बढ़ गये, वे चौगुने उत्साह से लड़ने लगे। अब उन्होंने समझा कि हम अवश्य देश को जीत लेंगे। अब उन्होंने लन्दन की ओर कूच किया और शीघ्र ही लन्दन के पुल पर पहुंच गये। जब यह खबर राजमहल में पहुंची तो राजा के पेट में पानी हो गया और उसने जाकर रानी सहित किलवर्थ में शरण ली। राजा की ओर से अब मैथ्यूगफ़ बहुत बड़ी सेना के साथ केड का सामना करने के लिए भेजा गया। परन्तु वह भी मारा गया। नगर भर में लूट मच गई। विद्रोहियों ने महलों को तोड़ डाला। कागजों को जला दिया और सैकड़ों मनुष्यों को मार डाला। लार्ड से और उसके दामाद को पकड़ लिया और इस अपराध में इनके सिर काट लिये कि उन्होंने फ्रान्स के युद्ध के लिए लोगों से कर लिया था।

जब इन्होंने यह आफत मचा दी तो बकिंघम और क्लिफर्ड इनके हराने के लिए आगे बढ़े और बकिंघम ने कहा—

"केड! हम राजा की ओर से यह कहने आये हैं कि जो लोग तेरा साथ छोड़ देंगे, उनको महाराज क्षमा कर देंगे।"

क्लिफर्ड—भाइयो, क्या कहते हो? क्या तुम इसका साथ छोड़कर दया के पात्र बनोगे, या विद्रोही बनकर मारे जाओगे? तुममें से जो लोग राजभक्त हों उनको चाहिए कि अपनी टोपी उछाल दें।

केड ने देखा कि सब लोग राजा के लिए जयजयकार बोलने और टोपियां उछालने लगे। इसलिए उसने कहा—

"भाइयो! क्या तुम क्लिफ़र्ड के बहकाने में आ गये! क्या तुमको यह

नहीं मालूम कि यह लोग प्रजा के शत्रु है। क्या अभी मेरी तलवार टूट गई जो तुम निराश होकर मेरा साथ छोड़े जाते हो। क्या तुम ऐसे अधम हो कि अपनी प्राचीन स्वतंत्रता को खोये देते हो? यदि इस समय भी अपने बच्चों, अपनी स्त्रियों और अपने घरों का हित चाहो तो अवश्य मेरा साथ दो।"

मूर्ख लोगों का बहकाना क्या दुस्तर था। उनमें निज की बुद्धि तो थी ही नहीं, वे झट से केड के साथ हो गये। इस पर क्लिफर्ड ने कहा—

"भाइयो! क्या तुम केड को राजवंशी समझे हो? क्या तुमको आशा है कि यह जाकर फ्रान्स को जीतेगा और तुममें से हर एक को जागीरें दे सकेगा? क्या तुमको यह नहीं मालूम कि इसके पास रहने को घर तक नहीं है। भाइयो! अपने हाथ अपने पैर में कुल्हाड़ी क्यों मारते हो! मुझे तो यह दीखता है कि केड का वश चला तो तुमको लूटकर खा जायगा और शीघ्र ही फरांसीसी लोग, जिनको तुम कई बार हरा चुके हो, आकर तुमको जीत लेंगे।"

इतना सुनना था कि वही लोग जो अब तक केड के साथी थे अब क्लिफर्ड के साथी हो गये और केड अपने को अकेला जानकर भाग गया। उसके पकड़ने के लिए एक हजार रुपये का विज्ञापन दे दिया गया। पहले तो वह केण्ट के जंगलों या बागों में छिपा रहा। एक दिन आइडिन नामी एक किसान ने उसे मार डाला!

हेनरी अभी एक आपत्ति से नहीं निकल पाया था कि उसके सिर पर दूसरी आ पड़ी। यह ऐसी विपत्ति थी जिसने आयुभर उसे चैन न लेने दिया और एक दिन उसके प्राणों की लेवा हो गई। अभी केड के विद्रोह को दमन करके लोग आगे भी नहीं थे कि यार्क की चढ़ाई का कुसमाचार सुनाई दिया। हम ऊपर बता चुके हैं कि रिचार्ड यार्क बहुत सी सेना सहित आयर्लैण्ड के विद्रोह दमन को गया हुआ था। वहां से लौटकर उसने लन्दन पर चढ़ाई कर दी, क्योंकि वह बहुत दिनों से राज छीन लेने का अवसर ढूंढ़ रहा था।

बकिंघम एक सेना लेकर डार्टफ़र्ड और ब्लैकहीथ के बीच में यार्क से मिलने गया और उससे कहा, "यार्क! यदि तुम्हारा उद्देश्य बुरा न हो तो

मैं तुमसे मिलने आया हूं।"

यार्क—मैं बहुत खुश हूं। परन्तु क्या तुम राजा के भेजे हुए हो अथवा स्वयं आये हो ?

बकिंघम—मुझे महाराज ने भेजा है कि तुमसे इस चढ़ाई का कारण पूछूं।

यार्क—बकिंघम ! क्षमा करो। मेरे मन मे बड़ा दुःख है। इतनी सेना इकट्ठी करने का कारण यह है कि सोमर्सेट को महाराज के पास से हटाना चाहता हूं। क्योंकि उसका रहना राजा और देश दोनों के लिए हानिकारक है।

बकिंघम—यदि तुम्हारा यही प्रयोजन हो तो अच्छी बात है। महाराज ने आपकी इच्छा पूर्ण की और सोमर्सेट को कैद कर लिया !

यार्क—क्या सत्य कहते हो कि सोमर्सेट कैद हो गया ?

बकिंघम—सत्य कहता हू ।

यार्क—अच्छा मै सिपाहियों को लौटाये देता हूं। मै महाराज का भक्त हूं।

यह कहकर वह राजा के सामने गया और उसको प्रजावत् प्रणाम किया। राजा के पूछने पर उसने कहा कि मैं सेना को इसलिए लाया था कि सोमर्सेट को कैद कर लूं और दुष्ट केड को अपने किये की सजा दूं।]

जिस समय यह बातें हो रही थीं सोमर्सेट मारगरेट के साथ वहीं पर आ गया। क्योंकि हेनरी ने वास्तव में सोमर्सेट को क़ैद नहीं किया था। इसको देखते ही यार्क के तन में आग लग गई और कड़ककर कहने लगा, "क्यों ! क्यों ! क्या सोमर्सेट छूट गया ! अच्छा फिर मैं भी अपने गुप्त विचारों को प्रकट करता हूं। क्या मैं सोमर्सेट को देख सकता हूं ? झूठे राजा ! तूने मुझे धोखा दिया। मैं तुझे राजा कहता हू। पर तू राजा नहीं है। तू राज करने के योग्य नही है। तू इतने लोगों को वश में नही रख सकता। यह सिर राज-मुकुट के योग्य नही है। अब मै तुझे राज करने न दूंगा। राजा मैं हूं।"

सोमर्सेट—विद्रोही ! विद्रोही ! राजशत्रु ! मैं तुझे पकड़ता हूं।

इस पर बहुत झगड़ा हुआ। यार्क के लड़के भी वहां पर आ गये। वारिक और सालसबरी ने भी आकर यार्क के पक्ष में ही कहना आरम्भ

किया। अब तो खुल्लमखुल्ला लड़ाई आरम्भ हो गई। ऐसी अवस्था में किसका बल था कि यार्क को पकड़ सकता! हेनरी ने वारिक और सालसबरी से कहा—

"अरे वारिक! क्या तू अपने राजा को भी भूल गया! सालसबरी! तुझे इन श्वेत केशों पर भी लज्जा नहीं आती। तेरी राजभक्ति क्या हुई? यदि तेरे समान वृद्ध पुरुष भी विद्रोह करने लगें तो औरों का क्या हाल होगा?"

सालसबरी—महाराज! मैंने यार्क के अधिकार पर पूर्ण रीति से विचार किया है। और मेरा आत्मा यही कह रहा है कि इंग्लैंड के राज्य का वास्तविक अधिकारी यही है।

हेनरी—क्या तूने मेरी भक्ति की शपथ नहीं खाई थी?

सालसबरी—हां!

हेनरी—फिर ईश्वर को इससे विमुख होने के लिए क्या उत्तर देगा?

सालसबरी—अनुचित बात के लिए शपथ खाना पाप है। और पापयुक्त शपथ के अनुकूल चलना महापाप। यदि किसी ने किसी की हत्या करने, किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करने, किसी अनाथ का माल लेने या किसी विधवा को लूटने की शपथ खाई हो तो क्या उसे ऐसी प्रतिज्ञा का पालन करना उचित है?

अब वारिक और यार्क अपनी-अपनी सेनायें लेकर सेण्ट एल्बन्स की ओर चले। उनके मुक़ाबिले के लिए क्लिफर्ड राज्य की सेना लेकर उसी ओर गया और बड़ा घोर युद्ध हुआ। परन्तु क्लिफ़र्ड यार्क के हाथ से मारा गया। सॉमर्सेट भी यार्क के लड़के रिचार्ड के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यार्क के मुख्य-मुख्य शत्रु नष्ट हो गये। मारगरेट ने हेनरी को क्षेत्र में देखकर कहा "स्वामिन्! भाग जाओ! जल्दी भाग जाओ!"

हेनरी ने निराश होकर कहा—

"मारगरेट! ठहरो! भला ईश्वर से भागकर कहां जायं?"

मारग्रेट—अरे! तुम किस चीज के बने हो कि न लड़ते हो और न भागते हो। यही बुद्धिमत्ता और पुरुषत्व है कि शत्रु को रास्ता दे दिया जाय। यदि तुम पकड़े गये तो हम सबकी मौत है। यदि हम भाग जायं तो

जल्दी से लन्दन पहुंच सकते हैं और वहां हमारे साथी हमारी सहायता करेंगे।

इस प्रकार हेनरी अपनी महारानी सहित लन्दन को भाग गया और जीत यार्क के हाथ लगी। वह अपने बेटे रिचार्ड से पूछने लगा—

"क्या किसी ने साल्सबरी को भी देखा है? वह बूढ़ा साल्सबरी, जो रणक्षेत्र में अपने बुढ़ापे को भूल जाता है, जो युवकों से भी अधिक लड़ता है। यदि आज साल्सबरी मर गया तो यह हमारी जीत नहीं, किन्तु हार है।"

रिचार्ड—पूज्य पिताजी! मैंने आज तीन बार उसे घोड़े पर चढ़ाया और तीन बार लड़ने से निषेध किया। परन्तु वह ऐसी ही जगह पहुंच जाता था, जहां भय अधिक हो। जिस प्रकार सादे मकान में सुनहरे परदे लगे हों इसी प्रकार इस वृद्धावस्था में उसका साहस मालूम होता है।

इतने में साल्सबरी वहीं पर आ गया और कहने लगा—

"आज हम सब खूब लड़े। ईश्वर जाने मुझे कितने दिन और जीना है। आज उसने तीन बार मुझे मृत्यु के ग्रास से बचाया! परन्तु यह बात अच्छी नहीं हुई कि शत्रु भाग गये। क्योंकि वे अब फिर युद्ध की तैयारियां करेंगे।

यार्क—हमारा इसी में भला है, कि उनके पीछे-पीछे लन्दन को चलें। मैंने सुना है कि हेनरी लन्दन को राजसभा करने गया है। इसलिए हुक्म लिखे जाने से पूर्व ही हम वहां पहुंच जायें तो अच्छा है। कहो वारिक! क्या कहते हो!

वारिक—उनके पीछे नहीं, किन्तु आगे जाना चाहिए।

इस प्रकार यार्क ने सेण्ट एलबन्स की लड़ाई जीतकर हेनरी का पीछा किया। इसका वर्णन तीसरे भाग में किया जायगा!

छठा हेनरी

(तीसरा भाग)

(HENRY VI, PART III)

दूसरे भाग में यह बताया जा चुका है कि सेण्ट एलबन्स की लड़ाई में हारकर छठा हेनरी राजसभा करने के लिए लन्दन में आया और सभासदों को निमंत्रित करके सभा की। जिस समय सभा भवन (Parliament House) में राजमंत्रिगण वर्त्तमान दुर्घटना पर विचार कर रहे थे, यार्क अपने पुत्रों, एडवर्ड और रिचार्ड तथा नार्फ़ाक और वारिक, के साथ *वहां पर आ गया। इनकी-टोपियों में श्वेत गुलाब के फूल लगे हुए थे और* इनके विपक्षियों अर्थात् हेनरी के साथियों का चिह्न लाल गुलाब था, इस लिए इस युद्ध को जो एलबन्स की लड़ाई से आरम्भ हुआ और बराबर २५ वर्ष तक रहा गुलाब-युद्ध के नाम से प्रसिद्ध किया गया है।

जिस समय यार्क अपने साथियों सहित राजसभा-भवन की ओर आया था उसका विचार हेनरी को पकड़ लेने का था। परन्तु हेनरी अवसर पाकर निकल गया। इसीलिए जब वारिक ने कहा "कि न जाने हेनरी किस तरह हमारे हाथ से निकल गया?" तो यार्क ने उत्तर दिया—:

"जब हम नार्थम्बरलैण्ड की सेना का पीछा कर रहे थे, हेनरी अपने आदमियों को छोड़कर भाग गया और जब नार्थम्बरलैण्ड, स्टूटफोर्ड और [1]क्लिफर्ड ने हमारे ऊपर धावा किया तो नार्थम्बरलैण्ड मारा गया।" इस पर एडवर्ड ने अपनी रक्त-मय तलवार को दिखाकर कहा कि "मैंने स्टूटफ़र्ड के बाप बकिंघम को मार डाला।"

रिचार्ड ने सोमर्सेट के सिर को पटककर कहा, "मेरे पराक्रम को यह-

---

१. यह क्लिफ़र्ड उस क्लिफ़र्ड का लड़का था जो पहले मर चुका था।

स्वयं कह देगा।"

यार्क—रिचार्ड ने सबसे प्रशंसनीय काम किया। परन्तु क्या लार्ड सोमर्सेट! आप मर गये?

नार्फाक—जोन आफ गाण्ट की सब सन्तान को यही आशा रखनी चाहिए।

रिचार्ड—इस प्रकार मैं हेनरी के सिर को हिलाऊंगा!

अब इन लोगों ने भवन में जाकर यार्क को राजगद्दी पर बिठा दिया। बिचारे सभासद इनका मुह ताकते रहे। किसी की यह हिम्मत न पड़ी कि कोई कुछ कह सकता!

यार्क का गद्दी पर पैर रखना था कि हेनरी वहां पर आ गया। क्लिफ़र्ड, नार्थम्बरलैण्ड (पहले नार्थम्बरलैण्ड का लड़का), वेस्टमोरलैण्ड और एक्सीटर उसके साथ थे। हेनरी ने अपनी गद्दी पर यार्क को बैठा देखकर सभासदों से कहा—

"महाशयो! देखो यह राजशत्रु सिंहासन पर बैठा है और दुष्ट वारिक की सहायता से इंग्लैण्ड का राजा होना चाहता है। क्लिफ़र्ड और नार्थम्बरलैण्ड! देखो इसने तुम दोनों के पिताओं का संहार किया है। इसलिए तुमको इससे बदला लेना चाहिए।"

नार्थम्बरलैण्ड—ईश्वर मेरी सहायता करे। मैं अवश्य बदला लूंगा।

क्लिफ़र्ड—इसीलिए मैंने अभी शस्त्र हाथ से नहीं रक्खा।

वेस्टमोरलैण्ड—अभी मैं इस दुष्ट को गद्दी से खींचे लेता हूं।

वह यार्क को खींचने के लिए आगे बढ़ने लगा। इतने में हेनरी ने कहा—

"यार्क! दुष्ट यार्क! नीचे उतर और मेरे सामने माथा टेक! मैं तेरा राजा हूं।"

यार्क—मैं तेरा राजा हूं।

एक्सीटर—धिक्! धिक्! अरे तुझे हेनरी ने यार्क का ड्यूक बनाया था।

यार्क—यह जागीर मेरे बाप-दादों की है।

एक्सीटर—तेरा बाप राजशत्रु था।

---

१. चतुर्थ हेनरी का पिता।

यार्क—तू स्वयं राजद्रोही है जो हेनरी का साथ देता है।
हेनरी—अरे क्या मैं खड़ा रहूं और तू सिंहासन पर बैठा रहे।
यार्क—अवश्य अवश्य ! यही होगा ! तुझे संतोष करना चाहिए।
वारिक—लंकास्टर की जागीर तुझे मिल सकती है। यार्क राज करेगा।
वैस्टमोरलैण्ड—वह राज भी करेगा और लंकास्टर की जागीर भी लेगा।
वारिक—वारिक ऐसा करने न देगा ! क्या तुम मुझे भूल गये, जिसने तुम्हारे पिता को हरा कर मार डाला था।
नार्थम्बरलैण्ड—वारिक ! याद रख ! तुझे और तेरे सम्बन्धियों को इसका बदला देना पड़ेगा।
वैस्टमोरलैण्ड—यार्क ! तू और तेरे लड़के ! नहीं-नहीं ! तेरे वंश के इतने आदमी मारे जायंगे जितनी बूंद रक्त मेरे बाप के शरीर में था !
यार्क—(सभासदों से) क्या आप लोग यह जानना चाहते हैं कि मेरा राज पर क्या अधिकार है ?
हेनरी—तेरा राज पर कुछ भी अधिकार नहीं। तेरा बाप तेरी तरह यार्क का ड्यूक था। तेरा पितामह मार्टीमर, मार्च का जागीरदार था। मैं पांचवें हेनरी का पुत्र हूं, जिसने डौफिन से फ्रान्स को छीन लिया !
वारिक—फ्रान्स के विषय में क्या कहता है। उसे तो तू खो चुका !
हेनरी—क्या तुम समझते हो कि हेनरी अपना राज इस तरह छोड़ देगा ! वह राज, जिस पर उसके बाप और दादे ने राज किया है।
वारिक—अच्छा ! अपना अधिकार सिद्ध कर दे। और फिर राज तेरा है।
हेनरी—चौथे हेनरी ने इंग्लैण्ड को जीतकर राज किया था।
यार्क—नहीं ! वह अपने राजा से लड़ पड़ा था।
हेनरी—क्या राजा गोद नहीं रख सकता ?
यार्क—इससे क्या प्रयोजन ?
हेनरी—यदि ऐसा है तो मैं नियमानुसार राजा हूं, क्योंकि रिचार्ड ने सब लोगों के सामने मुकुट चौथे हेनरी को दे दिया था।
यार्क—उससे बलात्कार से मुकुट ले लिया गया !

वारिक ने इस समय अपने पैर जमीन पर मारे और आहट के सुनते ही बहुत से सिपाही राजभवन में घुस आये। अब तो हेनरी डर गया और समझा कि मैं क़ैद हुआ। बस उसने यार्क से कहा कि "यावज्जीवन मुझे राज करने दो। इसके पश्चात् राज तुम्हारा और तुम्हारी सन्तान का।" यार्क ने यह बात स्वीकार कर ली और गद्दी से उतर पड़ा। उसने शपथ खाई कि कभी मन, वाणी, या कर्म से हेनरी का विरोध न करूंगा। हेनरी ने लिख दिया कि मेरे पीछे राज यार्क या उसके पुत्रों का होगा।

छठे हेनरी के एक लड़का था जिसका नाम था एडवर्ड और जिसको यार्क के लड़के एडवर्ड से भिन्न करने के लिए हम प्रिंस आफ़ वेल्ज कहेंगे। जिस समय महारानी मारगरेट ने सुना कि मेरे लड़के को राज के अधिकार से च्युत कर दिया है, तो वह बहुत बिगड़ी। मारगरेट हेनरी की तरह डर-पोक या मृदु स्वभाव की नहीं थी। वह कभी राज देने को तैयार नहीं थी। इसलिए इस प्रतिकूल खबर के सुनते ही प्रिंस आफ़ वेल्ज को साथ लिये वह वहां पर आ पहुंची, और हेनरी को बुरा-भला कहने लगी। हेनरी ने कहा "प्यारी रानी! सन्तोष करो।"

मारगरेट—ऐसी दशा में कौन सन्तोष कर सकता है? अभागे आदमी! अच्छा होता अगर मैं तुझसे विवाह न करती और तेरे लिये पुत्र न जनती। क्योंकि तूने अपने पुत्र के साथ ऐसा अन्याय किया! क्या उसका जन्म का अधिकार इस प्रकार नष्ट हो गया। यदि तू उसे मेरी अपेक्षा आधा भी चाहता या तूने उसके जनने में मुझसे आधा भी कष्ट उठाया होता या जिस प्रकार अपने रुधिर से मैंने उसका पोषण किया उसी प्रकार तूने किया होता तो तू अपने प्राण देना पसन्द करता परन्तु अपने पुत्र को राज के अधिकार से च्युत करना स्वीकार न करता!

प्रिंस आफ़ वेल्ज—पिताजी! जब आप राजा हैं तो मैं क्यों न होऊं?

हेनरी—मारगरेट! क्षमा करो! प्रिय पुत्र! क्षमा करो! वारिक और यार्क ने मुझसे मजबूर करके स्वीकार करा लिया।

मारगरेट—मजबूर करके! हा मजबूर करके! क्या यह राजा है? राजा को कौन मजबूर कर सकता है? हे कायर अभागे! तूने अपना, मेरा

और अपने पुत्र का नाश कर लिया। क्या तू समझता है कि अब बच जायगा? क्या भेड़ियों से घिरी हुई भेड़ बच जाती है? यदि मैं तेरी जगह होती तो चाहे सिपाही लोग भालों पर उछाल-उछालकर मुझे मार डालते परन्तु इस अन्याय-युक्त बात को स्वीकार न करती! परन्तु तू अपने प्राणों को यश से अधिक चाहता है। अतएव मैं तेरे पास से जाती हूं और जब तक राजसभा से यह निश्चय न हो जायगा कि तेरे पीछे मेरा लड़का गद्दी पर बैठेगा उस समय तक तेरे पास न आऊंगी। मैं जाती हूं और नार्थम्बरलैण्ड आदि की सहायता से यार्क का सामना करूंगी।

यह कहकर मारगरेट प्रिंस आफ़ वेल्ज़ को साथ लिये वहां से चली गई। और वेकफ़ील्ड के पास बहुत सी सेना के साथ यार्क का मुकाबला किया। क्लिफर्ड, नार्थम्बरलैण्ड और बहुत से अन्य योद्धा उसके साथ थे। पहले तो क्लिफ़र्ड ने यार्क के छोटे लड़के रटलैण्ड को जो महल में अपने अध्यापक के साथ पढ़ रहा था पकड़ लिया और उसे मारकर उसके रक्त में रूमाल रंग लिया। फिर वे सब समर-क्षेत्र में आकर लड़ने लगे। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। यार्क के लड़के बड़े साहस से लड़े। तीन बार रिचार्ड ने यार्क के लिए रास्ता कर दिया और कहा, "पिताजी! साहस से लड़िए।" एडवर्ड कई बार रुधिर-भरे वस्त्रों-सहित अपने बाप की सहायता को आया। रिचार्ड अपनी सेना को अपने उत्साह से उत्तेजित कर रहा था और कहता जाता था कि या तो राज मिलेगा या मौत! परन्तु इनकी वीरता काम न आई। यार्क की हार हुई और मारगरेट ने विजय पाई। यार्क के लड़के तो भाग गये। परन्तु वह इतना थक गया था कि खेत से न उठ सका और मारगरेट, क्लिफ़र्ड और नार्थम्बरलैण्ड ने उसे पकड़ लिया! मारगरेट ने उसके साथ बड़े अत्याचार किये। पहले तो काग़ज़ का मुकुट बनाकर उसके सिर पर रख दिया गया; फिर उसके पुत्र रटलैण्ड के खून से भीगा हुआ रूमाल उसके मुंह पर डाल दिया गया। जब वह रोने लगा तो मारगरेट ने उसको बहुत अपशब्द कहे और अन्त में पहले क्लिफ़र्ड ने, फिर मारगरेट ने उसे मार डाला!

इस समय वारिक लन्दन में था। जब उसने सुना कि वेकफ़ील्ड में

उसके साथियों की हार हुई और यार्क मारा गया तो वह शीघ्र ही वहाँ से सेण्ट एलबन्स की ओर बढ़ा कि रानी मारगरेट को लन्दन आने से रोक दे। क्योंकि वेकफ़ील्ड की जीत से प्रफुल्लित होकर मारगरेट लन्दन को आने तथा राजसभा से अपने पुत्र को युवराज नियत कराने के लिए आ रही थी। हेनरी इस समय भी वारिक के साथ था। सेण्ट एलबन्स के निकट आकर फिर भारी युद्ध हुआ। वारिक की सेना हार गई और जिस समय यह लोग भागने लगे, हेनरी उनके हाथ से छूटकर रानी मारगरेट से जा मिला।

यार्क के मरने के उपरान्त उसका लड़का एडवर्ड यार्क वालों का मुखिया बना और यद्यपि इन लोगों की दो लड़ाइयों में हार हो चुकी थी तथापि वारिक ने हिम्मत न हारी और इन लोगों को इकट्ठा करके जल्दी से लन्दन में पहुंच गया। यद्यपि जीत मारगरेट की हुई थी परन्तु अभी उसे लन्दन जाने में सफलता नहीं हुई थी कि एडवर्ड लन्दन पहुंचकर वारिक की सहायता से चौथे एडवर्ड के नाम से राजगद्दी पर बैठ गया और देश भर में अपने राजा होने का ढंढोरा पिटवा दिया! अब मारगरेट, हेनरी और प्रिंस आफ़ वेल्ज़, क्लिफ़र्ड और नार्थम्बरलैण्ड समेत यार्क नगर में आये। नगर के द्वार पर यार्क का सिर लटका हुआ था। उसकी ओर संकेत करके मारगरेट ने कहा—

"स्वामिन् देखिए! आपका शत्रु, जिसने आपका राजमुकुट लेने का इरादा किया था, वह है। उसे देखकर अपने हृदय को सन्तुष्ट कीजिए।"

परन्तु हेनरी को इस दृश्य से संतोष नहीं हुआ, क्योंकि उसका आत्मा कह रहा था कि मेरे पितामह ने बलात्कार और अन्याय से राज ले लिया था और वास्तव में यह राज यार्क को ही मिलना चाहिए। यदि हेनरी का वंस चलता तो वह कभी यार्क के विरुद्ध लड़ाई न करता। परन्तु उसकी रानी झगड़ा मचा रही थी। हेनरी जैसा न्याय-प्रिय था वैसा बलवान् नहीं था। इसलिए अपनी इच्छा पूर्ण करने में उसे सफलता नहीं होती थी। पहले दिखलाया जा चुका है कि उसका संरक्षक ग्लोस्टर किस प्रकार उसकी इच्छा के विरुद्ध मारा गया; फिर मारगरेट ने किस प्रकार उसे युद्ध के लिए उत्तेजित किया। इन सब बातों से भली भांति प्रकट होता है कि हेनरी

का हृदय कोमल और बलहीन था। मारगरेट की बात सुनकर वह कहने लगा—

"मेरे आत्मा को दुःख होता है। हे ईश्वर! क्षमा कर! यह मेरा अपराध नहीं है।"

क्लिफ़र्ड ने इसपर कहा—

"महाराज! आपको ऐसी कोमलता उचित नहीं है। सिंह कभी किसी पर दया नहीं करते। क्या सांप उस मनुष्य को बिना काटे छोड़ देता है जो उसकी पीठ पर पैर रखता हो! दबकर तो चींटी भी काट खाती है। मार्क ने आपका राज लेने की इच्छा की थी और आपके लड़के को राज से च्युत कर दिया था। आपने इसका विरोध न किया। पक्षी भी उस मनुष्य पर आक्रमण करते हैं जो उनके बच्चों को मारता हो। इन्हीं से शिक्षा ग्रहण कीजिए। आप अपने लड़के की ओर देखिए। आपके पीछे यह कहेगा कि 'जिस राज को मेरे परदादे और दादे ने प्राप्त किया था उसको मेरे बाप ने खो दिया'; इसलिए राजन्! अपने हृदय को कठोर कीजिए और अपने राज की रक्षा करने का प्रयत्न कीजिए।"

हेनरी—क्लिफर्ड। तुम्हारी युक्तियां प्रबल हैं। परन्तु क्या तुमने नहीं सुना कि अन्याय से ली हुई चीज़ दुःखदायी होती है? पुत्र को तो वही पिता अच्छा लगता है जो उसके लिए धन एकत्र करके नरक को चला जाय! मैं अपने पुत्र के लिए अपने शुभ कार्य्य छोड़ जाऊंगा! अच्छा होता अगर मेरे पिताजी मेरे लिए कुछ न छोड़ जाते! हाय! मार्क तेरे सिर को देखकर मुझे कैसा खेद होता है।

जब यह बातें हो रही थीं उसी समय चतुर्थ एडवर्ड और वारिक सेना सहित वहां पर आ गये। और एडवर्ड ने कहा—

"झूठे हेनरी! मेरे आगे माथा टेक और अपना मुकुट मेरे सिर पर रख।"

मारगरेट—चल! छोकरे! परे हट!

एडवर्ड—मैं इसका राजा हूं। इसलिए इसको चाहिए [illegible] के

रिचार्ड—अरे क़साई ! तू भी बोलता है !
क्लिफ़र्ड—हां मैं बोलता हूं। तू या तेरे बड़े मेरा क्या कर सकते हैं ?
रिचार्ड—इस क़साई ने बालक रटलैण्ड को मार डाला।
क्लिफर्ड—और बूढ़े यार्क को भी !
वारिक—हेनरी ! राज देने को तैयार है या नहीं ?
मारगरेट—हा ! हा ! बातूनी वारिक ! सेण्ट एल्बन्स में तेरी टांगों ने तेरे हाथों की अपेक्षा अधिक काम किया था !
वारिक—तब मैं भागा था, अब तेरी बारी है।
क्लिफ़र्ड—तू तो पहले भी यही कहता था !
वारिक—तो क्या तूने मुझे भगाया था ?
एडवर्ड—हेनरी ! क्या तू मुझे मेरा राज देगा ?
वारिक—अगर न देगा तो इतने आदमियों का खून इसके सिर है। क्योंकि एडवर्ड को राज मिलना ही न्याय है।
प्रिंस आफ वेल्ज—यदि यही न्याय है तो अन्याय क्या होगा ?
रिचार्ड—अपनी मां का सिखाया बोल रहा है।
मारगरेट—अरे तू तो बाप-मां किसी की नहीं मानता !
रिचार्ड—हा ! हा ! तू बोलती है। अब इंग्लैण्ड में आकर तुझे यह साहस हो गया ! तेरा बाप भी राजा कहलाता है; जैसे कोई [1]नाले का नाम समुद्र रख दे।

इस प्रकार थोड़ी देर तक यह लोग वाक्युद्ध करते रहे। परन्तु इसके पश्चात् युद्ध आरम्भ हुआ ! टौटन नामी नगर के पास दोनों दल मिले और ऐसा घोर युद्ध हुआ कि समस्त इंग्लैण्ड वीरों से खाली हो गया। कहते हैं कि दोनों ओर के बीस-बीस हजार आदमी मारे गये। समस्त गुलाब-युद्ध में टौटन की लड़ाई सबसे बड़ी हुई। पहले तो यार्क वाले हारते हुए मालूम हुए, परन्तु अन्त में उनकी जीत हो गई। इस युद्ध ने हेनरी को बहुत निर्बल कर दिया और उसके उभरने की कोई आशा नहीं रही। क्लिफर्ड

१. मारगरेट का पिता नेपिलिज आदि कई देशों का राजा कहलाता था, यद्यपि उसके पास मेन और ऐन्जू के सिवा और कुछ नहीं था !

मारा गया। अन्य बहुत से योद्धा खेत रहे। हेनरी अपनी रानी और लड़के सहित स्काटलैण्ड को भाग गया। और चौथे एडवर्ड का लन्दन में आकर बड़े समारोह से राज्याभिषेक हुआ!

थोड़े दिनों के पश्चात् हेनरी को अपने देश की याद आई और वह उसे बिना देखे न रह सका। इसलिए एक दिन पुजारी का भेस रख, हाथ में धर्मपुस्तक लिये हुए इंग्लैण्ड के उत्तरी भाग में आ निकला और यह देख कर कि वही इंग्लैण्ड, जिस पर वह थोड़े दिनों पहले राज करता था और जो उसका देश कहलाता था, आज दूसरों के हाथ में है, उसकी आंखों से आंसू निकल पड़े। दो शिकारियों ने, जो उस समय उसी वन में आखेट के लिए गये हुए थे, उसे पकड़ लिया और चौथे एडवर्ड के हवाले कर दिया। एडवर्ड ने उसे कैद कर लिया।

हेनरी की रानी मारगरेट अपने पुत्र सहित स्काटलैण्ड से फ्रान्स को भाग गई। और उसने फ्रान्स नरेश लूइस से सहायतार्थ प्रार्थना की। जिस समय मारगरेट फ्रान्स के राज-दरबार में प्रविष्ट हुई तो लूइस खड़ा हो गया और स्वागत करके कहने लगा—

"राजराजेश्वरी! महारानी! आप मेरे आसन पर विराजिए; क्योंकि इस प्रकार खड़ा रहना आपको उचित नहीं है।"

मारगरेट—नहीं महाराज! अब मुझे उस स्थान पर सेवकाई करनी चाहिए जहां राजे शासन करते हैं। मैं मानती हूं कि पहले मैं इंग्लिस्तान की रानी थी! परन्तु अब दुर्भाग्य ने मुझे पददलित कर दिया है और अब मेरा बहुत अपमान हो चुका है। अतएव आप मुझे वही स्थान दीजिए जो मेरी वर्तमान अवस्था के अनुकूल हो!

लूइस—भला! आप ऐसी निराश क्यों हैं?

मारगरेट—कहते हुए मेरी जीभ रुकती है और आंखों में आंसू भर आते हैं। कलेजा टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है।

लूइस—चाहे कुछ हो! हमारे लिये अब भी आप महारानी हो! इसलिए मेरे पास उच्च आसन पर सुशोभित हूजिए।

मारगरेट ने बैठकर सब हाल कहा और चौथे एडवर्ड के विरुद्ध उससे सहायता चाही। लूइस ने यद्यपि कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया, परन्तु कुछ

कुछ सहारा अवश्य दिया और प्रतिज्ञा की कि सोच-विचार कर जो कुछ बन पड़ेगा किया जायगा।

अभी मारगरेट वहीं थी कि वारिक भी इंग्लैण्ड से आकर वहीं पहुंच गया। वारिक वस्तुत: बड़ा बुद्धिमान् था। उसने पहले ही से समझ लिया था कि मारगरेट को फ्रान्स से सहायता मिल जायगी और न जाने ऊंट किस करवट बैठे इसलिए उसने फ्रान्स-नरेश से मेल करने का एक नया उपाय सोचा और एडवर्ड (चौथे) को इस बात पर राज़ी करके कि उसका विवाह फ्रान्स-नरेश की बहन बोना से हो जाय, उसकी ओर से फ्रान्स-दरबार में संदेसा ले गया।

लूइस ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और यह निश्चित हो गया कि बोना इंग्लैण्ड की महारानी होगी। मारगरेट को उसने अब स्पष्टत: कह दिया कि यद्यपि मुझे तुम्हारे और हेनरी के साथ सहानुभूति है, परन्तु [illegible] के अनुकूल राज एडवर्ड का ही है। इसलिए मैं सहायता नहीं दे सकता।

परन्तु इस समय वारिक का बना-बनाया खेल एडवर्ड की [illegible] बिगड़ गया। क्योंकि उसने इस समय वारिक की अनुपस्थिति में [illegible] उसकी इच्छा के, एलीज़बेथ ग्रे से विवाह कर लिया। एलीज़बेथ [illegible] पति हेनरी की ओर से लड़ा था। एडवर्ड के राज्याभिषेक [illegible] प्रार्थना की कि मेरे पति की जायदाद मेरे पुत्रों को दे [illegible] यह राजा के समीप आई, राजा इस पर मोहित [illegible] साथ विवाह कर लिया।

जब इस विवाह के समाचार फ्रान्स में [illegible] आया। उसे यह बात अच्छी न लगी कि [illegible] विवाह करने की इच्छा प्रकट करके फिर [illegible] दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया, इससे [illegible] हुआ और उसने क्रोध में आकर मारगरेट को [illegible] की प्रतिज्ञा करली!

माफ वेल्ज़ से करने का निश्चय कर लिया।

जब एडवर्ड ने वारिक के विरोध की खबर सुनी तो उसने लड़ाई की तैयारियां कर दी। परन्तु उसका भाई क्लेरेंस वारिक से मिल गया, क्योंकि वारिक की छोटी लड़की का उससे विवाह हो गया था।

जब वारिक ने फ्रान्स से आकर सेना एकत्रित की तो एडवर्ड उसके मुक़ाबले के लिए आगे बढ़ा, परन्तु पकड़ा गया। वारिक ने एडवर्ड को यार्क में क़ैद कर दिया और हेनरी को क़ैद से छुड़ाकर बादशाह बना दिया।

एडवर्ड यार्क से भागकर बरगण्डी को चला गया।

बरगण्डी के राजा ने उसकी सहायता की और बहुत सी सेना उसके साथ भेजी। पहले कवेण्टरी में वारिक के साथी इकट्ठे हुए जिनमें लार्ड मौण्टेग, लार्ड आक्सफोर्ड और लार्ड सौमर्सेट भी थे। एडवर्ड का भाई क्लेरेंस जो पहले वारिक से मिल गया था, अब फिर अपने भाई की ओर आ गया। और दोनों दलों की बार्निट नामक रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई॥ एडवर्ड बड़ी वीरता से लड़ा और वारिक उसके हाथ से मारा गया! वारिक के मरते ही उसके साथियों में खलबली मच गई और उसके शत्रुओं के मन बढ़ गये, क्योंकि वारिक से सब डरते थे। यह वारिक ही था जिसने हेनरी को गद्दी से उतार कर एडवर्ड को राजा बनाया था। यह वारिक ही था, जिसने एडवर्ड के पिता यार्क को लड़ने के लिए उत्तेजित किया था। यह वारिक ही था जिसने फिर हेनरी को सहारा दिया; सच पूछिए तो वारिक ही गुलाब-युद्ध का कारण था। इसी की वजह से युद्ध प्रारम्भ हुआ। इसी के द्वारा युद्ध की स्थिति हुई और इसी के शांत होते समय युद्ध भी शांत हो गया। वारिक अपने समय का बड़ा योद्धा हुआ है। उसके नाम से राजे कांपते थे। इंग्लैण्ड की राजगद्दी तो सर्वथा उसके हाथ में थी। उसे सम्राट्-निर्माता (King Maker) कहा करते थे। वह जिसको चाहता था उसे गद्दी पर बिठा देता था और जब उससे अप्रसन्न होता तो राज-मुकुट उसके सिर से उतारकर दूसरे के सिर पर रख देता था। अब बार्निट के रणक्षेत्र में वारिक की मृत्यु होने से युद्ध की जान सी निकल गई।

जब थोड़े दिनों पीछे रानी मारगरेट फ्रान्स से सेना लेकर आई तो उसने फिर अपने साथियों को उभारा और ट्यूक्सबरी पर बड़ा भयंकर युद्ध हुआ! जय एडवर्ड की हुई और मारगरेट अपने पुत्र सहित पकड़ी गई। एडवर्ड ने उसके पुत्र से पूछा—

"कह! दुष्ट! तुझे क्या दण्ड दिया जाय, क्योंकि तूने मेरी प्रजा को मेरे विरुद्ध भड़काया है!"

राजकुमार—अरे! दुष्ट! अपने बड़ों से धृष्टता करता है। जो प्रश्न मुझे तुझसे करना चाहिए वही प्रश्न करने से क्या तात्पर्य है? क्योंकि तूने मेरे पिता की प्रजा को उसके विरुद्ध भड़काया है, जिसके लिए तुझे भारी दण्ड दिया जायगा!"

जिस समय राजकुमार यह बातें कर रहा था, एडवर्ड ने उसे तलवार मार दी। इसके देखते ही उसके भाई क्लेरेंस और रिचार्ड ग्लोस्टर ने भी बारी बारी से तलवार चलाई और बेचारा राजकुमार वहीं पर ढेर हो गया। ग्लोस्टर ने मारगरेट की ओर भी तलवार चलाई, परन्तु एडवर्ड ने उसे रोक दिया। मारगरेट रोती रही। जब एडवर्ड ने हुक्म दिया कि इसे यहां से ले जाओ तो वह कहने लगी—

"नहीं, नहीं। ले मत जाओ। मुझे यहीं समाप्त कर दो।"

इस पर क्लेरेंस ने उत्तर दिया—

"नहीं, नहीं। मैं तुझे इतना आनन्द नहीं देना चाहता।"

मारगरेट को तो बलात्कार से पकड़कर ले गये, और रिचार्ड ग्लोस्टर लन्दन को चल दिया, जहां पर हेनरी कैद था। हेनरी उस समय किताब पढ़ रहा था। रिचार्ड ने जाकर कहा—

"महाराज की जय हो! स्वामिन्! क्या आप पुस्तकावलोकन में ऐसे संलग्न है?"

हेनरी—हां भले स्वामिन्! नहीं नहीं! मेरे स्वामिन्—क्योंकि असत्य भाषण पाप है। और 'भले' कहना असत्य है।

रिचार्ड—(जेल के संरक्षक से) यहां से हट! हम कुछ गुप्त वार्तालाप करना चाहते हैं।

हेनरी—(संरक्षक को चलता देखकर) इसी प्रकार गड़रिया भेड़िये को

देखकर चला जाता है और बेचारी भेड़ की पहले तो ऊन कतरी जाती है, तत्पश्चात् गला काटा जाता है! (रिचार्ड से) कहिए! आप अब क्या हत्या करना चाहते हैं?

रिचार्ड—अपराधी को सदैव शंका होती है! चोर जिस झाड़ी को देखता है उसको सिपाही ही समझता है।

हेनरी—यदि पक्षी एक बार किसी झाड़ी में फंस जाय तो उसे सब झाड़ियों पर शंका होती है। मैं स्वतः अपनी आखों से देख चुका हूं कि मेरा छोटा सा बच्चा पकड़ लिया गया और मार डाला गया! क्या तू मेरे प्राण लेगा?

रिचार्ड—क्या तू समझता है कि मैं हत्यारा हूं?

हेनरी—यदि निर्दोष बालकों को मारना हत्या है तो मैं कह सकता हूं कि तू अवश्य हत्यारा है?

रिचार्ड—मैंने तेरे लड़के को तो उसकी धृष्टता के कारण मार डाला!

हेनरी—यदि तुझे भी उसी समय मार डाला जाता, जब तूने पहले पहल धृष्टता की थी, तो तू कभी मेरे पुत्र के मारने को न रहता! और मैं अब कहे देता हूं कि हजारों पुरुष, जिनको इस समय मेरी भांति भय नहीं है, हजारों वृद्ध पुरुष, सहस्रों विधवायें, सहस्रों अनाथ अपने मा-बाप की अकाल मृत्यु के कारण पछतायेंगे और उस घड़ी को कोसेंगे जिसने तूने जन्म लिया था। जब तूने जन्म लिया था तो उल्लू बोला था और कुत्ते भौंके थे। भूकम्प आया था। तेरे जन्मते समय तेरी मां को बहुत कष्ट हुआ था। मां के पेट से ही तेरे दांत थे, जिनसे विदित होता था कि तू जगत् को काट खाने के लिए उत्पन्न हुआ है। यदि जो कुछ मैंने सुना है वह सब ठीक हो तो तूने इसलिए जन्म लिया कि—

रिचार्ड—अब बकबक मत करो! मैंने इसलिए जन्म लिया है कि मैं तुमको मार डालूं!

यह कहकर उसने हेनरी के ऐसे जोर से तलवार मारी कि वह वहीं ढेर हो गया।

रिचार्ड हेनरी को मार कर बड़ा खुश हुआ, क्योंकि अब उसके शत्रु

नष्ट हो चुके थे। परन्तु अभी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ था, क्योंकि उसकी इच्छा अपने भाई चौथे एडवर्ड से राजगद्दी छीनने की थी। इस कार्य्य की पूर्ति के लिए वह अपने मंझले भाई क्लेरेंस और अन्य निज-वंशजो को भी मारना चाहता था, जिसका वर्णन 'तृतीय रिचार्ड' में किया गया है। सच है, गद्दी के लालच में मनुष्य क्या-क्या पाप नहीं करता !

छठे हेनरी की मृत्यु के पश्चात् चौथे एडवर्ड ने थोड़े दिनों तक शांति-पूर्वक राज किया। उसके मरते ही रिचार्ड ग्लोस्टर ने एडवर्ड के बालक पांचवें एडवर्ड को मारकर राज ले लिया। यह कथा आगे आवेगी।

एण्टनी और क्लियोपाट्रा

(ANTONY AND CLEOPATRA)

अनुभूमिका

पाठकवर्ग ! आपने रोम का कुछ हाल 'जूलियस सीजर' की कथा से जान लिया है। शेष इस वर्त्तमान कहानी से विदित होगा, जिसको 'एण्टनी और क्लियोपाट्रा' नामक नाटक में महाकवि शेक्सपियर ने दर्शाया है। परन्तु नाटकोक्त कहानी को प्रारम्भ करने से पूर्व उचित यह है कि जूलियस सीजर की मृत्यु के पश्चात् और इस कहानी से पूर्व तक जो कुछ घटनायें रोम में हुई हों उनका संक्षेप मे वर्णन कर दें, जिससे इस नाटक के समझने में कुछ सहायता मिले।

आपने जूलियस सीजर की मृत्यु का हाल पढ़ लिया। आपने यह भी जान लिया कि किस प्रकार फिलिपी की लड़ाई में सीजर के सब घातक आत्मघात करके या किसी अन्य के हाथ से मारे गये। रोम का राज्य तीन पुरुषों के संयुक्त आधिपत्य मे आ गया जिसको आधिपत्य-त्रय (Triumvirate) कहते हैं। एक इनमें से मार्क एण्टनी था, जिसकी वक्तृता आप लोग सीजर की मृत्यु पर पढ चुके हैं और जो सीजर का भक्त सेनापति था। दूसरा आक्टेवियस था जो सीजर का नाती था और जिसे सीजर ने गोद रख लिया था। तीसरा लेपीडस था। परन्तु मुख्य इनमें से एण्टनी और आक्टेवियस ही थे। लैपीडस को तो इन दोनों ने इसलिए बीच में मिला लिया था कि एक दूसरे की शक्ति असीम न हो जाय। अपने शत्रुओं के नाश के पश्चात् एण्टनी रोमन राज्य की सैर को निकला और उसने पूर्वी यूरोप तथा पश्चिमी एशिया का चक्कर लगाया जहां जिसको मन चाहा उसी को गद्दी से उतार दिया और जिसको चाहा उसकी जगह

वहीं पर कैद किया। इस प्रकार टाल्मी को आजाद हुआ। टाल्मी अब मिस्र की ओर मुड़ा, जहां कि प्रसिद्ध महारानी क्लियोपेट्रा राज करती थी। पहले क्लियोपेट्रा का थोड़ा सा हाल लिख कर हम आगे बढ़ेंगे।

मिस्र का बादशाह अपनी मृत्यु के पश्चात् राज्य अपने लड़के टॉल्मी और अपनी लड़की क्लियोपेट्रा को दे गया था[1] मिस्र देश के नियम के अनुसार विवाह हो गया था। परन्तु क्लियोपेट्रा जो अपने भाई अर्थात् पति से बड़ी थी, अकेले राज करना चाहती थी। मिस्र इस समय रोम वालों के अधीन था इसलिए रोम की राजसभा ने केवल टॉल्मी को राज देकर क्लियोपेट्रा और उसके बहुत आदमियों को देश से निकाल दिया।

जूलियस सीजर ने मिस्र पर अपना अधिक स्वत्व प्राप्त करने के लिए क्लियोपाट्रा की नई आज्ञायें जारी की और उधर टोल्मी से भी बातचीत आरम्भ कर दी। टोल्मी ने तो बात का उत्तर युद्ध से दिया, परन्तु हार गया। क्लियोपाट्रा जिसके सौन्दर्य की प्रशंसा ऐतिहासिक हो गई है और जिसकी लावण्यता प्रायः अत्युक्ति-अतीत समझी जाती है, एक विलक्षण महिला थी। कवियों ने स्त्रियों के रूप में जो जो अच्छी बातें बताई हैं प्रायः उसमें सभी मौजूद थीं। इसके अतिरिक्त उसमें वह चतुरता भी थी जो शृंगार रस का अंग समझी जाती है। सारांश यह है कि मनुष्य को रिझाने के उसमें सब गुण थे। भाषण उसका बहुत प्यारा और प्रभावशाली था। इसके अतिरिक्त उसकी विद्या का यह हाल था कि भिन्न भिन्न देशों के राजदूतों से बिना किसी अनुवादक (Interpreter) के भली प्रकार बातचीत कर सकती थी।

जब क्लियोपाट्रा ने देखा कि सीजर टोल्मी को पराजित कर चुका, वह झट जूलियस के पास पहुंच गई और अपने रूप से उसको ऐसा मोहित किया कि वह उसका पक्षपाती होकर उसके साथ रहने लगा। बहुत से झगड़े और लड़ाइयां हुईं। अन्त को सीजर ने मिस्र में क्लियोपाट्रा को

---

१. मालूम होता है कि मिस्र वाले अपने भाई-बहन आपस में विवाह कर सकते थे।

शत्रुओं का बीज मेट दिया और उसे मिस्र की महारानी बनाया। सीज़र का यह भी विचार था कि क्लियोपाट्रा के नाम से इथोपिया को भी जीत ले। परन्तु रोम की सेना ने इस अनुचित व्यवहार में सीज़र का साथ देने से इनकार किया और तब सीज़र इस प्रेम-मुग्ध अवस्था से जागकर रोम को लौट गया।

हम ऊपर कह आये हैं कि फिलिपी के युद्ध के पश्चात् एण्टनी का मिस्र पर दृष्टि-पात हुआ। सुना गया था कि क्लियोपाट्रा सीज़र के घातकों को सहायता दे रही है। इसलिए एण्टनी ने उसे बुलाया कि अपने इस दोष का क्या उत्तर देती है।

क्लियोपाट्रा की अवस्था इस समय २७ वर्ष की थी। वह इस समय पूर्ण युवावस्था को पहुंच चुकी थी और अब उसमें वह छल-बल भी आ गये थे जो स्त्रियों में प्रायः हुआ करते हैं। इसके अतिरिक्त उसे सब बातों से बढ़कर अपने रूप पर विश्वास था। यद्यपि रोम की कई स्त्रियां क्लियोपाट्रा के समान रूप-सम्पन्ना थीं, परन्तु मोहन-शक्ति जो क्लियोपाट्रा में थी वह अन्य स्त्रियों में पाई नहीं जाती। वह पुरुष की नस-नस पहचानती थी और उस पर अपना स्वत्व जमाने के लिए अनेक विधियों में अभिज्ञ थी। इसलिए एण्टनी के कोप से बचने के लिए उसने अपने लावण्य का ही आश्रय लिया और एक सुन्दर जहाज़ में बैठकर, जिसका पिछला हिस्सा बिल्कुल सुनहरा था, जिसके पर्दे लाल रेशम के थे, जिसके डांड चांदी के बने हुए थे, एण्टनी से मिलने आई।

एण्टनी जो उस समय टार्सस में था क्लियोपाट्रा को देखते ही अपनी चौकड़ी भूल गया और बजाय उस पर स्वत्व प्राप्त करने के स्वयं उसके अधीन बन गया।

क्लियोपाट्रा के स्वत्व से एण्टनी मरणपर्यन्त मुक्त न हो सका और शृंगार रस में फंसकर उसने वीर रस को तिलांजलि दे दी। जिस एण्टनी ने सैकड़ों वीर पुरुषों को परास्त करके हथकड़ियां और बेड़ियां डाल दीं वही एण्टनी क्लियोपाट्रा की प्रेमरूपी बेड़ियों में फंसकर निकम्मा हो गया और उसके साथी आक्टेवियस ने उसके विरुद्ध अवसर पाकर रोम में प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

एण्टनी की स्त्री फुल्विया ने अपने पति को क्लियोपाट्रा के पंजे से छुड़ाने का एक यह उपाय सोचा कि उसने बीच में पड़कर आक्टेवियस और एण्टनी में लड़ाई करा दी। इस बात से उसका केवल यही प्रयोजन था कि एण्टनी मिस्र से आक्टेवियस के विरुद्ध लड़ने के लिए आवेगा। ऐसा ही हुआ। परन्तु इससे फुल्विया की मनोकामना सिद्ध न हुई। और एण्टनी उस पर इतना क्रुद्ध हुआ कि दीन अबला शोक के मारे मर गई। एण्टनी और आक्टेवियस में किंचित्काल के लिए सन्धि हो गई जिसके अनुसार आक्टेवियस की बहन आक्टेविया से उसका विवाह भी हो गया और रोमन राज्य का इस प्रकार विभाग हुआ कि पश्चिमी देश आक्टेवियस के पास रहें, पूर्वी एण्टनी के और अफ्रीका लैपीडस के।

यह सन्धि बहुत दिनों न चली, क्योंकि एण्टनी फिर मिस्र को लौट आया और क्लियोपाट्रा के साथ भोग-विलास करने लगा। आक्टेवियस ने अवसर पाकर उसे रोम में खूब बदनाम कर दिया और अपनी बहन आक्टेविया को भेजा कि वह मिस्र में एण्टनी के पास जाकर अपने पत्नीत्व को स्थापित करे। आक्टेविया भी रूपवती थी। जब एण्टनी और क्लियो-पाट्रा को मालूम हुआ कि आक्टेविया एथेंस से आ रही है, तो क्लियोपाट्रा ने वह-वह खेल खेले कि एण्टनी ने बीच से ही उसे कहला भेजा कि तुम सीधी रोम को लौट जाओ और कि तुम मेरी स्त्री नहीं हो!

एण्टनी ने अपनी विषयासक्ति को यहीं तक रहने न दिया, किन्तु उसने खुल्लमखुल्ला क्लियोपाट्रा से विवाह कर लिया। सिकन्दरिया नगर में एक बड़ा उत्सव मनाया गया और एक चांदी के चबूतरे पर दो सोने के तख्त रक्खे गये, जिनमें से एक पर एण्टनी 'बेक्कस बनकर और दूसरे पर क्लियोपाट्रा आइसिस' बनकर बैठे।

क्लियोपाट्रा का एक लड़का सिसारियो, जो जूलियस सीजर से उत्पन्न हुआ था, एण्टनी के साथ मिलकर राज करने लगा; और उसके दो लड़के जो एण्टनी से उत्पन्न हुए थे महाराजाधिराज की पदवी पर नियत किये गये।

---

१. बेक्कस मिस्र के एक देव, और २. आइसिस एक देवी का नाम है।

आक्टेवियस इन बातों से और चिढ़ गया और उसने रोम की राजसभा से सम्मति लेकर एण्टनी पर चढ़ाई की। एण्टनी भी सामना करने चला और दोनों दलों की एक्टियम में मुठभेड़ हो गई। परन्तु एण्टनी क्लियोपाट्रा को भागता हुआ देखकर स्वयं भी भाग आया, आक्टेवियस को जय प्राप्त हुई। और जय क्यों न प्राप्त होती? क्योंकि एण्टनी तो शृंगार रस को ही चख रहा था। एक ओर तो अधीन राजों की सेना एकत्रित करने का हुक्म दे रक्खा था, दूसरी ओर नाचने-गाने वाले भोग-विलास के लिए आये हुए थे। लड़ाई क्या थी, एक तमाशा था।

क्लियोपाट्रा एक बनी हुई औरत थी। उसने एण्टनी का तो इस प्रकार सत्यानाश ही कर दिया था, परन्तु दूसरी ओर गुप्त रीति से वह आक्टेवियस से अपने तथा अपने लड़कों के बचाव के लिए बातचीत करने लगी। एण्टनी को इसका पता लग गया और वह बड़ा क्रुद्ध हुआ। क्लियोपाट्रा ने एण्टनी को अप्रसन्न समझकर अपने यहाँ प्रसिद्ध कर दिया कि क्लियोपाट्रा मर गई। एण्टनी इसकी मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुःखी हुआ और अपने एक नौकर से कहा कि मुझे मार डालो। नौकर ने तो उसको नहीं मारा, परन्तु एण्टनी ने स्वयं अपने कलेजे में ऐसी तलवार मारी कि वह घायल हो गया। क्लियोपाट्रा ने इतने में एण्टनी को अपने पास बुला लिया और वह उसी की गोद में मर गया। क्लियोपाट्रा ने अपने प्यारे की मृत्यु पर बड़ा रंज किया और स्वयं अपनी छाती में इतने
घूँसे मार लिये कि वह बीमार पड़ गई। [illegible] इतने में सिकन्दरि[illegible]
आदि नगरों को जीतता हुआ आ पहुँचा [illegible] यह थी [illegible]
क्लियोपाट्रा को ले जाकर रोम में अपने ज[illegible] । क्लियो[illegible]
इस अपमान को सहन नहीं कर सकी औ[illegible] को । कि[illegible]
माली से फूलों की टोकरी में मंगाकर [illegible]
मर गई। आक्टे[illegible] तो इस [illegible]

एण्टनी के दो साथी डिमेट्रियस और फ़िलो नामी एक दिन एण्टनी के वर्तमान आचार-व्यवहार पर बातचीत करने लगे कि—

"देखो आजकल एण्टनी की क्या दशा हो गई है? क्या यह वही एण्टनी है जो युद्ध का शब्द सुनकर उत्तेजित हो जाया करता था? आज यह बिलकुल क्लियोपाट्रा के हाथ में है। देखो, इस चतुर रमणी ने इसको भेड़ा बनाकर रख लिया है। देखो कहते-कहते ही एण्टनी अपनी प्रमदा-सहित आ रहा है।"

जब यह बातें हो ही रही थीं कि एण्टनी, क्लियोपाट्रा तथा अनुचरों-सहित वहां पर आ पहुंचा। उन दोनों स्त्री-पुरुष में यह बातें हो रही थीं—

क्लियोपाट्रा—यदि यह सच्चा प्रेम है तो बताओ इसका परिमाण कितना है?

एण्टनी—वह प्रेम प्रेम नहीं जिसकी थाह हो सके!

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारे प्रेम की सीमा लगा लूंगी!

एण्टनी—तो तुमको नया आकाश ढूंढ़ना पड़ेगा।

इतने में रोम का एक दूत एण्टनी के पास आकर कहने लगा—

"महाराज! रोम से खबर लाया हूं।" एण्टनी इस समय कुछ नहीं सुनना चाहता था। इसलिए उसने कहा—"संक्षेप में कहो।"

प्रेमरसिका क्लियोपाट्रा ताड़ गई कि एण्टनी को मिस्र में ले जाने की तैयारियां हो रही हैं। इसलिए बातें बनाकर कहने लगी—

"नहीं! एण्टनी! नहीं! तुमको रोम की खबर सुन लेनी चाहिए। शायद श्रीमती फुल्विया देवी नाराज़ हों। शायद युवक आक्टेवियस ने हुक्म दिया हो कि 'यह करो या वह करो। इस राज को ले लो और उसे छोड़ दो। ऐसा करो नहीं तो दण्ड मिलेगा।' भला ऐसी बातें न सुननी चाहिए?"

एण्टनी—क्यों प्यारी?

क्लियोपाट्रा—शायद अब तुम यहां न रह सको। आक्टेवियस ने तुमको मिस्र से चले जाने की आज्ञा दी हो! मालूम होता है कि अब तुम मिस्र में नहीं रह सकते! इसलिए तुमको आक्टेवियस और फुल्विया की बात सुननी चाहिए।

एण्टनी—चाहे रोम टाइबर नदी में बह जाय। चाहे समस्त राज नष्ट हो जाय। मुझे परवाह नहीं है। मेरा तो यही स्थान है। राज क्या है, मिट्टी ही मिट्टी तो है। (क्लियोपाट्रा का आलिंगन करके) जीवन का सुख तो केवल इसी में है!

क्लियोपाट्रा—प्रणयचातुरी! जब तुमने फुल्विया से विवाह किया तो उससे प्रेम क्यों नहीं करते होगे।

एण्टनी—अब व्यर्थ न कहो। मैं सुख भोगने के समय को इन बातों में व्यय करना नहीं चाहता।

क्लियोपाट्रा—दूत की बात सुनो।

एण्टनी—चलो चलो! झगड़ो मत! पर तुमको सब बातें शोभा देती हैं। हंसना, रोना और झगड़ना सभी तुममें अच्छे मालूम होते हैं।

इस प्रकार क्लियोपाट्रा बातें बना-बनाकर एण्टनी को दूत की बात सुनने से रोकती थी और एण्टनी उसके प्रेम में मुग्ध था। उस समय तो उसने रोम के दूत को बिना बात सुने हुए ही टाल दिया, परन्तु एक समय उसे अवसर मिल गया और एण्टनी को अकेला पाकर उसने रोम की सब दशा सुना दी। वह कहने लगा—

"आपकी स्त्री फुल्विया पहले पहल रणक्षेत्र में आई।"

एण्टनी—मेरे भाई लूसियस से लड़ने!

दूत—हां लेकिन उन दोनों में शीघ्र सन्धि हो गई और उन दोनों ने मिल कर आक्टेवियस सीज़र का सामना किया, परन्तु हार खाई।

एण्टनी—अच्छा! और भी कोई बुरी खबर है?

दूत—श्रीमहाराज! बुरी बात कहने में कहने वाले की भलाई नहीं है।

एण्टनी—उसी समय जब उस बात का सम्बन्ध किसी कायर या मूर्ख से हो—कहो डरो मत! जो बात हो चुकी वह हो चुकी! जो मुझसे सच-सच कहता है, चाहे उसमें मृत्यु ही क्यों न हो, मैं उसे प्रिय भाषण समझता हूं!

दूत—खबर बहुत बुरी है। लेबीनस ने एशिया का राज यूफ्रेटीज़ तक फैला लिया है। पार्थियन सेना के साथ उसने सीरिया से लेकर लिडिया और आयोनिया तक सब देश पर प्रभुत्व पा लिया है। फिर भी—

एण्टनी—उसका चातुर्य मनुष्य की बुद्धि में नही आ सकता।

एनोबार्बस—नही, नही, ऐसा मत कहो। उसको प्रेम के सिवा और कुछ नहीं आता। दूसरी स्त्रियो के आसू और दीर्घश्वास क्लियोपाट्रा के सामने तुच्छ हैं। इसके आंसू समुद्र की तरंगो से कम नही हैं। इसको छल नही कह सकते। अगर आप इसको भी छल कहते हैं तो मानना पड़ेगा कि क्लियोपाट्रा भी इन्द्र की भांति वर्षा कर सकती है।

एण्टनी—अच्छा होता कि मैंने इसको कभी न देखा होता!

एनोबार्बस—तो आप दुनिया की एक अद्‌भुत वस्तु से वंचित रह जाते और आपका देशाटन कलंकित हो जाता!

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या महाराज!

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या फुल्विया?

एण्टनी—मर गई।

एनोबार्बस—यह तो खुशी की बात है, ईश्वर को धन्यवाद दो। जब ईश्वर किसी पुरुष की स्त्री को मार डाले तो इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर सांसारिक दर्जी के समान है। क्योंकि जब पुराने वस्त्र फट गये तो नये मिलेंगे। अगर फुल्विया के सिवा दुनिया मे अन्य कोई स्त्री न होती तो अवश्य शोक की बात थी। यह कोश तो हर्षसूचक है जीर्ण वस्त्र के स्थान में नया मिलेगा!

एण्टनी—राज के विषय में वह जो कुछ गड़बड़ डाल गई है, इससे तो जाना ही होगा।

एनोबार्बस—और आपने जो यहां गड़बड़ डाली है इसके कारण आपका यहां से जाना नही हो सकता। क्लियोपाट्रा बिल्कुल आपके ही आश्रित है।

एण्टनी—अब अधिक हंसी मत उड़ाओ। निश्चय है कि हमको रोम को जाना चाहिए। राज मे बड़ी गड़बड़ मची हुई है। रोम से कई मित्रों ने हमारे यहा जाने पर आग्रह किया है। सेक्स्टस पोम्पे का जोर हो रहा है उसने आक्टेवियस पर चढ़ाई की है। हमको बहुत काम करने

हैं। मैं अब क्लियोपाट्रा को जाने की सूचना दूंगा।

क्लियोपाट्रा के छल बल प्रसिद्ध थे। उसे पहले से ही मालूम हो गया था कि एण्टनी जाने वाला है। इसलिए उसको रोकने के लिए उसने एक और ढंग निकाला और बीमार सी बनकर बैठ गई। जब एण्टनी निकट आकर कहने लगा कि "शोक है मुझे अब मन का भाव कहना ही पड़ा।" तो क्लियोपाट्रा सुनी-अनसुनी कर गई।

जब एण्टनी ने आगे बढ़कर कहा "प्रियतम महारानी" तो क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"मुझसे दूर खड़े हो।"

एण्टनी—क्या बात है?

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारी आंखों से पहचान गई कि कोई अच्छी खबर है। विवाहिता स्त्री ने क्या कहला भेजा है कि "तुम चले आओ?" अगर वह तुम्हें कभी यहां आने न देती तो अच्छा होता। तुम जाओ। वह यह न कहे कि मैं तुमको रोकती हूं। मेरा तुम पर कुछ वश नहीं है। तुम उसी के हो।

एण्टनी—ईश्वर जानता है!

क्लियोपाट्रा—कभी किसी महारानी को ऐसा धोखा नहीं दिया गया। मुझे तो पहले ही से शंका हो गई थी।

एण्टनी—हे क्लियोपाट्रा—

क्लियोपाट्रा—जब तुमने फुल्विया के साथ अन्याय किया तो मैं फिर तुम्हारी प्रतिज्ञाओं का कैसे विश्वास करूं? तुम शपथ खाते जाते हो और प्रतिज्ञा तोड़ते जाते हो!

एण्टनी—प्यारी महारानी!

क्लियोपाट्रा—नहीं, नहीं! जाने के लिए बहाना ढूंढ़ने की जरूरत नहीं। जाना है तो चले जाओ। बहानों की तो उस समय जरूरत थी जब रहना चाहते थे। तब तो जाने का नाम भी न था। तब हम रूपवती थीं। तब हमारा कुरूप से कुरूप अंग भी महा सुन्दर था। वही अंग अब भी है—हे एण्टनी! बड़ा वीर होकर भी तू झूठा निकला!

एण्टनी—प्रिये, क्या कहती हो?

क्लियोपाट्रा—हाय ! एण्टनी जो मेरा हृदय तेरे शरीर में चला जाता तो तू जानता कि मिस्र में एक स्त्री तुझे प्राणों से भी अधिक चाहती है।

एण्टनी—सुनो ! मुझे कार्य्यवश घर जाना है। लेकिन मेरा मन यहीं रह जायगा। इटली में लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। सेक्स्टस पौम्पे रोम पर चढ़ा आ रहा है ! तुमको डरना नहीं चाहिए। फुल्विया मर गई।

क्लियोपाट्रा—अरे मुझे बच्चों की तरह बहलाते हो ! भला फुल्विया मर सकती है ?

एण्टनी—हां मर गई। देखो यह पत्र आया है। इसे पढ़ो।

क्लियोपाट्रा—हाय ! झूठा प्रेम ! पवित्र शीशियों में दुःख का पानी। अब मैं जान गई कि फुल्विया के मरने पर मुझसे कैसा प्रेम होगा !

एण्टनी—अब लड़ो मत। सुनो मुझे जाना है। कहो तो जाऊं कहो न जाऊं। ईश्वर साक्षी है कि मैं तुझे कभी न भूलूंगा।

इसके पश्चात् एण्टनी मिस्र देश से चला गया और चलते समय एण्टनी और क्लियोपाट्रा में दृढ़ प्रेम के लिए प्रतिज्ञायें हुईं। एण्टनी के चले जाने पर क्लियोपाट्रा ने बड़ा शोक मनाया। वह प्रतिदिन अपना एक दूत एण्टनी के पास भेजने लगी और सिवा 'एण्टनी !' 'एण्टनी !' के और कुछ बात उसके उसके मुंह से नहीं निकलती थी। वह नित्य एण्टनी का ही ध्यान किया करती थी। न उसे गाना अच्छा लगता था और न किसी और वस्तु से उसका जी बहलता था परन्तु वह एण्टनी के ही विरह में अपना समय व्यतीत करती थी !

उधर रोम में आक्टेवियस एण्टनी को बदनाम कर रहा था। वह एक दिन लैपीडस से कह रहा था—

"देखो मैं बिना कारण एण्टनी से घृणा नहीं करता। सिकन्दरिया से खबर आई है कि वह रात-दिन नाच-रंग में समय व्यतीत करता है। अब उसमें उतना ही पुरुषत्व है जितना क्लियोपाट्रा में। क्लियोपाट्रा में उतना ही स्त्रीत्व है जितना एण्टनी में। देखो उसने हमारे दूत को बिना बात किये ही टाल दिया !"

लैपीडस—मुझे तो एण्टनी में इतने दोष नहीं दिखाई देते कि उसकी समस्त भलाइयों को छिपा लें।

आक्टेवियस—आप तो बड़े नर्मदिल मालूम होते हैं। क्या टाल्मी[1] के पलंग पर लेटना दोष नहीं है? क्या विषयासक्ति में राज लुटा देना दोष नहीं है?

इस समय एक दूत ने आकर खबर दी कि सेक्स्टस पौम्पे मैसीना से युद्ध की तैयारियां करके रोम पर चढ़ा आ रहा है।

उसने यह विचार किया था कि एण्टनी क्लियोपाट्रा की गोद को छोड़कर ऐसे युद्ध के लिए क्यों आने लगा। सीज़र के पास रुपया है, पर लोग उसको नहीं चाहते। लैपीडस खुशामदी आदमी है, पर कोई उसकी पर्वा नहीं करता, इसलिए रोम को जीतने का यह सबसे उत्तम अवसर है।

परन्तु उसका यह विचार ठीक न निकला। क्योंकि जैसा हम ऊपर कह चुके हैं एण्टनी अपने देश की दुर्दशा का हाल सुनकर मिस्र से चल पड़ा था। जब वह रोम पहुंचा तो उसमें और आक्टेवियस में झगड़ा हो गया, क्योंकि आक्टेवियस पहले ही से लोगों को एण्टनी के विरुद्ध भड़का रहा था। लैपीडस उन दोनों में सन्धि कराने का यत्न करता था और कहता था कि हम तीनों मित्रों को इस समय अपने निज झगड़ों को भूल जाना चाहिए, क्योंकि हम सब का शत्रु पौम्पे आ रहा है। शत्रु के परास्त करने के लिए हम सबको एक हो जाना ही उत्तम है।

एण्टनी ने कहा—

"आक्टेवियस! मैंने सुना है कि तुम बहुत सी ऐसी बातों से नाराज़ हो गये हो, जिनका तुमसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।"

आक्टेवियस—भला मैं क्यों नाराज़ हो जाता? और विशेष कर तुमसे? मुझे आपके नाम से भी कुछ सम्बन्ध नहीं है।

एण्टनी—तुम्हारा मेरे मिस्र में रहने से क्या सम्बन्ध था?

आक्टेवियस—वही जो तुम्हारा मेरे रोम में रहने से है। हां अगर तुमने मेरे अधिकार में हस्तक्षेप किया तो तुम्हारा मिस्र में रहना भी मुझसे कुछ सम्बन्ध रखता है?

---

१. क्लियोपाट्रा टाल्मी की स्त्री थी।

एण्टनी—कैसा हस्तक्षेप ?

आक्टेवियस—तुम मेरा आशय समझ गये होगे ! तुम्हारे भाई और स्त्री दोनों ने मुझसे लड़ाई की ! वह कहते थे कि तुमने उनको आज्ञा दी है।

एण्टनी—तुम्हारी भूल है ! मेरे भाई ने मुझसे कभी युद्ध के लिए नहीं पूछा ! मेरे पत्रों से स्पष्ट है कि मेरे भाई ने मेरी इच्छा के विरुद्ध किया ! अगर तुमको झगड़ा ही करना है तो दूसरी बात है। नहीं तो इसमें मैं निर्दोष हूं।

आक्टेवियस—तुम तो आत्मश्लाघा करके मेरी भूल बताते हो। यह केवल बहाना है।

एण्टनी—नहीं, नहीं। हां मेरी स्त्री के झगड़ों का और कारण है। ईश्वर तुमको भी ऐसी स्त्री देता तो मालूम पड़ जाता। देखो, तिहाई दुनिया तुम्हारे अधिकार में है। परन्तु इस पर राज करना सरल है, लेकिन ऐसी स्त्री को वश में करना दुस्तर है। तुमको यह सोचना चाहिए कि मेरी स्त्री पर मेरा वश न था।

आक्टेवियस—मैंने सिकन्दरिया में तुम्हारे पास एक दूत भेजा, जब तुम वहां रंगरेलियां खेल रहे थे, उसको तुमने अपमान के साथ निकाल दिया।

एण्टनी—वह बिना आज्ञा के घुस आया था ! दूसरे दिन मैंने उसकी बात सुन ली। यह बात क्षमा मांगने के लगभग थी !

आक्टेवियस—तुमने प्रतिज्ञा भंग की।

लैंपीडस—आक्टेवियस ! नर्मी से।

एण्टनी—नहीं, नहीं, कहने दो। भला कौन सी प्रतिज्ञा ?

आक्टेवियस—मुझे जरूरत के समय न तो सेना भेजी और न अन्य सहायता दी; और साफ़ इनकार कर दिया।

एण्टनी—इनकार नहीं किया। भूल गया। बात यह है कि फुल्विया ने मेरे मिस्र से बुलाने के लिए आप से लड़ाई छेड़ दी थी। मैं इसके लिए क्षमा मांगता हूं।

आक्टेवियस—जब हम दोनों के दिलों में भेद है तो अब बनने की नहीं।

क्लियोपाट्रा—हा ! हा ! हीरड का सिर अवश्य कटेगा ! लेकिन एण्टनी जिसके हुक्म से ऐसा होता, यहां है ही नहीं !

दूत—महारानी की जय हो !

क्लियोपाट्रा—क्या तूने आक्टेविया देखी !

दूत—हां !

क्लियोपाट्रा—कहा !

दूत—रोम में एण्टनी और आक्टेवियस के साथ।

क्लियोपाट्रा—क्या वह मुझ जैसी लम्बी है।

दूत—नहीं !

क्लियोपाट्रा—क्या उसे बोलते सुना ? धीरे बोलती है ? या जोर से ?

दूत—महारानी जी ! धीरे !

क्लियोपाट्रा—ये तो अच्छी बातें नहीं है। एण्टनी बहुत दिनों इससे प्रेम न करेगा !

एक अनुचर—(दूसरे से) वह महारानी के तुल्य कैसे हो सकती है।

क्लियोपाट्रा—ठिगनी और धीरे बोलने वाली ! उसकी चाल कैसी है ?

दूत—गरेती है ! उसका चलना और बैठना एक सा है ! उसके देह पर चैतन्यता नहीं ! केवल चित्रवत् है !

क्लियोपाट्रा—क्या यह ठीक है ?

दूत—हां !

क्लियोपाट्रा—कितनी बड़ी है ?

दूत—विधवा थी !

क्लियोपाट्रा—ओ हो ! विधवा ?

दूत—तीस वर्ष की होगी !

क्लियोपाट्रा—मुंह कैसा है ? लम्बा या गोल ?

दूत—गोल ! वह भी भद्दा !

क्लियोपाट्रा एण्टनी के मन का भाव जानती थी। अपनी सपत्नी को अपने समान रूपवती न पाकर उसे कुछ सन्तोष हो गया और भीतर ही भीतर उसने इस प्रकार उद्योग किया कि एण्टनी का मन आक्टेविया से हट गया और वह मिस्र जाने के लिए अवसर खोजने लगा।

दैवगति से यह अवसर भी उसके हाथ शीघ्र ही आ गया, क्योंकि किसी बात पर आक्टेवियस, लैपीडस और पोम्पे के मध्य में फिर युद्ध छिड़ गया। और बिना एण्टनी के सूचना दिये आक्टेवियस और लैपीडस ने पोम्पे को परास्त कर दिया। इसके पश्चात् आक्टेवियस ने इस दोष में कि उसने पोम्पे के साथ गुप्त रीति से देशहित के विरुद्ध पत्र-व्यवहार किया था लैपीडस को पकड़ लिया! इस प्रकार आक्टेवियस और एण्टनी के मध्य में जो एक प्रकार की रोक थी वह दूर हो गई। एण्टनी को ये सब बातें बहुत बुरी मालूम हुई। उसने आक्टेविया से कहा कि अब मुझमें और तुम्हारे भाई में अवश्य लड़ाई होगी क्योंकि उसने पोम्पे से लड़ाई की और मनमानी बातें राजसभा से स्वीकृत करा ली और सबके सामने मुझे गालियां देता है!

आक्टेविया—प्यारे पति! इन सब बातों का विश्वास मत करो! यदि युद्ध हुआ तो मेरी बड़ी दुर्गति होगी। मैं भाई के लिए प्रार्थना करूंगी या पति के लिए! परमात्मा ऐसी प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं करता है!

एण्टनी—जिसका अधिक प्रेम हो उसी के लिए! यहां आत्मगौरव का प्रश्न है। मुझे अपना गौरव अवश्य रखना है। अगर तुम चाहती हो तो स्वयं जाकर अपने भाई से कहो और हम दोनों में सन्धि करा दो।

इस समय आक्टेविया तो एथेंस से रोम को गई इधर एण्टनी वहां से चलकर क्लियोपाट्रा के समीप चला आया! जब आक्टेविया अपने भाई के पास पहुंची तो आक्टेवियस ने कहा, "बहन! क्या तुमको तुम्हारे पति ने छोड़ दिया?"

आक्टेविया—तुम ऐसा क्यों कहते हो?

भाई—तुम ऐसे चुपके मेरे पास क्यों आ गई। तुम उस समारोह के साथ नहीं आई जिससे आक्टेवियस की बहन को आना उचित है। एण्टनी की स्त्री के साथ सेना होनी चाहिए! घोड़ों के हिनहिनाने से मालूम होना चाहिए कि एण्टनी की स्त्री आ रही है। लोग वृक्षों पर तुमको देखने के लिए चढ़ जायं। धूल घरों की छत तक पहुंचने लगे! तुम तो साधारण स्त्री के समान चली आई! हम तुम्हारा सत्कार भी न

कर सके!

बहन—मैं इस प्रकार आ सकती थी। परन्तु मुझे और काम था, जिसके कारण मैंने इसी तरह आना उचित समझा। मेरे स्वामी एण्टनी ने सुना था कि तुम युद्ध की तैयारी कर रहे हो। इसलिए मैंने यहां आने की आज्ञा चाही!

भाई—और उसने झट आज्ञा दे दी, क्योंकि तुम अपने पति तथा उसकी विषय-वासना के बीच मे एक प्रकार की रोक थीं।

बहन—भाई! ऐसा मत कहो!

भाई—मैं उसे खूब जानता हू। मुझे पल-पल की खबर मिलती रहती है! वह कब कहा है?

बहन—अथेंस मे!

भाई—नही! बहन नही! तुम्हें धोखा हुआ! उसे क्लियोपाट्रा ने बुला लिया! उसने अपना राज उस दुष्ट स्त्री को दे डाला! वे दोनों युद्ध के लिए राजों को इकट्ठा कर रहे हैं। लिबिया का राजा बोक्कस, कैपेडोसिया का आर्कीलस, पैफ्लेगोनिया का फिलेडैल्फस, थिरेस का एडालस, अरब का माल्कूस और अन्य राजे हमारे विरुद्ध तैयारी कर रहे हैं।

थोड़े दिनों पश्चात् दोनों दल एक्शियम के निकट एकत्रित हुए, एण्टनी की भौमिक सेना तो बहुत थी, परन्तु सामुद्रिक सेना इतनी सुशिक्षित नही थी, इसलिए एण्टनी के सेनापतियों ने प्रार्थना की कि महाराज आप भौमिक युद्ध कीजिए, क्योंकि आक्टेवियस के जहाज बड़े मजबूत हैं। परन्तु एण्टनी के विचार क्लियोपाट्रा के अधीन थे। क्लियोपाट्रा उसके साथ थी और वह जो कुछ कहती थी, एण्टनी वही करता था! क्लियोपाट्रा तो स्त्री ही थी परन्तु उसने एण्टनी पर स्वत्व पाकर एण्टनी को भी स्त्रीवत् कर दिया; क्योंकि स्त्रैण मनुष्यों मे पुरुषत्व कम हो जाता है; और उनके विचार भी बिगड़ जाते हैं। क्लियोपाट्रा के कथनानुसार, एण्टनी ने अपने सेनापतियों की बात न मानी और सामुद्रिक युद्ध आरम्भ कर दिया!

जब युद्ध हो रहा था उस समय क्लियोपाट्रा रणक्षेत्र से भाग निकली। उसके जहाजों को भागता देखकर एण्टनी भी उसके पीछे चल दिया।

क्योंकि "विनाशकाले विपरीतबुद्धि:"। इस प्रकार आक्टेवियस ने उस एण्टनी पर जय पाई, जिसने पहले कभी रण मे पीठ नही दिखाई थी। जब वह सिकन्दरिया मे आया तो पछताने लगा और अपने कायरपन पर बडा लज्जित हुआ ! उसने अपने को एक कमरे मे बन्द कर लिया और जब कुछ अनुचर उसके समीप गये तो कहने लगा—

"सुनो ! पृथ्वी मुझे अब अपने ऊपर चलने की आज्ञा नही देती ! यह मेरा भार उठाने से लज्जित है ! मित्रो ! यहां आओ। मैं ऐसा मार्ग भूला कि सदा के लिए भूल गया। मेरे पास रुपयो से भरा हुआ एक जहाज है। उसे आपस मे बाट लो और आक्टेवियस से जा मिलो. यहा से भाग जाओ।"

अनुचर—हम नही भाग सकते !

एण्टनी—मैं स्वयं भाग आया और कायरों को पीठ दिखाने की विधि बता दी ! मित्रो जाओ। अब मेरा ऐसा विचार है जिसमें आपकी जरूरत नही है। हाय, मैं उसके पीछे भाग आया जिसको देखकर मुझे लज्जा आती है। हाय ! मेरे केश मुझे लज्जा दिलाते है ! श्वेत केश काले केशों से कहते है कि तुम मूर्ख हो। काले श्वेतों से कहते है कि तुम कायर हो ! मित्रो ! अब जाओ।

इतने मे क्लियोपाट्रा वहां आ गई और कहने लगी—

"यहां बैठ जाऊं !"

एण्टनी—नही नहीं !

क्लियोपाट्रा—हाय—हाय !

एण्टनी—धिक्-धिक् ! फिलिपी के रणक्षेत्र मे इस आक्टेवियस ने तलवार तक न छुई। यह तो इधर-उधर नाचता ही रहा ! केसियस को ब्रूटस दोनों को मैंने ही पराजित कर दिया था। परन्तु हाय !

अनुचर—महाराज ! महारानी खड़ी हैं !

एण्टनी—हाय ! मेरा यश मिट्टी में मिल गया ! हाय क्लियोपाट्रा ! तू मुझे कहा ले आई ! इन लज्जित आंखों से मैं तुझे कैसे देखूं !

क्लियोपाट्रा—नाथ ! क्षमा करो। मेरे जहाज भयभीत हो गये। मैं नही जानती थी कि आप मेरे पीछे-पीछे भाग उठेंगे ?

एण्टनी—अरी क्लियोपाट्रा ! तू नहीं जानती कि मेरा मन तेरे पतवार से बंधा था । तू जानती है कि तेरा मुझपर कितना स्वत्व है और तेरा संकेतमात्र मुझे खींचने के लिए काफी है !

क्लियोपाट्रा—(रोकर) क्षमा करो ! क्षमा करो !

एण्टनी—आंसू न गिराओ। तुम्हारा एक-एक आंसू एक-एक राज से बढ़कर है।

अब एण्टनी ने आक्टेवियस सीज़र की सेवा में एक आदमी भेजा और प्रार्थना की कि मैं तुम्हारे अधीन रहना अंगीकार करता हूं—अगर आप मुझे मिस्र में रहने दें। अगर यह बात आपको स्वीकृत न हो तो आप मुझे साधारण मनुष्य की भांति अथेंस में रहने की आज्ञा दीजिए। इसके अतिरिक्त इसी दूत द्वारा क्लियोपाट्रा ने भी प्रार्थना की थी कि "मैं आपका स्वत्व स्वीकार करती हूं, आप कृपा करके [1]टोलमी राज मेरी सन्तान के लिए छोड़ दीजिए, क्योंकि इस विजय से यह राज आपके अधीन हो गया है।" सीज़र ने एण्टनी की प्रार्थना स्वीकृत नहीं की, किन्तु क्लियोपाट्रा की बात मान ली और एक दूत भेजा जो उसको मिस्र में आकर फुसलावे।

जब एण्टनी का दूत सीज़र के पास से लौटकर आया उस समय क्लियोपाट्रा सिकन्दरिया में बैठी हुई एनोबार्बस से बातें कर रही थी। उसने कहा—"एनोबार्बस ! अब हम क्या करें।"

एनोबार्बस—सोचो और मर जाओ !

क्लियोपाट्रा—इसमें हमारा दोष है या एण्टनी का ?

एनोबार्बस—केवल एण्टनी का ! क्योंकि उसने अपनी बुद्धि को अपनी इच्छा के अधीन कर दिया, आप युद्ध से भागीं। वह क्यों भागा ? उस समय वीरता प्रेम के अधीन नहीं होनी चाहिए थी ! ऐसे समय में जब आधी-आधी दुनिया दोनों ओर से लड़ रही हो, और सब एण्टनी की ओर देख रहे हों तो तुम्हारे जहाज़ों के साथ भाग आना न केवल हानिकारक ही है किन्तु बड़ी भारी लज्जा का स्थान है।

इतने में एण्टनी दूत सहित आ गया और कहने लगा—

१. मिस्र के राजे टोल्मी कहलाते थे।

और एण्टनी को छोड़ दें।

क्लियोपाट्रा—अच्छा सीजर से कह दो कि मैं उसके आश्रित हूं।

ज्यों ही दूत ने सम्मान के लिए क्लियोपाट्रा के [1]हाथ की ओर अपना मुंह बढ़ाया त्यों ही एण्टनी वहां पर आ गया, और दूत को पकड़ कर इतना मारा कि उसके शरीर से रक्त बहने लगा। फिर क्लियोपाट्रा से कहने लगा—

"देखो ! मेरे आने से पहले तेरा आधा यौवन समाप्त हो चुका था। हाय ! क्या मैंने रोम के स्त्री-रत्नों को इसलिए छोड़ा था कि एक दुष्ट स्त्री मेरी घातक बने।

क्लियोपाट्रा—स्वामिन्—

एण्टनी—अरे, तू सदा की दुष्ट थी। पर जब पाप बढ़ जाता है तो आंखें मुंद जाती हैं। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और अपना दोष ही गुण मालूम होने लगता है।

क्लियोपाट्रा—हाय ! महाराज !

एण्टनी—अरे अभागी ! तू तो सीज़र और पोम्पे के भोजन का ग्रास थी। तू सदाचार क्या जाने ?

क्लियोपाट्रा—आप इतने क्रुद्ध क्यों हैं ?

एण्टनी—सीज़र की खुशामद के लिए उसके दूत से मिलती है।

क्लियोपाट्रा—हाय ! श्रीमान् ने मुझे नहीं पहचाना।

एण्टनी—और मुझे भूल गई।

क्लियोपाट्रा—हाय ! अगर मैंने ऐसा किया हो तो परमात्मा मेरे हृदय पर पाषाण की वर्षा करें। मुझे विष लग जाय। मेरा जीवन आज ही नष्ट हो जाय। (रोकर) मेरी ही सन्तान मुझे मार डाले।

क्लियोपाट्रा के आंसुओं को देखकर एण्टनी का सब प्रकोप शान्त हो गया और वह फिर उसी प्रकार उससे प्रेम करने लगा जैसा पहले किया करता था, क्योंकि क्लियोपाट्रा के स्वभाव में कुछ ऐसी चंचलता थी और

१. पाश्चात्य देशों का यह नियम है कि सम्मान के लिए महाराजों या महारानियों के हाथ को चूमते हैं। पूर्वी देशों में पैर छूने का नियम है।

एण्टनी का मन कुछ ऐसा वशीभूत हुआ था कि एण्टनी को यदि कभी क्रोध आता था तो वह कोई दिन से अधिक न रहता था और क्लियोपाट्रा के छल-बल उसे अंगुलियों पर नचाते थे। जब वह चाहती एण्टनी को हँसाती और जब चाहती रुलाती थी। अब एण्टनी ने एक बार फिर निश्चय किया कि कोई सेना एकत्रित करके आक्टेवियस से भौमिक युद्ध किया जाय, क्योंकि अकेला लड़ना उसने स्वीकार नहीं किया था।

सिकन्दरिया के पास लड़ाई हुई और पहले दिन एण्टनी की विजय हुई। जब एण्टनी एक वीर सिपाही को, जिसने जान तोड़कर कोशिश की थी, रात के समय क्लियोपाट्रा के पास लाया और उसकी प्रशंसा करने लगा तो क्लियोपाट्रा ने एक सुनहरा कवच उसे इनाम में दिया।

परन्तु अन्दर ही अन्दर आक्टेवियस के दूत क्लियोपाट्रा को फुसलाने में सफल हो गये और दूसरे दिन जिस समय बड़े जोर से लड़ाई हो रही थी, क्लियोपाट्रा का संकेत पाकर बहुत से मिस्री बेड़े ने सामुद्रिक युद्ध की भाँति पीठ दिखा दी और एण्टनी बिचारा देखता का देखता ही रह गया। परन्तु अब हो ही क्या सकता था, एण्टनी की रही-सही आशाओं का भी अन्त हो गया। वह कहने लगा—

"सर्वनाश हो गया! इस दुष्ट स्त्री ने मुझे धोखा दिया। मेरी सेना शत्रु से मिल गई। देखो वे खुशी के मारे टोपियां उछाल रहे हैं। हे व्यभिचारिणी! तूने मुझे एक युवक के हाथ बेच दिया। हाय! अब मेरा मन चाहता है कि तुझे यहीं समाप्त कर दूं। हे सूर्यदेव! आपके उदय होने तक मैं न बचूंगा! आज एण्टनी और भाग्य दोनों एक दूसरे से पृथक् होते हैं। आज वे लोग जो मुझसे परम मित्रता रखते थे और जो मेरे इशारे पर काम करते थे मेरे शत्रु से मिल रहे हैं। मिस्र की इस दुष्ट स्त्री ने मुझे पकड़वा दिया। इसी ने मुझसे युद्ध कराया। यह मेरे शिर का मुकुट थी और आज इसने फुसला कर मुझे नष्ट कर दिया। (क्लियोपाट्रा को देख कर) अरी चुड़ैल आ तो सही।

क्लियोपाट्रा—महाराज, अपनी प्यारी से क्यों कुपित हैं?

एण्टनी—चल, हट! नहीं तो अभी तेरे प्राण ले लूंगा। जा, सीज़र के साथ जा—वह तुझे रोम के बाजार में लटकाकर दिखलेगा। लोग

तुझे देखकर हंसेंगे। तू उसके रथ के पीछे चलेगी और चारों ओर से थू-थू का शब्द सुनाई देगा। तुझसे समस्त स्त्री जाति कलंकित हो गई। आक्टेविया अपने नाखूनों से तेरे मुंह को फाड़ेगी। (क्लियोपाट्रा भाग गई) अच्छा हुआ भाग गई। परन्तु यदि मेरी तलवार के नीचे आ जाती तो अच्छा होता, क्योंकि एक की मृत्यु से सैकड़ों बच जाते। अब मैं अवश्य इसे मार डालूंगा।

अब एण्टनी का मन क्लियोपाट्रा से बिल्कुल खट्टा हो चुका था। अब वह स्वयं देख चुका कि यह चुड़ैल छल करती है। इसलिए क्लियोपाट्रा को भी उसे समझाने का कोई उपाय सूझता न था।

पहले तो दो चार आंसू गिराकर वह एण्टनी को प्रसन्न कर देती थी और एण्टनी उसकी मुस्कराहट देखते ही उसके सब दोष भूल जाता था। परन्तु इस समय एण्टनी के हृदय में बड़ा भयंकर घाव लगा था, जो एक दो चिकनी-चुपड़ी बातों से अच्छा नहीं हो सकता था। इसलिए अपनी सहेलियों की अनुमति से (क्योंकि क्लियोपाट्रा की सहचारियां भी कुछ कम छली न थीं) उसने अपने आपको एक मन्दिर में बन्द कर लिया और एण्टनी के पास कहला भेजा कि क्लियोपाट्रा मर गई और अन्तिम समय उसके मुख से यही शब्द निकलते थे—"एण्टनी! एण्टनी!"

जब वह दूत एण्टनी के पास पहुंचा, एण्टनी ने कहा—

"देखो आज मेरी रानी ने मेरे हाथ से तलवार छुड़ा दी।"

दूत—नहीं महाराज! रानी को आपसे अगाध प्रेम था और उसका परिणाम भी आपका ही सा हुआ!

एण्टनी—नहीं दुष्ट! चुप रह! तेरी रानी ने मुझे नष्ट कर दिया। मैं उसे अवश्य प्राणदण्ड दूंगा!

दूत—श्रीमान्! मनुष्य को एक ही बार प्राणदण्ड दिया जाता है! यह वह स्वयं पा चुकी। आप जो चाहते थे वह हो गया! अन्त में उसने यही कहा था "एण्टनी, सुयोग्य एण्टनी!" फिर उसका दम घुटने लगा और उसने "एण्टनी" कहना चाहा परन्तु शब्द मुंह का मुंह ही में रह गया!

एण्टनी—तो वह मर गई?

दूत—हां, मर गई !

एण्टनी—अच्छा तो अब समस्त दिन का काम समाप्त हो गया। अब हमें सोना चाहिए। क्लियोपाट्रा ! मैं तेरे पीछे आता हूं। महारानी ठहर। मेरे लिए ठहर। मैं रो-रोकर तेरे लिये क्षमा मागूंगा। हम दोनों स्वर्ग लोक मे मिलेंगे। (नौकर से) क्लियोपाट्रा मर गई इसलिए हमारा जीना व्यर्थ है। मैंने अपनी तलवार से समस्त संसार जीत लिया था, परन्तु आज मुझमें एक स्त्री के बराबर भी साहस नही है। तूने प्रतिज्ञा की थी कि जब कभी कोई अत्यावश्यक कार्य्य होगा तो आपकी सेवा करूंगा। सो आज सबसे जरूरी काम है क्योंकि अब जीते रहने में लज्जा और अपयश के सिवा और कुछ नही है। इसलिए आज तलवार से इस जीवन को समाप्त कर।

नौकर—भला मैं वह बात कब कर सकता हूं जो आपके शत्रु भी नहीं कर सके !

एण्टनी—अरे ! क्या तू यह चाहता है कि रोम की खिड़कियों से अपने स्वामी को सीजर के रथ के पीछे घसिटता हुआ देखे। क्या वर्त्तमान अपयश कुछ कम है ?

नौकर—नही मैं नही चाहता !

एण्टनी—नहीं चाहता तो तैयार हो जा। एक घाव से मेरा सब रोग दूर हो जायगा ! तलवार उठा !

नौकर—श्रीमान् ! क्षमा कीजिए।

एण्टनी—अरे क्या तूने प्रतिज्ञा नहीं की थी कि समय पर काम आऊंगा। सो तू आज क्यों हटता है ?

नौकर—अच्छा महाराज अपना मुख दूसरी ओर को कर लें। क्योंकि मुख को देखकर अत्याचार नहीं किये जा सकते !

एण्टनी—(पीठ फेरकर) ले !

नौकर—मेरी तलवार खिंच गई !

एण्टनी—अच्छा, फिर कार्य्य समाप्त कर !

नौकर—श्री महाराज ! इस अन्त समय मे आज्ञा दीजिए कि मैं प्रणाम कर लूं !

एण्टनी—अच्छा प्रणाम !
नौकर—क्या अब मारूं ?
एण्टनी—हां !
नौकर—अच्छा लो ! अब मुझे एण्टनी की मृत्यु का शोक न भोगना पड़ेगा।

यह कहकर नौकर ने अपने सिर मे तलवार मार ली और गिर पडा।

एण्टनी—अरे वीर नौकर तू मुझे शिक्षा दे गया कि मुझे क्या करना चाहिए। मेरी रानी और तू दोनो मुझमे अच्छे रहे। अब मैं मृत्यु से विवाह करता हूं।

यह कहकर एण्टनी तलवार के ऊपर गिर पड़ा परन्तु उसकी जान न निकली। उसने पहरे के सिपाहियों से प्रार्थना की कि एक तलवार से शेष सम्बन्ध को तोड दो, लेकिन किसी ने स्वीकार न किया। जब वह इस प्रकार घायल पडा हुआ था क्लियोपाट्रा का नौकर वहा पर आ गया, जिसे रानी ने यह सोचकर,एण्टनी के पास भेजा था कि कही एण्टनी उसकी कल्पित मृत्यु के शोक मे प्राण न दे दे। एण्टनी ने नौकर से प्रार्थना की कि "तलवार द्वारा इस कष्ट मे छुड़ा दो।"

नौकर—श्री महाराज ! महारानी क्लियोपाट्रा ने मुझे भेजा है।
एण्टनी—अरे कब भेजा था ?
नौकर—अभी !
एण्टनी—वह कहा है ?
नौकर—श्री महाराज ! मन्दिर मे ! जब उसने देखा कि आप बहुत क्रुद्ध है और समझते हैं कि वह सीजर से मिल गई तो उसने आपके पास अपनी मृत्यु का समाचार भेज दिया, परन्तु फिर वह डरी कि कही आप आत्मघात न कर लें। इसलिए मुझे आपकी सेवा में सच सच कहने को भेजा है। पर अब क्या होता है।
एण्टनी—अच्छा अभी थोड़ी-सी देर और है। पहरे वालों के द्वारा मुझे क्लियोपाट्रा के पास ले चलो।

इधर क्लियोपाट्रा ने सुना कि एण्टनी ने आत्मघात कर लिया इस

लिए वह सिर पीटने लगी। परन्तु मन्दिर से बाहर जाना उचित नहीं था क्योंकि आक्टेवियस सीज़र के नौकर चारों ओर मंडरा रहे थे और क्लियोपाट्रा को जीवित पकड़ना चाहते थे। जब लोग एण्टनी को मन्दिर के पास लाये तो खिड़की में होकर उसने बड़ी मुश्किल से उसे भीतर खींच लिया। उसके मुंह से इतना ही निकला—

"एण्टनी! एण्टनी!"

एण्टनी—सीज़र मुझे न मार पाया। एण्टनी का अन्त एण्टनी के ही हाथ से हुआ!

क्लियोपाट्रा—उचित भी यही था। एण्टनी के सिवा और कौन एण्टनी को जीत सकता था!

एण्टनी—रानी मेरा अन्त निकट है, मुझे प्यार कर ले।

क्लियोपाट्रा ने कुछ शराब पिलाई, जिसके नशे में वह थोड़ी देर तक बोलता रहा। उसने अन्त में कहा—"प्यारी क्लियोपाट्रा, सीज़र के पास जा और रक्षा तथा यश की प्रार्थी हो।"

क्लियोपाट्रा—यश और रक्षा दोनों में परस्पर विरोध है।

एण्टनी—मेरी इस शोचनीय दशा पर शोक मत करो! किन्तु मेरी उस अवस्था का ध्यान करके खुशी मनाओ जिसको मैं भोग चुका हूं। न तो नीचता से मरो और न मेरे कवच को किसी अन्य रोमन के हवाले करो। अब मेरा अन्त आ गया। मैं कुछ नहीं कह सकता।

क्लियोपाट्रा—हे वीर! तुझे मेरी कुछ परवाह नहीं है, और मरा जा रहा है। क्या मैं अब इस संसार में रहूंगी। क्योंकि बिना तेरे यह घर सुअर के घर से उत्तम नहीं है। देखो! देखो! दुनिया का मुकुट पिघला जा रहा है। स्वामिन्! युद्ध की जयमाल मुरझा गई। अब लड़के और लड़कियां वीरों के समान हैं; क्योंकि जो भेद था सो जाता रहा।

इतने में एण्टनी का प्राणान्त हो गया और क्लियोपाट्रा को यह देख कर मूर्छा आ गई। बड़ी देर के पश्चात् उसे होश आया और मृतक संस्कार की तैयारियां की।

सीज़र ने भी एण्टनी की मृत्यु के विषय में सुना और बड़ा पश्चात्ताप

किया, क्योंकि यद्यपि सीजर एण्टनी का शत्रु हो गया था तथापि उसे विश्वास था कि एण्टनी बड़ा वीर पुरुष था। वीर लोग अपने शत्रुओं की मृत्यु पर भी आंसू बहाया करते हैं।

सीजर को अब यह भी ख्याल हुआ कि कहीं क्लियोपाट्रा एण्टनी के सोच मे मर न जाय। इसलिए उसने जल्दी-जल्दी उसे सन्तोष देने के लिए दूत भेजे। एक दूत ने मन्दिर के निकट आकर कहा कि महारानी सीजर से क्या चाहती हैं।

क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"अगर तुम्हारा स्वामी चाहता है कि मैं उससे भीख मांगूं तो मैं यही मांगूगी कि मेरे लड़के को मिस्र का देश दे दिया जाय।"

इसके पश्चात् यह दूत खिड़की में रस्सी लगाकर मन्दिर के भीतर चढ़ गया। रानी डरी और तलवार उठाकर अपना अन्त करना चाहा परन्तु उस दूत ने झट उसके हाथ से तलवार छीन ली। इस प्रकार क्लियोपाट्रा आत्मघात करने मे सफल न हो सकी। परन्तु उसने खाना-पीना छोड़ दिया। दिन-रात रोती रहती। ज्वर ने उसे आ घेरा। सीजर ने वैद्यों को उसकी चिकित्सा के लिए भेजा, परन्तु उसने औषध नहीं खाई। रोते-रोते उसकी आंखें सूज गईं।

इसके पश्चात् सीजर स्वयं मन्दिर मे आया। क्लियोपाट्रा उठ खड़ी हुई और पृथ्वी में सिर झुकाकर प्रणाम किया। सीजर ने कहा—

"दुःखी मत हो। जो हानि तुमने हमको पहुंचाई है हम उसको भूल जायेंगे।"

क्लियोपाट्रा—महाराज ! मैं केवल इतना कहती हूं कि मुझसे ऐसी भूलें हो गई हैं जैसी प्रायः स्त्री जाति से हो जाया करती हैं !

सीजर—सुनो। अगर हमारे आश्रय आओगी तो हम तुम्हारे ऊपर दया करेंगे। पर जो एण्टनी की तरह आत्मघात किया तो हमारा क्रोध बहुत बढ़ जायेगा और हम तुम्हारी सन्तान को मार डालेंगे।

क्लियोपैट्रा—आप जो चाहें करें। हम आपके आश्रित हैं।

अब सीजर ने हुक्म दिया कि मिस्र का कोश उसको दे दिया जाये। सिल्यूकस, क्लियोपाट्रा का कोषाध्यक्ष उसके साथ था। क्लियोपाट्रा ने कुछ

बहुमूल्य रत्न छिपाकर शेष सब कुछ उसके सामने रख दिया। परन्तु सिल्यूकस ने कहा कि अभी बहुत कुछ छिपा लिया गया है। इसपर तो क्लियोपाट्रा को बड़ा क्रोध आया और सीज़र के सामने ही उसके कई घूंसे मारे और निकाल दिया। सीज़र ने कुछ न कहा और वहां से चला गया।

इन्द्रिय-लालसा तो क्लियोपाट्रा के मन में अन्तिम समय तक रही। उसने बातों तथा शृंगार से सीज़र का मन भी आकर्षित करना चाहा। जिस समय सीज़र उसके समीप आया उस समय यद्यपि एण्टनी के शोक से उसकी आंखें सूज रही थीं, बाल बिखरे हुए थे परन्तु उस समय भी उसका स्वरूप कुछ कम लुभाने वाला न था। लेकिन सीज़र के सामने उसका चातुर्य कुछ न चला और वह अपने कार्य की सिद्धि में सफल न हो सकी।

सीज़र के चले जाने के पश्चात् क्लिओपाट्रा ने उसके दूत की बड़ी खुशामद की और पूछा कि वास्तव में सीज़र उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहता है। उस दूत ने क्लिओपाट्रा की इस शोचनीय दशा पर [illegible] खाकर उत्तर दिया कि "हे मिस्रेश्वरी! दो-तीन दिन और [illegible] सीज़र का मुख्य प्रयोजन तो यही है कि तुमको बन्दी [illegible] जाय। वह इस समय सीरिया होकर रोम को जा रहा है। [illegible] तुमको अपने पुत्रों सहित रोम को चला जाना होगा।"

यह बात सुनकर क्लिओपाट्रा का शरीर कांप [illegible] हो गया कि दुर्दशा अवश्यम्भावी है। उस समय [illegible] अन्धकार ही अन्धकार दीखने लगा। वह [illegible] करने लगी। बन्दी होकर जीने की [illegible] सुखद है, ऐसा उसने सोचा। उसे ऐसा [illegible] है जब उसे आत्मघात करना चाहिए। [illegible] उसकी आंखों के सामने घूमने लगे। [illegible] करके रोम की जनता के सामने [illegible] पहनने पड़ेंगे।" ऐसे जीवन [illegible] करना है, यह सब उसने [illegible]

सोच-समझकर उसने [illegible]

किया, क्योंकि यद्यपि सीजर एण्टनी का शत्रु हो गया था तथापि उसे विश्वास था कि एण्टनी बड़ा वीर पुरुष था। वीर लोग अपने शत्रुओं की मृत्यु पर भी आंसू बहाया करते हैं।

सीजर को अब यह भी ख्याल हुआ कि कहीं क्लियोपाट्रा एण्टनी के सोच में मर न जाय। इसलिए उसने जल्दी-जल्दी उसे सन्तोष देने के लिए दूत भेजे। एक दूत ने मन्दिर के निकट आकर कहा कि महारानी सीजर से क्या चाहती हैं।

क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"अगर तुम्हारा स्वामी चाहता है कि मैं उससे भीख मांगूं तो मैं यही मांगूंगी कि मेरे लड़के को मिस्र का देश दे दिया जाय।"

इसके पश्चात् यह दूत खिड़की में रस्सी लगाकर मन्दिर के भीतर चढ़ गया। रानी डरी और तलवार उठाकर अपना अन्त करना चाहा परन्तु उस दूत ने झट उसके हाथ से तलवार छीन ली। इस प्रकार क्लियोपाट्रा आत्मघात करने में सफल न हो सकी। परन्तु उसने खाना-पीना छोड़ दिया। दिन-रात रोती रहती। ज्वर ने उसे आ घेरा। सीजर ने वैद्यों को उसकी चिकित्सा के लिए भेजा, परन्तु उसने औषध नहीं खाई। रोते-रोते उसकी आंखें सूज गईं।

इसके पश्चात् सीजर स्वयं मन्दिर में आया। क्लियोपाट्रा उठ खड़ी हुई और पृथ्वी में सिर झुकाकर प्रणाम किया। सीजर ने कहा—

"दुःखी मत हो। जो हानि तुमने हमको पहुंचाई है हम उसको भूल जायेंगे।"

क्लियोपाट्रा—महाराज ! मैं केवल इतना कहती हूं कि मुझसे ऐसी भूलें हो गई हैं जैसी प्रायः स्त्री जाति से हो जाया करती हैं !

सीजर—सुनो। अगर हमारे आश्रय आयोगी तो हम तुम्हारे ऊपर दया करेंगे। पर जो एण्टनी की तरह आत्मघात किया तो हमारा क्रोध बहुत चढ़ जायेगा और हम तुम्हारी सन्तान को मार डालेंगे।

क्लियोपैट्रा—आप जो चाहें करें। हम आपके आश्रित हैं।

अब सीजर ने हुक्म दिया कि मिस्र का कोश उसको दे दिया जाये। सिल्यूकस, क्लियोपाट्रा का कोषाध्यक्ष उसके साथ था। क्लियोपाट्रा ने कुछ

बहुमूल्य रत्न छिपाकर शेष सब कुछ उसके सामने रख दिया। परन्तु सिल्यूकस ने कहा कि अभी बहुत कुछ छिपा लिया गया है। इसपर तो क्लियोपाट्रा को बड़ा क्रोध आया और सीज़र के सामने ही उसके कई घूंसे मारे और निकाल दिया। सीज़र ने कुछ न कहा और वहां से चला गया।

इन्द्रिय-लालसा तो क्लियोपाट्रा के मन में अन्तिम समय तक रही। उसने बातों तथा शृंगार से सीज़र का मन भी आकर्षित करना चाहा। जिस समय सीज़र उसके समीप आया उस समय यद्यपि एण्टनी के शोक से उसकी आंखें सूज रही थी, बाल बिखरे हुए थे परन्तु उस समय भी उसका स्वरूप कुछ कम लुभाने वाला न था। लेकिन सीज़र के सामने उसका चातुर्य कुछ न चला और वह अपने कार्य की सिद्धि में सफल न हो सकी।

सीज़र के चले जाने के पश्चात् क्लिओपाट्रा ने उसके दूत की बड़ी खुशामद की और पूछा कि वास्तव में सीज़र उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहता है। उस दूत ने क्लिओपाट्रा की इस शोचनीय दशा पर तरस खाकर उत्तर दिया कि "हे मिस्रेश्वरी! दो-तीन दिन और सुख कर लो। सीज़र का मुख्य प्रयोजन तो यही है कि तुमको बन्दी बनाकर रोम ले जाय। वह इस समय सीरिया होकर रोम को जा रहा है। तीन दिन में तुमको अपने पुत्रों सहित रोम को चला जाना होगा।"

यह बात सुनकर क्लिओपाट्रा का शरीर कांपने लगा। उसे पूरा विश्वास हो गया कि दुर्दशा अवश्यम्भावी है। उस समय क्लिओपाट्रा को चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दीखने लगा। वह अपने बन्दीजीवन की कल्पना करने लगी। बन्दी होकर जीने की अपेक्षा मृत्यु स्वीकार करना अधिक सुखद है, ऐसा उसने सोचा। उसे ऐसा लगा कि अब वह समय आ गया है जब उसे आत्मघात करना चाहिए। भावी बन्दी जीवन के सारे दृश्य उसकी आंखों के सामने घूमने लगे। "बांदी की भांति मुझे अपमानित करके रोम की जनता के सामने प्रदर्शित किया जाएगा। बन्दियों के वस्त्र पहनने पड़ेंगे।" ऐसे जीवन से तो कहीं अच्छा है—मरना। उसे आगे क्या करना है, यह सब उसने विचार कर लिया।

सोच-समझकर उसने अपनी सखी चरमियन को बुलाया और कहा

—"प्यारी सखी, मैं सदा की भांति आज अपना साज-शृंगार करना चाहती हूं, एण्टनी को मैं मिलने जा रही हूं। रानी वाले मेरे वस्त्र लाओ। मैं पहनूंगी।" सखियों से यह बातें हो ही रही थी, कि उसी समय एक ग्रामीण व्यक्ति अंजीरों की एक टोकरी दरवाजे पर लाया। साधारण से उस व्यक्ति ने भीतर आने की आज्ञा चाही। इस फल बेचने वाले को क्लिओपाट्रा के किसी चाकर ने समझा-बुझाकर भेजा था। फलों के बीच में कुछ विषैले कीड़े थे। इन कीड़ों की ऐसी प्रकृति कही जाती थी, कि ये जिसको भी काट लेते हैं, वह किसी भी इलाज से बच नहीं सकता, इनके काटने पर किसी प्रकार की कोई पीड़ा नहीं होती, और जिसे इन्होंने काटा, वह तत्काल मर जाता है।

क्लिओपाट्रा इस फल बेचने वाले को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। उसने सहजभाव से उस ग्रामीण व्यक्ति से पूछा—

"क्या तेरे पास सचमुच नील नदी वाला कीड़ा है, जिसके काटने से सहज मृत्यु हो जाया करती है?"

उत्तर मिला—हां जी, क्यों नहीं—देखो कितना सुन्दर यह है, किन्तु किसी को छूने न देना। कोई इसके काटने पर मर जाए, तो पाप मुझे न लगे।

रानी ने उस छोटे से कीड़े को (नन्हें से साप को) देखा। कितना सुन्दर! ग्रामीण व्यक्ति से उसने फलों की वह टोकरी रखवा ली, और उसे विदा कर दिया।

बेचने वाला जब चला गया तो रानी ने चरमियन से कहा—"अब मेरा शृंगार कराओ। मैं मरूंगी।"

क्लिओपाट्रा की सखी इरास वस्त्र, आभूषण, रानी के शिर वाला मुकुट—सभी कुछ लेकर आयी। रानी ने वस्त्र धारण किए, और कहने लगी—"एण्टनी से मिले इतनी देर हो गयी, अब मैं उससे शीघ्र मिलूंगी। वह शायद सोच रहा होगा, कि मैं सीजर की दासी बन गयी हूं। एण्टनी मुझे बुला रहा है। मुझे उसके शब्द सुनाई पड़ रहे हैं। ओ एण्टनी! ओ स्वामिन्, हे परमेश्वर, मैं आ रही हूं शीघ्र आ रही हूं।"

ऐसा कहकर उसने अपनी सहचरियों-सखियों को गले लगाया—विदा

मांगी।

नन्हें छोटे कीट को उसने अपनी छाती से लगा लिया—मानो वह दूध पी रहा हो। सखियों ने रोकना चाहा—पर वह कहा सुनने वाली थी। उसने दूसरा कीड़ा लिया और उसे बाहु में लगाया। एण्टनी का नाम लेते-लेते वह शय्या पर गिर पड़ी। प्राण निकल चुके थे—सदा के लिए सो गई।

चरमियन ने भी एक कीड़ा अपनी बाहु से लगा लिया—वह भी [illegible] के साथ सदा के लिए विदा सो गई।

क्लियोपाट्रा का विचार आत्मघात कर लेने का है—ऐसा समाचार कहीं से सीज़र को मिल गया था। उसने अपने दूत क्लियोपाट्रा को पकड़ लेने के लिए तुरन्त भेजे। परन्तु जब तक ये दूत पहुँचे, क्लियोपाट्रा [illegible] पहुँच चुकी थी। सीज़र की सभी कामनायें विफल हुईं।

सीज़र आया और अपने परिश्रम को विफल देखकर अति दुःखी हुआ। क्लियोपाट्रा का मृतक-संस्कार बड़े सम्मान के साथ किया गया। उसका शव एण्टनी के शव के साथ समाधिस्थ कर दिया गया।

विण्डसर की हँसमुख स्त्रियाँ
(MERRY WIVES OF WINDSOR)

विण्डसर[1] में पेज और फ़ोर्ड नामी दो धनी भद्र पुरुष रहते थे, जिनकी स्त्रियाँ बड़ी रूपवती थी। परन्तु पेज की पुत्री ऐनी अतीव सुन्दरी थी और उसके विवाह की लालसा कई पुरुषों के मन में थी। उनमें से एक का नाम डाक्टर केअस था, जो एक फरांसीसी वैद्य था। दूसरा स्लेण्डर शैलो नामी गाँव के एक मुखिया का भतीजा था। ऐनी का तीसरा चाहने वाला फैण्टन था, जिसे ऐनी भी चाहती थी। परन्तु उसके माँ-बाप, अर्थात् पेज और उसकी स्त्री फ़ैण्टन को अपना दामाद बनाना स्वीकार नही करते थे। उन्होंने फैण्टन से स्पष्ट कह दिया था कि तुम हमारे घर न आया करो और हम कदापि अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ नही करेंगे। यद्यपि बिना उनकी राजी के भी यह विवाह हो सकता था, परन्तु जब कभी फैण्टन ऐनी से इस सम्बन्ध में वार्त्तालाप करता था तो ऐनी यही कह देती थी कि आप मेरे पिताजी को प्रसन्न कीजिए। एक दिन निराश होकर फैण्टन ने ठण्डी साँस लेकर ऐनी से कहा—

"प्यारी ऐनी ! मुझे दीखता है कि कभी तुम्हारे पिताजी मुझसे खुश न होंगे। इसलिए तुम उनके आसरे पर मत छोडो।"

ऐनी—हाय ! फिर क्या हो ?

फैण्टन—तुम स्वयं ही कार्य्यवाही करो। तुम्हारे पिताजी मुझसे नाराज हैं। वे कहते हैं कि तुम बड़े धनी घराने के थे। तुमने सब धन लुटा दिया। इसलिए केवल धन-प्राप्ति के लिए ऐनी से विवाह करना

---

१. विण्डसर इंगलिस्तान में एक स्थान का नाम है।

चाहते हो। तुम्हें ऐनी से कुछ प्रेम नहीं है।

ऐनी—शायद उनका कथन ठीक हो।

फ़ैण्टन—नहीं प्रिये! नहीं! जो कुछ मुझमें दोष हैं उनको तुमसे न छिपाऊंगा। सच बात यह है कि पहले-पहल मैंने धन के लिए ही विवाह की इच्छा की थी, परन्तु मन चलाते ही मैं तुम पर इतना आसक्त हो गया हूं कि तुम्हारे प्रेम को धन से भी अधिक समझता हूं।

ऐनी—फैण्टन! भले फैण्टन! मेरे पिताजी से फिर प्रार्थना करो। संभव है कि वह मान ही जाय। यदि वह न मानेंगे तो कुछ और उपाय किया जायगा।

जब यह बातें हो रही थीं उसी समय स्लेण्डर शैलो के साथ वहां आ गया। उसके साथ एक वृद्धा स्त्री क्विकली भी थी जिसका हाल हम आगे चलकर लिखेंगे। यहां यही कह देना काफ़ी है कि यह डाक्टर केअस की दासी थी और प्रेमासक्त स्त्री-पुरुषों के बीच में पत्र पहुंचाया करती थी। डाक्टर केअस इसी के द्वारा ऐनी को संदेसा पहुंचाया करता था और ऐनी की माता डाक्टर केअस से राजी होने के कारण इसे घर में आने दिया करती थी। ऐनी का बाप स्लेण्डर से राजी था। इस प्रकार एक घर में तीन मत थे। लड़की यह चाहती थी कि जिस प्रकार हो सके फैण्टन से विवाह हो जाय। पिता उसका स्लेण्डर को दामाद बनाना चाहता था। माता केअस को अपनी कन्या देना चाहती थी।

स्लेण्डर धनी पुरुष था। उसकी वार्षिक आय ३०० पौण्ड थी, परन्तु उसमें बुद्धि नहीं थी। ऐनी का पिता पेज उसे केवल धनी देखकर ही अपनी बेटी देना चाहता था, जिस प्रकार आज कल भारतवर्ष के लोग केवल धनियों के साथ बिना उनके गुणों का विचार किये हुए अपनी पुत्रियाँ ब्याह देते हैं।

जब ये लोग वहां आये तो शैलो ने क्विकली से कहा, "क्विकली! ऐनी को बुलाओ। मेरा भतीजा उससे कुछ बातें करना चाहता है।"

ऐनी ने स्लेण्डर को देखकर अपने जी में कहा—"यह मेरे पिता का प्रस्ताव है। हाय तीन सौ पौण्ड के लिए दोष भी लोगों को गुण प्रतीत होते हैं।" जब वह उनके निकट आई तो शैलो ने कहा—

"ऐनी ! मेरा भतीजा तुमसे प्रेम करता है।"

स्लेण्डर—हा, मुझे ऐनी सब स्त्रियों से अधिक प्यारी हैं।

शैलो—वह तुमको सहधर्मिणी बनाना चाहता है।

स्लेण्डर—सहधर्मिणी ! हाँ, जो मेरा धर्म है वह इसका होगा।

शैलो—वह आपको १५० पौण्ड देगा !

ऐनी—श्रीमन्, आप उसको स्वयं कहने दीजिए।

शैलो—बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा ! (स्लेण्डर से) लड़के ! चल, ऐनी तुझे बुलाती है।

ऐनी—कहिए स्लेण्डर जी !

स्लेण्डर—भली ऐनी !

ऐनी—क्या आज्ञा ?

स्लेण्डर—मुझे तो कुछ कहना नहीं है। तुम्हारे पिता और मेरे चचा ने विवाह का प्रस्ताव किया है। यदि हो जाय तो हरि-इच्छा ! वही मेरी अपेक्षा अधिक कह सकते हैं। देखो तुम्हारे पिताजी आते हैं।

इस समय पेज और उसकी स्त्री वहाँ पर आ गये और पेज ने फैण्टन को देखकर क्रोध से कहा—

"फ़ैण्टन ! यह बुरी बात है। तुम मेरे घर क्यों आते हो ? कई बार मैं कह चुका हूं कि ऐनी को वर मिल गया।

फैण्टन—पेज ! क्रोध न कीजिए। शान्त हूजिए !

पेज की स्त्री—फैण्टन ! मेरी बेटी के समीप न आया करो।

पेज—वह आपके लिए नहीं है।

फ़ैण्टन—अजी सुनिए तो सही !

पेज ने फ़ैण्टन की बात न सुनी और स्लेण्डर तथा शैलो के साथ वार्तालाप करता हुआ बाहर चला गया। क्विकली के संकेत पर फ़ैण्टन ने पेज की स्त्री से कहा—

"मिसिस पेज[1] ! मुझे आपकी कन्या से सच्चा प्रेम है। आप चाहे

---

१. अंग्रेज़ी नियम यह है कि पेज की स्त्री मिसिस पेज और फ़ोर्ड की स्त्री मिसिस फोर्ड। अर्थात् पति के नाम के पहले मिसिस लगा देते हैं।

कितनी ही मुझसे घृणा करें मैं इस प्रेम को त्याग नहीं सकता। आप मेरे ऊपर दया कीजिए।"

ऐनी—पूज्य माताजी, मेरा विवाह इस मूर्ख (स्लेण्डर) से न कीजिए।

पेज की स्त्री—नहीं-नहीं। मैं तेरे लिए एक उत्तम वर ढूँढूँगी।

मिसिस पेज का तात्पर्य यहां डाक्टर केयस से था। परन्तु वह अपने विचार से अपने पति को सूचित नहीं करती थी।

इन उपर्युक्त पुरुषों के अतिरिक्त विण्डसर में एक और मनुष्य रहता था जिसका नाम सर जोन फ़ौल्स्टाफ़ था। यह फ़ौल्स्टाफ़ बहुत मोटा था। परन्तु उसमें बुद्धि नहीं थी। उसके पास धन भी नहीं था परन्तु उसके साथी प्रायः इधर-उधर से लूटमार कर लाया करते थे और उसी से उसका निर्वाह होता था। वह बहुधा एक सराय में रहा करता था, जहां पथिकों को मद्य पिलाकर नशे की दशा में वह उनकी सम्पत्ति हरण कर लेता था। इस प्रकार छोटे-छोटे झगड़े नित्य-प्रति वहां हुआ करते थे। एक दिन फ़ौल्स्टाफ़ ने पेज और फोर्ड की स्त्रियों के विषय में सुना कि वे रूपवती होने के अतिरिक्त धनवती भी हैं और उनके पति का रुपया उन्हीं के स्वत्व में रहता है। इस पर फ़ौल्स्टाफ़ के मुंह में पानी भर आया और उसने इन दोनों स्त्रियों से प्रेम करके धन-प्राप्ति की इच्छा की, क्योंकि प्रायः असती स्त्रियां अपने मित्रों को बहुत धन लुटा दिया करती हैं।

इस इच्छा की पूर्ति के लिए फ़ौल्स्टाफ़ ने केयस की दासी क्विकली को गांठना चाहा। क्विकली वास्तव में इन बातों में बड़ी निपुण थी और स्वयं भी यह चाहती थी कि इस प्रकार के कार्यों से अपना निर्वाह किया करे और आंख के अंधों और गांठ के पूरों को लूटा करे। क्विकली ने फ़ौल्स्टाफ़ से कुछ इनाम लेकर उसके पत्र मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज तक पहुंचाने का भार अपने ऊपर ले लिया और उद्योग करने लगी। परन्तु इसके साथ ही क्विकली का प्रयोजन केवल धनोपार्जन था। वह व्यर्थ किसी स्त्री को बहकाना नहीं चाहती थी।

मिसिस पेज ने फ़ौल्स्टाफ़ का पत्र पढ़ा, जिसमें लिखा हुआ था—

"यह न पूछो कि मैं तुमसे क्यों स्नेह करता हूं, क्योंकि प्रेम किसी कारण से नहीं होता। तुम यदि युवती नहीं हो तो क्या चिंता, क्योंकि मैं

भी तो युवक नहीं हूं। प्रेम तो है। तुम हंसमुख हो और मैं भी हंसमुख हूं। यहां इतना ही कहना काफी है कि मैं तुम पर आसक्त हूं। मैं यह नहीं कह सकता कि मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं वीर हूं और वीरों को ऐसा कहना अनुचित है। हां, यही प्रार्थना है कि मुझसे प्रेम करो।

तुम्हारा सच्चा और दिन-रात
चाहनेवाला
जौन फ़ौल्स्टाफ़"

मिसिस पेज पत्र को देखते ही क्रोध में भर गई और कहने लगी कि देखो मेरी युवावस्था में भी ऐसे प्रेम-पत्र मेरे पास नहीं आये थे। फिर यह कौन मूर्ख है जो इस प्रकार मुझसे परिचय जताता है। वह फ़ौल्स्टाफ़ को जानती थी। दो-चार बार उससे बातचीत भी हो चुकी थी। परन्तु यह जानकर कि फ़ौल्स्टाफ़ उसे कुदृष्टि से देखता है बड़ा क्रोध आया और कहने लगी कि ऐसे दुष्टों को दण्ड देने के लिए अंगरेजी पार्लीमेंट की ओर से नियम होने चाहिएं।

इतने में मिसिस फ़ोर्ड वहां पर आ गई और कहने लगी—"मिसिस पेज! मैं तुम्हारे घर को जा रही थी।"

मिसिस पेज—और सत्य जानो मैं तुम्हारे घर आ रही थी।

मिसिस फोर्ड—देखो, मेरे पास एक पत्र आया है!

मिसिस पेज—आहा! यह तो मेरे ही पत्र के समान है। अक्षर-अक्षर मिलता है। भेद केवल इतना है कि मेरे पत्र में पेज लिखा है और तुम्हारे में फ़ोर्ड। प्रतीत होता है कि उसने बहुत से पत्र छपवा लिये हैं जिसको चाहे उसके पास भेज देता है। मैं सत्य कहती हू कि संसार में पवित्र पुरुषों का नाम तक नहीं मिलता।

मि० फोर्ड—यह तो वैसा ही पत्र है और एक ही हाथ के लिखे हुए हैं। भला यह दुष्ट हमारे विषय में क्या समझता है?

मि० पेज—मुझे स्वयं सोच है। उसने मेरा कौन-सा काम ऐसा देखा जिससे उसे इस दुष्टता की आशा हुई। हमको अवश्य उससे बदला लेना चाहिए।

मि० फ़ोर्ड—हां जी यह ठीक है। अगर मेरे पति जी इस पत्र को देख पावें

[illegible] ओर से सन्देह हो जाय।

[illegible] ने चालाकी से फ़ोल्स्टाफ़ को [illegible] विचार किया कि किसी प्रकार धोखा देकर [illegible]। इसलिए उन्होंने क्विकली के द्वारा फ़ोल्स्टाफ़ के पास [illegible]।

अब क्विकली फ़ोल्स्टाफ़ के पास [illegible], "प्रणाम ! महाशय !"

फ़ोल्स्टाफ़—बहुत-बहुत प्रणाम। कहो क्या है?

क्वि०—महाशय ! मिसिस फ़ोर्ड ने मुझे भेजा है। [illegible] गुप्त बात है—मैं डाक्टर कैयस के पास रहती हूँ।

फ़ोल्०—कहिए मिसिस फ़ोर्ड ने क्या कहा है?

क्वि०—ज़रा निकट आइए।

फ़ोल्०—कहो। यहाँ कोई नहीं सुनता। [illegible]।

क्वि०—सारांश यह है कि [illegible] जैसा किसी बड़े से बड़े [illegible] युवक देखे हैं जिनके [illegible] नहीं [illegible]। परन्तु उन पर भी [illegible]।

फ़ोल्०—(फूलकर) [illegible]?

क्वि०—उसको आपका पत्र [illegible] है। अब उसने कहला [illegible] के बीच में आइए [illegible]।

फॉ०—नहीं-नहीं। सच्चे और हार्दिक प्रेम से अधिक कुछ गुण नहीं है।

विक्वली—ईश्वर आपका भला करे ! मि० पेज ने कहला भेजा है कि आप अपने छोटे नौकर को उसके पास भेज दें। वह आप दोनों के बीच में आया-जाया करेगा। मि० पेज बड़ी हंसमुख स्त्री है। विण्डसर भर में ऐसी कोई स्त्री नहीं जो उसके समान खुश हो। उसका पति उसे बड़े प्रेम से रखता है। वह अपनी नींद सोती है। अपनी भूख खाती है। अपनी प्यास पीती है। घर का हिसाब-किताब उसी के पास रहता है।

फ़ौल्स्टाफ़—बहुत अच्छा !

फ़ौल्स्टाफ़ ने अपना नौकर रौबिन विक्वली के साथ कर दिया और उसे बहुत कुछ इनाम दिया।

परन्तु जब फौल्स्टाफ़ यहां मन के लड्डू बांध रहा था उसी समय लोग उसके विरुद्ध फोर्ड को भड़का रहे थे। उनमें सबसे मुख्य फ़ौल्स्टाफ़ का ही नौकर पिस्टल था, जिसको किसी कारण फौल्स्टाफ़ ने घर से निकाल दिया था। उसने फोर्ड से जाकर कहा कि सर जौन फ़ौल्स्टाफ़ आपकी स्त्री से गुप्त स्नेह रखता है।

फ़ोर्ड—मुझे आशा नहीं है।

पिस्टल—आशा से क्या होता है। मैं सच कहता हूं।

फोर्ड—मेरी स्त्री तो युवती नहीं है।

पिस्टल—अरे यह तो बड़ी, छोटी, युवती, वृद्धा, धनी-निर्धन सभी प्रकार की स्त्रियों से प्रेम करता है। फ़ोर्ड ! सचेत हो ! जौन से सचेत हो !

फोर्ड—क्या मेरी स्त्री को चाहता है ?

पिस्टल—हां तेरी स्त्री को और पेज की स्त्री को। देखना हो तो देख, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

यह कहकर पिस्टल तो चला गया और फोर्ड ने पेज से कहा—

"तुमने सुना कि इस दुष्ट ने क्या कहा ?"

पेज—हां ! और क्या तुमने नहीं सुना कि उसने मुझसे क्या कहा ?

फ़ोर्ड—क्या तुम इसकी बात को सच जानते हो ?

पेज—नहीं-नहीं ! सर जौन ऐसा नहीं है। इन मूर्खों को उसने निकाल दिया है। इसीलिए ये इसके विरुद्ध लोगों को भड़काते फिरते हैं।

फ़ोर्ड—क्या यह इसी के नौकर थे ?
पेज—हां ! थे !
फ़ोर्ड—मैं उसको दण्ड दूंगा। मुझे यह बात अच्छी नहीं मालूम होती।
पेज—अगर वह मेरी स्त्री के पास आवे तो मैं उसे स्वयं उसके पास भेज दूं। मैं जानता हूं कि वह झड़कने के सिवा उससे और कुछ न कहेगी ! मुझे अपनी स्त्री का विश्वास है।
फ़ोर्ड—अपनी स्त्री पर मुझे भी विश्वास है। परन्तु मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूं। अति-विश्वास उचित नहीं।

जब फ़ोर्ड ने यह विचार किया कि भेस बदलकर फौल्स्टाफ के पास जाना चाहिए और उससे अपनी स्त्री का कुछ भेद जानना चाहिए। इसलिए अपना नाम ब्रुक रखकर वह वहां गया। और कहने लगा—"आपकी जय हो।"

फ़ौल्स्टाफ़—आपकी भी जय हो ! क्या आप मुझसे बात करेंगे।
फ़ोर्ड—जी हां ! मैं यहां का एक भद्र पुरुष हूं। मैंने बहुत कुछ व्यय किया है। मेरा नाम ब्रुक है।
फ़ौल्०—श्रीमन् ब्रुक ! मैं आपसे अधिक परिचित होना चाहता हूं।
फ़ोर्ड—सर जौन ! मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया। क्योंकि स्पष्ट बात यह है कि मेरी आर्थिक दशा आपसे अच्छी है। और इसी धन के ज़ोर से मैं बिना जाने-बूझे यहां तक आ गया हूं। कहावत है कि धन के सामने सब मार्ग खुल जाते हैं।
फ़ौल्०—रुपया बड़ी चीज़ है।
फ़ोर्ड—मेरी थैली में कुछ रुपया है जिसके बोझ से मैं दबा जाता हूं। सो आप आधा या सब लेकर मुझे हलका कीजिए !
फ़ौल्०—मैं नहीं समझता कि मेरा इस पर क्या अधिकार है।
फ़ोर्ड—यदि आप सुनें तो मैं अभी आपको बताये देता हूं।
फ़ौल्०—कहिए महाशय ब्रुक ! मैं आपकी सेवा करने का उद्योग करूंगा।
फ़ोर्ड—मैंने सुना है कि आप बड़े विद्वान् हैं। और मैं आपको बहुत दिनों से जानता हूं। यद्यपि आप मुझे नहीं जानते। मैं आपसे ऐसी बात कहूंगा जिससे मेरी त्रुटियां मालूम हों, पर मैं चाहता हूं कि आप एक

आंख से मेरी त्रुटियां देखें और दूसरी से अपनी। जिससे मरी त्रुटियां बहुत बड़ी न मालूम हों। क्योंकि आप भली प्रकार जानते हैं कि इस प्रकार के दोष बहुत से लोगों में पाये जाते हैं।

फ़ौल्०—कहिए !

फ़ोर्ड—यहां एक स्त्री है, जिसके पति का नाम फ़ोर्ड है।

फ़ौल्०—अच्छा !

फ़ोर्ड—मैं बहुत दिनों से उसे चाहता हूं। और बहुत रुपया खर्च कर चुका हूं। कई बार अच्छी-अच्छी चीजें उसके लिए भेजी और नौकरों द्वारा भी बहुत कुछ व्यय किया। परन्तु इन सब कष्टों के बदले कुछ न मिला। मुझे उसकी प्राप्ति नहीं हुई !

फौल्०—क्या कभी वह तुमसे नहीं बोली ?

फोर्ड—कभी नहीं !

फ़ौल्०—तो फिर तुम्हारा प्रेम कैसा ?

फ़ोर्ड—जैसा और की भूमि मे बनाया हुआ मकान ! क्योंकि वह केवल इसलिए छोड़ना पड़ता है कि भूमि के चुनाव मे भूल हुई !

फ़ौल्०—मुझसे क्या चाहते हो ?

फ़ोर्ड—यद्यपि मुझे दिखलाने को वह एक सती स्त्री है परन्तु मैंने सुना है कि अन्य पुरुषों से वह प्रेम रखती है। आप मुझे बड़े सज्जन, शीलयुक्त, सुन्दर और मनोहर मालूम होते हैं !

फ़ौल्०—अजी नहीं !

फ़ोर्ड—यह ठीक है ! यह रुपया रक्खा हुआ है। आप इच्छानुसार व्यय कीजिए। मैं आपका दास हूं। केवल यही प्रार्थना है कि इस मिसिस फोर्ड के सतीत्व पर आक्रमण किया जाय। यदि वह अन्य पुरुषों की बात मानेगी तो आपकी अवश्य मानेगी !

फ़ौल्०—यह तो ठीक नहीं जान पड़ता कि उद्योग मैं करूं और उसका फल आप भोगें।

फ़ोर्ड—आप मेरा तात्पर्य्य नहीं समझे। इस समय वह बड़ी सती बनती है। और मेरी बात नहीं मानती। मेरा प्रयोजन यह है कि यदि वह आपके वश मे हो जाय तो उसकी पवित्रता नष्ट हो जायगी, फिर वह मुझे

झट स्वीकार कर लेगी ! इस समय वह एक ऐसे पवित्र और तेजोमय मणि के तुल्य है कि मैं उसकी ओर नहीं देख सकता !

फ़ौल्०—महाशय ब्रुक ! पहले तो मैं आपका रुपया लिये लेता हूं। फिर आपसे प्रतिज्ञा करता हूं कि आपकी मनोकामना सिद्ध होगी।

फोर्ड—भले मित्र !

फ़ौल०—महाशय ब्रुक ! आप सफल होंगे !

फ़ोर्ड—यदि आपको रुपये की आवश्यकता हो तो और ले लेना।

फ़ौल्०—यदि रुपया है तो मिसिस फ़ोर्ड की भी कमी नहीं है। मुझे उसने बुलाया है सो मैं आज दस-ग्यारह बजे के बीच में जाऊँगा। क्योंकि उस समय उसका दुष्ट पति घर से बाहर चला जायगा ! उसी समय तुम मेरे पास आना।

फ़ोर्ड—क्या आप फ़ोर्ड को जानते हैं ?

फ़ौल्०—मैं उस दुष्ट को नहीं जानता। मैंने सुना है कि उसके पास गठरी-भर रुपया है। इसीलिए मैंने उसे गाँठा है कि कुछ रुपया मिल जाय।

फ़ोर्ड—यदि आप फ़ोर्ड को पहचानते तो अच्छा होता क्योंकि यदि वह कहीं मार्ग में मिल जाय और आप न पहचान सकें तो बड़ी दुर्गति होगी।

फ़ौल्०—मैं ऐसे मूर्खों से नहीं डरता। वह मेरा क्या करेगा। एक थप्पड़ में उसकी आँखें निकाल लूंगा। आज रात को आओ। मैं उस दुष्ट से बाहर लड़ता रहूंगा और तुम उसके घर में घुस जाना।

यह बातें करके फ़ोर्ड वहां से चल दिया। परन्तु उसे यह जानकर बड़ा खेद हुआ कि जो कुछ पिस्टल कहता था वह सब ठीक था। वह पछताने लगा कि मैंने ऐसी दुष्ट और कुटिला स्त्री से क्यों विवाह किया। वह कहने लगा कि पेज मूर्ख है जो अपनी स्त्री को अच्छी जानता है। अब इसका कुछ उपाय करना चाहिए। अब उसने इरादा किया कि दस और ग्यारह बजे के बीच में घर आकर अपनी स्त्री और फ़ौल्स्टाफ दोनों को दण्ड दूंगा।

शाम हुई और फ़ौल्स्टाफ़ के आने का समय निकट आया। मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज दोनों फ़ोर्ड के घर में बैठी बातचीत कर रही थीं। अन्त में कुछ वाद-विवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि एक पीपा, जिसमें धुलने के कपड़े रक्खे जाया करते थे—तैयार रक्खा जाय। और मिसिस

फ़ोर्ड ने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—"देखो निकट के घर में बैठे रहो। जिस समय मैं पुकारूं चुपके से चले आओ और इस पीपे को ले जाकर टेम्स नदी की निकटस्थ खाई में इसके कपड़ों को फेंक आओ।"

जब वे लोग वहां से चले गये तो फ़ोल्स्टाफ के नौकर रोबिन ने आकर कहा—

"मेरा स्वामी घर के पिछले द्वार पर खड़ा हुआ है।"

अब मिसिस पेज तो वहां से चली गई और फ़ोल्स्टाफ घर में घुस आया और कहने लगा "हे मेरे बहुमूल्य रत्न! आज मैंने तुझे पा लिया। आज मेरी मनोकामना पूरी हुई। अब यदि मैं मर भी जाऊं तो भी कुछ चिन्ता नहीं।"

मिसिस फोर्ड—प्यारे सर जौन!

फौल्०—मिसिस फोर्ड, मुझे बहुत बातें नहीं आती। पर यदि तुम्हारा पति मर जाय तो मैं तुमको अपनी पत्नी बनाना चाहता हूं।

मिसिस फ़ोर्ड—मैं तुम्हारी पत्नी! भला मैं किस योग्य हू?

फ़ौल्०—वाह! फ्रांस के राजमहल में भी ऐसी सुन्दर स्त्री नहीं है। तुम्हारी आखें मणि के समान चमकती हैं। तुम्हारी भौएं कैसी मनोहारिणी हैं। मैं तुझे प्यार करता हूं और तेरे सिवा किसी को नहीं।

मि० फ़ोर्ड—महाशय! मुझे धोखा मत देना। मैंने सुना है कि मिसिस पेज से तुम्हारा स्नेह है।

फ़ौल्०—नहीं! नहीं!

मि० फ़ोर्ड—ईश्वर जानता है कि मुझे तुमसे कितना स्नेह है और एक दिन तुमको भी मालूम हो जायगा।

जब ये बातें हो रही थी उसी समय मिसिस पेज ने आकर द्वार खटखटाया। फ़ौल्स्टाफ डर के मारे किवाड़ के भीतर हो गया और मिसिस पेज आकर कहने लगी—

"मिसिस फोर्ड तुमने क्या किया। आज तुम्हारी बदनामी हो गई! तुम बरबाद हो गई!"

मि० फोर्ड—क्या बात है?

मि० पेज—ऐसा अच्छा पति पाकर भी तुमने उसे धोखा दिया!

मि० फ़ोर्ड—कैसा धोखा ?

मि० पेज—कैसा धोखा ! मुझे बहकाती हो। मैं तुम्हें ऐसा नहीं जानती थी।

मि० फोर्ड—बात क्या है ?

मि० पेज—अरे भोली स्त्री ! देख, तेरा पति पुलिस के साथ अपने घर की खोज में आ रहा है। उसे ज्ञात हुआ है कि तुमने किसी मनुष्य को यहां छिपा रक्खा है।

मि० फ़ोर्ड—क्या ? क्या ?

मि० पेज—यदि यहां कोई न हो तो अच्छा है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे पति के साथ नगर का नगर उस संदिग्ध मनुष्य की खोज में चला आ रहा है यदि तुम निरपराधी हो तो बहुत अच्छी बात है और मैं खुश हूं। पर यदि कोई हो तो उसे शीघ्र ही निकाल दो। चकित मत हो। अपने नाम में बट्टा न लगाओ।

मि० फोर्ड—बहिन ! एक आदमी तो अवश्य है परन्तु मुझे अपनी बदनामी का इतना डर नहीं है जितना उसकी जान का है। यदि मेरे हजार पौंड खर्च हो जायं और यह भले प्रकार बाहर निकल जाय तो भी अच्छा हो।

मि० पेज—तुमने मुझे धोखा दिया। अब तुम उसे घर मे नही छिपा सकती। देखो तुम्हारा पति तो दरवाजे पर आ गया। यदि वह छोटे कद का आदमी हो तो उसे इस पीपे में बिठला दो और उसके ऊपर से मैले कपड़े रख दो। जिससे किसी को कुछ सन्देह न हो।

मि० फोर्ड—हाय ! अब मैं क्या करूं ! वह तो इतना बड़ा है कि इसमें नहीं समा सकता।

इतने मे फौल्स्टाफ निकलकर बाहर आया और घबराकर कहने लगा—

"मैं घुसा जाता हूं। मैं घुसा जाता हूं ! मैं पीपे मे घुसा जाता हूं। किसी प्रकार मुझे बाहर निकाल दो।"

मिसि० पेज—अरे सर जौन फौल्स्टाफ़ ! क्या यह तुम्हारे ही पत्र थे।

फ़ौल्स्टाफ—मैं तुम्हें चाहता हूं और तुम्हारे सिवा किसी को नहीं। मुझे

बैठ जाने दो। इस समय अधिक बातें नहीं हो सकतीं।

जब फ़ौल्स्टाफ़ पीपे में बैठ गया तब उसके ऊपर से मैले कपड़े ठूंस दिये गये और मिसिस फ़ोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा उसे धोबिन के घर भेज दिया कि उसकी खाई में डाल दिया जाय जैसी पहले से उनको शिक्षा दी जा चुकी थी।

इतने में फ़ोर्ड पुलिस के लोगों सहित घर में आ गया और लोग इधर-उधर फ़ौल्स्टाफ़ को देखने लगे। पेज ने कहा—

"महाशय फ़ोर्ड! क्यों सन्देह करते हो। यहाँ कोई नहीं है।"

फ़ोर्ड—अजी ऊपर देखिए। अवश्य कोई मिलेगा।

डा० केअस—यह तो अच्छा तमाशा है। हमारे फ्रांस के पति ऐसे नहीं होते।

फोर्ड—यहां तो मिलता नहीं। सम्भव है कि उस दुष्ट ने डींग मारी हो!

केअस—यहां कोई नहीं है।

पेज—धिक्-धिक् फ़ोर्ड! क्या तुमको लज्जा नहीं आती! तुम्हें किसने बहका दिया।

फ़ोर्ड—पेज महाशय! यह मेरा दोष है और मैं ही भोगता हूँ।

केअस—आपकी स्त्री बड़ी धर्मात्मा है!

यहां ये लोग फौल्स्टाफ़ को ढूंढते रहे वहां फ़ोर्ड के नौकरों ने कपड़ों सहित उसे खाई में डाल दिया जहां से निकलकर वह बड़ी कठिनाई से घर आया। ऐसी विपत्ति उस पर आज तक कभी नहीं पड़ी थी। उसके कपड़े खराब हो गये थे, उसके सिर में कुछ चोट भी आई थी। पर यह अच्छा हुआ कि उसके प्राण बच गये। जैसे तैसे वह घर आया। दूसरे दिन क्विकली उसके समीप आई क्योंकि मिसिस पेज और मिसिस फ़ोर्ड ने सिखाकर उसे भेजा था।

क्विकली—मुझे मिसिस फ़ोर्ड ने आपके पास भेजा है।

फ़ौल्०—मिसिस फ़ोर्ड! चल हट! मिसिस फ़ोर्ड से मेरा पेट भर गया।

क्विकली—हाय! हाय! यह तो उसका दोष नहीं था। उसको पश्चात्ताप है कि उसके नौकरों से भूल हुई!

फ़ौल्०—भूल तो मुझसे भी हुई कि ऐसी मूर्खा स्त्री का विश्वास किया!

क्विकली—अजी उसे स्वयं बड़ा शोक हो रहा है; आप चलकर देखेंगे तो

मालूम होगा। आज उसका पति आखेट को जा रहा है। इसीलिए आज आपको उसने आठ और नौ बजे के बीच में बुलाया है। आप शीघ्र उत्तर दीजिए। वह आज आपको कल की हानि का प्रत्युपकार कर देगी।

फ़ौल्स्टाफ़—अच्छा मैं आऊंगा; उससे कह दो।

क्विकली—मैं कह दूंगी।

जब क्विकली वहां से चली गई तब मिस्टर फ़ोर्ड फ़ौल्स्टाफ के पास आया; जिसे देखकर उसने कहा—

"मिस्टर ब्रुक! क्या आप यह पूछने आये हैं कि मिसिस फ़ोर्ड और मुझमें कैसी बीती।"

फ़ोर्ड—हां महाशय, यही मेरा प्रयोजन है।

फौल्स्टाफ—ब्रुक महाशय! मैं आप से झूठ नहीं बोलूगा। मैं कल नियत समय पर वहां गया था।

फोर्ड—तो क्या हुआ?

फौल्स्टाफ—बड़ी बुरी बात हुई।

फ़ोर्ड—क्या उसका विचार पलट गया?

फौल्स्टाफ—नहीं-नहीं! उसका दुष्ट पति आ गया और अपने घर को खोजने लगा?

फोर्ड—क्या उस समय आप वहीं थे?

फौल्०—हां वहीं!

फ़ोर्ड—क्या उसने तुम्हें पकड़ लिया?

फौल्०—मैं कहता हूं ईश्वर ने अच्छा किया कि मिसिस पेज आ गईं और उसने फ़ोर्ड के आने की सूचना दी। बस मैं कपड़ों के पीपे में बैठ गया और उसके नौकर मुझे खाई में डाल आये।

फ़ोर्ड—फिर आप वहां कितनी देर पड़े रहे?

फ़ौल्स्टाफ—अजी महाशय! मैंने आपके लिए बहुत कष्ट सहे। थोड़ी देर पीछे मैं वहां से उठ के आया!

फ़ोर्ड—मुझे आपके इस कष्ट पर बड़ा दुःख होता है! अब आप मेरे लिए फिर उपाय न करेंगे?

फ़ौल्स्टाफ़—अजी, अभी तो टेम्स में ही डाला गया हूं। मैं तो ईटना[1] मे कूदने को तैयार हूं। आज उसका पति आखेट को जा रहा है, सो मैं आठ और नौ बजे के बीच में वहां जाऊंगा।

उस समय आठ बज चुके थे, इसलिए फौल्स्टाफ ने फ़ोर्ड के घर को प्रस्थान कर दिया। जब वहां पहुंचा तो मिसिस फोर्ड से कहने लगा—

"मिसिस फ़ोर्ड ! आपके दुःख ने मुझे बेहाल कर दिया। मैं जानता हूं कि तुम मुझे बहुत प्यार करती हो। क्या अब तुम्हें निश्चय है कि तुम्हारा पति चला गया ?"

मि० फ़ोर्ड—हां ! जौन ! आज वह आखेट को गया है।

अभी ये बातें हो ही रही थी कि मिसिस पेज ने आकर द्वार पर दस्तक दी। फौल्स्टाफ फिर पहले दिन की भांति भीतर छिप गया और मिसिस पेज ने आकर कहा—

"क्या घर मे कोई और है ?"

मि० फ़ोर्ड—नही ! नही !

मि० पेज—ठीक बताओ।

मि० फ़ोर्ड—ठीक कहती हू।

मि० पेज—अच्छा हुआ कि कोई नही है।

मि० फ़ोर्ड—क्यों ?

मि० पेज—अरे देख ! कल की भांति तेरा पति फिर लोगो को ला रहा है और समस्त स्त्री जाति को कोस रहा है। मैंने ऐसा संदिग्धात्मा कोई नहीं देखा। अच्छा हुआ कि वह मोटा आदमी यहां नहीं है।

मि० फ़ोर्ड—क्या वह उसके विषय में कुछ कह रहा है ?

मि० पेज—हां ! हां ! वह शपथ खाकर कह रहा है कि कल तुमने अपने साथी को पीपे में बिठालकर निकाल दिया। वह अभी मेरे पति से कह रहा है कि फ़ौल्स्टाफ यहां अवश्य छिपा है। परन्तु मुझे हर्ष है कि वह मनुष्य इस समय यहां नहीं है।

मि० फ़ोर्ड—मेरा पति यहां से कितनी दूर है ?

---

१. ईटना सिसली में ज्वालामुखी पर्वत है।

मि० पेज—गली में है।

मि० फ़ोर्ड—हाय अब मैं क्या करूं? वह तो यही है!

मि० पेज—फिर क्या है। अब तुम मारी गई। और उसके प्राण बचने तो असम्भव ही हैं। कैसी स्त्री हो! तुम्हें लज्जा नहीं आती। यदि उसके प्राण बचाने हों तो घर से निकाल दो!

मि० फ़ोर्ड—क्या उसे पीपे में बिठाल दूं।

फ़ौल्स्टाफ़—(बाहर आकर) नहीं! नहीं! मैं पीपे में न घुसूंगा। क्या इतनी देर में भाग नहीं सकता?

मि० पेज—नहीं। कदापि नहीं। तीन आदमी बन्दूक लिये द्वारों पर खड़े हैं।

फ़ौल्०—अब क्या करूं? क्या धुम्रांकश में घुस जाऊं?

मि० फोर्ड—नहीं! वहां तो वह अपनी बन्दूक रक्खा करता है। पकड़े जाओगे!

फ़ौल्०—तो मैं बाहर निकला जाता हूं।

मि० पेज—इस दशा में तो मारे जाओगे। भेस बदल लो!

मि० फ़ोर्ड—भेस क्या बदला जाय?

मि० पेज—क्या किया जाय? यदि किसी मोटी स्त्री के कपड़े होते तो उनको पहनकर निकल जाता!

फ़ौल्स्टाफ़—कुछ सोचिए। कुछ सोचिए। आज मेरी जान बच जाय!

मि० फ़ोर्ड—मेरी दासी की एक चाची ब्रण्टफ़ोर्ड नामी इतनी ही मोटी थी। उसके कपड़े ऊपर कोठे पर रक्खे हैं।

मि० पेज—ठीक ठीक! सर जौन, जल्दी जाकर पहन लो!

फ़ौल्स्टाफ़ ने जल्दी से बुड्ढी ब्रण्टफोर्ड का भेस धारण कर लिया और मिसिस फ़ोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा गत दिवस की भांति कपड़ों का पीपा बाहर भिजवाया।

इतने में फ़ोर्ड, पेज और बहुत से आदमी वहां पर आ गये और फ़ोर्ड ने आते ही पीपे के कपड़े निकाल डाले। इस समय वह क्रोध में भरा हुआ था और अपनी भार्य्या को अन्यान्य अपशब्द कह रहा था। उसकी स्त्री ने बहुत कुछ कहा कि "हैं! हैं! आज तुम क्या कर रहे हो।" परन्तु उसने एक न सुनी। जब सब कपड़े देख चुका और किसी मनुष्य का पता न लगा

तब वह कहने लगा—

"पेज महाशय ! मैं सच कहता हूं कि कल इसी में बैठकर वह दुष्ट यहां से चला गया। मुझे ठीक सूचना मिली है कि वह यहीं है। अजी इसी घर में है।

मि० फ़ोर्ड—अगर तुम यहा किसी आदमी को पा जाओ तो मक्खी की तरह मार डालना।

पेज—यहां कोई नहीं है।

शैलो०—फोर्ड ! यह ठीक नही है। तुम व्यर्थ संदेह करते हो।

फ़ोर्ड—वह यहां नही है।

पेज—अजी तुम्हारे मन के सिवा कहीं नहीं है।

फ़ोर्ड—अजी आज और खोज कीजिए, यदि इस समय न मिला तो कभी फिर न कहूंगा।

इस समय मि० पेज और फ़ौल्स्टाफ कोठे पर थे। मि० फ़ोर्ड ने आवाज दी कि तुम दोनो नीचे उतर आओ क्योंकि पति जी ऊपर किसी मनुष्य की खोज में आ रहे हैं। मिस्टर फ़ोर्ड इस बुड्ढी स्त्री अर्थात् ब्रण्टफोर्ड से बड़ा नाराज था। और उसे घर में नही आने देता था इसलिए जब उसने सुना कि मेरे कहने पर भी ब्रण्टफ़ोर्ड मेरे घर में आ गई तो वह आग भभूका हो गया और उसे (अर्थात् फ़ौल्स्टाफ को) खूब मारा।

मि० पेज—है है फ़ोर्ड ! क्या करते हो। बिचारी बुढिया मर जायगी।

मि० फ़ोर्ड—नही नहीं। वह इसी के योग्य है।

मार पीटकर फोर्ड तो आदमियों को लेकर कोठे पर चढ़ गया और फ़ौल्स्टाफ बुढ़िया के भेस मे मार खाकर घर आ गया। इस समय मि० फ़ोर्ड को निश्चित हो गया कि मेरा पति मेरे सतीत्व पर संदेह करता है। इसलिए उसने और मि० पेज ने अपने-अपने पतियो से फ़ौल्स्टाफ के पत्रों और अपने कामों को क्रमशः कह दिया। इस पर सब लोगों में बड़ी हंसी हुई और मिस्टर फोर्ड को अपनी स्त्री की ओर से कुछ भी शंका न रही।

परन्तु इस तमाशे की समाप्ति यहीं न हुई। अबकी बार पुरुषों ने भी अपनी स्त्रियों की सम्मति से इस विचित्र तमाशे में हिस्सा लेना चाहा। बड़े वादविवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि फ़ौल्स्टाफ को फिर

बुलाना चाहिए और उसे सबके सामने लज्जित करना चाहिए। परन्तु अब फ़ौलस्टाफ का फ़ोर्ड के घर में आना कठिन था। वह दो बार भुगत चुका था, इसलिए निर्लज्ज पुरुष के लिए भी फिर वहां आने का साहस करना दुस्तर था। यह जानकर यह बात ठहरी कि विण्डसर नगर के बाहर मैदान में एक पीपल है; जिसके लिए प्रसिद्ध है कि रात के समय वहां एक सींगोंवाला भूत आया करता है। इसलिए फ़ौलस्टाफ वहां पर भूत के भेस में बुलाया जावे और कह दिया जाय कि ऐसी दशा में कोई उसे पकड़ने का साहस न करेगा। जब वह वहां पर आवे तब पेज की पुत्री ऐनी और छोटे-छोटे लड़के चमकीले वस्त्र पहनकर किसी गुप्त जगह से वहां पर आ जायं और कोलाहल मचावें। फौलस्टाफ़ इनको परियां समझकर भागने लगेगा। उसी समय पेज और फ़ोर्ड वहां पर आकर उसे पकड़ लेवें।

इस उपर्युक्त तमाशे के अतिरिक्त पेज इस समय एक और कार्य्य भी सिद्ध करना चाहता था। हम ऊपर बता चुके हैं कि उसकी इच्छा अपनी बेटी ऐनी को स्लेण्डर के साथ ब्याहने की थी। इस बात को घर के लोग स्वीकार नहीं करते थे। इसलिए उसने विचार किया कि यदि स्लेण्डर उसी भीड़भाड़ में जिसका वर्णन ऊपर किया गया है ऐनी को पकड़कर ले जाय और झट विवाह कर ले तो कोई फिर कुछ न कहेगा। इस प्रयोजन के लिए उसने अपनी पुत्री के श्वेत वर्ण के पर लगा दिये जिनको देखकर स्लेण्डर परियों के रूप में उसे पहचान सके।

मिसिस पेज अपने पति की बात समझ गई और इसलिए उसने ऐनी को हरे वस्त्र पहनने की सम्मति दी, जिससे डाक्टर केअस उसे पहचान कर अपने साथ ले जा सके।

ऐनी ने वैसे तो माता और पिता दोनों की बात मान ली, परन्तु उसे करना कुछ और ही था। वह स्लेण्डर या केअस किसी को नहीं चाहती थी। उसका मन फेण्टन में लगा हुआ था। इसलिए उसने दो लड़कों को हरे और श्वेत वस्त्र पहना दिये और अपने प्यारे को इसकी सूचना दे दी। इस समय स्लेण्डर, केअस और फ़ेण्टन अलग-अलग तीन पुरोहितों को अपने घरों पर तैयार कर आये थे कि जिस समय हम ऐनी को लावें उसी घड़ी विवाह संस्कार हो जाय।

यहां एक बात और कह देनी चाहिए। जिस समय मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज ने फ़ौल्स्टाफ़ के बुलाने का विचार ठीक कर लिया तो उन्होंने क्विकली के हाथ उसको निमंत्रण भेजा। जब क्विकली वहां पहुंची तो फौल्स्टाफ ने पूछा—

"कहां से आई हो ?"

क्विकली—मि० पेज और मि० फोर्ड ने भेजा है।

फ़ौल्स्टाफ—भाड़ में जायं वे दोनों। मैं उनके लिए बहुत कुछ अपमान सह चुका।

क्विकली—और क्या तुम समझते हो उनका निरादर नहीं हुआ ? बिचारी मिसिस फोर्ड पर तो इतनी मार पड़ी कि उसका शरीर नीला पड़ गया।

फ़ौ०—अरे मुझ पर भी तो बहुत मार पड़ी थी ! मैं तो दम साध गया नहीं तो न जाने क्या दुर्गति होती।

क्विक०—जो हुआ सो हुआ। देखो, मि० फ़ोर्ड ने यह पत्र भेजा है। उसमें लिखा हुआ है कि आप अब किसी प्रकार वहां चलें।

फ़ौल्स्टाफ एक तो मूर्ख था दूसरे उसके दुराचार ने उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर रक्खी थी। कहते भी हैं कि—

कामातुराणा न भयं न लज्जा।

पत्र को पढ़ते ही उसकी बाछें खुल गईं। फिर एक बार मुंह में पानी भर आया और वह क्विकली से कहने लगा—

"अच्छा मैं आऊंगा। यह तीसरी बार है। कहते हैं कि तीसरी बार मनोकामना सिद्ध हो ही जाती है।"

इतने में फ़ोर्ड भी ब्रुक के भेस में वहां पर पहुंच गया जिसे देखकर फ़ौल्स्टाफ ने उसको भी उस रात नियत पीपल तले जाने की सम्मति दी। और गत दिवस की अपनी कहानी सुनाई।

जिस समय फ़ौल्स्टाफ सिर पर सींग लगाये भूत के भेस में पीपल तले पहुंचा तो पहले मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज से भेंट हुई। जब कुछ बातें-चीतें होने लगी तो संकेत पाकर ऐनी और उसके साथी परियों के रूप में कोलाहल मचाते हुए एक खाई से निकले। किसी के कपड़े काले थे किसी के

पीले, किसी के श्वेत, किसी के हरे।

इनको देखकर मिसिस फोर्ड ग्रौर मिसिस पेज ने "परी, परी" कहना आरम्भ किया ग्रौर फ़ौल्स्टाफ़ विचारा इतना घबराया कि वहीं भूमि पर पट लेट गया ! परियाँ वहाँ पर ग्राने लगीं ग्रौर मशालों से इधर-उधर देखने लगी। जब वह फ़ौल्स्टाफ़ के पास ग्राईं तो उनमें से एक कहने लगी—

"ग्ररे यह ग्रादमी पवित्र है या ग्रपवित्र"। दूसरी ने उत्तर दिया—

"इसकी उंगलियों को मशाल दिखाग्रो। यदि यह शुद्ध होगा तो चुप पड़ा रहेगा। यदि ग्रशुद्ध होगा तो जलकर चिल्ला उठेगा।"

ग्रब तो उन्होंने उसकी उंगलियां जलाईं ग्रौर जब वह चीखने लगा तो कहने लगीं, "ग्ररे कोई पापी है ! कोई पापी है।"

फिर उन्होंने उसे नोचना ग्रारम्भ किया। फ़ौल्स्टाफ़ रोने-पीटने लगा। इतने में पेज, फ़ोर्ड ग्रौर ग्रनेक पुरुष ग्रा गये जिन्होंने उसे पकड़ लिया। मिसिस पेज कहने लगी—

"कहिए सर जौन ! क्या ग्रापको विण्डसर की स्त्रियां पसन्द हैं ?"

ग्रब तो फ़ौल्स्टाफ समझ गया ग्रौर कहने लगा—

"ग्ररे मुझे लोगों ने गधा बना लिया।"

फोर्ड—"ग्रजी गधा नहीं बैल ! ग्रपने सींग तो देखो।"

फ़ौल्स्टाफ ग्रपने किये पर बड़ा लज्जित हुग्रा। परन्तु उसी समय एक ग्रौर बड़ा तमाशा हुग्रा। स्लेण्डर ग्रौर केयस श्वेत ग्रौर हरी परियों को ग्रपने साथ ले गये जो वास्तव में दो लड़के थे। उन्होंने इनको ऐनी समझा था। इसलिए विवाह संस्कार के समय जब उनको मालूम हुग्रा कि यह लड़के हैं तो वे बड़े घबराये ग्रौर पेज ग्रौर उसकी स्त्री से कहने लगे—हमको धोखा हुग्रा। हमने तो लड़कों से विवाह कर लिया।"

जब फ़ोर्ड ग्रौर पेज इस ग्रद्भुत घटना पर चकित हो रहे थे उसी समय फेण्टन ग्रौर ऐनी भी ग्रपना विवाह करके वहाँ पर ग्रा गये ग्रौर ऐनी ने कहा—

"पिताजी, क्षमा कीजिए। माताजी क्षमा कीजिए।"

पेज—अरे तू स्लेण्डर के साथ क्यों नहीं गई ?

मि० पेज—अरे तू डाक्टर के साथ क्यों नहीं गई ?

फ़ेण्टन—क्षमा कीजिए। आप इसे ऐसों के साथ व्याहते थे जहां इसका प्रेम नहीं था। अब इसका अपराध क्षमा कीजिए।

ऐनी के मा बाप ने अपनी पुत्री के विवाह की खबर सुनकर इसी पर सन्तोष किया और फ़ेण्टन पेज का दामाद हुआ।

निष्फल प्रेम

(LOVE'S LABOR LOST)

फ्रांस में नैवर नामी एक स्थान है। जहां बहुत दिन हुए फर्डीनण्ड नामी एक भद्र पुरुष राज करता था। एक समय उसके मन में यह समाई कि ब्रह्मचर्य्यव्रत धारण करके तीन वर्ष तक विद्या के उपार्जन में अपना जीवन व्यतीत करे। इस प्रयोजन के लिए उसने वे कठिन से कठिन नियम बनाये जो एक ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक हैं और अपने तीन दरबारियों को भी अपने साथ यथार्थ ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इनका नाम बाइरन, लौंगविल और डूमेन था। व्रत धारण करने के समय उनसे एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कराये गये कि हम कभी अमुक नियमों का उल्लंघन नहीं करेंगे। लौंगविल ने हस्ताक्षर करते हुए कहा—

"मैं प्रतिज्ञा कर चुका ! यह तीन वर्ष का व्रत है। चाहे शरीर दुर्बल हो जाय, परन्तु आत्मा उन्नति करेगा।"

डूमेन—महाराजाधिराज ! आज मैं सांसारिक वैभव को विषयी पुरुषों के लिए त्यागता हूं। मेरा जीवन अब दार्शनिक विद्या के उपार्जन में व्यतीत होगा। राग, धन तथा वैभव के लिए तो मैं मृतवत् हूं !

बाइरन—राजन् ! मेरी भी यही प्रतिज्ञा है। श्रीमन्, मैंने अभी यही व्रत किया है कि तीन वर्ष विद्या प्राप्ति करूं। परन्तु अन्य भी नियम हैं जिनकी प्रतिज्ञा मैंने नहीं की। जैसे स्त्रीदर्शन न करना, सप्ताह में एक दिन उपवास करना, रात में तीन घंटे से अधिक न सोना और दिन में आंख न लगाना। ये ऐसे कठिन व्रत हैं कि जिनका पालन मेरे लिए दुस्तर है। अब तक मैं दोपहर तक सोया करता था। स्त्रीदर्शन न करना, स्वाध्याय करना, उपवास करना और कम सोना—ये सब

कैसे हो सकेंगे ?

राजा—तो तुम्हारा व्रत ही क्या हुआ ?

बाइरन—श्रीमन् ! मैंने तो केवल स्वाध्याय का प्रण किया है।

लोंगविल—नहीं बाइरन ! एक व्रत के अन्तर्गत सब व्रत आ जाते हैं।

बाइरन—तो मेरा व्रत हास्य मात्र था। भला स्वाध्याय से क्या लाभ है ?

राजा—स्वाध्याय से हमको उस ज्ञान की प्राप्ति होती है जो अन्यथा नहीं आ सकता।

बाइरन—आपका तात्पर्य उन वस्तुओं के ज्ञान से है जो साधारण बुद्धि के परे हैं।

राजा—हां ! स्वाध्याय का पवित्र उद्देश्य यही है।

बाइरन—साधु ! साधु ! मैं अवश्य स्वाध्याय करूंगा। क्योंकि मुझे वे बातें मालूम होंगी जिनके जानने का निषेध किया गया है। अर्थात् ऐसी जगह खाना खाना सीखूंगा जहां खाना वर्जित है या ऐसे स्थान पर किसी स्त्री का दर्शन करना जहां साधारण दृष्टि से कोई स्त्री दिखाई नहीं देती।

राजा—इन बातों से स्वाध्याय में बाधा पड़ेगी। हमको झूठे सुखों से घृणा करनी चाहिए।

बाइरन—सुख तो सभी झूठे हैं और सबसे झूठे वे सुख हैं जिनके आदि और अन्त—दोनों में कष्ट हो। जैसे पुस्तकों का पढ़ना ! हम सत्य के प्रकाश के लिए पुस्तकें पढ़ते हैं। परन्तु यह प्रकाश हमारे नेत्रों के प्रकाश को हर लेता है। इससे तो अपने नेत्रों को किसी मृगनयनी की ओर जमाने से अधिक लाभ हो सकता है।

राजा—इसने विद्या के विरोध में कैसी विद्वत्ता खर्च की है ? बाइरन ! अब घर जाओ।

बाइरन—नहीं राजन् ! मैंने आपके साथ रहने की प्रतिज्ञा की है। मैं इसका यथार्थ पालन करूंगा। देखूं और क्या नियम हैं।

राजा—पढ़ो।

बाइरन—"कोई स्त्री मेरे दरबार से पांच कोस के भीतर न आने पावे।" क्या इस नियम का नगर में ढढ़ोरा हो चुका ?

लौंग०—चार दिन हुए।

बाइरन—नियम-उल्लंघन का दण्ड क्या? अरे इसमें तो लिखा है कि "उसकी जीभ काट ली जायगी।" यह किसका प्रस्ताव था?

लौंग०—मेरा।

बाइरन—क्यों?

लौंग०—जिससे कि वे डर जायं।

बाइरन—अबलाओं पर ऐसी कठोरता! देखो, इसी नियम में यह भी लिखा है "यदि इन तीन बरसों में कोई मनुष्य किसी स्त्री से बातचीत करता पकड़ा जायगा तो उसको सभा की इच्छानुसार दण्ड दिया जायगा"! क्यों महाराज (राजा की ओर देखकर) इसको तो स्वयं आप ही तोड़ देंगे। क्योंकि आप जानते हैं फ्रांस नरेश की रूपवती कन्या एक्विटन देश के छुटकारे के लिए आप से प्रार्थना करने को आ रही है इसलिए यह नियम व्यर्थ बनाया गया या राजकुमारी का यहां आना वृथा होगा।

राजा—अरे! इसका तो ध्यान ही नहीं रहा था। परन्तु राजकुमारी यहां विशेष कार्य्यवश आ रही है। इसलिए उसे आज्ञा मिल सकती है।

बाइरन—यदि ऐसा ही है तो आवश्यकता के वशीभूत होकर हम तीन वर्ष में तीन हजार बार नियमोल्लंघन करेंगे, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य की भिन्न-भिन्न आवश्यकतायें है, और उन आवश्यकताओं के कारण ही लोग नियमों को तोड़ते है!

बाइरन ने इसके पश्चात् प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु उसी समय कौस्टार्ड नामक एक गंवार राजा के सम्मुख लाया गया, जिसको कर्मचारियों ने राज-आज्ञा के विरुद्ध एक स्त्री जैकिण्टा के साथ कुत्सित व्यवहार करते पकड़ा था। राजा ने उसी समय उसको हवालात कर दी और हुक्म दिया कि सात दिन तक इसको सिवा पानी के और कुछ न दिया जाय; यही इसका दण्ड है।

जिस कर्म्मचारी ने कौस्टार्ड और जैकिण्टा को पकड़ा था उसका नाम आर्मेडो था, जो हस्पानिया का रहने वाला था! यद्यपि इस पुरुष ने एक

आदमी को स्त्री से व्यवहार करने के अपराध में पकड़ लिया था परन्तु वास्तविक बात यह है कि वह स्वयं जैकिण्टा पर मोहित था और कौस्टार्ड के पकड़ने की असली वजह यही थी !

उपर्युक्त घटना के दूसरे दिन फ्रांस की राजकुमारी अपनी सहेलियों—रोज़ालिन, मैरिया, और कैथराइन तथा एक राजमंत्री बोइट नामी के साथ नैवर के राज में आ उपस्थित हुई। उसके आगमन की सूचना राजा को दी गई, राजा अपने साथियों—बाइरन, लौंगविल और डूमेन के साथ दरबार के बाहर ही राजकुमारी से भेंट करने आया। उसके आराम के लिए राजदरबार से बाहर डेरे तान दिये गये थे; क्योंकि तीन वर्ष तक किसी स्त्री को भीतर आने की आज्ञा नहीं थी।

राजा को देखते ही राजकुमारी और उसकी सहचरियों ने अपने मुंह पर वस्त्र डाल लिये। राजा ने कहा—

"सुन्दर कुमारी ! नैवर के दरबार में मैं आपका स्वागत करता हूं।"

राजकुमारी—"सुन्दर" शब्द मैं आप ही को लौटाती हूं ! यह 'दरबार' भी नैवर का नहीं है। इस[1] की छत इतनी ऊंची है कि यह आपका दरबार नहीं हो सकता। रहा 'स्वागत', सो क्या खेतों और जंगल में ठहराकर स्वागत किया जाता है ?

राजा—आप मेरे दरबार को भी चलेंगी !

राजकुमारी—उस समय मेरा स्वागत होगा। चलो मुझे ले चलो !

राजा—राजकुमारी ! मैंने एक प्रतिज्ञा कर रक्खी है !

कुमारी—प्रतिज्ञा टूट भी सकती है।

राजा—नहीं देवि ! कदापि नहीं। मेरी इच्छा यही है।

राजकुमारी—यह इच्छा ही तोड़ देगी।

राजा—श्रीमती जी यह नहीं जानतीं कि मेरी इच्छा कितनी प्रबल है।

राजकुमारी—मैंने सुना है कि आपने स्त्री को न देखने की प्रतिज्ञा की है।

---

१. राजकुमारी के कहने का तात्पर्य यह है कि वह नगर के बाहर ठहराई गई थी, न कि दरबार में। इसलिए राजा का यह कहना कि तुम नैवर के दरबार में आई हो, असत्य था।

ऐसी प्रतिज्ञा तो खण्डनीय ही है। अस्तु ! मुझे अपना काम करना चाहिए ! श्रीमन्, इस पत्र को (एक कागज देकर) देखिए और जो कुछ इसमें लिखा है उसे स्वीकृत कीजिए।

राजा—यह काम भी धीरे-धीरे हो जायगा !

राजकुमारी—आप मुझे जल्दी ही उत्तर दे दीजिए, क्योंकि यदि मैं चिरकाल तक यहां रहूंगी तो आप के अध्ययन में भंग होगा और आपकी प्रतिज्ञा झूठी होगी।

इस समय बाइरन रोजालिन से बातें करने लगा। उसने कहा—"क्या मैं तुम्हारे साथ एक बार ब्रबण्ट में नहीं नाचा था ?"

रोजालि०—क्या मैं तुम्हारे साथ एक बार ब्रबण्ट में नही नाची थी ?

बाइरन—मुझे मालूम है कि तुम नाची थी।

रोजालि०—फिर प्रश्न करने से क्या प्रयोजन ?

इस प्रकार बाइरन और रोजालिन परस्पर बातचीत करने लगे। यदि कोई और इनकी बातों को सुनता तो वह यही समझता कि बाइरन रोजालिन पर मोहित हो गया है। डूमेन भी मन ही मन में कैथराइन के रूप की प्रशंसा करने लगा। लोंगविल को मैरिया का सौन्दर्य ऐसा मनोहर प्रतीत हुआ कि उसने उसके विषय में अधिक परिचित होने के लिए बोइट से पूछा—"यह श्वेत वस्त्र पहने कौन है ?"

बोइट—एक स्त्री।

लोंगविल—मैं इसका नाम चाहता हूं।

बोइट—इसका एक ही नाम है। वह आपको नहीं मिल सकता।

लोंग०—यह किसकी लड़की है ?

बोइट—अपनी माता की।

लोंग०—ईश्वर आपकी डाढ़ी को चिरायु करे।

बोइट—नाराज न हूजिए ! यह फाकन ब्रिज की बेटी है।

लोंग०—यह तो परम सुन्दरी है।

जिस प्रकार राजा के साथी प्रतिज्ञा के विरुद्ध राजकुमारी की सहचरियों पर मोहित हो गये थे इसी प्रकार राजा का हृदय भी मदनबाणों से बिंध चुका था और जो कुछ बातें उसकी राजकुमारी के साथ हुईं उनसे

प्रकट होता था कि वह उससे प्रेम करने लगा है। इस प्रकार जिन-जिन पुरुषों ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा की थी वे सब के सब इन्द्रियवश हो गये। आर्मेडो जैकिण्टा पर आसक्त था, वाइरन रोजालिन पर, लोंगविल मैरिया पर, डूमेन कैथराइन पर और राजा राजकुमारी पर।

आर्मेडो ने कौस्टार्ड को बुलाकर उसको छोड़ देने का वादा किया; अगर वह उसका एक पत्र जैकिण्टा को दे आवे। कौस्टार्ड ने इस सेवा को स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार वाइरन ने भी उसी के हाथ एक पत्र अपनी प्राणप्यारी रोजालिन को भेजा।

कौस्टार्ड ने चाहा कि जैकिण्टा के पत्र को फेंक दे और वाइरन की चिट्ठी रोजालिन के पास पहुँचा दे। परन्तु दैवगति से कुछ का कुछ हो गया। कौस्टार्ड पढ़ा तो था ही नहीं, उसने जैकिण्टा के पत्र को जाकर रोजालिन के हवाले कर दिया, जिसको पढ़कर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ क्योंकि वह आर्मेडो को नहीं जानती थी।

यहाँ वाइरन का पत्र, जिसे कौस्टार्ड ने जंगल में फेंक दिया था, दो शिकारियों के हाथ पड़ गया। उन्होंने वाइरन का ऐसा प्रेमपूरित पत्र देखकर बड़ा आश्चर्य किया; क्योंकि यह एक प्रसिद्ध बात थी कि राजा और उसके साथियों ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया है। इसलिए उन शिकारियों ने इस पत्र को राजा की सेवा में उपस्थित कर दिया।

इस पत्र को देने से पहले एक अद्भुत घटना हुई। वाइरन ने अपनी प्रेयसी के लिए एक और पत्र लिखा था, जिसको वह एक पार्क (बाग) में टहलते-टहलते बार-बार पढ़ रहा था; क्योंकि प्रेमीजनों का स्वभाव है कि वे प्रेमपत्र को लिखकर बार-बार पढ़ा करते हैं। ऐसा करने से उनको प्रायः वही आनन्द होता है जो प्यारी के साथ बात करने से। जिस समय वाइरन इस कार्य्य में संलग्न था, दूसरी ओर से राजा भी एक पत्र को पढ़ता हुआ आता दिखाई दिया। वाइरन छिपने के अभिप्राय से एक वृक्ष पर चढ़ गया और वहाँ से सुनता रहा कि राजा क्या . . . । राजा ने पढ़ा—

"हे सुमुखि! स्वर्णमयं

का उस प्रकार चुम्बन नहीं करती जिस प्रकार तुम्हारे नयनों की ज्योति मेरे मुख पर बहते हुए आंसुओं को चूमती है। और न समुद्र के स्वच्छ जल में रुपहले चन्द्रमा का आभास ऐसा झलकता है जैसा आपका चन्द्रवदन मेरे आंसुओं के कणों में ! जो जल-बिन्दु मेरे नेत्रों से निकलते हैं उनमें तुम्हारी ही ज्योति झलकती है। जलबिन्दु क्या है, आपकी सैर करने की सवारी है। मेरा रुदन और आपकी सैर। यदि आप मेरे आंसुओं की ओर दृष्टि करें तो इनमें अपना ही प्रकाश आपको मिलेगा। हे सुन्दरियों में सुन्दरी ! मैं आपके रूप का कहां तक वर्णन करूं !"

राजा तो पढ़ता-पढ़ता आगे बढ गया। उसके पीछे लोंगविल भी एक प्रेम-पत्र पढ़ता हुआ वहां पर आया जिसमें लिखा था, "क्या आपके कटाक्ष मुझे मजबूर नहीं करते कि मैं अपनी प्रतिज्ञा का भंग करूं। किन्तु हे सुमुखि ! मेरी प्रतिज्ञा यह थी कि किसी स्त्री का दर्शन न करूंगा। परन्तु आप स्त्री नहीं स्वर्ग की अप्सरा है। मेरा प्रण सांसारिक था, परन्तु आप पारलौकिक हैं। मेरी प्रतिज्ञा ओस के समान है और आपकी आखें सूर्य्य के सदृश हैं, जिनकी गर्मी से प्रतिज्ञा-रूपी ओस सूख जाती है। यदि मैं प्रतिज्ञाभंग करू तो इसमें मेरा क्या दोष है? क्योंकि ऐसा कौन मूर्ख है जो एक स्वर्ग की देवी के लिए बात को न तोड़ दे।"

इसके थोड़ी देर बाद डूमेन भी प्रेमालाप में मग्न होता हुआ वहां पर आ निकला, और पत्र पढ़ने के पीछे कहने लगा, "क्या अच्छा होता यदि राजा, बाइरन और लॉगविल भी मेरी तरह प्रेमासक्त होवें, क्योंकि उस दशा में मेरे ऊपर प्रतिज्ञा-भंग का दोष न लग सकता।"

यह सुनकर राजा और लोंगविल डूमेन के पास चले गये। राजा ने कहा—

"मैंने तुम दोनो के पत्र सुन लिये हैं। कोई तो स्वर्ग की अप्सरा के लिए प्रतिज्ञा भंग करने को तैयार है। कोई अपनी प्रेयसी से मिलने का उत्सुक हो रहा है। तुमने तो ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण किया था, परन्तु उस व्रत का खण्डन हो गया। यदि बाइरन सुनेगा तो क्या कहेगा।"

जिस समय राजा यह कह रहा था, बाइरन ने वृक्ष की शाखा से उतरकर कहा—

"महाराज ! क्षमा कीजिए। आप किसलिए इन लोगों का, प्रेमासक्त होने के कारण तिरस्कार करते हैं ? क्योंकि श्रीमान् भी तो उसी जाल में फँसे हुए हैं। क्या आपके अश्रु-बिन्दुओं मे आपकी प्यारी का मुख नहीं झलकता। आप इन विचारों की आंखों का तिल देख रहे हैं, परन्तु मुझे आपकी आखों में शहतीर दिखाई देता है। आहा ! मैंने कैसा तमाशा देखा।"

राजा—अरे ! क्या तूने मुझे देख लिया ? हमको धोखा हो गया।

बाइरन—नही महाराज ! मुझे धोखा हो गया कि आप लोगों के साथ ऐसा व्रत धारण किया। क्या आपने कभी मुझसे इस प्रकार की बातें सुनीं ? क्या मैंने कभी किसी रमणी के लिए इस प्रकार के पत्र लिखे ? क्या मैं किसी के प्रेम में इस प्रकार विकल हुआ ? आपको धिक्कार है !

जिस समय बाइरन इस प्रकार अपनी सचाई की डींगें मार रहा था उसी समय राजा के पास वह पत्र आया जिसे बाइरन ने रोज़ालिन के पास भेजा था और कौस्टार्ड की मूर्खता के कारण राजा के हाथ लग गया था। राजा ने इस चिट्ठी को बाइरन के हाथ में देकर कहा, "पढ़िए।" बाइरन ने अपना भाण्डा फूटता देखकर जल्दी से उस पत्र को फाड़ डाला।

डूमेन ने पत्र के टुकड़ों को जोड़कर पढ़ लिया ! फिर क्या था, उन सबमें बाइरन भी शामिल हो गया।

राजा ने पूछा—

"क्या इस पत्र मे कुछ प्रेम-सम्बन्धी बात थी ?"

बाइरन ने उत्तर दिया, "वाह ! वाह ! कौन ऐसा मनुष्य है जो रोज़ालिन के रूप को देखकर उसपर मोहित न हो जाय।"

अब सब आपस में मिल गये और उन्होंने इन फ्रांसीसी रमणियों से विवाह करने का उपाय सोचा। पहले तो सबने अपनी-अपनी प्रिया के लिए उत्तम-उत्तम वस्त्र और आभूषण भेजे। इसके पश्चात् उनके साथ नृत्य-क्रीड़ा के लिए लिखा। राजकुमारी ने इन वस्त्रादि को देखकर अपनी सखियों से कहा—

"आहा ! हम तो, जब तक घर जाने का समय आवेगा, बहुत अमीर

हो जायंगी। श्रोहो ! राजा ने तो हमको हीरों में जड़ दिया !"

रोज़ालिन—श्रीमतीजी ! क्या इनके साथ और कुछ भी आया है?

राजकुमारी—हां, कागज के इस पूरे तख्ते के दोनों ओर हाशिये पर भी लिखा हुआ यह पत्र आया है। रोज़ालिन ! तुम्हारे पास भी तो कुछ आया है। भला बताओ तो सही किसने भेजा है ?

रोज़ालिन—हां ! हां ! देखिए ! बाइरन का यह पत्र है।

राजकुमारी—कैथराइन ! तुमको भी तो डूमेन ने कुछ भेजा है।

कैथराइन—हां ! यह दस्ताना है।

राजकुमारी—क्या एक ही दस्ताना है। दो नहीं ?

कैथराइन—दो हैं। जी, दो ! और इनके अतिरिक्त एक लम्बा-चौड़ा सौन्दर्य की प्रशंसा में पत्र भी लिखा है।

मेरिया—लोंगविल ने मेरे लिए ये मोती भेजे हैं और एक आध मील लंबा चिट्ठा !

अब इन सबने राजा की पार्टी को धोखा देने के इरादे से ऐसा किया कि एक के वस्त्र दूसरी ने पहिन लिये। रोज़ालिन ने राजकुमारी के और राजकुमारी ने मेरिया के इत्यादि। इस प्रकार जब राजा अपने मित्रों सहित आया तो नृत्य के समय हर एक ने अपनी-अपनी कल्पित प्रेयसी का हाथ पकड़कर एकान्त में अपनी-अपनी प्रेम की कहानी सुनाई और अपनी-अपनी अंगूठियां भी दे आये। परन्तु किसी ने यह न पहिचाना कि हम अपनी प्यारियों के बदले दूसरों को अंगूठियां दिये जाते हैं। क्योंकि राजकुमारी और उसकी सहेलियों के मुख वस्त्रों से ढके हुए थे।

जब दूसरे दिन राजा फिर राजकुमारी से मिलने आया और निवेदन किया कि आह हमारे महल में चलकर उसको अपने चरणों से सुशोभित कीजिए तो राजकुमारी ने उत्तर दिया—

"नहीं नहीं ! मैं तो इसी जंगल में रहूंगी। क्योंकि झूठे आदमियों को मैं पसन्द नहीं करती !"

राजा—देवि ! मैंने क्या झूठ बोला है ?

राजकुमारी—आपने प्रतिज्ञा भंग की है।

राजा—देवि ! यह केवल आपके नेत्रों का प्रताप था।

राजकुमारी—नहीं नहीं ! प्रताप किसी के व्रत का खण्डन नहीं करता ! क्या तुम कल यहां नहीं आये थे ?

राजा—हां आया था।

राजकुमारी—फिर तुमने अपनी प्रिया से क्या प्रतिज्ञा की थी ?

राजा—यही कि जीवनपर्य्यन्त मैं तुम्हारा दास रहूंगा।

राजकुमारी—जब वह तुमसे कहेगी तो तुम उसको छोड़ दोगे ?

राजा—अपनी क़सम ! कभी नहीं !

राजकुमारी—शपथ न खाओ। तुम एक बार उसे तोड़ चुके हो।

राजा—यदि अबकी बार मैं शपथ को तोड़ूं तो फिर कभी मेरा विश्वास न करना।

राजकुमारी—कभी नहीं ! (रोज़ालिन से) कहो रोज़ालिन रात को तुमसे इन्होंने क्या कहा था ?

रोज़ालिन—यह कहते थे कि तुम मुझे नेत्रों की ज्योति से भी अधिक प्यारी हो। और तुम संसार भर से अधिक सुन्दर हो। मैं या तो तुमसे विवाह करूंगा या तुम्हारे ही प्रेम में मर जाऊंगा।

राजकुमारी—कहो राजन् ! क्या तुम अब इस प्रतिज्ञा का पालन करोगे ?

राजा—अपने जीवन की कसम ! देवि ! मैंने इस स्त्री के साथ कभी इस प्रकार की प्रतिज्ञा नहीं की !

रोज़ालिन—ईश्वर की क़सम ! तुमने की थी। इसका साक्षात् प्रमाण यह लीजिए। क्या यह आपकी ही अंगूठी है ? और क्या यह रात आपने मुझे नहीं दी थी ?

राजा—नहीं नहीं ! यह अंगूठी मैंने राजकुमारी को दी थी। इसकी बांह पर यह हीरा लगा था।

राजकुमारी—क्षमा कीजिए। यह वस्त्र रोज़ालिन पहिने हुए थी। (बाइरन से) और देखिए आपने मुझे यह मोती दिया था, क्या आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं या अपना मोती वापिस लेना ?

बाइरन—कुछ नहीं। मैं दोनों छोड़ता हूं। अब मैं चाल समझ गया ! इन सबने हमारी हंसी उड़ाने के लिए यह जाल रचा था।

इसी समय राजकुमारी ने सुना कि उसके पिता का देहान्त हो गया।

यह सुनते ही अपने देश जाने की तैयारियां कर दीं। राजा ने आग्रह करके कहा—

"श्रीमतीजी ठहरें", परन्तु राजकुमारी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। जब राजा ने फिर आग्रह करके कहा कि यदि आप जाती ही हैं तो हमसे प्रेम करने की प्रतिज्ञा करती जाइए। इस पर राजकुमारी ने उत्तर दिया—

"राजन् ! इस समय आपने व्रत-खण्डन करके बड़ा अपराध किया है, इसलिए आपकी शपथ का विश्वास नहीं कर सकती। यदि आप बारह वर्ष के लिए राजपाट छोड़कर किसी एकान्त स्थान का सेवन करें और यम-नियम के अनुसार तपस्वी का जीवन व्यतीत करने के पश्चात् मेरे पास आवें तो मैं अवश्य आप से ब्याह कर लूंगी।"

राजा—मैं शपथ खाता हूं कि ऐसा ही करूंगा।

राजकुमारी—आपकी शपथ का कुछ भरोसा नहीं।

बाइरन—(रोज़ालिन से) प्यारी मुझसे क्या कहती हो—?

रोज़ालिन—आप भी अपना प्रायश्चित्त कीजिए और तीन वर्ष तक हस्पताल में दरिद्र रोगियों की सेवा कीजिए। तब मेरी ओर ध्यान दीजिए।

डूमेन—(कैथराइन से) प्यारी, मेरे लिए क्या उत्तर है ?

कैथराइन—साल भर और एक दिन तप कीजिए ! तब मैं आपकी बात सुनूंगी।

लोंग०—(मैरिया से) तुम भी कहो !

मैरिया—आपको भी साल-भर प्रतीक्षा करनी चाहिए।

यह कहकर वे सबकी सब चली गईं और ये लोग हाथ मलते रह गये !

तृतीय रिचार्ड

(RICHARD III)

"छठे हेनरी" के 'तीसरे भाग' में हम दिखला चुके हैं कि रिचार्ड ग्लौस्टर ने छठे हेनरी को वन्दीगृह में मार डाला। यह भी बतलाया जा चुका है कि चौथे एडवर्ड के एक लड़का उत्पन्न हो गया था जिसका नाम भी एडवर्ड था और जो अपने पिता की मृत्यु पर पाँचवें एडवर्ड के नाम से गद्दी पर बैठा।

रिचार्ड ग्लौस्टर कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। यद्यपि इस समय लंकास्टर वंश के लोग मर चुके थे और यार्कवंश को विजय प्राप्त हुई थी परन्तु अब ग्लौस्टर स्वयं राज्य छीनना चाहता था। यह मालूम हो चुका है कि ग्लौस्टर चौथे एडवर्ड का सबसे छोटा भाई था। मंझला क्लेरेंस था। ग्लौस्टर यह चाहता था कि एडवर्ड के पीछे स्वयं गद्दी पर बैठे। इसलिए उसने कुटिलता से क्लेरेंस को मारने का उपाय सोचा।

पहले तो उसने राजा के कान भर दिये कि बहुत से लोग आपका प्राण लेना चाहते हैं और उनमे हमारा भाई क्लेरेंस और एक लार्ड हेस्टिंग्ज नामी भी है। उसके पश्चात् क्लेरेंस को यह निश्चय दिला दिया कि यह सब रानी की करतूत है। एडवर्ड ने अपने प्राणों को संदिग्ध अवस्था में देखकर क्लेरेंस को कैद कर दिया। जिस समय वह ब्रेकनबरी नामक एक लार्ड के साथ जो लन्दन के मीनार नामी बन्दीगृह का दारोग़ा था जा रहा था मार्ग में रिचार्ड ग्लौस्टर मिला और उसे प्रणाम करके कहा—

"भाई! आपके साथ पुलिस कैसी?"

क्लेरेंस—महाराज ने मेरे शरीर की रक्षा के लिए वन्दीगृह तक सिपाही

साथ कर दिये हैं।

ग्लौस्टर—क्यों?

क्लेरेंस—क्योंकि मेरा नाम जार्ज क्लेरेंस है।

ग्लौस्टर—यह तो आपका दोष नहीं। इस अपराध के लिए तो आपके नाम रखनेवाले को पकड़ना चाहिए था। क्या बन्दीगृह में आपका फिर नामकरण होगा? मुझे बताइए तो क्या बात है?

क्लेरेंस—मुझे भी ज्ञात नहीं है। परन्तु मैंने केवल इतना सुना है कि किसी ज्योतिषी ने उससे कह दिया है कि तुम्हारी सन्तान को 'ज' से हानि पहुंचेगी। अब चूंकि मेरा नाम 'ज' से आरम्भ होता है इसलिए मुझी पर संदेह किया गया है।

ग्लौस्टर—भाई! इसका कारण केवल यह है कि लोग स्त्रियों के वश में है। आपको क़ैद में भेजने वाला राजा नहीं किन्तु रानी है। इसी रानी ने अपने भाई की सहायता से लार्ड हेस्टिंग्ज को क़ैद करा दिया।

क्लेरेंस—ईश्वर! ईश्वर! अब तो रानी के सम्बन्धियों के सिवा और किसी का ठीक नहीं है?

ग्लौस्टर—आप बहुत दिनों क़ैद न रहेंगे। मैं बहुत जल्दी छुड़ाने का उपाय करूंगा।

क्लेरेंस तो बन्दीगृह में चला गया और ग्लौस्टर ने बजाय छुड़ाने के उसको मार डालने की तैयारियां कीं और दो घातकों को रुपया देकर इस काम की पूर्ति के लिए भेजा।

एक दिन क्लेरेंस किसी सोच में बैठा हुआ था। उसे उदास देखकर ब्रेकनबरी ने कहा—

"श्रीमान्, आज क्यों दुखित हैं?"

क्लेरेंस—मैंने कल की रात इस कष्ट से काटी है और ऐसे-ऐसे भयानक स्वप्न देखे है कि यदि मुझे संसार का राज्य मिले तो भी ऐसी दूसरी रात्रि जीना नहीं चाहता।

ब्रेकनबरी—श्रीमान् ने क्या स्वप्न देखा है? कृपया बताइए।

क्लेरेंस—मैंने देखा कि मैं क़ैदखाने को तोड़कर ग्लौस्टर के साथ बरगण्डी (फ्रांस) को भागा जा रहा हूं। जब मैंने इंग्लैण्ड की ओर देखा तो

गुलाब-युद्ध (Wars of Roses) की बहुत-सी बातें याद आ गईं! जब हम तख्तों पर टहल रहे थे उस समय ग्लौस्टर का पैर फिसला और ज्यों ही मैंने उसे संभाला उसने मुझे समुद्र में डाल दिया। हे परमात्मन्! डूबने में कैसा कष्ट होता है। पानी की भयानक आवाज मेरे कानों में आ रही थी और मृत्यु आंखें फाड़-फाड़कर मेरी ओर देख रही थी। मैंने सैकड़ों आदमियों को देखा जिनको मछलियां खा रही थीं! समुद्र की तह में सैकड़ों जहाजों के टूटे-फूटे तख्ते पड़े हुए थे। मनों स्वर्णीय आभूषण और मोती रक्खे हुए थे। बहुत से मुर्दों की खोपड़ियों में गड़ गये थे। बहुत से उनकी पुतलियों में घुस गये थे।

ब्रेकनबरी—क्या आपको मृत्यु के समय यह सब देखने का अवसर मिल गया?

क्लेरेंस—मुझे तो मिल गया। मैंने कई बार चाहा कि आत्मा शरीर से निकल जाय पर न निकला! और पानी मेरे शरीर में घुस-घुस कर मुझको कष्ट देने लगा।

ब्रेकनबरी—क्या आप इतने कष्ट से जागे नहीं?

क्लेरेंस—नहीं नहीं। मेरा स्वप्न-मरण पश्चात् भी रहा! और उस समय आत्मा को बहुत दुःख हुआ। मैं नरक में पहुंचा और पहले मुझे मेरा ससुर वारिक मिला और कहने लगा—"पापी क्लेरेंस! इस अंधकार-रूपी राज में तुझे मिथ्या-भाषण का क्या दण्ड मिल सकता है?" अब वह तो छिप गया और एक रक्तमय आत्मा आकर कहने लगा—"अब पापी क्लेरेंस आ गया, जिसने मुझे ट्यूक्सबरी के रणक्षेत्र में मारा था। इसे पकड़ लो और भले प्रकार कष्ट दो।" यह सुनकर बहुत-सी दुरात्मायें आ गईं और मेरे कानों में भयानक-भयानक शब्द करने लगीं। मैं कांपने लगा और कांपते ही जाग उठा। परन्तु जागने के पश्चात् भी मुझे बहुत देर तक यही मालूम होता रहा कि मैं नरक में हूँ।

ब्रेकनबरी—स्वामिन्! आपके डरने का कुछ आश्चर्य नहीं है, मैं तो सुन कर ही भयभीत हो रहा हूं।

क्लेरेंस—मैंने एडवर्ड के लिए वह काम किये है जो अब मेरी आत्मा के विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं। अब देख लो इसका कैसा इनाम मिल रहा है। ईश्वर ! यदि मेरी हार्दिक प्रार्थनायें और पश्चात्ताप मेरे पापों को दूर नही कर सकते तो ईश्वर आप केवल मुझे ही दण्ड दे लें और मेरी निर्दोष स्त्री तथा बच्चों पर दया कीजिए।

यह कहकर क्लेरेंस बेहोश हो गया और थोड़ी देर में सो गया ! इतने में वहां पर रिचार्ड के भेजे हुए घातक आये और कहने लगे—

"कौन है ?"

ब्रेकनबरी—अरे क्या चाहता है और कैसे आया है ?

१ घातक—मैं क्लेरेंस से बातें करना चाहता हूं और अपनी टांगों के बल आया हूं।

ब्रेकनबरी—ऐसा सूक्ष्म उत्तर !

२ घातक—व्यर्थालाप से मितभाषण अच्छा है।

यह कहकर उसने ब्रेकनबरी को ग्लौस्टर का लिखा एक पत्र दिया जिसमें लिखा था कि इन दोनों के संरक्षण में क्लेरेंस को छोड़ दो। ब्रेकनबरी तो इस आज्ञा-पत्र को देखकर चला गया और दूसरा घातक कहने लगा—

"क्या सोते हुए को ही मार दें ?"

१ घातक—नही ! नहीं ! जब वह जागेगा तो कहेगा कि धोखे से मार डाला।

२ घातक—अरे मूर्ख, वह जागने कब लगा ?

१ घातक—तो वह कहेगा कि सोते में मारा।

२ घातक—न्याय[१] के दिन ही कह सकेगा ! परन्तु 'न्याय' शब्द को कहने से मेरे मन में कुछ पछतावा होता है।

१ घातक—अरे क्या डर गया ?

२ घातक—हत्या से नही, किन्तु दण्ड से ! क्योंकि ईश्वर के दण्ड से कौन

१. ईसाइयों का सिद्धान्त है कि प्रलय के दिन सब मुर्दे क़बरों में से उठेंगे और ईश्वर उनका न्याय करेगा।

बचा सकता है ?

१ घातक—मैं तो समझता था कि तू दृढ़ है।

२ घातक—मैं उसे जीवित रखने में दृढ़ हूं !

१ घातक—अच्छा मैं जाता हूं, ग्लौस्टर से यही कह दूंगा।

२ घातक—रह जा ! रह जा ! शायद मेरा यह शुद्ध विचार थोड़ी देर में जाता रहे। क्योंकि मेरी आत्मा में पुण्य के भाव आधे मिनिट से अधिक नहीं रहते !

१ घातक—(थोड़ी देर में) अब तेरा क्या हाल है ?

२ घातक—अभी तक तो कुछ दया बाकी है।

१ घातक—सोच तो सही कि इस काम की पूर्ति पर हमको कितना इनाम मिलेगा।

२ घातक—अरे मैं इनाम तो भूल ही गया था। अब तो यह अवश्य मारा जायगा।

१ घातक—अब तेरी दया कहां गई ?

२ घातक—रिचार्ड ग्लौस्टर की थैली में !

१ घातक—जब वह इनाम देने के लिए थैली खोलेगा तो सब दया भाग जायगी !

२ घातक—अच्छा ! जल्दी करो ! दया को भाग जाने दो। बहुत सों को दया होती तक नहीं !

१ घातक—अगर फिर तुझे दया आ जाय तो कैसा हो ?

२ घातक—अब मैं इसकी परवा न करूंगा ! इससे लोग भीरु हो जाते हैं। न आदमी चोरी कर सकता है। न झूठी शपथ खा सकता है। यह आदमी को निकम्मा कर देती है।

१ घातक—मेरे मन में तो यह अब तक कह रही है कि क्लेरेंस को न मारो !

२ घातक—चल हट ! इसकी बात मत सुन !

१ घातक—मेरा हृदय पत्थर का है। यह मेरा क्या करेगी ?

२ घातक—क्या कार्य्य आरम्भ करें ?

१ घातक—इसको तलवार पर उठाकर दो।

चले जाओ। मेरा मारना महा पाप है।

१ घातक—हम जो कुछ करते हैं आज्ञा से करते हैं।

२ घातक—और आज्ञा देने वाला हमारा राजा है।

क्लेरेंस—मूर्ख राजभक्त ! राजों के राजा ने अपने पवित्र शास्त्र में आज्ञा दी है कि हत्या न करो। फिर क्या तुम उसकी आज्ञा को भंग करके मनुष्य की आज्ञा का पालन करोगे ? याद रक्खो वह अवश्य उनको दण्ड देगा जो उसके नियमों का उल्लंघन करेंगे।

२ घातक—और इसीलिए ईश्वर ने तुझे दण्ड दिया है। तूने प्रतिज्ञा की थी कि लंकास्टर वंश के लिए लड़ूंगा।

१ घातक—और फिर इस प्रतिज्ञा को भंग करके अपने राजा के लड़के की आतें निकाल ली।

२ घातक—तेरा कर्त्तव्य था कि इसकी रक्षा करता !

१ घातक—जब तूने स्वयं ऐश्वरीय आज्ञा को भंग किया तो हमको किस प्रकार शिक्षा दे सकता है ?

क्लेरेंस—हाय ! मैंने यह सब अपने भाई एडवर्ड के लिए किया। वह तुमको मेरे मारने के लिए नहीं भेज सकता; क्योंकि वह भी तो उसी पाप का भागी है जिसका मैं हूं। यदि ईश्वर इसका दण्ड देगा तो डंके की चोट देगा ! तुम ईश्वर का काम क्यों करते हो !

१ घातक—तूने ईश्वर का काम क्यों किया; जब राजकुमार के प्राण लिये ?

क्लेरेंस—क्रोध और भ्रातृ-स्नेह के कारण।

१ घातक—तो हम भी तेरे भाई के प्रेम, अपने कर्त्तव्य और तेरे अपराधों से प्रेरित होकर यह काम कर रहे हैं।

क्लेरेंस—अगर तुमको मेरे भाई से प्रेम है तो मुझसे घृणा मत करो। क्योंकि मुझे वह प्यारा है। यदि इनाम के लिए तुम इस काम को करने के लिए उद्यत हुए हो तो मैं ग्लौस्टर को लिख दूंगा वह तुम्हें एडवर्ड से भी अधिक इनाम देगा !

२ घातक—तुमको धोका हुआ है। ग्लौस्टर तुमसे बैर रखता है।

क्लेरेंस—नहीं नहीं। वह मुझसे प्रेम रखता है। तुम मेरी ओर से उसके

पास जाओ।

दोनों घातक—हम तो जायेंगे ही।

क्लेरेंस—और उससे कह दो कि हमारे पिता यार्क ने मृत्यु समय उपदेश किया था कि सर्वदा प्रेमपूर्वक रहना। जब ग्लोस्टर यह बात सुनेगा तो रो पड़ेगा!

१ घातक—आंसू नहीं पत्थर रोयेगा। जैसा हम रो रहे हैं।

क्लेरेंस—उसको बुरा न कहो। वह दयालु है।

१ घातक—जैसे जाड़ों में पाला! चलो हटो! तुम धोखे में हो। उसी ने तो हमको भेजा है।

क्लेरेंस—ऐसा नहीं हो सकता। वह तो मुझे क़ैद में देखकर रोता था और कहता था कि मैं तुम्हें छुड़ाऊंगा!

१ घातक—वह ठीक कहता था इस संसाररूपी क़ैद से छुड़ाने के लिए उसने हमें भेजा है।

२ घातक—श्रीमान् ईश्वर का ध्यान करें क्योंकि मृत्यु-समय निकटस्थ है।

क्लेरेंस—जब तुम्हारे आत्मा ऐसे पवित्र हैं कि तुम मुझे ईश्वर की आराधना के लिए प्रेरणा करते हो तो तुम अपने आत्मा का क्यों ख़याल नहीं करते और मुझे मारकर ईश्वर से बैर करते हो।

२ घातक—हम क्या करें?

क्लेरेंस—दया करके अपने आत्मा को पाप से बचा लो!

१ घातक—दया करना कायरता और स्त्रीपन है।

क्लेरेंस—निर्दयी होना पशुपन है।

२ घातक—पीछे की ओर देखो!

यह कहकर उन दोनों ने क्लेरेंस का वहीं ढेर कर दिया और उसकी लाश को पीपे में छिपा दिया।

यद्यपि एडवर्ड ने पहले ग्लोस्टर की चालाकियों से क्लेरेंस की मृत्यु के लिए हुक्म दे दिया था परन्तु फिर क्षमा कर दिया। लेकिन रिचार्ड ग्लोस्टर ने जल्दी से उसे मरवा डाला। जिस समय एडवर्ड ने क्लेरेंस की मृत्यु की ख़बर सुनी उसे बहुत खेद हुआ और वह ढारें मारकर रोने लगा। क्योंकि

जब उसे अपने भाई के वे सब पराक्रम याद आ गये जो उसने ट्यूक्सबरी के रणक्षेत्र में किये थे। एडवर्ड उस समय बीमार था और थोड़े दिनों में मर गया।

अब तो रिचार्ड की चढ़ बनी। एडवर्ड ने मरते समय यह निश्चय किया था कि राजकुमार एडवर्ड राजा हो और रिचार्ड उसका संरक्षक। रिचार्ड दिखलाने को तो सबसे प्रेम करता था परन्तु उसके मन में सदा कपट-कतरनी चलती रहती थी। क्लेरेंस को मरवा ही चुका था। अब राजकुमार एडवर्ड और उसके भाई राजकुमार रिचार्ड की बारी आई। राजकुमार एडवर्ड और उसकी माता एलीज़िबेथ उस समय लार्ड रिवर्स और लार्ड ग्रे की संरक्षकता में थे।

लार्ड रिवर्स एलीज़िबेथ का भाई था और लार्ड ग्रे उसका पहले पति से उत्पन्न हुआ पुत्र! इन दोनों से रिचार्ड को बैर था। और इनके सामने वह अपने भतीजों को कुछ हानि नहीं पहुंचा सकता था इसलिए सबसे पहले उसने इन्हीं की खबर ली और बकिंघम की सहायता से इनको पौम्फ्रेट के किले में क़ैद कर दिया। इलीज़िबेथ ने जब अपने सम्बन्धियों की इस दुर्दशा का हाल सुना तो बड़ी दु:खित हुई और उसे मालूम हो गया कि रिचार्ड मेरा और मेरे वंशजो का नाश करना चाहता है। इसलिए वह भाग कर अपने छोटे बेटे रिचार्ड के साथ किसी धर्म-सम्बन्धी मठ को चली गई।

जब राजकुमार एडवर्ड ने अपने मामा का हाल रिचार्ड ग्लौस्टर से पूछा तो उसने कह दिया कि ये तुम्हारे सम्बन्धी तुमको मार डालना चाहते हैं। इसलिए यही उचित मालूम होता है कि उनको तुम्हारे पास से अलग कर दिया जाय और तुमको तुम्हारे भाई सहित लन्दन के मीनार में भेज दिया जाय क्योंकि वह जगह बहुत अच्छी है। एडवर्ड ने यद्यपि इस बात को पसन्द न किया परन्तु बेचारे को जाना पड़ा और उसका छोटा भाई रिचार्ड भी महारानी इलीज़िबेथ के पास से छीनकर वहीं भेज दिया गया! इस समय यद्यपि नाममात्र को पंचम एडवर्ड देश का राजा था परन्तु सब अधिकार रिचार्ड ग्लौस्टर के हाथ में था। वह जो चाहता था वही करता था और शनैः शनैः अपने को गद्दी पर बिठाने का उपाय करता जाता था।

जब उसे अपने भाई के वे सब पराक्रम याद आ गये जो उ
रणक्षेत्र में किये थे। एडवर्ड उस समय बीमार था और
गया।

अब तो रिचार्ड की चढ़ बनी। एडवर्ड ने मरते
किया था कि राजकुमार एडवर्ड राजा हो और रिचार्ड
रिचार्ड दिखलाने को तो सबसे प्रेम करता था परन्तु
कपट-कतरनी चलती रहती थी। क्लेरेंस को मरवा
राजकुमार एडवर्ड और उसके भाई राजकुमार रिचा
राजकुमार एडवर्ड और उसकी माता एलीजिबेथ उस
और लार्ड ग्रे की संरक्षकता में थे।

लार्ड रिवर्स एलीजिबेथ का भाई था और लार्ड
से उत्पन्न हुआ पुत्र! इन दोनों से रिचार्ड को वैर था
वह अपने भतीजों को कुछ हानि नहीं पहुंचा सकता था
उसने इन्हीं की खबर ली और बकिंघम की सहायता
क़िले में क़ैद कर दिया। इलीजिबेथ ने जब अपने
दुर्दशा का हाल सुना तो बड़ी दुःखित हुई और उसे
रिचार्ड मेरा और मेरे वंशजों का नाश करना चाहता
कर अपने छोटे बेटे रिचार्ड के साथ किसी धर्म-स
गई।

जब राजकुमार एडवर्ड ने अपने मामा का ह
पूछा तो उसने कह दिया कि ये तुम्हारे सम्बन्धी तु
हैं। इसलिए यही उचित मालूम होता है कि उन
कर दिया जाय और तुमको तुम्हारे भाई सहित
दिया जाय क्योंकि वह जगह बहुत अच्छी है।
को पसन्द न किया परन्तु बेचारे को जाना पड़ा
रिचार्ड भी महारानी इलीजिबेथ के पास से छीन
इस समय यद्यपि नाममात्र को पंचम एडवर्ड देश
अधिकार रिचार्ड ग्लौस्टर के हाथ में था। वह ज
था और शनैः शनैः अपने को गद्दी पर बिठाने का उ

ग्लोस्टर—जब मैं ईसाई हूँ तो अवश्य करूँगा।

बकिंघम—आपका यह अपराध है कि आपने अपने पूर्वजों की राजगद्दी को अधार्मिक लोगों के लिए छोड़ रक्खा है। आप अभी सोये हुए हैं और यह देश उन लोगों के अधिकार मे आया हुआ है जिनके धर्म-कर्म तथा जन्म किसी का ठिकाना नहीं है। हमारी प्रार्थना है कि आप अपने कंधों पर इस भार को लीजिए क्योंकि राज के वास्तविक अधिकारी आप ही है और देश की प्रजा आपको ही चाहती है।

रिचार्ड ग्लोस्टर—मैं नहीं जानता कि आपको इसका क्या उत्तर दूँ। यदि चुप रहूँ तो आप कहेगे कि राज का लालच आ गया, यदि आप ऐसे प्रेमियों को ललकार दूँ तो मुझे डर है कि मेरे मित्र मुझसे अप्रसन्न हो जायेंगे! इसलिए मेरा स्पष्ट उत्तर यह है कि आपके प्रेम के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, परन्तु आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकता। यदि राज का कोई और अधिकारी न होता तो भी मैं राज न लेता, क्योंकि मेरी योग्यता ऐसी कम है कि मैं इस भार को नही उठा सकता। परन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरी आवश्यकता नहीं है। राजवृक्ष ने छोटे-छोटे फल छोड़ दिये है जो समय पाकर पक जायंगे और मैं ख़ुश हूं कि हमारा योग्य राजा पंचम एडवर्ड किसी दिन भले प्रकार मे हमारे ऊपर राज करेगा! ईश्वर न करे कि मैं अपने भतीजे से राज छीनने का विचार तक करूं।

बकिंघम—महाराज! आप धार्मिक हैं। इसलिए ऐसा कहते हैं। आपका विचार है कि एडवर्ड आपके भाई का पुत्र है, हम भी यही कहते हैं परन्तु हमारा आक्षेप यह है कि आपके भाई की धर्मपत्नी का पुत्र नहीं है। पहले आपके भाई की मंगनी लेडी लूसी से हुई थी, यह बात आपकी माता जी को मालूम है! इसके पश्चात् उसकी मंगनी फ्रांस-नरेश की बहन बोना से हुई। परन्तु आपके भाई ने दोनों योग्य स्त्रियो को छोडकर एक अधबूढी विधवा को ग्रहण कर लिया जिसके कई बालक हो चुके थे। इस स्त्री से यह एडवर्ड उत्पन्न हुआ जो आज राज-कुमार—नही! नहीं! राजा कहलाता है। शोक है कि मैं प्रत्येक

तलवार से बन्द कर रखे थे कि लन्दन का लार्ड मेयर (मुख्य शासक) और अन्य लोग रिचार्ड को राज देने पर राजी हो गये और बकिंघम चालाकी से उन सब लोगों को साथ लेकर उस महल में आया जहां रिचार्ड बगला भगत बना पादरियों सहित शास्त्राध्यन कर रहा था।

जिस समय रिचार्ड को इन सबके आने की सूचना दी गई तो दूत ने आकर उत्तर दिया—

"महाराज इस समय ईश्वर की आराधना में संलग्न हैं। कृपा करके कल आइए। पारलौकिक विचारों में सांसारिक बातों से बाधा पड़ेगी।"

बकिंघम—भाई! महाराज से कह दो कि इस समय बड़ा आवश्यक कार्य है।

जब दूत चला गया तो बकिंघम लार्ड मेयर और अन्य पुरुषों से कहने लगा—

"देखिए! रिचार्ड ग्लौस्टर कोई एडवर्ड तो है ही नहीं जो हमेशा सांसारिक व्यसनों में लिप्त रहे। यह तो धार्मिक है और ईश्वर के ध्यान में मग्न है। एडवर्ड की भांति यह मन्त्रियों और राजसभासदों सहित केवल राजकाज में ही नहीं रहता किन्तु पादरियों की सत्संगति में अपने आत्मा की उन्नति करता रहता है। वह दिन बड़ा उत्तम होगा जब यह धार्मिक पुरुष इंग्लैण्ड का राजा होगा।"

इतने में ग्लौस्टर कोठे पर आया। उसके हाथ में इंजील थी और दो पादरी दोनों ओर खड़े हुए थे। उसे देखकर बकिंघम ने कहा—

"धर्मावतार! हमारी विनती सुनिए।"

रिचार्ड ग्लौस्टर—आप लोग क्षमा कीजिए, मैं इस समय परमपिता परमात्मा की सेवा में था, अतएव आपकी सेवा न कर सका! आपकी क्या आज्ञा है?

बकिंघम—वही जो ईश्वर चाहता है और इस द्वीप के लोग पसन्द करते हैं।

रिचार्ड ग्लौस्टर—क्या मैंने कुछ अपराध किया है कि इतने लोग इकट्ठे होकर यहां आये हुए हैं!

बकिंघम—हाँ, आपने किया है और हमें आशा है कि आपने इस दोष की निवृत्ति कीजिए।

ग्लोस्टर—जब मैं ईसाई हूँ तो अवश्य करूँगा।

बकिंघम—आपका यह अपराध है कि आपने अपने पूर्वजों की राजगद्दी को अधार्मिक लोगों के लिए छोड़ रक्खा है। आप अभी सोये हुए हैं और यह देश उन लोगों के अधिकार में आया हुआ है जिनके धर्म-कर्म तथा जन्म किसी का ठिकाना नहीं है। हमारी प्रार्थना है कि आप अपने कंधों पर इस भार को लीजिए क्योंकि राज के वास्तविक अधिकारी आप ही हैं और देश की प्रजा आपको ही चाहती है।

रिचार्ड ग्लोस्टर—मैं नहीं जानता कि आपको इसका क्या उत्तर दूं। यदि चुप रहूँ तो आप कहेंगे कि राज का लालच आ गया, यदि आप ऐसे प्रेमियों को ललकार दूँ तो मुझे डर है कि मेरे मित्र मुझसे अप्रसन्न हो जायँगे! इसलिए मेरा स्पष्ट उत्तर यह है कि आपके प्रेम के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, परन्तु आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकता। यदि राज का कोई और अधिकारी न होता तो भी मैं राज न लेता, क्योंकि मेरी योग्यता ऐसी कम है कि मैं इस भार को नहीं उठा सकता। परन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरी आवश्यकता नहीं है। राजवृक्ष ने छोटे-छोटे फल छोड़ दिये है जो समय पाकर पक जायगे और मैं खुश हूं कि हमारा योग्य राजा पंचम एडवर्ड किसी दिन भले प्रकार से हमारे ऊपर राज करेगा! ईश्वर न करे कि मैं अपने भतीजे से राज छीनने का विचार तक करूं।

बकिंघम—महाराज! आप धार्मिक हैं। इसलिए ऐसा कहते हैं। आपका विचार है कि एडवर्ड आपके भाई का पुत्र है, हम भी यही कहते हैं परन्तु हमारा आक्षेप यह है कि आपके भाई की धर्मपत्नी का पुत्र नहीं है। पहले आपके भाई की मंगनी लेडी लूसी से हुई थी, यह बात आपकी माता जी को मालूम है! इसके पश्चात् उसकी मंगनी फ्रांस-नरेश की बहन बोना से हुई। परन्तु आपके भाई ने दोनों योग्य स्त्रियों को छोड़कर एक अधबूढ़ी विधवा को ग्रहण कर लिया जिसके कई बालक हो चुके थे। इस स्त्री से यह एडवर्ड उत्पन्न हुआ जो आज राज-कुमार—नहीं! नहीं! राजा कहलाता है। शोक है कि मैं प्रत्येक

बात स्पष्ट नहीं कह सकता। क्योंकि आपके ही पूर्वजों पर दोष आता है।

रिचार्ड ग्लौस्टर—शोक! शोक! आप मेरे सिर पर इतना भार रखते हैं। मैं इस योग्य नहीं हूं कि राज कर सकूं।

बकिंघम—यदि आप राज न ग्रहण करेंगे तो हम अन्य देश के किसी योग्य पुरुष को गद्दी दे देंगे, क्योंकि जारज एडवर्ड हमारा राजा नहीं हो सकता।

ग्लौस्टर—अच्छा यदि आपकी यह इच्छा है तो मुझे कुछ संकोच नहीं है, परन्तु यदि पीछे मुझपर कोई दोष रखे तो यह अपराध मुझपर नहीं है, क्योंकि ईश्वर जानता है और कुछ-कुछ आप को भी मालूम है कि मेरी इच्छा राज लेने की नहीं है।

इस धोखे से रिचार्ड ने इंग्लैण्ड का राज ले लिया और दूसरे दिन अपने भतीजों एडवर्ड और रिचार्ड को क़ैद करके तृतीय रिचार्ड के नाम से गद्दी पर बैठ गया!

इनकी माता एलीज़िबेथ को कुछ ख़बर नहीं थी। इसलिए जब वह अपनी सास अर्थात् तृतीय रिचार्ड की माता के साथ लन्दन के मीनार के पास अपने पुत्र-पौत्रों को देखने गई तो ब्रेकनबरी ने जो मीनार का अधिष्ठाता था उनको भीतर न जाने दिया और कहा कि राजा ने आज्ञा दी है कि कोई भीतर न जाने पावे।

एलीज़िबेथ—राजा ने! अरे कौन राजा है?

ब्रेकनबरी—वही संरक्षक (अर्थात् तीसरा रिचार्ड)!

एलीज़िबेथ—अरे क्या उसने मुझमें और मेरे पुत्रों में भेद करा दिया। मैं उनकी मां और मुझे भीतर जाने से कौन रोक सकता है?

सास—मैं इनके बाप की माता हूँ। इसलिए उन्हें अवश्य देखूंगी!

ब्रेकनबरी—नहीं श्रीमतीजी! मुझे शपथ दिलाई गई है। मैं आपको नहीं जाने देने का!

इस समय स्टेनली आया और उसने तीसरे रिचार्ड के राज्याभिषेक की सूचना दी। एलीज़िबेथ ने जब यह कुसमाचार सुने तो उसे बड़ा दुःख हुआ। अब उसे निश्चय हो गया कि मेरे पुत्र जीते न बचेंगे। इसलिए उसने अपने

एक और पुत्र डॉसिट को हेनरी रिचमौण्ड के पास भेजा कि वह आकर रिचार्ड को उसके पापों का दण्ड दे। यह हेनरी रिचमौण्ड कौन था इसका वर्णन हम आगे करेंगे।

अब दोनों राजकुमारों अर्थात् पांचवें एडवर्ड और उसके छोटे भाई का मृत्यु समय आ पहुँचा, क्योंकि उनका चचा हर घड़ी उन्हीं के मारने का उपाय सोच रहा था। जिस बकिंघम की कुटिल सहायता से उसे राजगद्दी मिली थी उसी के द्वारा वह यह काम भी कराना चाहता था। राजा होने से पूर्व उसने बकिंघम से प्रतिज्ञा की थी कि मैं गद्दी पर बैठकर तुमको हियरफ़ोर्ड की जागीर दे दूंगा। एक दिन जब वह गद्दी पर बैठा हुआ था उसने बकिंघम को बुलाकर कहा—

"मैंने आपकी सहायता से इस उच्च पद की प्राप्ति की है। परन्तु क्या यह गद्दी केवल एक ही दिन के लिए है या मैं बहुत दिनों तक इसका सुख भोगूंगा।"

बकिंघम—ईश्वर करे आप सदा राज्य करें।

रिचार्ड—अभी एडवर्ड जीवित है। देखें आप क्या राज-भक्ति दिखाते है? क्या आप जानते हैं कि मैं क्या कहूंगा?

बकिंघम—श्रीमहाराज कहें।

रिचार्ड—मैं राजा होना चाहता हूं।

बकिंघम—श्रीमान् तो राजा है ही।

रिचार्ड—अरे क्या मैं एडवर्ड के जीते जी हूं?' मैं चाहता हू कि आप इसे शीघ्र मरवा डालें।

यह सुनकर बकिंघम के पेट में पानी हो गया। यद्यपि उसने रिचार्ड की राजगद्दी के लिए उचित-अनुचित सभी काम किये परन्तु एडवर्ड की हत्या से अपने माथे मे कलंक का टीका लगाना नहीं चाहता था। रिचार्ड इस कारण बकिंघम से क्रुद्ध हो गया और हियरफोर्ड की जागीर उसे न दी; क्योंकि बुरे आदमी अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं कर सकते। जब बकिंघम उसकी दुष्ट इच्छाओं को सन्तुष्ट न कर सका तो उसने टाइरल नामी एक हत्यारे के द्वारा एडवर्ड और उसके छोटे भाई रिचार्ड को सोते समय मरवा डाला।

उनकी माता एलीज़िबेथ ने जब यह कुसमाचार सुना तो उसकी छाती फट गई। वह रो रोकर कहने लगी—

"हे मेरे लाल ! हे मेरे बच्चो ! हे कुम्हलाये हुए फूलो ! यदि तुम्हारे आत्मा अभी वायु में उड़ते हों तो मेरे सिर के चारों ओर उड़ो और अपनी माता के विलाप को श्रवण करो।"

उसकी सास रोकर कहने लगी—

"मेरे ऊपर दुःखों का ऐसा पहाड़ आ पड़ा है कि मैं कुछ नहीं कह सकती ! हाय मेरे एडवर्ड तू क्यों मर गया !"

छठे हेनरी की रानी मारगरेट ने, जो उस समय वहीं पर थी, उत्तर दिया—

"एडवर्ड[1] के बदले एडवर्ड मर गया।"

एलीज़िबेथ—हे ईश्वर, क्या तूने इन मेमनों को त्यागकर भेड़िये के मुख में डाल दिया। हे ईश्वर, ऐसे भयानक पाप के समय तू कहां था ?

मारगरेट—जब मेरे पति और पुत्र मारे गये ?

एलीज़िबेथ की सास—हे ईश्वर, इस पृथ्वी को शीघ्र ही नष्ट कर, क्योंकि इसने निरपराधियों का रक्त बहुत पिया है।

मारगरेट—मेरे एक एडवर्ड था, जिसे रिचार्ड ने मार डाला! मेरे एक हेनरी (उसका पति) था उसे भी रिचार्ड ने मरवा दिया ! (एलीज़िबेथ से) तेरे एक एडवर्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे एक रिचार्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला।

एलीज़िबेथ की सास—मेरे एक रिचार्ड[2] था जिसे तूने मरवा डाला। मेरे एक रटलेण्ड था जिसे तूने मरवा डाला !

मारगरेट—तेरे एक क्लेरेंस था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे गर्भ से एक ऐसा कुत्ता उत्पन्न हुआ है जो हम सबको खाये जाता है। हे ईश्वर तू कैसा न्यायी है कि इसी कुत्ते से अपनी माता की सन्तान को मरवा

---

१. मारगरेट के लड़के एडवर्ड को चौथे एडवर्ड ने रिचार्ड द्वारा मरवाया था।

२. उसके पति अर्थात् चौथे एडवर्ड के पिता का नाम रिचार्ड था।

कर उसे औरों की भांति दुःखी करता है।

एलीज़िबेथ की सास—हेनरी की बहू ! तू मेरे दुःखों पर मत हंसे ! ईश्वर जानता है कि तेरे दुःखों पर मैंने शोक किया है।

मारगरेट—मेरा आत्मा बदला लेने की आग से जल रहा है। तेरा एडवर्ड जिसने मेरे एडवर्ड को मारा था, मर गया। तेरा दूसरा एडवर्ड मार डाला गया। तेरा रिचार्ड भी मर गया। क्योंकि इन सबकी मृत्यु से मेरे दुःखों का बदला नहीं हो सका। तेरा क्लेरेंस मर गया, क्योंकि उसने मेरे एडवर्ड के तलवार मारी थी। हेस्टिंग्ज, रिव्सं, ग्रे आदि सब जिन्होंने मुझे दुःख दिया था नरक में पहुँचा दिये गये। रिचार्ड अभी जीवित है। हे ईश्वर इसकी मृत्यु मेरे आंखों के सामने हो !

एलीज़िबेथ—तूने तो पहले ही कहा था कि मैं तेरे साथ कोसूंगी।

मारगरेट—मैंने तो कहा था कि तू भी मुझ सी ही होगी। अब देख तेरा पति कहां है ? तेरे भाई अब क्या हुए ? तेरे पुत्रों का भी कुछ पता है ?

एलीज़िबेथ—तेरा शाप ठीक होता है। मुझे भी बता दे कि अपने शत्रुओं को किस प्रकार शाप दूं।

मारगरेट—रात को सो मत, दिन को खा मत ! कोसे ही जा ! फिर देख कि तेरा शाप ठीक होता है या नहीं !

एलीज़िबेथ—मेरे शब्द तीक्ष्ण नहीं हैं।

मारगरेट—दुःख सबको तीक्ष्ण बना देता है।

यह कहकर मारगरेट उठ गई और रिचार्ड थोड़ी देर पीछे वहां होकर गुजरा। उसे देखकर उसकी माता रोने लगी ! रिचार्ड ने एक स्त्री को आर्त्तस्वर से रोते हुए दूर से देखकर पूछा—

"यह कौन है ?"

माता ने उत्तर दिया "मैं वह हूं जो यदि चाहती तो तुझे जन्म समय ही गला घोंट कर मार डालती।"

एलीज़िबेथ—अरे दुष्ट ! हत्यारे ! तूने मेरे बच्चों को मार कर यह मुकुट सिर पर रक्खा है। अरे निर्दयी, बता मेरे लाल कहां हैं ?

माता—मेरा क्लेरेंस कहां है ? अरे दुष्ट बता; और उसका लड़का नेड कहां है ?

एलीजि०—मेरा भाई रिवर्स और मेरा बेटा ग्रे कहां हैं ?
माता—दयालु हेस्टिंग्ज कहा है ? अरे क्या तू मेरा पुत्र है?
रिचार्ड—हा ! इसके लिए मैं पिताजी का और आपका कृतज्ञ हूं ।
माता—तू मेरी बात सुन !
रिचार्ड—कहो, पर मै सुन नहीं सकता ।
माता—मैं कोमल शब्द कहूंगी ।
रिचार्ड—संक्षेप से—मुझे जल्दी है।
माता—तुझे इतनी जल्दी है। मैं रो-रोकर तेरी प्रतीक्षा कर रही थी ।
रिचार्ड—फिर मैं आपको शान्ति देने के लिए आ तो गया।
माता—नहीं-नहीं ! तूने तो इस पृथ्वी को मेरे लिए नरक बना दिया। तेरे जन्म पर मुझे बड़ा कष्ट हुआ था। बचपन मे भी तू बड़ा चंचल और कुटिल था। लड़कपन में भी तू बड़ा उत्पाती था। युवा अवस्था में भी तो तू बड़ा घातक निकला। भला तुझसे मुझे कब सुख मिला है ?
रिचार्ड—यदि मैं ऐसा ही हूं तो मुझे जाने दो ।
माता—एक बात सुन।
रिचार्ड—तुम्हारे शब्द बड़े कर्कश हैं !
माता—मैं एक बात कहूंगी। फिर कभी न कहूंगी ।
रिचार्ड—अच्छा ।
माता—या तो ईश्वर तुझी को तेरे पापो के बदले में परास्त करेगा और यदि तुझे जीत हुई तो मैं मर जाऊंगी, पर कभी तेरा मुह न देखूंगी। इसलिए यह अन्तिम शाप तुझे देती हू कि जिस प्रकार तूने हत्या की है उसी प्रकार तू बुरी मौत मरेगा ।

मां-बाप के शाप बहुधा ठीक होते है और रिचार्ड की माता का शाप यथार्थ हुआ। हम ऊपर कह चुके है कि एलीजिबेथ ने डोर्सेट को हेनरी रिचमौण्ड की सेवा में भेजा था कि वह आकर रिचार्ड से उसके अत्याचारों का बदला ले ।

इस हेनरी रिचमौण्ड का राज-अधिकार समझने के लिए हमको दूसरे रिचार्ड और चौथे हेनरी के पूर्वजों की ओर ध्यान देना चाहिए। चौथे हेनरी के पिता गाण्ट की तीसरी स्त्री कैथराइन सिनफोर्ड थी। हेनरी रिचमौण्ड

इस कैथराइन की परपोती का लड़का था और इसका बाप एडमण्ड ट्यूडर हेनरी पंचम की विधवा कैथराइन का पुत्र था, जिसने हेनरी की मृत्यु के पश्चात् वेल्ज के एक सिपाही ओविन ट्यूडर से विवाह कर लिया था।

यद्यपि हेनरी रिचमोण्ड का यह दूरस्थ सम्बन्ध राज पर अधिकार जमाने के लिए संतोषजनक नहीं था परन्तु उसने इस अवसर को बहुत ही अच्छा समझा। उधर महारानी एलीजिबेथ ने अपनी पुत्री एलीजिबेथ का विवाह भी उससे करना अंगीकार कर लिया। रिचमोण्ड ने डोर्सेट का संदेसा सुनते ही बहुत सी सेना इकट्ठी की और मिलफोर्ड बन्दर पर आ गया। उसको देखते ही, बहुत से जागीरदार, जो तीसरे रिचार्ड की दुष्टता से तंग आ रहे थे, विद्रोह करके रिचमोण्ड से जा मिले। बकिंघम भी उनमें से एक था जिससे और रिचार्ड से पांचवें एडवर्ड की मृत्यु पर कुछ अनबन हो गई थी।

बकिंघम की सेना तो एक तूफान के कारण तितर-बितर हो गई और वह पकड़ा गया। रिचार्ड ने उसी समय उसका सिर कटवा लिया।

अब दोनों दलों की बौस्वर्थ के रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई। रात्रि के समय जब रिचार्ड और रिचमोण्ड अपने-अपने डेरों में सो रहे थे, रिचार्ड ने स्वप्न में देखा कि छठे हेनरी के पुत्र राजकुमार एडवर्ड ने उससे आकर कहा—

"कल रण में मैं तुझे पराजित करूंगा, क्योंकि तूने मुझे युवावस्था में ट्यूक्सबरी में मार डाला था।"

इसके पश्चात् छठा हेनरी आकर कहने लगा—

"जब मैं जीवित था उस समय तूने मेरे शरीर में छिद्र ही छिद्र कर दिये। इसलिए कल तू निराश होकर मरेगा।"

फिर राजकुमार क्लेरेंस ने कहा—"देख रिचार्ड, तूने मुझे छल करके मरवाया है। याद रख, कल तू जीता न बचेगा।"

इसके पीछे रिवर्स और ग्रे कहने लगे—

"तूने हमको पोम्फ्रेट में मरवाया था। इसका बदला कल लिया जायगा।"

फिर हेस्टिंग्ज आया और कहने लगा—

"पापी हत्यारे, जाग, याद रख जिस प्रकार तूने हेस्टिंग्ज को मारा है

एलीजि०—मेरा भाई रिवर्स और मेरा बेटा ग्रे कहां हैं ?
माता—दयालु हेस्टिंग्ज कहा है ? अरे क्या तू मेरा पुत्र है ?
रिचार्ड—हां ! इसके लिए मैं पिताजी का और आपका कृतज्ञ हूं।
माता—तू मेरी बात सुन !
रिचार्ड—कहो, पर मैं सुन नही सकता।
माता—मैं कोमल शब्द कहूंगी।
रिचार्ड—संक्षेप से—मुझे जल्दी है।
माता—तुझे इतनी जल्दी है। मैं रो-रोकर तेरी प्रतीक्षा कर रही थी।
रिचार्ड—फिर मैं आपको शान्ति देने के लिए आ तो गया।
माता—नहीं-नहीं ! तूने तो इस पृथ्वी को मेरे लिए नरक बना दिया। तेरे जन्म पर मुझे बड़ा कष्ट हुआ था। बचपन में भी तू बड़ा चंचल और कुटिल था। लड़कपन में भी तू बड़ा उत्पाती था। युवा अवस्था में भी तो तू बड़ा घातक निकला। भला तुझसे मुझे कब सुख मिला है ?
रिचार्ड—यदि मैं ऐसा ही हूं तो मुझे जाने दो।
माता—एक बात सुन।
रिचार्ड—तुम्हारे शब्द बड़े कर्कश हैं !
माता—मैं एक बात कहूंगी। फिर कभी न कहूंगी।
रिचार्ड—अच्छा।
माता—या तो ईश्वर तुझी को तेरे पापो के बदले में परास्त करेगा और यदि तुझे जीत हुई तो मैं मर जाऊंगी, पर कभी तेरा मुंह न देखूंगी। इसलिए यह अन्तिम शाप तुझे देती हूं कि जिस प्रकार तूने हत्या की है उसी प्रकार तू बुरी भांत मरेगा।

मा-बाप के शाप बहुधा ठीक होते हैं और रिचार्ड की माता का शाप यथार्थ हुआ। हम ऊपर कह चुके हैं कि एलीज़िबेथ ने डोर्सेट को हेनरी रिचमौण्ड की सेवा में भेजा था कि वह आकर रिचार्ड से उसके अत्याचारों का बदला ले।

इस हेनरी रिचमौण्ड का राज-अधिकार समझने के लिए हमको दूसरे रिचार्ड और चौथे हेनरी के पूर्वजों की ओर ध्यान देना चाहिए। चौथे हेनरी के पिता गाण्ट की तीसरी स्त्री कैथराइन सिनफोर्ड थी। हेनरी रिचमौण्ड

इस कैथराइन की परपोती का लडका था और इसका बाप एडमण्ड ट्यूडर हेनरी पंचम की विधवा कैथराइन का पुत्र था, जिसने हेनरी की मृत्यु के पश्चात् वेल्ज के एक सिपाही ओविन ट्यूडर से विवाह कर लिया था।

यद्यपि हेनरी रिचमोण्ड का यह दूरस्थ सम्बन्ध राज पर अधिकार जमाने के लिए सतोषजनक नही था परन्तु उसने इस अवसर को बहुत ही अच्छा समझा। उधर महारानी एलीज़िबेथ ने अपनी पुत्री एलीज़िबेथ का विवाह भी उससे करना अंगीकार कर लिया। रिचमोण्ड ने डोर्सेट का संदेसा सुनते ही बहुत सी सेना इकट्ठी की और मिलफोर्ड बन्दर पर आ गया। उसको देखते ही, बहुत से जागीरदार, जो तीसरे रिचार्ड की दुष्टता से तंग आ रहे थे, विद्रोह करके रिचमोण्ड से जा मिले। बकिंघम भी उनमें से एक था जिससे और रिचार्ड से पांचवें एडवर्ड की मृत्यु पर कुछ अनबन हो गई थी।

बकिंघम की सेना तो एक तूफान के कारण तितर-बितर हो गई और वह पकड़ा गया। रिचार्ड ने उसी समय उसका सिर कटवा लिया।

अब दोनो दलो की बोस्वर्थ के रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई। रात्रि के समय जब रिचार्ड और रिचमोण्ड अपने-अपने डेरों में सो रहे थे, रिचार्ड ने स्वप्न में देखा कि छठे हेनरी के पुत्र राजकुमार एडवर्ड ने उससे आकर कहा—

"कल रण में मैं तुझे पराजित करूंगा, क्योंकि तूने मुझे युवावस्था मे ट्यूक्सबरी में मार डाला था।"

इसके पश्चात् छठा हेनरी आकर कहने लगा—

"जब मैं जीवित था उस समय तूने मेरे शरीर में छिद्र ही छिद्र कर दिये। इसलिए कल तू निराश होकर मरेगा।"

फिर राजकुमार क्लेरेंस ने कहा—"देख रिचार्ड, तूने मुझे छल करके मरवाया है। याद रख, कल तू जीता न बचेगा।"

इसके पीछे रिवर्स और ग्रे कहने लगे—

"तूने हमको पोम्फ्रेट में मरवाया था। इसका बदला कल लिया जायगा।"

फिर हेस्टिंग्ज आया और कहने लगा—

"पापी हत्यारे, जाग, याद रख जिस प्रकार तूने हेस्टिंग्ज को मारा है

उसी प्रकार कल तू मारा जायगा।"

इसके पश्चात् पांचवें एडवर्ड और उसके भाई रिचार्ड ने आकर कहा—

"अपने भतीजों की याद कर जिनको तूने कैदखाने मे मरवाया था। यही कल तेरी मौत के कारण होंगे।"

सबसे पीछे बकिंघम आकर कहने लगा—

"अरे दुष्ट! मैंने ही तुझे राजगद्दी दिलाई थी! और सबसे पीछे मैं ही तेरे अत्याचार की भेंट हुआ। कल मुझे याद करके अपनी दुष्टता पर पश्चात्ताप करना; क्योंकि तेरे कुकर्म कल रणक्षेत्र में फलीभूत होंगे।"

रिचार्ड अब जाग पड़ा और मारे डर के कांपने लगा। अब उसे अपनी सब दुष्टतायें याद आ गईं। क्योंकि अन्त समय पापियों को अपने सब पाप याद आ जाते हैं। उसका अन्तःकरण उसे दुःख देने लगा। कुकर्मों का चित्र उसकी आंखों के सामने खिंच गया। वह कहने लगा—

"ईश्वर! ईश्वर! दया करो! मैंने कैसा भयंकर स्वप्न देखा है। कायर अन्तःकरण! तू मुझे क्यों सताता है। यहां तो और कोई नही। मैं अकेला ही हूं। फिर क्यों डर लगता है। क्या रिचार्ड अपने आपसे ही भय खाता है? क्या यहां पर कोई घातक है? नहीं! नही! अगर घातक हूं तो मैं ही। फिर क्या मैं अपने को ही मारूंगा? नही-नहीं! मुझे अपना आत्मा प्रिय है! क्यों, क्या, मैंने इसका हितकर कुछ काम किया है? नही! अब मुझे अपने आपसे घृणा है क्योंकि मैंने बड़े-बड़े पातक किये हैं। मैं बड़ा दुष्ट हूं। परन्तु मैं झूठ बोलता हूं। मै ऐसा नहीं हूं। मेरे अन्तःकरण में सहस्रों वाणियां हैं और हर एक उनमें से आ-आकर मेरे कुकर्मों की कथा सुनाती है। मेरे पाप एक-एक करके सामने आते हैं और कहते है कि मैं हत्यारा हूं। मुझे कोई प्यार नही करता और यदि मैं मर गया तो कोई मेरे लिए आसू न बहावेगा! औरों की तो बात ही क्या है मैं स्वयं अपने से घृणा करता हूं। प्रतीत होता है कि उन सब मनुष्यों के आत्मा, जिनको मैंने मरवाया था, आ-आकर मुझे धमकाते हैं और कल बदला लेंगे!"

जब वह इस प्रकार अनुपात कर रहा था, उसके एक सेनापति रैटक्लिफ़ ने आकर कहा—"स्वामिन्!"

रिचार्ड—कौन है !

रैटक्लिफ़—श्रीमन् ! मैं हूं रैटक्लिफ ! मुर्गा दो बार प्रातःकाल को प्रणाम कर चुका है और आपके साथियों ने शस्त्र धारण कर लिए है।

रिचार्ड—मैंने एक बुरा स्वप्न देखा है। क्या मेरे साथी कल मेरा साथ देंगे ?

रैट०—निस्संदेह !

रिचार्ड—मुझे भय है ! मुझे भय है !

रैट०—नहीं महाराज ! स्वप्न से क्या डरना ?

रिचार्ड—आज जितना भय स्वप्न से हुआ है उतना रिचमौण्ड के दस सहस्र शस्त्रधारियों से भी नहीं हो सकता।

उधर रिचमौण्ड को आज की रात भले प्रकार नींद आई और उसे अच्छे-अच्छे स्वप्न दिखाई दिये। उसने उठकर लोगों से कहा—

"ईश्वर हमारी सहायता करेगा और शुभ काम में सफलता होगी। सिवा रिचार्ड के और सब हमारी जय के अभिलाषी हैं। क्योंकि हमारे विपक्षीगण भले प्रकार जानते हैं कि वे एक दुष्ट के लिए लड़ रहे है, जो अवसर पाकर उन्हीं का शत्रु हो जायगा। यह वही मनुष्य है जिसने हत्या के द्वारा राज पाया है और जिसने उन्हीके सिर लिए हैं जिन्होंने उसे सहायता दी थी। यह पातकी, जिसने इंग्लैण्ड की राजगद्दी को अपवित्र किया है, सदैव ईश्वर का विरोधी रहा है। फिर यदि आप लोग ईश्वर के इस शत्रु के विरुद्ध लड़ेंगे तो ईश्वर अवश्य आपसे प्रसन्न होगा। यदि आप इस घातक के मारने का प्रयत्न करेंगे तो आपको शान्ति की नींद प्राप्त होगी। यदि आप देश-शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई करेंगे तो देश आपका कल्याण करेगा। यदि आप अपनी स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा के लिए युद्ध करेंगे तो स्त्रियां आपको साधुवाद कहेंगी। यदि आप अपने बच्चों को अत्याचाररूपी तलवार से बचावेंगे तो आपके बच्चों के बच्चे आपको असीस देंगे। इसलिए ईश्वर का नाम लेकर इन अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध कीजिए।"

अब युद्ध प्रारम्भ हुआ। रिचार्ड को जिन लोगों की सहायता की आशा थी वे सब उसके विरोधी हो गये। नार्थम्बरलैण्ड ने कहला भेजा कि मेरी सेना सुशिक्षित नहीं है, इसलिए इसका भेजना व्यर्थ है। सरे रिचार्ड

का संदेसा सुनकर हंसने लगा। स्टेनले जाकर रिचमोण्ड से मिल गया। इस प्रकार रिचार्ड के साथी बहुत कम हो गये। और जो रहे वे भी आधे मन से लड़े। परिणाम यह हुआ कि रिचार्ड मारा गया। उसकी सेना पराभूत हो गई और उसका मुकुट एक जगह झाड़ी में पड़ा पाया गया।

हेनरी रिचमोण्ड ने उसको अपने सिर पर रख लिया और सातवें हेनरी के नाम से गद्दी पर बैठा। मृत पुरुषों का यथा-योग्य मृतक-संस्कार किया गया और जो लोग रिचार्ड के साथ लड़े थे उनको क्षमा कर दिया गया।

सातवें हेनरी ने चौथे एडवर्ड की पुत्री एलीज़िबेथ से विवाह किया और इस प्रकार लंकाप्टरवंशी हेनरी के यार्क वंशी एलीज़िबेथ को विवाहने से यह दोनों वंश मिल गये और जो झगड़ा तीस वर्ष पूर्व गुलाब-युद्ध के नाम से प्रारम्भ हुआ था उसको बॉस्वर्थ की लड़ाई ने समाप्त कर दिया।

एक दिन पहले दिन से अधिक समारोह था। आज अगर फ़रांसीसी लोग स्वर्ण-वस्त्र पहने हुए अंगरेज़ों से मिलने आये तो दूसरे दिन उन्होंने इंग्लैण्ड को हिन्दुस्तान बना दिया। हर एक आदमी यह मालूम होता था कि सोने की खान है। छोटे-छोटे नौकर सुनहरी वर्दियां पहने दमकते फिरते थे। और युवतियां, जिनका परिश्रम करने का स्वभाव नहीं था, मान के बोझ से दबी जाती थीं।

बकिंघम—यह सब प्रबन्ध किसने किया था।

नारफ़ाक—यार्क के लाटपादरी ने।

बकिंघम—बुरा हो इसका! यह किसी के सुख की बात नहीं सोचता। दिन-प्रतिदिन इसका अभिमान बढ़ता जाता है और यह अपने काम के लिए दूसरों का नाश कर देता है। भला इसको क्या पड़ी थी कि इस भीड़भाड़ से फ्रान्स को जाता!

एबर्गेवनी—तीन पुरुषों को तो मैं जानता हूं कि इस यात्रा के कारण ही उनकी जायदाद नष्ट हो गई!

बकिंघम—सैकड़ों अपनी जायदादों को पीठ पर रखकर इस यात्रा को गये और उनकी दुर्गति हो गई! भला इस भीड़भाड़ से क्या परिणाम निकला?

नारफ़ाक—मुझे बड़ा शोक है कि हमारी और फ़रांसीसियों की सन्धि से इसके व्यय को देखे कुछ भी नतीजा न निकला।

बकिंघम—मुझे तो यह जान पड़ता है कि शीघ्र ही यह सन्धि टूट जायगी।

नारफ़ाक—यह तो ठीक है। देखो फ़्रान्सवालों ने हमारे व्यापारी जहाज़ों को बोर्डों में पकड़ लिया है।

एबर्गेवनी—यह तो अच्छा मेल है, क्या इसी के लिए इतना खर्च हुआ?

बकिंघम—यह सब इस वुल्ज़े की करतूत है।

नारफ़ाक—आप आज कल होशियार रहिए। क्योंकि वुल्ज़े और आप में जो विरोध हो गया है उसका परिणाम अच्छा न होगा। वुल्ज़े की शक्ति को देखते हुए असावधानी ठीक नहीं है!

थोड़े दिनों से वुल्ज़े और बकिंघम में कुछ बिगड़ गई थी। इसीलिए नारफ़ाक ने इस ओर संकेत किया था। जब ये बातें हो ही रही थीं उसी

एक क़साई का लड़का था जो अपनी विद्या तथा बुद्धि के बल से इस उच्च पद को पहुंच गया था। वुल्जे यद्यपि बड़ा विद्वान्, नीतिज्ञ और राजकाज में दक्ष था परन्तु उसकी अभिलाषायें अनन्त थीं। वह बड़े से बड़े उच्च पद को प्राप्त करना चाहता था। मंत्री होने के कारण उसे देश भर में सब से अधिक अधिकार था। राजा को छोड़कर वह सबसे ऊंचा समझा जाता था। इस पर भी उसे सन्तोष न था और प्रसिद्ध पुरुषों को वह झट से गिरा दिया करता था। २० वर्ष तक उसने राज का काम किया और मनमाना प्रबन्ध किया। राजा बिल्कुल उसके हाथ में था। छल-कपट उसका इतना बढ़ा हुआ था कि जिस प्रतिष्ठित पुरुष को न चाहता उसी से झट राजा को नाराज कर देता और उसे फांसी या कैद करा देता! इन दिनों उसकी शक्ति बहुत बढ़ रही थी और फ्रान्स से लौटकर राजा उसे और भी अधिक प्यार करने लगा था। इस समय उसे यार्क का लाट पादरी बना दिया गया और पोप[1] ने उसे अपना प्रतिनिधि भी चुन लिया था। इस प्रकार अब उसकी शक्ति कैण्टरबरी के लाटपादरी से भी अधिक बढ़ गई थी और उसे इस पर बड़ा अभिमान था।

एक समय बकिंघम, नारफ़ाक और एबर्गेवनी की लन्दन में भेंट हुई और वे आपस में फ्रांसिस और हेनरी के मिलाप के विषय में वार्त्तालाप करने लगे। बकिंघम ने कहा—

"ज्वर के कारण मैं घर में ही पड़ा रहा, जब कि कैले में उत्सव मनाया जा रहा था।"

नारफ़ाक—"मैं उस समय वहीं था और अपनी आंखों से इस महोत्सव का अवलोकन किया था। दोनों राजे घोड़ों पर सवार दोनों ओर से आये, एक ने दूसरे को प्रणाम किया। दोनों घोड़ों से उतरे और एक ने दूसरे को गले लगा लिया।"

बकिंघम—उस समय मैं ज्वर के बन्दीगृह में कैद था।

नारफ़ाक—तो तुमने इस मौसिक उत्सव का अवलोकन न किया! हर

---

१. रोमन काथलिक ईसाइयों का सबसे बड़ा धर्मराज, जो रोम में रहता है, पोप कहलाता है।

एक दिन पहले दिन से अधिक समारोह था। आज अगर फरासीसी लोग स्वर्ण-वस्त्र पहने हुए अंगरेजों से मिलने आये तो दूसरे दिन उन्होंने इग्लैण्ड को हिन्दुस्तान बना दिया। हर एक आदमी यह मालूम होता था कि सोने की खान है। छोटे-छोटे नौकर सुनहरी वर्दियां पहने दमकते फिरते थे। और युवतियां, जिनका परिश्रम करने का स्वभाव नहीं था, मान के बोझ से दबी जाती थीं।

बकिंघम—यह सब प्रबन्ध किसने किया था।

नारफ़ाक—यार्क के लाटपादरी ने।

बकिंघम—बुरा हो इसका! यह किसी के सुख की बात नहीं सोचता। दिन-प्रतिदिन इसका अभिमान बढ़ता जाता है और यह अपने काम के लिए दूसरों का नाश कर देता है। भला इसको क्या पड़ी थी कि इस भीड़भाड़ से फ्रान्स को जाता!

एबर्गेवनी—तीन पुरुषों को तो मैं जानता हूं कि इस यात्रा के कारण ही उनकी जायदाद नष्ट हो गई!

बकिंघम—सैकड़ों अपनी जायदादों को पीठ पर रखकर इस यात्रा को गये और उनकी दुर्गति हो गई! भला इस भीड़भाड़ से क्या परिणाम निकला?

नारफ़ाक—मुझे बड़ा शोक है कि हमारी और फरासीसियों की सन्धि से इसके व्यय को देखे कुछ भी नतीजा न निकला।

बकिंघम—मुझे तो यह जान पड़ता है कि शीघ्र ही यह सन्धि टूट जायगी।

नारफ़ाक—यह तो ठीक है। देखो फ्रान्सवालों ने हमारे व्यापारी जहाज़ों को बोर्डों में पकड़ लिया है।

एबर्गेवनी—यह तो अच्छा मेल है, क्या इसी के लिए इतना खर्च हुआ?

बकिंघम—यह सब इस वुल्जे की करतूत है।

नारफ़ाक—आप आज कल होशियार रहिए। क्योंकि वुल्जे और आप में जो विरोध हो गया है उसका परिणाम अच्छा न होगा। वुल्जे की शक्ति को देखते हुए असावधानी ठीक नहीं है!

थोड़े दिनों से वुल्जे और बकिंघम में कुछ बिगड़ गई थी। इसीलिए नारफ़ाक ने इस ओर संकेत किया था। जब ये बातें हो ही रही थीं उसी

समय वुल्जे वहाँ पर आ गया। उसके कटाक्षों से विदित होता था कि वह बकिंघम के विरुद्ध कोई अभियोग चलाने का उपाय सोच रहा है। वास्तव में यही हुआ। वुल्जे का तो स्वभाव ही यह था कि जिसके विरुद्ध हो जाता उसकी जड खोद के फेंक देता। अब बेचारे बकिंघम की बारी आ गई। उसके एक निकाले हुए भृत्य को रुपया देकर वुल्जे ने ऐसा सिखाया कि वह राजविद्रोह का अभियोग उसपर सिद्ध करने को राजी हो गया। उधर राजा के ऐसे कान भरे गये कि उसने वारण्ट काटकर बकिंघम और उसके सम्बन्धी एबर्गेवनी को कैद करा लिया। और जब वुल्जे और राजा इस मुकद्दमे को सुनने के लिए बैठे तो बकिंघम के नौकर ने आकर साक्षी दी कि—

"महाराज! बकिंघम रोज यह कहा करता था कि यदि राजा बिना सन्तान के मर जाय तो मैं उसकी गद्दी पर बैठूं। यह शब्द मैंने इसको अपने दामाद एबर्गेवनी से कहते हुए सुने थे। और यह कहता था कि मैं शीघ्र वुल्जे से बदला लूंगा।"

वुल्जे—देखिए महाराज! इसकी इच्छायें कैसी कुटिल हैं।

राजा—अच्छा कहो, यह अपना अधिकार राजगद्दी के लिए किस प्रकार सिद्ध करता है?

नौकर—श्रीमन्! किसी पुजारी ने उससे यह भविष्यत् वाणी कही है कि राजा सन्तानरहित मर जायगा और यदि बकिंघम को प्रजा पसन्द करे तो वह राजा हो सकता है।

राजा—अच्छा कहो।

नौकर—मैं सत्य-सत्य कहता हूं। मैंने उसे बहुत समझाया कि यह पुजारी झूठा है। आप कोई ऐसी बात न कीजिए जिससे हानि उठानी पड़े। परन्तु उसने झिड़ककर कहा 'नहीं मुझे कुछ हानि नहीं पहुंच सकती।' उसने यह भी कहा कि यदि पिछली बीमारी में राजा मर गया होता तो वुल्जे और सरलाविल के सिरों का पता भी न लगता।

राजा—ऐसी दुष्टता! और क्या?

नौकर—एक बार जब महाराज ने इसे कुछ कहा था तो यह कह रहा था कि यदि आज मुझे कैद का हुक्म होता तो मैं वह करता जो मेरे

पिताजी तीसरे रिचार्ड के साथ करना चाहते थे। अर्थात् राजा के पेट में छुरी भोंक देता।

राजा हेनरी—बड़ा हत्यारा है।

नौकर—यह कहकर उसने अपनी तलवार पर हाथ रखकर एक बड़ी शपथ खाई!

राजा ने बकिंघम पर अभियोग चलाया और उसके नौकरों की साक्षी पर उसको फांसी का आदेश दिया गया। जिस समय लोग बकिंघम को पकड़े लिये जा रहे थे और सैकड़ों आदमी मार्ग में उसके दर्शनों के लिए एकत्रित हो रहे थे, बकिंघम ने कहा—

"सज्जन पुरुषो! आप इतनी दूर से यहां मेरे ऊपर दया करने पधारे हैं तो मेरी बात सुनिए और फिर घर चले जाइए। मुझे आज राजविद्रोह के दोष में फांसी का हुक्म हुआ है। परन्तु ईश्वर जानता है कि मेरा कुछ भी अपराध नहीं है। यदि मैं सच न कहता हूं तो ईश्वर मुझे दण्ड दे। यह दोष राजनियम का नहीं है। क्योंकि न्यायालय में साक्षी के अनुसार न्याय किया गया। परन्तु मैं चाहता हूं कि साक्षी देने वालों में अधिक ईसाईपन (धर्मत्व) होता। परन्तु जो कुछ उन्होंने किया सो अच्छा किया। मैं उनको क्षमा करता हूं। परन्तु उनको चाहिए कि वे प्रतिष्ठित पुरुषों पर इस प्रकार झूठे दोष लगाने का परिश्रम न किया करें। नहीं तो ईश्वर उनको अपने किये की सज़ा देगा। मैं अपने प्राण बचाना नहीं चाहता और न राजा से क्षमा का प्रार्थी हूंगा। मेरे सच्चे मित्रो! जो मेरी मृत्यु पर रोने के लिए आये हो, कृपा करके मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए, जिससे मेरी मुक्ति हो जाय।

सर निकालस वॉक्स ने जो उसके साथ था कहा कि आप अब नौका पर सवार हूजिए, आपके उच्च पद के अनुकूल यह सज़ा दी गई है। इस पर बकिंघम ने उत्तर दिया—

"नहीं! सर निकालस रहने दीजिए। मेरा कुछ पद नहीं है। आप व्यर्थ मेरे सम्मान में क्यों कष्ट करते हो। जिस समय मैं आया था उस समय मैं सब कुछ था। अब कुछ भी नहीं! परन्तु अब भी मैं अपने शत्रुओं से उच्च हूं, क्योंकि मैंने कभी झूठ नहीं बोला। मेरी वही दशा हुई

जो मेरे पिता की हुई थी। जिस समय उन्होंने तीसरे रिचार्ड के अत्याचारों का विरोध किया और विपत्ति में पड गये तो उन्होंने अपने नौकर का आश्रय लिया। परन्तु उस दुष्ट ने उनको पकड़वा दिया। मुझे भी मेरे ही नौकरों ने पकड़वाया। परन्तु प्यारे सज्जन पुरुषो! यह बात याद रक्खो कि जो मनुष्य तुमसे प्रेम करता है उसी को राजा मरवा डालता है। अब मैं तुमसे बिछड़ता हूं। ईश्वर तुम्हें खुश रक्खे।"

बकिंघम के मरने के पीछे एक और घटना हो गई। इसकी कथा इस प्रकार है—

हम ऊपर कह चुके हैं कि हेनरी का बडा भाई आर्थर अपने पिता के सामने ही मर गया था। उसका विवाह आरागन (हस्पानिया) की राजकुमारी कैथराइन से हुआ था। आर्थर की मृत्यु पर उसकी मगनी हेनरी से हो गई। जब हेनरी राजा हुआ तो कैथराइन का नियमानुकूल विवाह भी हो गया और वह अठारह वर्ष तक महारानी रही। उसके एक बेटी भी उत्पन्न हुई, जिसका नाम राजकुमारी मेरी था।

एक दिन राजा बुल्जे के घर भोजन करने गया। वहा नगर की युवती सुन्दरियां इकट्ठी थी। उनमें से एक रूपवती का नाम ऐन बोलिन था। ऐन बोलिन महारानी कैथराइन की सहेली थी; परन्तु उसके रूप की प्रशंसा बहुत थी। हेनरी उसको देखते ही मोहित हो गया और उससे विवाह करने का विचार किया। अकस्मात् उसे ऐसा करने के लिए एक बहाना भी हाथ आ गया। ईसाइयों में यह बात धर्मविरुद्ध समझी जाती है कि विधवायें अपने मृत पति के भाई से विवाह कर सकें। इस सिद्धान्त के अनुसार कैथराइन हेनरी की धर्मपत्नी नहीं हो सकती थी। परन्तु उसके पिता सातवें हेनरी ने नीतिज्ञता के विचार से यह विवाह स्वीकार कर लिया था और इन अठारह वर्षों में किसी को यह विचार नहीं हुआ कि हेनरी का विवाह धर्मविरुद्ध हुआ है। परन्तु अब ऐन बोलिन के प्रेम में मग्न होकर राजा को धर्माधर्म का विचार हुआ और उसने कैथराइन को परित्याग करने का इरादा किया।

यह परित्याग बिना धर्मराज अर्थात् पोप की आज्ञा के असंभव था। अतएव उसने १५२७ ई० में क्लीमेण्ट सप्तम को जो उस समय पोप था एक

प्रार्थना-पत्र लिखा कि मुझे अपने धर्मविरुद्ध विवाह पर पश्चात्ताप है और मैं चाहता हूं कि नियमानुसार कैथराइन को परित्याग करूं। उसे पूर्ण आशा थी कि पोप उसकी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेगा। क्योंकि थोड़े दिनों पहले हेनरी ने मार्टिन लूथर[1] के विरुद्ध एक लेख लिखा था। जिस पर पोप लियोदशम ने उसको धर्मरक्षक की पदवी दी थी। परन्तु पोप को कैथराइन के भतीजे पांचवें चार्ल्स का भय था। क्योंकि उस समय चार्ल्स यूरोप में बड़ा बलवान् गिना जाता था और उसके अधीन हस्पानिया, आस्ट्रिया और जर्मनी आदि कई देश आ गये थे। ऐसी अवस्था में पोप स्वयं तो इस परित्याग को स्वीकृत न कर सका, लेकिन उसने कार्डीनल कम्पियस को अपना प्रतिनिधि बनाकर इंग्लैण्ड में भेजा कि इस मामले को नियमानुसार तै कर सके। ब्लैकफायर्स नामक महल में यह कार्डीनल कम्पियस और वुल्जे इस मुकद्दमे को सुनने के लिए बैठे और हेनरी और कैथराइन भी वहां पर आये। *नियमानुसार चपरासी ने न्यायालय*[2] के बाहर पुकार कर कहा—इग्लैण्ड नरेश हेनरी हाज़िर है ?

हेनरी—"हाज़िर।"

चपरासी—"इंग्लैण्ड की महारानी कैथराइन हाज़िर है ?"

कैथराइन ने कुछ उत्तर न दिया और कुर्सी से उठकर हेनरी के पैरों पर गिर पड़ी और रोकर कहने लगी—

"श्रीमन्! आप मेरे साथ न्याय कीजिए और दया कीजिए। क्योंकि मैं एक अशक्त स्त्री हूं। यहां मेरा कोई नहीं है। मेरा जन्म आपके देश में नहीं हुआ। और परदेश में मेरा कोई मित्र नहीं है। शोक है कि आप मुझ से नाराज़ हैं, न जाने क्यों? भला मैंने कौन सा ऐसा अपराध किया है कि आप मुझे त्यागना चाहते हैं। ईश्वर जानता है कि मैं सदा आपकी आज्ञा-

---

१. जर्मनी का एक पादरी था जो प्रोटेस्टेण्ट मत का संस्थापक हुआ। लूथर पोप के विरुद्ध था।

२. इंग्लैण्ड में चर्चकोर्ट (धर्मन्यायालय) अलग थे, जिनमें पुजारी लोग उन बातों का निश्चय किया करते थे जो ईसाई धर्म से सम्बन्ध रखती थीं।

जो मेरे पिता की हुई थी। जिस समय उन्होंने तीसरे रिचार्ड के अत्याचार का विरोध किया और विपत्ति मे पड गये तो उन्होंने अपने नौकर का आश्रय लिया। परन्तु उस दुष्ट ने उनको पकड़वा दिया। मुझे भी मेरे ही नौकरों ने पकड़वाया। परन्तु प्यारे सज्जन पुरुषो ! यह बात याद रक्खो कि जो मनुष्य तुमसे प्रेम करता है उसी को राजा मरवा डालता है। अब मैं तुमसे विछुड़ता हू। ईश्वर तुम्हें खुश रक्खे।"

बकिंघम के मरने के पीछे एक और घटना हो गई। इसकी कथा इस प्रकार है —

हम ऊपर कह चुके हैं कि हेनरी का बड़ा भाई आर्थर अपने पिता के सामने ही मर गया था। उसका विवाह आरागन (हस्पानिया) की राजकुमारी कैथराइन से हुआ था। आर्थर की मृत्यु पर उसकी मंगनी हेनरी से हो गई। जब हेनरी राजा हुआ तो कैथराइन का नियमानुकूल विवाह भी हो गया और वह अठारह वर्ष तक महारानी रही। उसके एक बेटी भी उत्पन्न हुई, जिसका नाम राजकुमारी मेरी था।

एक दिन राजा वुल्जे के घर भोजन करने गया। वहा नगर की युवती सुन्दरियां इकट्ठी थी। उनमें से एक रूपवती का नाम ऐन बोलिन था। ऐन बोलिन महारानी कैथराइन की सहेली थी; परन्तु उसके रूप की प्रशसा बहुत थी। हेनरी उसको देखते ही मोहित हो गया और उससे विवाह करने का विचार किया। अकस्मात् उसे ऐसा करने के लिए एक बहाना भी हाथ आ गया। ईसाइयों मे यह बात धर्मविरुद्ध समझी जाती है कि विधवायें अपने मृत पति के भाई से विवाह कर सकें। इस सिद्धान्त के अनुसार कैथराइन हेनरी की धर्मपत्नी नहीं हो सकती थी। परन्तु उसके पिता सातवें हेनरी ने नीतिज्ञता के विचार से यह विवाह स्वीकार कर लिया था और इन अठारह वर्षों में किसी को यह विचार नहीं हुआ कि हेनरी का विवाह धर्मविरुद्ध हुआ है। परन्तु अब ऐन बोलिन के प्रेम मे मग्न होकर राजा को धर्माधर्म का विचार हुआ और उसने कैथराइन को परित्याग करने का इरादा किया।

यह परित्याग बिना धर्मराज अर्थात् पोप की आज्ञा के असभव था। अतएव उसने १५२७ ई० मे क्लीमेण्ट सप्तम को जो उस समय पोप था एक

प्रार्थना-पत्र लिखा कि मुझे अपने धर्मविरुद्ध विवाह पर पश्चात्ताप है और मैं चाहता हूं कि नियमानुसार कैथराइन को परित्याग करूं। उसे पूर्ण आशा थी कि पोप उसकी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेगा। क्योंकि थोड़े दिनो पहले हेनरी ने मार्टिन लूथर[1] के विरुद्ध एक लेख लिखा था। जिस पर पोप लियोदशम ने उसको धर्मरक्षक की पदवी दी थी। परन्तु पोप को कैथराइन के भतीजे पाचवें चार्ल्स का भय था। क्योंकि उस समय चार्ल्स यूरोप मे बड़ा बलवान् गिना जाता था और उसके अधीन हस्पानिया, आस्ट्रिया और जर्मनी आदि कई देश आ गये थे। ऐसी अवस्था में पोप स्वयं तो इस परित्याग को स्वीकृत न कर सका, लेकिन उसने कार्डीनल कम्पियस को अपना प्रतिनिधि बनाकर इंग्लैण्ड में भेजा कि इस मामले को नियमानुसार तै कर सके। ब्लैकफायर्स नामक महल में यह कार्डीनल कम्पियस और वुल्जे इस मुकद्मे को सुनने के लिए बैठे और हेनरी और कैथराइन भी वहां पर आये। नियमानुसार चपरासी ने न्यायालय[2] के बाहर पुकार कर कहा—इंग्लैण्ड नरेश हेनरी हाजिर है ?

हेनरी—"हाजिर।"

चपरासी—"इंग्लैण्ड की महारानी कैथराइन हाजिर है ?"

कैथराइन ने कुछ उत्तर न दिया और कुर्सी से उठकर हेनरी के पैरों पर गिर पड़ी और रोकर कहने लगी—

"श्रीमन् ! आप मेरे साथ न्याय कीजिए और दया कीजिए। क्योंकि मैं एक अशक्त स्त्री हूं। यहां मेरा कोई नहीं है। मेरा जन्म आपके देश में नही हुआ। और परदेश मे मेरा कोई मित्र नही है। शोक है कि आप मुझ से नाराज हैं, न जाने क्यों ? भला मैंने कौन सा ऐसा अपराध किया है कि आप मुझे त्यागना चाहते हैं। ईश्वर जानता है कि मैं सदा आपकी आज्ञा-

---

१. जर्मनी का एक पादरी था जो प्रोटेस्टेण्ट मत का संस्थापक हुआ। लूथर पोप के विरुद्ध था।

२. इग्लैण्ड में चर्चकोर्ट (धर्मन्यायालय) अलग थे, जिनमें पुजारी लोग उन बातों का निश्चय किया करते थे जो ईसाई धर्म से सम्बन्ध रखती थीं।

कारिणी स्त्री रही हूं। मैंने वही किया है जो आपने चाहा है। जब आपके मुख से प्रसन्नता प्रकट हुई है मैं प्रसन्न हुई हूं। जब आप दु:खी हुए हैं मैं भी दु:खी हुई हूं। भला कब मैंने आपकी इच्छा के विरुद्ध काम किया और कब आपकी इच्छा को अपनी इच्छा नहीं माना? आपका कौन ऐसा मित्र है जिससे अपना शत्रु होते हुए भी मैंने प्रेम नहीं किया! ऐसा कौन मेरा मित्र था जिस पर आपकी दृष्टि बदली देखकर मैं नाराज नहीं हुई? श्रीमन्! याद तो कीजिए कि बीस वर्ष से अधिक मैं आपकी आज्ञा-कारिणी स्त्री रही और आपसे कई बच्चे भी उत्पन्न हुए। यदि आपके पास एक भी ऐसा प्रमाण हो जिससे मेरा असतीत्व सिद्ध होता हो तो आप अभी मुझे निकाल दीजिए और ईश्वर मेरे आत्मा को काला करे। श्रीमहाराज! आपके पिताजी बड़े बुद्धिमान् और शास्त्रज्ञ थे। और मेरे पिताजी फ़र्डीनण्ड जो हस्पानिया-नरेश थे, बहुत से राजों में बुद्धिमान् गिने जाते थे। इन दोनों ने देश-देश के धर्मात्मा विद्वानों की सभा करके यह निश्चय कराया था कि हमारा विवाह धर्मानुकूल है। फिर क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि विवाह धर्म-विरुद्ध नहीं था? इसलिए महाराजाधिराज! आप कृपा करके मुझे समय दीजिए कि मैं अपने हस्पा-निया वाले मित्रों से सम्मति मंगा लूं।

वुल्जे—श्रीमती जी! यहां देश भर के चुने-चुने विद्वान् बैठे हुए हैं जो अपने न्याय तथा सत्य के लिए प्रसिद्ध हैं। ये लोग आपके अधिकारों की रक्षा करेंगे इसलिए अब न्याय-सभा से अधिक समय मांगना व्यर्थ है।"

वुल्जे—आप सन्तोष कीजिए।

कैथरा०—उसी समय जब आप उचित व्यवहार करेंगे। इससे पूर्व संतोष करने से ईश्वर मुझे दण्ड देगा! बहुत से दृढ़ प्रमाणों से मुझे ज्ञात हो गया है कि आप मेरे शत्रु है। और इसलिए मैं कह सकती हूं कि आप मेरे न्यायाधीश नही हो सकते। आपने ही मेरे और मेरे स्वामी के बीच में आग भडका दी है। ईश्वर इसे शान्त करे। इसलिए मैं फिर कहती हूं कि मुझे आपसे घृणा है और आप मेरे *न्यायाधीश* नही हो सकते। मै आपको बड़ा बुरा शत्रु मानती हूं और आप कभी सत्य के प्रेमी नही हो सकते।

वुल्जे—आपको ऐसा कहना उचित नही है। देवीजी! आप मेरे साथ अनर्थ करती हैं। मुझे आपसे बैर नही है और न मैं आप या किसी अन्य के साथ अन्याय कर सकता हूं। जो कुछ मैंने किया है या करूंगा वह सब पोप के प्रतिनिधि की सम्मत्ति के अनुकूल करूंगा। आप मुझे इस आग के भडकाने का दोष लगाती है, परन्तु मुझे उस बात से विरोध है। राजा यहा उपस्थित है। अगर वह कह दें कि मैं झूठ कहता हूं तो मुझे दण्ड दीजिए और यदि वह जानते है कि मैं सत्य कहता हूं तो आपका कथन ठीक नही है। अब महाराज के अधीन है कि मुझे सच्चा करें या झूठा। परन्तु महाराज से प्रार्थना करने के पूर्व मेरी आपसे यह विज्ञप्ति है कि आप अपने मन से यह विचार दूर कर दीजिए।

कैथरा०—श्रीमन्! मैं एक सरल स्त्री हू और आपके कपट-छल का सामना नही कर सकती। आप अपने धर्मपद के अनुसार नम्र और मृदुभाषी हैं, परन्तु आपका आत्मा अभिमान और बैर से युक्त है। आप अपने भाग्य और श्रीमहाराज की कृपा से बहुत बढ़ गये है और अब अपने ही बढ़ाने वालों पर शासन करना चाहते है। मैं आपको अपना न्यायाधीश नहीं मानती और आप सबके सम्मुख पोप से प्रार्थना करती हूं कि वही मेरा न्याय करें।

यह कहकर राजा को प्रणाम करके उसने वहां से जाना चाहा। कम्पियस उसे बुलाता रहा। परन्तु महारानी ने किसी की बात न सुनी और

चली गई।

राजा ने कम्पियस और अन्य उपस्थित पादरियों को यह बात दिखलानी चाही कि वह अपनी स्त्री का परित्याग किसी शत्रुता या अन्य कारण से नहीं करता है किन्तु विवाह धर्मविरुद्ध होने से उसे पश्चात्ताप हुआ है। इसलिए वह कहने लगा—

"वुल्जे ने मुझे कभी परित्याग के लिए नहीं कहा ! पहले पहल यह बात मुझे उस समय सूझी जब मेरी पुत्री मेरी का विवाह ग्रौलियन्स के ड्यूक के साथ होने वाला था और वेग्रन के पादरी ने जो इस विवाह को निश्चय करने के लिए आया था यह प्रश्न उठाया कि क्या मेरी मेरी धर्म की पुत्री है; क्योंकि मैंने अपने भाई की विधवा से विवाह किया था। उसी समय से मुझे अपने अधर्म पर अनुताप होने लगा। पहले तो मैंने यही समझा कि ईश्वर मुझ से इस धर्मविरुद्ध विवाह के कारण अप्रसन्न है; क्योंकि इस रानी से मेरे जो पुत्र हुआ वह मर गया। इसलिए मैंने सोचा कि इस वंश का नाम केवल मेरे अधर्म के कारण नष्ट हुआ चाहता है। मेरे आत्मा में इस अधर्म का ऐसा पश्चात्ताप हुआ कि उसका प्रायश्चित्त करने के लिए मैंने इस गुणवती स्त्री को परित्याग करने की ठान ली, जिसके लिए आप सब यहां उपस्थित हुए हैं। मैंने हर एक पादरी की सम्मति ली। लिंकोल्न और कैण्टरबरी के लाटपादरी से पूछा। सबने शास्त्र विचार कर यही उत्तर दिया। जिसका परिणाम आज यहां पर देख रहे है।"

लिंकोल्न और कैण्टरबरी के पादरियों ने राजा की साक्षी दी। इसके पश्चात् सभा विसर्जन हुई। परन्तु हेनरी को यह बात अच्छी न लगी कि कम्पियस और वुल्जे ने मुकद्दमा इस समय नहीं किया। क्योंकि उसकी यही इच्छा थी कि जिस प्रकार होता परित्याग की जल्दी से व्यवस्था मिल जाती और वह ऐन बोलिन से विवाह कर सकता।

इसके उपरान्त हेनरी ने ऐन बोलिन से अधिक प्रेम प्रकट करना आरम्भ कर दिया। कैथराइन बिचारी लन्दन के ग्राइडवेंस नामी महल में अपने दिन काटने लगी। ऐन बोलिन को पैम्ब्रोक की मार्शनेस (रानी) की पदवी दी गई और उसके गुजारे के लिए एक सहस्र पौंड सालाना नियत कर दिये गये।

कैथराइन को अपने दुर्भाग्य पर अत्यन्त शोक था। शोक क्यों न हो? वह अब तक समस्त इंगलैण्ड की महारानी थी। आज पल भर में वह एक साधारण स्त्री हो गई। दुःख का पहाड़ उसके सिर पर आ पड़ा। वह बेचारी बड़े कष्ट से रहने लगी। एक दिन जब वह अपने महल में बैठी हुई थी और दासी काम कर रही थी तो उसने कहा—

"मेरा आत्मा शोकग्रसित हो रहा है। अरे बाजा उठा ले और गीत गाकर इन दु:खों को मेरे मन से हटा दे।"

उसी समय बुल्जे और कम्पियस वहां पर आ गये और बुल्जे ने कहा—

"श्रीमहारानी जी को शान्ति हो।"

कैथरा०—आपके यहां आने का क्या प्रयोजन है?

बुल्जे—आप अपने निज के कमरे में अकेली चलिए। वहां हम आपको अपने आने का पूरा कारण बतलायेंगे।

कैथरा०—यहीं कहो। अभी तक मैंने कोई ऐसा पातक नहीं किया है कि कोने में छिपने की आवश्यकता हो। ईश्वर करे, अन्य स्त्रियां भी अपने स्वतन्त्र आत्मा से इसी प्रकार कह सकें। श्रीमन्! मुझे इस बात की परवा नहीं है कि क्यो सब लोगों ने मेरे कामो के विषय में वाद-विवाद किया। मुझे मालूम है कि मेरा जीवन अब तक स्वच्छ रहा है और इस बात से मुझे खुशी है। यदि आपको कुछ कहना है तो स्पष्ट कहिए, क्योंकि सत्य बातें स्पष्ट ही हुआ करती हैं।"

इस पर बुल्जे ने लैटिन भाषा में रानी से कुछ कहना चाहा। क्योंकि उसका प्रयोजन यह था कि उसकी दासियां न समझ सकें। परन्तु कैथराइन ने बात काट कर कहा—

"श्रीमन्! लैटिन न बोलिए। जब से मैं इस देश में आई हूं कभी इंगलैण्ड से बाहर नहीं गई। मुझे यह भाषा भली प्रकार आती है। अन्य भाषा में कहने से मेरा झगड़ा और भी संदिग्ध हो जाता है। यहां कुछ स्त्रियां बैठी हुई हैं, ये आप के सत्य वचनों को सुनकर आप को साधुवाद देंगी।"

बुल्जे—श्रीमती जी! मुझे शोक है कि जो सेवा मैंने आपकी ओर

चली गई।

राजा ने कम्पियस और अन्य उपस्थित पादरियों को यह वा दिखलानी चाही कि वह अपनी स्त्री का परित्याग किसी शत्रुता या अ कारण से नहीं करता है किन्तु विवाह धर्मविरुद्ध होने से उसे पश्चात्त हुआ है। इसलिए वह कहने लगा—

"बुल्जे ने मुझे कभी परित्याग के लिए नहीं कहा ! पहले पहल बात मुझे उस समय सूझी जब मेरी पुत्री मेरी का विवाह औलियन्स ड्यूक के साथ होने वाला था और बेअन के पादरी ने जो इस विवाह निश्चय करने के लिए आया था यह प्रश्न उठाया कि क्या मेरी मेरी की पुत्री है; क्योंकि मैंने अपने भाई की विधवा से विवाह किया था समय से मुझे अपने अधर्म पर अनुताप होने लगा। पहले तो मैंने यही कि ईश्वर मुझ से इस धर्मविरुद्ध विवाह के कारण अप्रसन्न है; क्यों रानी से मेरे जो पुत्र हुआ वह मर गया। इसलिए मैंने सोचा कि का नाम केवल मेरे अधर्म के कारण नष्ट हुआ चाहता है। मेरे इस अधर्म का ऐसा पश्चात्ताप हुआ कि उसका प्रायश्चित्त करने मैंने इस गुणवती स्त्री को परित्याग करने की ठान ली, जिसके सब यहां उपस्थित हुए हैं। मैंने हर एक पादरी की सम्मति ली और कैण्टरबरी के लाटपादरी से पूछा। सबने शास्त्र विच उत्तर दिया। जिसका परिणाम आज यहां पर देख रहे है।"

लिंकोल्न और कैण्टरबरी के पादरियो ने राजा की सा पश्चात् सभा विसर्जन हुई। परन्तु हेनरी को यह बात अच्छ कम्पियस और बुल्जे ने मुकद्दमा इस समय नहीं किया। क्यों इच्छा थी कि जिस प्रकार होता परित्याग की जल्दी से व्यव और वह ऐन बोलिन से विवाह कर सकता।

इसके उपरान्त हेनरी ने ऐन बोलिन से अधिक आरम्भ कर दिया। कैथराइन विचारी लन्दन के आइडवे अपने दिन काटने लगी। ऐन बोलिन को पैम्ब्रोक की मार पदवी दी गई और उसके गुजारे के लिए एक सहस्र पौंड सा दिये गये।

कम्पियस—क्रोध आप को धोखा दे रहा है।

कैथरा०—आपके लिए और लज्जा है। मैंने समझा था कि आप बड़े पवित्र हैं, परन्तु आपके हृदय कैसे काले हैं। आप मुझ दुखियारी को ऐसी सम्मति देते है ! मैं नही चाहती कि ईश्वर आपको मुझ से आधा भी दुःख दे। परन्तु एक बात याद रक्खो। कही ऐसा न हो कि मेरे दुःखों का भार आपके ऊपर आ पड़े।

वुल्जे—देवी जी, मैं आपके भले की कहता हूं और आप उससे भागती है।

कैथरा०—श्रीमन् ! मैं अपने को इतनी पापिन नही बना सकती कि अपनी इच्छा से उस पदवी को त्याग सकूं जो मुझे राजा ने विवाह करके प्रदान की थी। मेरी पदवी मेरी मृत्यु पर ही छूट सकती है।

वुल्जे—रानी जी ! सुनिए।

कैथरा०—अच्छा होता कि मैं कभी इस देश मे पैर न रखती। और इस मिथ्या व्यवहार से मुझे परिचय न होता। आप लोगों के मुख देवतों के से हैं, परन्तु आपके मन की ईश्वर जानता है। हाय ! संसार में मुझ मे अधिक कौन अभागा होगा (अपनी सहेलियों से) अभागिनो ! कहो अब तुम्हारा भाग्य कहां गया ! मैं ऐसे स्थान पर विनष्ट हुई जहा कोई मेरा मित्र नही है। हाय ! कोई मुझे रोने के लिए भी नही है। आज मैं उस कमलिनी के सदृश जो एक दिन खेतों की महारानी बनी हुई थी, मुरझा जाऊंगी !

वुल्जे—अगर आप हमारा कहना मानें तो आपको अधिक शान्ति होगी। भला हम आप से क्यों शत्रुता करने लगे ? आप सोचिए तो सही ! राजे लोग नम्रता से बहुत प्रसन्न होते हैं और धृष्टता मे नाराज। मैं जानता हूं कि आप का आत्मा बड़ा नम्र है। यदि आप सोचेंगी तो ज्ञात होगा कि हम आप के कैसे सच्चे सुहृद् है।

कम्पियस—हां श्रीमती जी ! ऐसा ही है। आप व्यर्थ भय करके अपने आत्मा के साथ अनर्थ करती है। ईश्वर ने आप के शरीर में एक महान् आत्मा को प्रवेश किया है। राजा को आपमे प्रेम है। और यदि आप हम पर विश्वास करें तो हम आप के अनुकूल भरसक उद्योग करने को तैय्यार है।

श्रीमहाराज की की है और जिस सत्यता से मैं काम करना चाहता था उसको संदेह की दृष्टि से देखा गया है। हम यहां इसलिए नहीं आये कि आपके सर्वप्रिय आचरण में कुछ दोष लगावें या आपके दुःख को जो इस समय बहुत बढ रहा है अधिक करें। हमारा प्रयोजन केवल यह जानने का है कि आप अपने स्वामी की अप्रसन्नता के समय में किस प्रकार से हैं ? और आपकी क्या सम्मति है ?

कम्पियस—महारानी जी ! वुल्जे आप का सच्चा सेवक है। इसलिए यद्यपि आप ने उसको बहुत कुछ बुरा-भला कहा है, परन्तु तिस पर भी वह आप को यथोचित सम्मति देने आया है।

कैथरा०—श्रीमन् ! मैं आपकी इस कृपा का धन्यवाद देती हूं। आप धार्मिक पुरुष की भांति कह रहे है। ईश्वर करे आपका मन आप की वाणी के अनुकूल हो। परन्तु मैं नहीं समझती कि ऐसे आवश्यक समय में मैं इतनी जल्दी कैसे उत्तर दे सकती हूं। मैं तो इस समय अपनी सहेलियों के साथ काम में लगी हुई थी। मुझे क्या मालूम था कि आप जैसे प्रतिष्ठित पुरुष आ रहे है। हाय ! यहां मेरा कोई नहीं है ?

वुल्जे—देवी जी ! आप का कथन ठीक नहीं है। आप के मित्र बहुत है।

कैथरा०—इंगलैण्ड में कोई नहीं ? क्या तुम समझते हो कि कोई अंगरेज मुझे सम्मति देगा। या राजा के विरुद्ध होकर मुझ से मित्रता करेगा ? सच तो यह है कि मेरे मित्र जो मेरे भले की सोच सके यहां नहीं हैं; किन्तु यहां से दूर मेरे ही देश (हस्पानिया) में है।

कम्पियस—मेरी प्रार्थना है कि आप शोक को छोड़कर मेरा कहा मानें।

कैथरा०—क्या ?

कम्पियस—अपने को केवल राजा के आश्रय छोड़ दीजिए। क्योंकि वे बड़े दयालु हैं। इससे आपके मान में भेद न पड़ेगा। यदि न्यायालय में मुकद्दमा चला तो आप बदनाम हो जायंगी !

वुल्जे—हां यह ठीक कहते है।

कैथरा०—आप वही कहते है जो चाहते है—अर्थात् मेरा सर्वनाश। क्या यह कोई सम्मति है ? ईश्वर मेरे ऊपर है। वह ऐसा न्यायाधीश है कि उसे कोई राजा नहीं बिगाड़ सकता।

कम्पियस—क्रोध आप को धोखा दे रहा है।

कैथरा०—आपके लिए और लज्जा है। मैंने समझा था कि आप बड़े पवित्र हैं, परन्तु आपके हृदय कैसे काले है। आप मुझ दुखियारी को ऐसी सम्मति देते है ! मैं नही चाहती कि ईश्वर आपको मुझ से आधा भी दुःख दे। परन्तु एक बात याद रक्खो। कही ऐसा न हो कि मेरे दुःखों का भार आपके ऊपर आ पड़े।

वुल्जे—देवी जी, मैं आपके भले की कहता हूं और आप उससे भागती है।

कैथरा०—श्रीमन् ! मैं अपने को इतनी पापिन नही बना सकती कि अपनी इच्छा से उस पदवी को त्याग सकूं जो मुझे राजा ने विवाह करके प्रदान की थी। मेरी पदवी मेरी मृत्यु पर ही छूट सकती है।

वुल्जे—रानी जी ! सुनिए।

कैथरा०—अच्छा होता कि मैं कभी इस देश में पैर न रखती। और इस मिथ्या व्यवहार से मुझे परिचय न होता। आप लोगों के मुख देवतों के से हैं, परन्तु आपके मन की ईश्वर जानता है। हाय ! संसार में मुझ से अधिक कौन अभागा होगा (अपनी सहेलियों से) अभागिनो ! कहो अब तुम्हारा भाग्य कहा गया ! मैं ऐसे स्थान पर विनष्ट हुई जहां कोई मेरा मित्र नहीं है। हाय ! कोई मुझे रोने के लिए भी नही है। आज मैं उस कमलिनी के सदृश जो एक दिन खेतों की महारानी बनी हुई थी, मुरझा जाऊंगी !

वुल्जे—अगर आप हमारा कहना मानें तो आपको अधिक शान्ति होगी। भला हम आप से क्यों शत्रुता करने लगे ? आप सोचिए तो सही ! राजे लोग नम्रता से बहुत प्रसन्न होते हैं और धृष्टता से नाराज। मैं जानता हूं कि आप का आत्मा बड़ा नम्र है। यदि आप सोचेंगी तो ज्ञात होगा कि हम आप के कैसे सच्चे सुहृद् है।

कम्पियस—हां श्रीमती जी ! ऐसा ही है। आप व्यर्थ भय करके अपने आत्मा के साथ अनर्थ करती है। ईश्वर ने आप के शरीर मे एक महान् आत्मा को प्रवेश किया है। राजा को आपसे प्रेम है। और यदि आप हम पर विश्वास करें तो हम आप के अनुकूल भरसक उद्योग करने को तैय्यार है।

कैथरा०—जो चाहो सो करो। मुझे क्षमा करो। आप जानते हैं कि मैं एक स्त्री हूं। मुझ में ऐसा चातुर्य कहां जो आप ऐसे योग्य पुरुषों की बात का उत्तर दे सकूं। आप राजा से कह दीजिए कि अब भी मेरा मन उन्हीं के चरणकमलों में है और जब तक मैं जीवित रहूंगी उनकी भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती रहूंगी !

अब वुल्जे और कम्पियस चले गये और उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया कि कैथराइन के कथनानुसार इस झगड़े का फ़ैसला पोप ही करेगा।

जब हेनरी ने देखा कि वुल्जे और कम्पियस स्वयं उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं करते और टालमटोल कर रहे हैं तो वह बहुत क्रुद्ध हो गया और वुल्जे के ऊपर टूट पड़ा।

वुल्जे के शत्रु देश में बहुत थे। और जिस प्रकार आज तक वुल्जे दूसरे लोगों को तंग किया करता था इसी प्रकार ये लोग अपने बदले का अवसर ढूंढ़ रहे थे। नार्फ़ाक, सफ़ोक और लार्ड सरे ने सलाह की और राजा के महल में परस्पर यों बातें करने लगे—

नार्फ़ाक—यदि आप सब मिल कर इस समय वुल्जे की शिकायत करें तो उसकी एक न चलेगी। यदि इस अवसर को छोड़ दिया तो फिर आप को इस समय से भी अधिक लज्जित होना पड़ेगा !

सरे०—मैं छोटे से छोटे अवसर के लिए भी तैय्यार हूं। अपने ससुर की मृत्यु से मुझे शोक हो रहा है।

सफ़ोक—कौन ऐसा प्रतिष्ठित पुरुष है जो इस दुष्ट की घातों से बचा हो।

लार्ड चैम्बरलेन—आप व्यर्थ बातें कर रहे हैं। मुझे भय है कि हम क्या कर सकते हैं। जब तक आप वुल्जे का आना-जाना राजा तक बन्द नहीं कर सकते उस समय तक कुछ नहीं हो सकता।

नार्फ़ाक—इससे न डरिए। राजा के पास इसकी दुष्टता का काफ़ी प्रमाण है। अब वह इसकी मीठी बातों में नहीं आने का।

सरे०—मुझे यह बात सुन कर बड़ा हर्ष है।

नार्फ़ाक—सच जानो, जो कार्य्यवाही इसने कैथराइन के परित्याग के विरुद्ध

की है, उसका राजा को पता लग गया है।

सरे०—यह भेद कैसे खुला ?

सफ़ोक—अकस्मात्।

सरे०—कैसे ? कैसे ?

सफ़ोक—वुल्जे ने पोप के लिए जो पत्र भेजे थे वे राजा के हाथ लग गये। उनमें इसने लिखा था कि आप अभी परित्याग की आज्ञा न दीजिए; नहीं तो राजा ऐन वोलिन से विवाह कर लेगा।

सरे०—क्या राजा ने इस पत्र को देखा है ?

सफ़ोक—अवश्य !

चैम्बरलेन—राजा को अब इसकी करतूत मालूम हो गई है। परन्तु राजा ने पहले ही काम कर लिया अर्थात् चुपचाप ऐन वोलिन से विवाह कर लिया।

सरे०—क्या राजा इस पत्र पर कुछ न करेगा ?

नार्फ़ाक—ईश्वर ! ईश्वर ! इस समय उचित यह है कि जो कुछ कहना हो कह डालें; क्योंकि राजा वुल्जे से बड़ा अप्रसन्न हो रहा है। कम्पियस देश से बिना कहे चला गया और राजा समझता है कि यह सब वुल्जे की करतूत है।

चैम्बरलेन—ईश्वर राजा को और क्रोध दे !

नार्फ़ाक—क्या क्रेनमर लौट आया ?

सफ़ोक—हां, और उसने राजा को दूसरा विवाह करने की व्यवस्था भी दे दी। अब ऐन वोलिन नियमानुसार महारानी होगी और कैथराइन केवल आर्थर की विधवा कही जायगी।

जिस समय ये बातें हो रही थीं, वुल्जे को कुछ खबर न थी। वह यह कोशिश कर रहा था कि हेनरी का विवाह फ्रान्स-नरेश की बहन से हो। इसलिए उसने इसी की पूर्ति के लिए चालें चलनी आरम्भ कर दी थीं। परन्तु राजा ने क्रेनमर नामी एक पादरी द्वारा व्यवस्था ले ली और विवाह कर लिया !

राजा वुल्जे से नाराज़ हो गया और अकस्मात् उसे वुल्जे का एक कागज़ मिल गया जिसमें उस रुपये का सब हिसाब था जो वुल्जे ने अपने

व्यय के लिए लोगों से लिया था। राजा ने वुल्जे को बुलाया और उस पर राजविद्रोह का दोष लगाया।

वुल्जे झट समझ गया कि मेरा अन्त अब निकट आ पहुंचा। वह राजा का स्वभाव जानता था। और इसी चिन्ता में लन्दन को आते हुए लीसेस्टर में मर गया।

इस प्रकार एक ऐसे बड़े पुरुष का अधःपतन हो गया जिसकी चालें समस्त यूरोप को चला रही थीं और हेनरी तो उसकी मुट्ठी में आ गया था।

इसके पश्चात् क्रैनमर का मान बढ़ा। उसको कण्टरबरी का लाट पादरी बना दिया गया और ऐन बोलिन अब महारानी होकर राजा के साथ गद्दी पर बैठने लगी।

थोड़े दिनों पीछे लोग क्रैनमर के भी शत्रु हो गये। उस समय जर्मनी में मार्टिन लूथर ने पोप के धर्म के विरुद्ध प्रचार करना आरम्भ कर दिया था और यूरोप के बहुत से लोग उसके अनुयायी हो गये थे।

क्रैनमर की रुचि भी उसी ओर थी। इसलिए बहुत से लोगों ने उस पर अभियोग चलाया कि यह देश में अधर्म फैला रहा है। परन्तु हेनरी उसके विरुद्ध नहीं था। इसलिए यद्यपि लोग उसे कैद करना चाहते थे और जो सभा इसका निश्चय करने के लिए नियत की गई थी उसने कैद का हुक्म भी दे दिया था, तथापि हेनरी ने क्रैनमर को बचा लिया।

उन्हीं दिनों में ऐन बोलिन के एक लड़की उत्पन्न हुई, जिसका नाम एलीजिबिथ रक्खा गया। इस पर राजा को अत्यन्त हर्ष हुआ और एक महोत्सव मनाया गया। क्रैनमर ने ही उसका नामकरण किया। राजा के पूछने पर पादरी कहने लगा—

"ईश्वर की प्रेरणा से मैं कह सकता हूं कि यह राजकुमारी पालने में ही बड़ी तेजस्विनी मालूम होती है। ईश्वर ने कृपा की तो यह एक दिन सब राजों में प्रभावशालिनी होगी। संसार इसका मान करेगा। इसके राज में प्रजा शान्ति से रहेगी, देश उन्नति को प्राप्त होगा।"

राजा—आप तो बहुत कह रहे हैं।

क्रैनमर—नहीं महाराज! इससे इंग्लैण्ड भर को सुख मिलेगा। इसकी आयु

बहुत बड़ी होगी और यह कुमारी ही मरेगी।

राजा—लाट पादरी! आज आपने मेरा जीवन सफल कर दिया। इसके जन्म से पहले मुझे कभी ऐसा आनन्द नहीं हुआ। आपकी भविष्य-वाणी से मेरे मन में ऐसी उत्कण्ठा हो रही है कि स्वर्ग में पहुंच कर मैं वहां से इसके पराक्रमों का अवलोकन करूं।

वस्तुतः एलीजिबिथ ऐसी ही हुई। क्योंकि १५५८ ई० में वह इंगलैण्ड की गद्दी पर बैठी और उसके समय में राज की ऐसी उन्नति हुई जैसी कई सौ वर्ष से सुनने में नहीं आई थी। ४५ वर्ष राज करके १६०३ ई० में वह कुमारी मर गई।

व्यय के लिए लोगों से लिया था। राजा ने वुल्जे को इ
राजविद्रोह का दोष लगाया।

वुल्जे झट समझ गया कि मेरा अन्त अब निकट
राजा का स्वभाव जानता था। और इसी चिन्ता में सन्
लीसेस्टर में मर गया।

इस प्रकार एक ऐसे बड़े पुरुष का अधःपतन हो गया
समस्त यूरोप को चला रहा था और हेनरी तो उसकी मुट्
था।

इसके पश्चात् क्रेनमर का मान बढ़ा। उसको कण्टरब
पादरी बना दिया गया और ऐन बोलिन अब महारानी होकर
साथ गद्दी पर बैठने लगी।

थोड़े दिनों पीछे लोग क्रेनमर के भी शत्रु हो गये। उस समय
में मार्टिन लूथर ने पोप के धर्म के विरुद्ध प्रचार करना आरम्भ क
था और यूरोप के बहुत से लोग उसके अनुयायी हो गये थे।

क्रेनमर की रुचि भी उसी ओर थी। इसलिए बहुत से लोगों ने
पर अभियोग चलाया कि यह देश में अधर्म फैला रहा है। परन्तु हेन
उसके विरुद्ध नहीं था। इसलिए यद्यपि लोग उसे क़ैद करना चाहते
और जो सभा इसका निश्चय करने के लिए नियत की गई थी उसने क़ैद
का हुक्म भी दे दिया था, तथापि हेनरी ने क्रेनमर को बचा लिया।

उन्हीं दिनों में ऐन बोलिन के एक लड़की उत्पन्न हुई, जिसका नाम एलीजिबिथ रक्खा गया। इस पर राजा को अत्यन्त हर्ष हुआ और एक महोत्सव मनाया गया। क्रेनमर ने ही उसका नामकरण किया। राजा के पूछने पर पादरी कहने लगा—

"ईश्वर की प्रेरणा से मैं कह सकता हूं कि यह राजकुमारी पालने में ही बड़ी तेजस्विनी मालूम होती है। ईश्वर ने कृपा की तो यह एक दिन सब राजों में प्रभावशालिनी होगी। संसार इसका मान करेगा। इसके राज में प्रजा शान्ति से रहेगी, देश उन्नति को प्राप्त होगा।"

राजा—आप तो बहुत कह रहे हैं।

क्रेनमर—नहीं महाराज! इससे इंग्लैण्ड भर को सुख मिलेगा। इसकी आयु

सब लोग—कहो-कहो।

१ ला आदमी—तुम सब मरने को राजी हो, पर भूखे रहने को नहीं।

सब लोग—हां! हां!

१ ला आदमी—तुम जानते हो कि केयस मार्शस प्रजा का शत्रु है।

सब लोग—हां हम जानते है! हा हम जानते है!

१ ला आदमी—इसको मार डालो और मनमाना अन्न मिल जायगा! क्यों ठीक है न?

सब लोग—ठीक ठीक! कहो मत! कर डालो! चलो-चलो।

इस समय एक दूसरे आदमी ने उन्ही में से कहा—
"भद्र पुरुषो! एक बात सुन लो।"

१ ला आदमी—हम दरिद्र पुरुष हैं। भद्रपुरुष तो पैट्रीशियन ही है। अगर वे अपना बचा-खुचा भी हमको दे दें तो हम बच जायं। पर हमारी दरिद्रता ही उनको धनी बना रही है। जिस कारण हम दुःखी है उसी कारण वे लोग सुखी है। इसलिए अगर इन आपत्तियों मे बचना चाहते है तो हमको तलवारों का आश्रय लेना चाहिए। मै यह बात भूख से कहता हूं, क्रोध से नही!

दूसरा आदमी—क्या तुम विशेषकर केयस मार्शस के ही विरुद्ध हो?

१ ला आदमी—पहले तो उसी के! वह बड़ा सुअर है!

२ रा आदमी—तुम जानते हो कि उसने देश के लिए क्या-क्या सेवा की?

१ ला आदमी—हा! और इसलिए प्रशंसा करते है। परन्तु उसका अभिमान उसे इस प्रशंसा से वंचित कर देता है।

२ रा आदमी—पक्षपात से मत कहो!

१ ला आदमी—पक्षपात से नही! मैं सच कहता हूं कि जिसको तुम देश की सेवा कहते हो वह उसने अपनी माता को प्रसन्न करने और अभिमान करने के लिए की थी!

जिस समय केयस मार्शस के विरुद्ध ये बातें हो रही थीं उस समय एक योग्य पुरुष मिनीनियस अग्रीपा वहा पर आ गया, जिसको प्रजा भी आदर की दृष्टि से देखती थी। वहां आकर उसने कहा "देशभाइयो! इन हथियारों सहित कहां जा रहे हो?"

कोरियोलेनस

(CORIOLANUS)

ख्रीष्टीय संवत् के ५०० वर्ष पूर्व जब रोम (इटली का प्रसिद्ध नगर) के लोगों ने अपने राजवंश के अत्याचारों से तंग आकर राजों को देश से निकाल दिया और बड़ा प्रयत्न करने पर भी ये राजे अपने पूर्व स्वत्व को प्राप्त न कर सके उस समय रोम की उच्च और नीच जातियों में एक प्रकार का वैमनस्य था। उच्च जातियां भारतवर्ष की उच्च जातियों के समान नीच जातियों से घृणा करती थीं और उनकी उन्नति में बाधा डालती थीं। नीच जातियां इस घृणा से अप्रसन्न होकर उनके विरुद्ध उत्पात किया करती थीं। उच्च जातियों को पैट्रीशियन और नीच को प्लीबियन कहते थे। प्रथम राजकाज केवल पैट्रीशियन लोगों के हाथ में था, परन्तु होते-होते प्लीबियन लोगों को भी यह अधिकार मिल गया था कि अपने प्रतिनिधि चुनें और नीच जातियों में से कुछ मजिस्ट्रेट चुन लिये जाते थे, जिनका कर्त्तव्य नीच जातियों के अधिकारों का सुरक्षित रखना था।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय लड़ाई के कारण लोग अपने खेत न जोत-बो सके और इसलिए दुर्भिक्ष हो गया। अन्नाभाव के कारण नीच जातियों में आपत्ति फैल गई और वे लोग उन पैट्रीशियन लोगों को जिनके घरों में अन्न भरा हुआ था और भी अधिक शत्रु समझने लगे। बहुत से लोगों ने हथियार लेकर नगर में विद्रोह करना आरम्भ कर दिया कि बलात्कार से अन्न प्राप्त करें। वे केयस मार्शस और अन्य पैट्रीशियनों को बुरा-भला कहने लगे। इस भीड़भाड़ में से एक बोला—

"आगे फिर बढ़ना। पहले मेरी बात सुन लो।"

सब लोग—कहो-कहो।

१ ला आदमी—तुम सब मरने को राजी हो, पर भूखे रहने को नहीं।

सब लोग—हां! हां!

१ ला आदमी—तुम जानते हो कि केअस मार्शस प्रजा का शत्रु है।

सब लोग—हां हम जानते हैं! हां हम जानते हैं!

१ ला आदमी—इसको मार डालो और मनमाना अन्न मिल जायगा! क्यों ठीक है न?

सब लोग—ठीक ठीक! कहो मत! कर डालो! चलो-चलो।

इस समय एक दूसरे आदमी ने उन्हीं में से कहा—"भद्र पुरुषो! एक बात सुन लो।"

१ ला आदमी—हम दरिद्र पुरुष हैं। भद्रपुरुष तो पैट्रीशियन ही है। अगर वे अपना बचा-खुचा भी हमको दे दें तो हम बच जायं। पर हमारी दरिद्रता ही उनको धनी बना रही है। जिस कारण हम दुःखी हैं उसी कारण वे लोग सुखी हैं। इसलिए अगर इन आपत्तियों से बचना चाहते हैं तो हमको तलवारों का आश्रय लेना चाहिए। मैं यह बात भूख से कहता हूं, क्रोध से नहीं!

दूसरा आदमी—क्या तुम विशेषकर केअस मार्शस के ही विरुद्ध हो?

१ ला आदमी—पहले तो उसी के! वह बड़ा सुअर है!

२ रा आदमी—तुम जानते हो कि उसने देश के लिए क्या-क्या सेवा की?

१ ला आदमी—हां! और इसलिए प्रशंसा करते हैं। परन्तु उसका अभिमान उसे इस प्रशंसा से वंचित कर देता है।

२ रा आदमी—पक्षपात से मत कहो!

१ ला आदमी—पक्षपात से नहीं! मैं सच कहता हूं कि जिसको तुम देश की सेवा कहते हो वह उसने अपनी माता को प्रसन्न करने और अभिमान करने के लिए की थी!

जिस समय केअस मार्शस के विरुद्ध ये बातें हो रही थीं उस समय एक योग्य पुरुष मिनीनियस अग्रीपा वहां पर आ गया, जिसको प्रजा भी आदर की दृष्टि से देखती थी। वहां आकर उसने कहा "देशभाइयो! इन हथियारों सहित कहां जा रहे हो?"

१ ला आदमी—राजसभा को भी हमारे विचारों की खबर मिल गई है। और हम जो कहते हैं सो कर दिखायेंगे। वह लोग कहते हैं कि दरिद्र पुरुषों की हाय प्रबल होती है। अब उनको मालूम पड़ जायगा कि उनके बाहु भी प्रबल होते हैं।

मिनीनियस अग्रीपा—भले मित्रो, तितर-बितर हो जाओ।

१ ला आदमी—नहीं! कदापि नहीं। हम तो वैसे ही तितर-बितर हो रहे हैं।

मिनी० अग्री०—मित्रो मैं कह सकता हूं कि पैट्रीशियन लोगों को आपका बड़ा ध्यान है। दुर्भिक्ष के उत्तरदाता देवतागण हैं न कि पैट्रीशियन! इसलिए हथियारों के बजाय ईश्वर की प्रार्थना कीजिए। विपत्ति के कारण तुम्हारी मति भग हो रही है और तुम उन राज प्रबन्ध करने वालों को कोस रहे हो जिनको तुमसे पितृवत् स्नेह है।

१ ला आदमी—स्नेह? कभी नहीं! वे स्नेह करते? उनकी खत्तियां भरी हुई हैं और हम भूखों मर रहे हैं। ब्याज खाने वालों के अनुकूल नियम बन रहे हैं! प्रजा-हितैषी नियमों की रोक हो रही है! अगर हम लोग युद्ध से बच गये तो ये लोग हमको खाने के लिए तैयार हैं।

मिनी० अग्री०—या तो तुम लोग पक्षपाती और झूठे हो या मूर्ख! मैं तुमसे एक विचित्र कहानी कहना चाहता हूं!

१ ला आदमी—कहिए-कहिए! पर कहानी द्वारा हमारे दु:खों को कैसे निवृत करोगे!

मिनी० अग्री०—एक समय शरीर के अंगों में झगडा हुआ और वे सब पेट के विरुद्ध हो गये कि यह सुस्त पड़ा रहता है और अच्छे-अच्छे माल खाया करता है। हमारे साथ कुछ काम नहीं करता। हम इसके लिए देखते, सुनते, चलते फिरते, सूंघते, बोलते, पकाते और अन्य काम करते हैं। पेट ने उत्तर दिया—

१ ला आदमी—पेट ने क्या उत्तर दिया?

मिनी० अग्री०—मैं कहता हूं! उसने इन असन्तोषी अंगों को, जो पेट को उसी तरह दोष लगाते हैं जैसे तुम राजसभा को मुकसरा के यह

उत्तर दिया—"मित्रवर्ग यह सच है कि सबसे पहले उस भोजन को मैं ही लेता हूं जो आपके जीवन का आधार है। और यही बात ठीक है। क्योंकि मैं समस्त शरीर की दुकान या कोश हूं। परन्तु याद रखिए कि मैं उसे रुधिररूपी नदियों द्वारा दिल तक पहुंचाता हूं। फिर यही भोजन मस्तिष्क मे जाता है। सब नस और नाड़िया मुझी से भोजन पाती है और यदि आप सब एक साथ यह नही देख सकते कि मैं क्या करता हूं तो मुझसे हिसाब ले लीजिए कि सब तत्त्व खीचकर मैं आपको भेज देता हूं और केवल फोक मेरे पास रह जाता है।

२ रा आदमी—यह उत्तर था। भला हम पर यह कैसे सघटित होता है?

मिनी० अग्री०—रोम की राजसभा यह पेट है और तुम लोग विद्रोही अंग। विचार करो और मालूम होगा कि जो कुछ लाभ तुमको मिलते हैं सब राजसभा ही से मिलते है।

जिस समय अग्रीपा अपनी अपूर्व युक्तियों से विद्रोहियो को शान्त कर रहा था केअस मार्शस वहा पर आ गया और झड़ककर उनको कहने लगा—

"अरे दुष्टो! क्या चाहते हो? तुम्हें न तो शान्ति प्रिय है और न युद्ध। युद्ध से डरते हो, शान्ति पर अभिमान करते हो सिंहवत् लड़ने के समय स्यार बन जाते हो। मामला क्या है कि तुम नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों में इस प्रकार कोलाहल कर रहे हो।

मनी० अग्री०—इनका विचार है कि धनाढ्य पुरुषों की खत्तिया भरी हुई है इसलिए मनमाने भाव से अन्न खरीदना चाहते हैं।

के० मार्शस—चूल्हे मे जायें। घर बैठे यह समझते है कि हमको राजसभा की खबर है। अमुक पुरुष धनाढ्य है, अमुक दरिद्र है। ये कहते है कि अन्न पुष्कल है। यदि पैट्रीशियन लोग दयाभाव को उठा रक्खें और मुझे आज्ञा दें तो मैं तलवार से इन सब की सफाई कर दू।

मिनी० अग्री०—नहीं नहीं। ये लोग तो अब मान गये हैं। अन्य विद्रोहियों का क्या हुआ?

के० मार्शस—वे भी तितर-बितर हो गये। वे कह रहे थे कि हम भूखे हैं।

भूख दीवारों को तोड़ डालती है। कुत्तों को भी खाना मिलता है। अन्न ईश्वर ने केवल धनी पुरुषों के लिए ही नही दिया। जब उनके साथ कुछ रिआयत कर दी गई तो वे खुशी के मारे टोपियां उछालने लगे।

मिनी० अग्री०—क्या रिआयत ?

के० मार्शस—उनको शान्त करने के लिए पाच प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दे दिया गया। एक जूनियस् ब्रूटस है दूसरा सिसीनियस विल्टस और मैं भूल गया।

उसी समय एक दूत द्वारा ज्ञात हुआ कि वौल्सी लोग रोम पर चढ़ाई करने की तैयारियां कर रहे हैं। वोल्सिया रोम के उत्तर मे एक देश था जिसके साथ रोम वालों की सदा लड़ाई हुआ करती थी। इस समय वौल्सी लोगों में टूलस आफ़ीडियस नामी एक प्रसिद्ध सेनापति था जिसकी वीरता से रोमवासी भी भय खाते थे और केयस मार्शस के सिवा और कोई मनुष्य ऐसा नही था जो इस भयानक शत्रु का मुकाबिला कर सकता। अन्त में राजसभा ने यह निश्चय किया कि केयस मार्शस, कमीनियस और टीटस लार्शस एक बड़ी सेना लेकर शत्रु का सामना करें।

उधर वौल्सिया मे अफीडियस को रोमवालो की तैयारियों की खबर लग गई और वे और होशियार हो गये। अफीडियस सेना लेकर मुक़ाबिले को चला परन्तु अन्य वौल्सी लोग कोरियोली नामक दुर्ग की रक्षा करने मे कटिबद्ध हुए!

केयस मार्शस बड़ी प्रवीण माता का पुत्र था। उस समय रोम की स्त्रियां बड़ी निर्भय हुआ करती थी और उनके पुत्र युद्ध-सम्बन्धी साहस को अपनी माताओं की गोद मे ही प्राप्त किया करते थे, यही कारण था कि रोम में ऐसे वीर हो गये हैं। केयस मार्शस की माता वौलम्निया अपनी पतोहू वर्जीलिया के साथ घर में बैठी सी रही थी। मार्शस के युद्ध पर चले जाने के कारण वर्जीलिया को दुःखी देखकर उसने कहा "बेटी! जाओ या अन्यथा प्रसन्न हो। अगर मेरा पुत्र मेरा पति होता तो मैं उसकी ऐसी अनुपस्थिति को जिसमे उसे यश मिले ऐसी उपस्थिति से अच्छा समझती जिसमें वह मुझसे अधिक प्रेम प्रकट कर सकता। जब

यह मेरा इकलौता बेटा अभी छोटा ही था और जब कोई माता अपने पुत्र को बादशाह को देना भी स्वीकार न करती उसी समय मैंने यह समझ कर कि चित्रवत् घर में सुस्त पड़ा रहने से यशस्वी होना अच्छा है उसे युद्ध की आपत्तियों में भेज दिया था। और वहां से वह विजयी होकर आया। मैं सच कहती हूं कि ऐसी मुझे इस मनुष्य-पुत्र का पहले पहल मुख देखकर खुशी नहीं हुई जैसी यह जानकर हुई कि अब यह मनुष्य बन गया।

वर्जी०—और अगर मर जाता?

वौल०—तो उसका यश मेरा पुत्र होता। मैं सच कहती हूं कि अगर मेरे बारह पुत्र होते और सब मार्शस की भांति ही प्रिय होते तो भी मैं उनमें से ११ का युद्ध में मरना अच्छा समझती और एक का भागना पसन्द न करती!

वर्जीलिया ने वियोग से दुखित होकर कहा—

"श्रीमाता जी! मुझे एक स्थान से उठ जाने की आज्ञा दीजिए।"

वौल०—नहीं नहीं! मैं अपने मानसिक नेत्रों से तुम्हारे पति को रणक्षेत्र में लड़ता हुआ देख रही हूं। वह अपने माथे से लोहू की बूंदें पोछ रहा है।

वर्जीलिया—लोहू! हे ईश्वर!

वौल०—मूर्ख लड़की! क्षत्रिय के माथे पर खून ही शोभा देता है।

इतने में वर्जीलिया की एक सहेली वैलीरिया वहीं आ गई और कहने लगी—

"श्रीमती जी! प्रणाम!"

वौल०—बेटी जीती रहो!

वर्जी०—आपने बड़ी कृपा की।

वैलीरिया—आप दोनों कैसे हैं? क्या सी रही हैं? आपका छोटा बच्चा कैसे है?

वर्जी०—अच्छा है। ईश्वर की दया है।

वौल०—ईश्वर करे वह चटसाल में जाने के बजाय तलवार और युद्ध के बाजों में संलग्न हो।

वैलीरिया—वह तो ऐसे ही बाप का बेटा है। मैंने उसे गत बुधवार को देखा था। वह बड़ा सुन्दर और वीर प्रतीत होता था। वह एक मक्खी के पीछे दौड़ा और जब वह उसके हाथ न लगी तो उसने ऐसे दांत पीसे ऐसे दांत पीसे—

वौल०—ऐसे ही उसका बाप किया करता था।

वैली०—(वर्जीलिया से) सीना उठा रक्खो। चलो जी बहलावें।

वर्जी०—नहीं बहन! आज घर से बाहर न जाऊंगी।

वैली०—क्यों?

वौल—जाएगी!

वर्जी०—नही! देवी जी! जब तक पतिजी घर नही आते, मैं नही जा सकती।

वैली०—यह तो मूर्खता की बात है, चलो!

वर्जी०—नही! क्षमा करो।

वैली०—नही नही! चलो! मैं तुमको तुम्हारे पति का हाल सुनाऊंगी।

वर्जी०—नही देवी! अभी कुछ हाल नही मिला होगा!

वैली०—मिला है! राजसभा मे पत्र आया है। कमीनियस वौल्मी लोगों से लड रहा है टीटस लार्शस और तुम्हारे पति जी कोरियोली के पास उसको छीनने की कोशिश कर रहे है।

अब कुछ युद्ध का हाल सुनिए। केअस मार्शस और टीटस लार्शस कई दिनों तक कोरियोली को लेने का प्रयत्न करते रहे। यहां तक कि एक बार वौल्सी लोगों ने दुर्ग से निकलकर शत्रु पर छापा मारा और ऐसे लड़े कि रोम वालों के दांत खट्टे हो गये। और वे भाग निकले। मार्शस घायल हो गया। परन्तु उसने हिम्मत न हारी और फिर अपनी तितर-बितर सेना को इकट्ठा करके वौल्सी लोगों से युद्ध करने लगा।

अन्त में वौल्सी लोग पराजित हो गये और जिस समय नगरवालों ने अपने भागते हुए भाइयों को आश्रय देने के लिए फाटक खोले तो मार्शस भी उनके साथ नगर मे घुस गया और वहां ऐसी मारधाड़ मचा दी कि नगर-निवासियों के छक्के छूट गये और मार्शस और उसके आदमी लूट-मार करके बाहर निकल आये।

कमीनियस पहले वॉल्सी लोगों के सामने से अपने को निर्बल समझ कर हट गया। परन्तु फिर लार्शस और मार्शस की अफ़ीडियस से मुठभेड़ हो गई। और मार्शस बोला—

"अफ़ीडियस ! मुझे तू ऐसा बुरा लगता है कि मैं तेरे सिवा किसी से नही लड़ना चाहता।"

अफ़ीडियस—हम भी तुझसे ऐसी ही घृणा करते है।

मार्शस—जो भागे सो ही दूसरे का दास।

अफीडि०—अगर मैं भागू तो खरगोश की मौत मारना !

मार्शस—मैं अभी तीन घण्टे तक कोरियोली मे लड़ता रहा। जो रक्त तू मेरे मुह पर देखता है मेरा नही है।

जब इन दोनों मे युद्ध हुआ तो थोडी देर पीछे वॉल्सी लोग अपने सेनापति की मदद को आ गये। परन्तु मार्शस ने उन सबको भगा दिया। अन्त में कोरियोली ले लिया गया और लज्जा के मारे अफ़ीडियस ऐण्टियम मे चला गया और वही रहने लगा ! जब कमीनियस और लार्शस मार्शस के साथ अपने कम्प मे मिले तो कमीनियस बोला—

"मार्शस ! अगर मैं तुमसे तुम्हारे पराक्रमों की कथा कहूं तो शायद तुम्हें विश्वास न होगा ! परन्तु मैं इनका उस समय वर्णन करूंगा जब सीनेट के सभासद् रोम में आनन्द के आसू बहावेंगे। और जब पेट्रीशियन लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और जहां प्लीबियन लोग भी जिनको तुमसे अत्यन्त वैर है अपनी इच्छा के विरुद्ध यह कहने पर मजबूर होंगे 'परमात्मन् ! तुम धन्य हो। आज रोम में एक वीर मौजूद है !'

मार्शस—बस-बस रहने दो ! मेरी माता को अपने वंश की प्रशंसा करना बड़ा प्रिय है। परन्तु मुझे इससे दुःख होता है। जो मैंने किया है सो तुमने भी किया है। जिसने भक्तिभाव से अपने देश के लिए यथाशक्ति परिश्रम किया वही मेरे तुल्य है।

कमीनियस—अपने गुणों को छिपाना चोरी है। यहां समस्त सेना के सामने खड़े होकर जो मैं कहता हूं उसे सुनो।

मार्शस—मेरे घाव हो रहे हैं और इनमें अपनी प्रशंसा सुनकर पीड़ा हो रही है।

कमीनियस—यह तो ठीक है। अगर उनमें पीड़ा न हो तो वे कृतघ्नता देखकर निर्जीव हो जायेंगे। जो कुछ लूट का माल है उसमें से बांटने से पहले हम दशांस आपकी भेंट करते हैं। इसको स्वीकार कीजिए।

मार्शस—आपका अनुग्रह है। परन्तु मैं अपनी तलवार को रिश्वत नहीं दे सकता। मुझे यह अंगीकार नहीं है। मैं तो उतना ही लूंगा जो बांट के अनुसार हर एक को मिलेगा।

यह सुनकर समस्त सेना के मुख से 'मार्शस' 'मार्शस' के जयकारे निकलने लगे। इस पर मार्शस बोला—

"बस करो। बस करो! इन हथियारों को जिनका काम धर्मयुद्ध है झूठी और अनर्थक प्रशंसा में न लगाओ! मुझे ऐसी अत्युक्ति-सूचक प्रशंसा नहीं चाहिए। जैसे मेरे घाव लगे हैं ऐसे ही औरों को भी।"

कमीनियस—आप तो बड़े सादे हैं। आज आपको जयमाल पहनाई जायगी और मैं इस उत्सव की खुशी में अपना सजा-सजाया घोड़ा आपकी भेंट करता हूं। चूंकि आपने कोरियोली को जीता है इसलिए आज से आपका नाम केयस मार्शस कोरियोलेनस हुआ।"

कमीनियस के मुख से इस शब्द के निकलते ही फिर जयकारों के मारे आकाश गूंज उठा। लोग खुशी के मारे कूदने उछलने लगे और टोपियां सिरों के ऊपर उछलने लगीं। टीटस लार्शस ने कोरियोली के राज का प्रबन्ध किया और सन्धि के नियम निश्चित होकर नगर वौल्सी लोगों को ही लौटा दिया गया। कम्पू से रोम को विजय की सूचना भेज दी गई और यहां रोमवासी राजसभा के सभासदों से लेकर छोटे पुरुषों तक बड़ी उत्कण्ठा से विजयी कोरियोलेनस का स्वागत करने की तैयारियां करने लगे। उसकी मां वौलम्निया और धर्मपत्नी वर्जीलिया भी अपने प्यारे से भेंट करने के लिए बाहर निकलीं और मिनीनियस अग्रीपा को मार्ग में मिल कर कहने लगीं—

वौल०—भद्र मिनीनियस! मेरा लड़का आज आ रहा है!

मिनी० अग्री०—क्या मार्शस आ रहा है?

वौल०—हां! और विजय के साथ!

मिनी०—ईश्वर को धन्यवाद हो! क्या सचमुच मार्शस आ रहा है?

वोल० और वर्जा०—हां सचमुच !

वोल०—देखो यह पत्र मेरे पास आया है ! एक पत्र राजसभा में आया है ! एक उसकी स्त्री के पास ! एक शायद अभी आपके घर गया है।

मिनी०—मेरे लिए ! बड़े हर्ष की बात है। क्या उसके घाव नहीं लगे ? वह पहले तो रोम को घायल होकर आया करता था।

वर्जी०—नहीं-नहीं !

वोल०—हां लगे हैं और मुझे इस बात से हर्ष है।

मिनी०—उसे घाव ही शोभा देते हैं।

वोल०—उसे विजयी होकर रोम मे आने की वह तीसरी बारी है।

मिनी०—क्या उसने अफीडियम को मजा चखा दिया ?

वोल०—लार्शस लिखता है कि उन दोनों का परस्पर युद्ध हुआ। परन्तु अफ़ीडियम भाग गया।

मिनी०—उसके कहां घाव लगे हैं ?

वोल०—कन्धे और बायें हाथ में। जब वह राजसभा में खड़ा होगा तो बड़े अभिमान के साथ इन सब लोगों को दिखा सकेगा। टार्क्विन[1] लोगों के निकालने में उसे सात घाव लगे थे।

मिनी०—एक गर्दन में है और दो जांघ मे ! मैंने कुल नौ घाव देखे हैं।

वोल०—पहले युद्ध में उसके पच्चीस घाव लगे थे।

मिनी०—अब सत्ताईस हो गये। हर एक घाव एक-एक शत्रु की क़बर है।

जब इस प्रकार वोलम्निया अपने पुत्र के घावों का वर्णन कर रही थी और इसके वीर चरित्रों का स्मरण करके खुश हो रही थी उसी समय कोरियोलेनस यहां पर आ गया और सब ने एक स्वर से 'कोरियोलेनस' 'कोरियोलेनस' के जयकारे बोलने लगे। कमीनियस ने वोलम्निया की ओर संकेत करके कहा—

"देखिए आप की माता जी खड़ी हुई हैं।"

कोरियोलेनस ने दौड़कर उसके पैर छुए और कहने लगा—

---

१. रोम के पूर्व राजवंशी।

"माता जी ! मैं जानता हूं कि आप ने ईश्वर से मेरी विजय के लिए खूब प्रार्थना की है।"

वॉलम्नि०—उठो बेटे ! उठो ! मेरे पूत मार्शस उठो। आज तुम पराक्रमों द्वारा कोरियोलेनस हुए। देखो तुम्हारी स्त्री खड़ी है।

कोरियोलेनस ने अपनी स्त्री की आंखों में प्रेम भरे आंसू देखकर नम्रता से कहा—

"प्यारी ! मेरी विजय पर क्यों रोती हो ? क्या मेरा शव देख कर हंसती ? इस प्रकार तो कोरियोली की विधवायें रो रही है।

उसी समय एक दूत ने आकर खबर दी कि आप लोगों को दरबार में चलना चाहिए। वहां मार्शस को कौसल नियत करने की तैयारियां हो रही थी। कौसल का पद वास्तव में रोम का सबसे बड़ा अधिकार था। जिस समय से रोम से राजे लोग निकाल दिये गये उसी समय से प्रजा राज-प्रबंध के लिए एक मुख्य आदमी को चुन लेती थी जिसका नाम कौसल था। कोरियोलेनस की देशसेवा को देख कर लोगों ने अब यह सम्मान उसी को देना चाहा जिसके लिए दूत ने आकर उसे निमंत्रण दिया ! जब सब लोग राजदरबार में उपस्थित हुए तो अधिकारियों ने कौसल के निर्वाचन की यथोचित कार्य्यवाही करनी आरम्भ की और सब प्रजागण से वोट (सम्मति) ली गई। थोड़ी देर पीछे मिनीनियस ने खड़े होकर सभा में यह वक्तृता की--

"वॉल्सी लोगों के विषय में निश्चित हो गया। इसलिए अब सभा की एक कार्य्यवाही की ओर हम सबका ध्यान होना चाहिए। सभ्यगण ! इस समय कौंसल को कोरियोलेनस के पराक्रमों के विषय में संक्षेप से वर्णन कर देना चाहिए !"

सभासद—कमीनियस ! आप पूर्ण रीति से वर्णन कर दीजिए जिससे हम सब को ज्ञात हो जाय कि इस वीर पुरुष ने हमारे हित के लिए क्या किया ?

प्लीबियन लोगों के प्रतिनिधि ब्रूटस ने कहा—

"हमको भी इस बात के सुनने से हर्ष है अगर वह पहले की अपेक्षा प्रजा से अधिक प्रेम करे।"

मिनी० अग्री०—यह हो गया ! यह हो गया ! चुप रहो !
ब्रूटस—मैं मानता हूं। पर मेरा कथन आपकी धमकी से अधिक उचित था।

मिनी०—उसे प्रजा से हित है।

कोरियोलेनस इस समय सभा से उठ कर चलने लगा। इस पर एक सभासद् ने कहा—"आप जाइए न ! अपने पराक्रम सुनने में लज्जा की बात नहीं है।"

कोरियोलेनस—क्षमा कीजिए। अपने घावों की प्रशंसा सुनने से तो यह अच्छा है कि मैं जाकर फिर के लिए इनको अच्छा कर रक्खूं !
ब्रूटस—आप मेरे कहने का बुरा तो नहीं मान गये।
कोरि०—नहीं ! नहीं ! लेकिन जहां चोटों से मैं नहीं भागता वहां शब्दों को नहीं सुन सकता !

कोरियोलेनस के चले जाने पर कमीनियस ने कहा—

"मेरे पास शब्द नहीं है कि कोरियोलेनस की प्रशंसा कर सकूं। कहा जाता है कि वीरता सबसे बड़ा गुण है और वह धन्य है जिसमें यह गुण हो। अगर यह ठीक है तो जिस पुरुष के विषय में मैं कह रहा हूं उसे संसार भर में कोई नहीं जीत सकता ! १६ वर्ष हुए जब टार्क्विन ने रोम पर चढ़ाई की थी उस समय इसने सबसे बढ़कर वीरता दिखाई थी। हमारे डिक्टेटर[1] ने इसके महान युद्ध का अवलोकन किया था। स्वयं टार्किन से यह भिड़ गया और उसके घुटने को घायल कर दिया। उस दिन से १७ लड़ाइयां लड़ चुका है। कोरियोली के युद्ध का मैं पूरा वर्णन करने में अशक्त हूं। उसने भगोड़ों को रोक लिया और अपनी तलवार के नीचे समाप्त कर दिया। सिर से पैर तक लोहू में सन गया था परन्तु इसके हर एक इशारे पर सिर कट रहे थे। वह अकेला नगर के फाटक में घुस

१. रोम में आपत्ति के समय एक डिक्टेटर नियत हो जाता था जिसको बिना किसी सभा की सम्मति के सब कुछ करने का अधिकार था। डिक्टेटर उसी नियत समय के लिए होता था। इसके बाद उससे यह उपाधि ले ली जाती थी।

गया और आफ़त मचा दी। बिना किसी की सहायता के कोरियोली को ले लिया। वहां से आकर उसने युद्ध में रक्तपात करना आरम्भ किया और जब तक सबने हमारा स्वत्व नहीं माना उसके हाथ चलते ही रहे और यद्यपि उसका शरीर थकित हो रहा था परन्तु उसका साहस बढ़ता जा रहा था।"

मिनी० अ०—वीर पुरुष !

सभासद—वह हमारे सम्मान के योग्य है !

कमी०—उसने लूट का माल लेने से इनकार कर दिया। वह अपने पराक्रमों को यही पारितोषिक देना चाहता है कि वे उसके पराक्रम हैं।

मिनी० अ०—बड़ा योग्य पुरुष है।

सभासद०—कोरियोलेनस को बुलाओ।

इतने में कोरियोलेनस वहां पर आ गया और मिनीनियस ने कहा—"कोरियोलेनस ! राजसभा तुमको कौंसल बनाना चाहती है।"

कोरियो०—मेरा जीवन आपकी सेवा के लिए है।

मिनी०—अब आपको प्रजा से कहना चाहिए !

कोरियो०—मेरी प्रार्थना है कि इस नियम से मुझे क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं नंगा होकर उनको अपने घाव नहीं दिखा सकता और न उनसे अपनी वोट के लिए प्रार्थना कर सकता हूं।

सिसीनियस (प्रजा का प्रतिनिधि)—लोग अपने अधिकार को खोना नहीं चाहते।

मिनी—कोरियोलेनस ! चलो-चलो और विधिपूर्वक कार्य्य करो और अपने पूर्वजों के समान अपनी पदवी को नियमानुसार प्राप्त करो।

कोरियोलेनस—इस नाट्य के करने में मुझे लज्जा आती है।

ब्रूटस०—देखो ! देखो ! क्या कह रहा है ?

कोरियो०—घावों के चिह्नों को इन्हें दिखाओ ! क्या मैंने यह घाव इसीलिए पाये थे कि इन लोगों की प्रशंसा प्राप्त करूं !

कोरियोलेनस वास्तव में प्लीबियन लोगों को अपने से नीच समझता था और उसको यह बात कदापि प्रिय न थी कि वोट लेने के लिए

सर्वसाधारण के हाथ जोड़े या उनका मुह तके। परन्तु राजसभा उसे कौंसल बनाने पर कटिबद्ध थी इसलिए कोरियोलेनस के बदले अग्रीपा ने सब काम कर दिया और केअस मार्शस कोरियोलेनस को कौसल बना दिया गया।

यद्यपि कार्य्यवाही हो गई परन्तु प्लीबियन लोगों को कोरियोलेनस की बात अच्छी न लगी। वे जानते थे कि जब उसे अवसर मिलेगा वह इन्हें तंग करेगा। परन्तु अब क्या हो सकता था। जब तक वोट नही दिये गये थे लोगों को हर एक अधिकार था। परन्तु अब कौसल होकर यह सब अधिकार कोरियोलेनस को मिल गया और जब नागरिक लोग इस निर्वाचन पर पश्चात्ताप करने लगे तो सिसीनियस और ब्रूटस ने उनको उनकी भूल बताई। सिसीनियस ने कहा "क्या तुम इस कोरियोलेनस के स्वभाव को नही जानते थे। और अगर जानते थे तो इसे कौसल चुनने में तुमने कैसा लड़कपन किया?"

ब्रूटस—अरे हमने तो इन लोगों को समझा दिया था। पर क्या करें। उस समय ये लोग जोश में आ गये। तब तो यह अशक्त था और राज्य का एक दास था। उस समय यदि यह कह दिया जाता कि यह मनुष्य प्रजा का शत्रु है, सदा इनके विरुद्ध कहता है तो अवश्य यह कौसल न बनाया जाता। अगर समर्थ होकर वह अब भी प्लीबियन लोगों का शत्रु बना रहा तो तुम क्या कर सकते हो?

सिसीनि०—उसने तुम लोगों से वोट नही मांगी किन्तु वह चिढ़ाता रहा और तुम ऐसे मूर्ख हो गये कि बिना मांगे वोट दे बैठे।

१ नागरिक—अभी हम इनकार कर सकते हैं।

२ नाग०—मैं उसके विरुद्ध ५०० वोट इकट्ठे कर सकता हूं!

३ नाग०—मैं १०००!

ब्रूटस—अच्छा अब जल्दी करो और लोगों से कह दो कि जिसको तुमने कौसल चुना है वह तुम्हारा अहित चाह रहा है।

सिसीनि०—उनको अच्छी तरह समझा दो कि वह हमेशा प्लीबियन लोगों से घृणा करता रहा है और निर्वाचन के समय भी चिढ़ाता था। अगर कोई कहे कि पहले वोट क्यों दे दी तो कह देना कि उसके

कर मार डालें उस समय उसने लोगों को बहुत कुछ समझाया कि कोरियोलेनस की अपूर्व देशसेवा पर ध्यान रखना चाहिए और कृतघ्न नहीं होना चाहिए। परन्तु प्लीबियनों के मस्तिष्क का पारा कई दर्जे चढ़ा हुआ था, वे क्रोधानल में जल रहे थे। जो उनसे कोरियोलेनस के अनुकूल कहता था उसे वह अपना और अपने देश का बहुत बड़ा शत्रु समझते थे। इसलिए उन्होंने मिनीनियस की एक न सुनी और उसके घर की ओर चलने लगे। परन्तु अन्त में मिनीनियस ने उन सबको इस बात पर राज़ी किया कि वह स्वयं जाकर घर से कोरियोलेनस को ले आवेगा और बाज़ार में जहां पंचायत हुआ करती थी वह प्लीबियन लोगों से अपनी क्षमा का प्रार्थी होगा। उस समय यदि लोगों को उस पर दया न आवे तो नियमानुसार जो चाहें उसको दण्ड दें। परन्तु इस प्रकार हल्ला करने से परस्पर वैर की अग्नि प्रज्वलित होगी, जिससे भस्म होकर समस्त देश नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा।

लोग यह बात मान गये और बाज़ार में कोरियोलेनस की प्रतीक्षा करने लगे। उधर मिनीनियस ने कोरियोलेनस के घर जाकर उसको समझाना शुरू किया। क्योंकि अपराध उसी का था। कौंसल लोग प्रजा की वोट से बनाये जाते थे और उनका कर्त्तव्य था कि जिन्होंने उनको ऐसे पदों पर नियत किया उनके हित का ध्यान रक्खें। कोरियोलेनस स्वभावतः अभिमानी था; वह नीच लोगों से मित्रता का व्यवहार करना नहीं चाहता था। इसलिए चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह उनसे क्षमा मांगने के लिए उद्यत नहीं था। वौलम्निया भी अपने पुत्र को बहुभांति उपदेश कर रही थी कि अपने पूर्वजों की भांति उसको भी प्रजापालित राज्य से सन्तुष्ट रहना चाहिए और प्रजा के लिए अपशब्द नहीं कहने चाहिए, परन्तु कोरियोलेनस नहीं मानता था।

अन्त में जब उसकी माता ने बहुत आग्रह किया तो वह मान गया, और मिनीनियस के साथ बाज़ार को चल दिया कि लोगों से अपने किये की क्षमा मांगे। पहले उसने जाकर लोगों से नम्रता के साथ संभाषण किया और सबको आशा हो गई कि अब काम बन जायगा। परन्तु थोड़ी देर में, जिस समय वह लोगों से यह पूछ रहा था कि भला मेरा क्या अपराध

पराक्रमों को देखकर हमने समझा था कि यह हममे हित करेगा। इस—हमारे ऊपर दोष रख देना और कहना कि हमारी इच्छा वोट देने की नहीं थी किन्तु हमारे प्रतिनिधियों ने मजबूर करके हमसे वोट ले ली। उन्होंने कहा कि यह बड़ा वीर पुरुष है। लडकपन से अपने देश के हित के लिए लड़ता रहा है। यह बड़े उच्च वंश का पुरुष है और इसी आदर के योग्य है। हमारी कभी यह इच्छा नही थी कि ऐसे अभिमानी पुरुष को कौंसल बनाते जो हमारे अधिकारो को पद-दलित करता है।

इस प्रकार ब्रूटस और सिसीनियस ने लोगो को सिखला-सिखला कर राजसभा की ओर भेजा। थोडी देर मे हजारो रोमन लोग कोरियोलेनस के विरुद्ध अपनी वोट देने के लिए वहा पहुच गये। जब कोरियोलेनस ने देखा कि लोग मुझे अपने नवीन पद से अलग करना चाहते है तो वह बडा क्रुद्ध हुआ और अपने स्वभाव के अनुसार लोगो को बुरा-भला कहने लगा। इस पर प्रजा के प्रतिनिधियों और सभासदों मे झगडा हो गया और ब्रूटस और सिसीनियस ने कोरियोलेनस को पकडना चाहा। इस पर सब लोगो के दो दल हो गये। एक पेट्रीशियन लोग, जिन्होने कोरियोलेनस का साथ दिया और दूसरे प्लीबियन जो उसके विरुद्ध थे। थोडी देर तक बडी भारी लडाई हुई, परन्तु कोरियोलेनस की वीरता ने उसके विरोधियो को वहां से भगा दिया। अब कोरियोलेनस तो घर चला आया परन्तु राजमन्त्रियों को निश्चय हो गया कि रोम पर बडी भारी आपत्ति आने वाली है। क्योकि प्लीबियन लोग पेट्रीशियनो के शत्रु हो रहे थे। जिस नगर के लोग दो दलों मे विभाजित हो जाय उसमे शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है?

मिनीनियस अग्रीपा और अन्य देशहितैषियो ने शान्ति के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया और जब फिर नगरनिवासी झुण्ड के झुण्ड कोरियोलेनस की तलाश मे जा रहे थे कि उसे पकड लें और टार्पियन[1] पहाडी से ढकेल

---

१. रोम मे एक पहाड़ी है जहा से अपराधी जन गिरा कर मार डाले जाते थे।

कर मार डालें उस समय उसने लोगों को बहुत कुछ समझाया कि कोरियोलेनस की अपूर्व देशसेवा पर ध्यान रखना चाहिए और कृतघ्न नहीं होना चाहिए। परन्तु प्लीबियनों के मस्तिष्क का पारा कई दर्जे चढ़ा हुआ था, वे क्रोधानल में जल रहे थे। जो उनसे कोरियोलेनस के अनुकूल कहता था उसे वह अपना और अपने देश का बहुत बड़ा शत्रु समझते थे। इसलिए उन्होंने मिनीनियस की एक न सुनी और उसके घर की ओर चलने लगे। परन्तु अन्त में मिनीनियस ने उन सबको इस बात पर राजी किया कि वह स्वयं जाकर घर से कोरियोलेनस को ले आवेगा और बाजार में जहां पंचायत हुआ करती थी वह प्लीबियन लोगों से अपनी क्षमा का प्रार्थी होगा। उस समय यदि लोगों को उस पर दया न आवे तो नियमानुसार जो चाहें उसको दण्ड दें। परन्तु इस प्रकार हल्ला करने से परस्पर वैर की अग्नि प्रज्वलित होगी, जिसमें भस्म होकर समस्त देश नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा।

लोग यह बात मान गये और बाजार में कोरियोलेनस की प्रतीक्षा करने लगे। उधर मिनीनियस ने कोरियोलेनस के घर जाकर उसको समझाना शुरू किया। क्योंकि अपराध उसी का था। कौंसल लोग प्रजा की वोट से बनाये जाते थे और उनका कर्त्तव्य था कि जिन्होंने उनको ऐसे पदों पर नियत किया उनके हित का ध्यान रक्खें। कोरियोलेनस स्वभावतः अभिमानी था; वह नीच लोगों से मित्रता का व्यवहार करना नहीं चाहता था। इसलिए चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह उनसे क्षमा मांगने के लिए उद्यत नहीं था। वौलम्निया भी अपने पुत्र को बहुभांति उपदेश कर रही थी कि अपने पूर्वजों की भांति उसको भी प्रजापालित राज्य से संतुष्ट रहना चाहिए और प्रजा के लिए अपशब्द नहीं कहने चाहिए, परन्तु कोरियोलेनस नहीं मानता था।

अन्त में जब उसकी माता ने बहुत आग्रह किया तो वह मान गया, और मिनीनियस के साथ बाजार को चल दिया कि लोगों से अपने किये की क्षमा मांगे। पहले उसने जाकर लोगों से नम्रता के साथ भाषण किया और सबको आशा हो गई कि अब काम बन जायगा। परन्तु थोड़ी देर में, जिस समय वह लोगों से यह पूछ रहा था कि भला मेरा क्या अपराध

है जिसके कारण आपने थोड़ी ही देर में मुझे पदच्युत करने की ठान ली है, उस समय ब्रूटस बोल उठा "कि तुम देशद्रोही हो और अपनी शक्ति का अनुचित प्रयोग करना चाहते हो।"

देशद्रोही का शब्द सुनते ही कोरियोलेनस के तन में आग लग गई और वह अपनी समस्त प्रतिज्ञाओं को जो उसने अपनी माता के साथ की थीं भूल गया। वह कहने लगा—

"भाड़ में जाओ सब लोग! मैं कैसे देशद्रोही हो सकता हूं। ब्रूटस तो झूठा है। अगर तेरे हाथ में सहस्र मौतें भी हों तो भी मैं कहूंगा कि तू झूठा है। महा झूठा है।"

सिसिनियस—देखो लोगो! देखो!

सब लोग—ले चलो। इसे टार्पियन पहाड़ी को ले चलो!

सिसीनियस—देखो। देखो! अन्य अपराधों को गिनाने की क्या जरूरत है। इसने हमको और हमारे आदमियों को मारा है और राजनियम का उल्लघन किया है। इसने प्रजा के अधिकारों को पददलित किया है। दुर्भिक्ष के समय इसने अन्न बांटने के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई थी। यह विद्रोही है। यह विद्रोही है।

मिनीनियस—(कोरियोलेनस से) देखो तुमने अपनी माता से क्या प्रतिज्ञा की थी।

कोरियो०—मैं कुछ नहीं देखता। मैं कभी इन दुष्ट, कमीने और नीच लोगों के आगे सिर नहीं झुकाऊंगा।

यह सुनकर लोग और बिगड़ गये और जो कुछ शान्ति की आशा बाक़ी रही थी वह भी जाती रही। सबने मिल कर विद्रोह और प्रजा-अहित के अपराध में कोरियोलेनस को एकस्वर होकर देश से निकाल दिया। कमीनियस ने बहुत कुछ प्रार्थना की कि कोरियोलीं के युद्ध का विचार करलें और केअस मार्शस को ऐसा घोर दण्ड न दें। परन्तु किसी ने न माना। और जब कोरियोलेनस बाज़ार में घर को चला तो लोग उसको चिढ़ाते और तालियां बजाते उसके पीछे-पीछे चले गये।

देशनिकाले की खबर सुन कर कोरियोलेनस के घर में हाहाकार मच गया और उसकी माता तथा स्त्री ऊंचे स्वर से रोने-पीटने लगीं।

कोरियोलेनस ने घर से चलने की तैयारियां कर दीं और वह अपनी माता को समझाने लगा—

"रोओ मत ! लोग मेरा सामना कर रहे हैं। इस समय चला जाना ही उचित है। माता जी ! आपका पहला साहस कहां गया ? तुम तो कहा करती थीं कि आपत्ति में मनुष्य की जांच हुआ करती है। साधारण समय पर तो सभी सन्तोष किया करते हैं। जब समुद्र शांत होता है तो सभी नावें अच्छी तरह चला करती हैं। धन्य वह नाव है जो तूफान में भी न डगमगाये !"

वर्जीलिया—हाय ! ईश्वर ! हाय !

कोरियो०—प्यारी ! सन्तोष करो !

वॉल०—ईश्वर रोम को नष्ट करे।

कोरियो०—माता जी ! लोग मुझे याद करेंगे, जब मैं चला जाऊंगा। माता जी ! सन्तोष करो और उस दिन की याद करो जब तुम कहा करती थीं कि यदि मैं हरकुलीज[1] की स्त्री होती तो बारह पराक्रमों में से छः पराक्रम मैं ही कर देती और अपने पति को कष्ट न देती। अब प्यारी माता जी ! बैठिए और अपने मन को कष्ट न दीजिए। प्यारी स्त्री, बैठो ! मैं अब जाता हूं !

वॉल०—बेटे, तू देश छोड़ कर कहां जायगा ?

कमीनियस—मैं एक महीने के लिए इसके साथ जाऊंगा।

कोरियो०—नहीं ! नहीं ! आप वृद्ध हैं, मैं कुछ न कुछ प्रबन्ध कर ही लूंगा।

यह कहकर अपने मित्रों से गले मिल कर और अपनी रोती हुई माता का आशीर्वाद लेकर केअस मार्शस अपने प्यारे देश से चल दिया और एण्टियम की ओर प्रस्थान किया जहां उसका शत्रु अफ़ीडियस रहा करता था। वहां जाने से उसका यह विचार था कि अफ़ीडियस से सन्धि करके

---

१. हरकुलीज़ यूनान का एक बड़ा वीर पुरुष था जिसके विषय में कहा जाता है कि उसने बड़े-बड़े बारह पराक्रम किये थे, जिनको अन्य पुरुष नहीं कर सकते थे।

थोड़े दिन वहीं रहे और जब दोनों एक बड़ी सेना को एकत्रित कर लें तो मिल कर रोम पर चढ़ाई करें और उन कृतघ्न लोगों को जिन्होंने इस प्रकार उसका अपमान किया है दण्ड दें।

जिस समय कोरियोलेनस फटे कपड़े पहने हुए एण्टियम नगर में पहुचा और अफ़ीडियस के महल मे गया उस समय उसके घर कुछ उत्सव था और अतिथि, पाहुने प्रीति-भोजन के लिए वहां पर आये हुए थे। नौकर लोग भोजन परोसने में लगे हुए थे। एक नौकर ने इसे देख कर कहा—

"कहो कहा से आते हो? क्या द्वारपाल की आखें उसके सिर मे हैं कि यह ऐसे लोगों को भीतर घुस आने देता है। चले जाओ!"

कोरियो०—जा! जा!

नौकर—जा! अरे क्यों नही जाता!

कोरियो०—मुझे खड़ा रहने दो। मैं तुम्हारा नुकसान नही करता।

नौकर—तुम कौन हो?

कोरियो०—एक भद्र पुरुष!

नौकर—दरिद्र भद्र पुरुष!

कोरियो०—हां भाई!

नौकर—भद्र पुरुष, यहा से चले जाओ। यहा तुम्हारे लिए स्थान नही है। जल्दी जाओ।

कोरियो०—जा! जा! अपना काम कर।

नौकर—कहा रहते हो?

कोरियो०—आकाश के नीचे!

नौकर—बड़ा विचित्र आदमी है।

कोरियोलेनस—मैं तेरे स्वामी का नौकर नही हूं।

अपने स्वामी के लिए अपशब्द सुन कर नौकर ने उसे पकड़कर हटाना चाहा परन्तु कोरियोलेनस ने उसे मार कर भगा दिया! कोलाहल सुन कर अफ़ीडियस वहां आ गया और पूछने लगा—

"कहां से आता है? क्या चाहता है? क्या तेरा नाम है? क्यों नही बोलता?"

कोरियो०—टूलस! अगर तू मुझे नही पहचानता और मेरी शकल देख

कर मेरा नाम नही जानता तो मैं मजबूर होकर अपना नाम बताऊंगा।

अफी०—तेरा नाम क्या है ?

कोरि० —वह नाम जो वोल्सी लोगों को बुरा मालूम होता है और जिससे तेरे कान चौंक पड़ते हैं।

अफी०—तेरा क्या नाम है ? यद्यपि तेरे कपड़े फटे है परन्तु तू बड़ा आदमी मालूम होता है।

कोरियो०—अच्छा क्रोध करने के लिए तैयार हो, क्या तूने मुझे पहिचाना ?

अफ़ीडि०—मैंने नही पहिचाना ! नाम ?

कोरियो०—मेरा नाम केयस मार्शस है, जिसने तुझे और वोल्सी लोगो को बड़े-बड़े कष्ट दिये है और जिसके बदले मुझे कोरियोलेनस की पदवी दी गई थी। परन्तु अब केवल यह नाम ही शेष रह गया है। मेरे कृतज्ञ देशभाइयों ने मेरा सब कुछ छीन लिया और मुझे देश से निकाल दिया। अब ऐसी अवस्था मे मैं तेरे घर आया हूं। मेरी यह इच्छा नही है कि तू मेरे प्राण बचा दे। क्योंकि हम दोनों एक दूसरे के बड़े शत्रु रहे है। अगर तू चाहता है तो मेरा सिर काट ले, क्योंकि ऐसा अवसर तुझे न मिलेगा। परन्तु यदि तू रोम से लड़ना चाहता है तो मैं भी तेरी ओर से इन कृतघ्न लोगों से लड़ना चाहता हूं।

अफीडियस तो ऐसे ही अवसर की तलाश मे था कि जिससे वह अपने देश के शत्रु रोम वालों पर विजय पा सके। इसलिए उसने झट कोरियोलेनस को गले लगा लिया और वे दोनो मित्रवत् रहने लगे।

थोड़े दिनों रोम वाले बड़ी शान्ति के साथ रहे और किसी दल में किसी प्रकार का झगड़ा नही हुआ। ऐसे समय मे साधारण पुरुषों को किसी वीर की आवश्यकता ही क्या हो सकती थी। वे समझते थे कि अच्छा हुआ मार्शस कोरियोलेनस निकाल दिया गया और जो कहते थे कि उसके जाने से हानि होगी सो भी नहीं हुई क्योंकि रोम उसके बिना भी सुरक्षित है। प्रजा के प्रतिनिधि ब्रूटस और सिसीनियस उन पेट्रीशियनों को चिढ़ाने लगे जो कोरियोलेनस के मित्र समझे जाते थे और जिनका यह विचार था कि रोम की शत्रुओं से रक्षा करने के लिए उस जैसे वीर पुरुषों की

ग्रावश्यकता थी। बहुत से इनमें ऐसे थे जो फिर कोरियोलेनस के बुलाने के पक्षपाती थे। परन्तु प्लीबियन लोग उन्हें हंसी में उड़ा देते थे।

परन्तु ये सुख के दिन बहुत समय तक न रहे और कृतघ्न रोम वालों को बहुत शीघ्र मालूम हो गया कि पाप का फल मीठा नहीं होता! एक दिन ख़बर लगी कि वौल्सी लोग दो बड़ी सेनाग्रों सहित रोम पर ग्राक्रमण करना चाहते हैं। इस भयानक वार्त्ता को सुनकर सब घबरा उठे, क्योंकि इस समय रोम में कोई ऐसा वीर नहीं था कि ग्रफ़ीडियस का सामना कर सकता। इस पर जब उन्होंने सुना कि कोरियोलेनस स्वयं सेनापति होकर ग्रा रहा है तब तो इस घबराहट की कुछ सीमा ही नहीं रही ग्रौर मिनी-नियस ग्रग्रीपा कहने लगा—

"यदि वह वीर पुरुष दया न करेगा तो हम ग्रवश्य नष्ट हो जायेंगे।"

कमीनियस ने कहा—

"उससे प्रार्थना कौन करे। मजिस्ट्रेट लोग किस मुंह से कह सकते हैं। प्लीबियन लोग उसी दया के ग्रधिकारी है जिसकी भेड़िया गडरिये से ग्राशा कर सकता है। उसके मित्र भी कैसे कह सकते हैं कि 'रोम पर दया करो' क्योंकि उन्होंने भी उसके शत्रुग्रों के समान व्यवहार किया था।"

मिनी०—यह तो सच है। यदि वह दियासलाई लेकर मेरा घर जलाने लगे तो भी मुझे यह कहने का साहस नहीं हो सकता कि 'कृपया क्षमा कीजिए' (ब्रूटस से) यह तुम्हारे ही कर्मों का फल है।

कमीनियस—हां। यह तुम्हारे ही कर्म थे जिन्होंने रोम को इस घोर विपत्ति में डाल दिया!

ब्रूटस ग्रौर सिसीनियस—हमने क्या किया?

मिनी०—क्यों, क्या हमने किया है, हम तो उसे चाहते थे। हां इतना हमारा ग्रपराध है कि पशुग्रों की भांति हम तुम्हारे कहने में ग्रा गये।

जैसे-तैसे लड़ाई की तैयारियां की गईं, मगर जैसी ग्राशा थी वैसा ही परिणाम हुग्रा। तब रोमन लोग बुरी तरह पराजित हुए ग्रौर कोरियोलेनस ग्रौर ग्रफ़ीडियस ने रोम के बाहर कैम्प डालकर ग्रपनी विजय के दूसरे दिन रोम को जन बच्चे सहित जलाने का हुकम दे दिया।

ग्रब तो रोम में खलबली मच गई। हर घर में रोना-पीटना पड़ गया!

हाहाकार होने लगे। कोई उपाय बचने का न सूझा। अन्त में कमीनियस बड़ी नम्रता-पूर्वक कोरियोलेनस के पास गया और हाथ जोड, आंखों में आंसू भरकर क्षमा का प्रार्थी हुआ। परन्तु कोरियोलेनस ने उसे सूखा जवाब दे दिया। जब कमीनियस ने कहा कि आप हमारे परम मित्र थे; हम और आप साथ-साथ युद्ध में लड़ा करते थे। इस मित्रता पर ध्यान दीजिए, तब कोरियोलेनस ने उत्तर दिया—

"हम कुछ नहीं जानते। जब तक रोम का संपूर्ण नगर भस्मीभूत न हो जाय तब तक हम किसी को नहीं पहचानेंगे।" जब कमीनियस ने कहा कि "दया कीजिए। दया राजों का धर्म है" तो उसने उत्तर दिया कि "ऐसे मनुष्य से दया की प्रार्थना क्या, जिसे घृणा करके देश से निकाल दिया हो।" जब कमीनियस ने कहा कि "अपने निज मित्रों की तो रक्षा कीजिए" तो उसने उत्तर दिया कि "मैं मनों भूसी के ढेर में एक दो अन्न के दानों को उठाने का कष्ट सहन नहीं कर सकता।"

इस प्रकार कमीनियस के निराश लौट आने पर वृद्ध मिनीनियस से सब लोगों ने मिलकर प्रार्थना की कि "भगवन्, अब आप जाइए; मार्शस आपको पिता के समान समझता रहा है। वह अवश्य आप के कहने से मान जायगा।" यद्यपि मिनीनियस को कोरियोलेनस की दया पर किंचित् भी विश्वास नहीं था, यद्यपि वह देख चुका था कि कमीनियस को किस अपमान के साथ लौटना पड़ा और यद्यपि कोरियोलेनस के निश्चल विचारों को वह भली प्रकार जानता था, परन्तु सब के कहने से अन्त में उसने जाना उचित समझा।

जब मिनीनियस वौल्सियन सेना के कैम्प में घुसा तो सिपाही ने टोका —"ठहरो! कहां से आते हो?"

मिनी०—मैं रोम का सरदार हूं और कोरियोलेनस से संभाषण करना चाहता हूं।

सिपा०—चले जाओ, हमारा स्वामी रोम के किसी मनुष्य से मिलना नहीं चाहता।

मिनी०—सिपाही जी। मैं मार्शस का मित्र मिनीनियस हूं।

सिपा०—चले जाओ, नाम से भीतर जाने का अधिकार नहीं मिल सकता।

मिनी०—सुनो ! तुम्हारा स्वामी मेरा बड़ा मित्र है । जाकर कहो, वह अवश्य मुझ से भेंट करेगा ।

सि०—अगर तुम उसके मित्र होते तो तुम भी रोम से उसी के समान घृणा करते क्योंकि रोम वाले बड़े कृतघ्न हैं और अपने रक्षक को ही मारते हैं और अपनी मूर्खता से अपने शत्रुओं के हाथ में डाल दे बैठते हैं। क्या तुम समझते हो कि स्त्रियों के रोने-चिल्लाने से वह बदला लेना छोड़ देगा ? जाओ। होश की दवा करो। चलो हटो और अपने नष्ट होने की तैयारियां करो। इसने शपथ खाई है कि किसी रोमनिवासी को जीता न छोड़ूंगा।

जब ये बातें हो रही थी तो कोरियोलेनस वहां पर आ गया और उसे देखकर मिनीनियस कहने लगा—

"बेटे ! तुम हमारे लिए आग जलवा रहे हो और मैं अपने आंसुओं से इसे बुझाना चाहता हूं। मैं कभी यहां न आता परन्तु मुझे निश्चय हो गया है कि तुम मेरे सिवा किसी की न सुनोगे। ईश्वर तुम्हारे क्रोध को शान्त करे।"

कोरियो०—चलो हटो !

मिनी०—क्यों, क्यों ?

कोरियो०—मां, स्त्री, लड़का किसी को मैं नहीं जानता। इस समय मैं दूसरे का काम कर रहा हूं। वही करूंगा जो वोल्सियन लोगों के लिए हितकर होगा !

यह कहकर उसने मिनीनियस को निकाल दिया और वह बिचारा अपना सा मुंह लेकर रोम को लौट आया। अब क्या उपाय हो सकता था ? लोगों के छक्के छूट रहे थे। बच्चे आग की खबर सुनकर बिलक रहे थे। स्त्रियों की आंखों से आंसुओं की धार बह रही थी। ऐसे समय में कोरियोलेनस की माता वोलम्निया उसकी स्त्री वर्जीलिया और रोम की सब प्रतिष्ठित देवियों को लेकर अपने पुत्र के राजी करने को चल दी। इनके साथ कोरियोलेनस का पुत्र भी था।

कोरियोलेनस ने दूर से इस मण्डली को देखकर पहले ही से अपना हृदय पत्थर सा कड़ा कर लिया और निश्चय कर लिया कि चाहे जो कुछ

हो किसी की बात न मानूंगा। जब ये स्त्रियां निकट पहुंची तो वर्जीलिया ने कहा—

"मेरे स्वामिन्! मेरे पति!"

कोरियो०—ये वे आंखें नहीं हैं जो रोम में थी।

वर्जी०—हमारी दुर्दशा के कारण आपको यह विचार होता है।

कोरि०—सुस्त नाट्य-कर के समान मैं अपना पार्ट भूल गया!

इसके पश्चात् उसने अपनी रोती हुई माता के चरण छुए और विनयपूर्वक कहा कि "आप मुझे क्षमा कीजिए और मुझ से चाहे सो कहिए परन्तु रोम पर दया करने की आशा न दीजिए। क्योंकि मैंने शपथ खाई है कि जो कह चुका उसे करके रहूंगा।"

वौल०—(अपने पुत्र के पैरों पर गिर कर) ईश्वर तुझे चिरजीव करे। मैं तेरे चरणों पर गिर कर उलटी प्रार्थना करती हूं। मैंने तुझे शूरवीर बनाया था। तुझे खबर है कि हम सब तुझ से प्रार्थना करने आये हैं!

कोरियो०—शांत हो! जो मैं कह चुका सो कह चुका! मुझ से यह मत कहो कि रोम को क्षमा कर दो। या सेना को ले जाओ!

वौल०—बस! बस! तुम कह चुके कि हमारा कहना न करोगे। क्योंकि हम वही मांगती है जिसको तुम देना नहीं चाहते। इसलिए अब केवल एक प्रार्थना है। उसे सुन लो, जिससे यदि तुम इसे अस्वीकार करो तो दोष हमारा न हो किन्तु तुम्हारी कठोरता का हो।

कोरियो०—अच्छा!

वौल०—क्या हम चुप रहें और मुंह न खोलें? हमारे वस्त्र और हमारी दशा कह रही है कि जिस दिन से तू देश से गया है तब से हमारी क्या गति हुई है। अपने हृदय से पूछ कि कैसी अभागिन हम स्त्रियें तेरे पास आई हैं। तुझे देख कर हमारा हृदय खुश होता और हम आनन्द के मारे गद्गद होतीं। परन्तु आज हम डर के मारे तेरा मुंह देख-देख कर रो रही हैं। क्योंकि हम देखती हैं कि मेरा लड़का, वर्जीलिया का पति और इस लड़के का बाप अपने देश को नष्ट कर रहा है। और तू हमारी प्रार्थनाओं पर पानी फेर रहा है। हम किस प्रकार ईश्वर से तेरी रक्षा के लिए प्रार्थना करें

और अपने देश का बुरा चाहे। हम को उचित था कि अपने पुत्र की विजय पर खुशी मनाती। पर ऐसी विजय से कैसे आनन्द हो सकता है जो अपने ही देश की घातिनी हो ! क्या तू अपनी स्त्री, बच्चे और देशवासियों का रक्तपात करके अपनी विजय पर अभिमान कर सकेगा ? रही मैं। याद रख मैं उस समय तक जीती न रहूंगी जब तू उसी गर्भाशय को पददलित कर सके जिससे तूने जन्म लिया है।

वर्जी०—और न मेरे उदर को जिससे तेरा नामलेवा पुत्र उत्पन्न हुआ है।

पुत्र—और न मुझे। मैं भाग जाऊंगा। और फिर लड़ूंगा !

कोरियोलेनस पर कुछ असर होने लगा और वह इसको टालने के लिए वहां से उठ चला; परन्तु उसकी मा फिर बोली—

"जाता कहां है। बैठ, हम यह नहीं कहती कि तू हमको बचादे और वौल्सी लोगों को दण्ड दे। हम यह चाहती हैं कि दोनों में सन्धि हो जाय। यदि तूने आज अपना देश न बचाया तो भविष्यत में तेरा नाम बड़े अपमान के साथ लिया जायगा और लोग कोस-कोस कर कहा करेंगे कि 'आदमी तो बहादुर था परन्तु अन्त में देशघातक निकला।' बोल तो सही ! तूने बड़ा भारी यश प्राप्त किया और देवताओं के समान वीरता पाई। पर अब तू अपने देश को ही नष्ट करना चाहता है। (वर्जीलिया की ओर संकेत करके) बेटी तू ही कह। पर वह तेरी क्या परवा करता है। (लड़के की ओर देखकर) अरे तू ही कह ! सम्भव है कि तेरी भोली-भाली बातें इसे पसन्द आ जायं। अपनी माता का सभी कहना मानते हैं। परन्तु मैं क़ैदी की तरह रो रही हूं और यह चुपचाप खड़ा सुन रहा है। अरे यही कह दे कि मैं अनुचित कह रही हूं। हम चली जायंगी। परन्तु यदि तू यह नहीं कह सकता तो फिर अनुचित के करने में कैसी वीरता ? ईश्वर तुझे दण्ड देगा कि तू कर्त्तव्यपालन से जी चुराता है और अपनी माता की उचित आज्ञा का पालन नहीं करता। देवियो ! तुम सब इसके पैरों पड़ो और अगर अब भी यह नहीं सुनता तो चलो। हम सब अपने पड़ोसियों सहित जान देंगी। जाने दो। जान पड़ता है कि इसकी माता कोई वौल्सी स्त्री होगी। इसकी स्त्री भी कोरियोली में होगी जिसके इसी के समान कठोर

पुत्र होगा।"

अपनी पूज्य माता की ऐसी विचित्र वक्तृता सुनकर कोरियोलेनस का हृदय पिघल गया और उसकी आंखों में आंसू भर आये और वह अपनी माता के गले लग कर कहने लगा—

"मा ! मा ! तुमने क्या किया ! आकाश के द्वार खुल गये ! देखो देवता लोग इस अनहोने दृश्य पर हंसी उड़ा रहे हैं। मा ! मा ! तुमने रोम के लिए विजय पा ली। परन्तु अपने पुत्र के लिए अच्छा नहीं किया !"

यह कहकर कोरियोलेनस ने रोम को क्षमा कर दिया और वौल्सी लोगों के साथ एण्टियम को चला गया ! रोम में इन देवियों के लौट आने पर खुशी के बाजे बजाये गये। सब लोगों का नया जन्म हुआ और एक देवी ने वह काम कर दिखाया जो बड़े-बड़े वीरों से न हुआ था।

परन्तु कोरियोलेनस की इस कार्य्यवाही से वौल्सी लोग प्रसन्न न हुए। अफीडियस थोड़े दिनों से इससे डाह करने लगा था क्योंकि इसकी वीरता को देखकर वौल्सी लोग अफीडियस से अधिक इसकी प्रतिष्ठा करते थे। इसलिए जब यह एण्टियम मे पहुंचा तो इस पर विद्रोह और देश के अहित का दोष लगाया गया और जिस समय इस पर राजसभा में अभियोग चलाया जा रहा था उसी समय अफीडियस के कुछ साथियो ने तलवार से इसे मार डाला !

टीटस एण्ड्रोनीकस

(TITUS ANDRONICUS)

बहुत दिन हुए रोम में एण्ड्रोनीकस नामक एक पेट्रीशियन वंश था जिसकी वीरता और देशभक्ति जगत्प्रसिद्ध थी। ये लोग अपने राजा और देश के लिए कोई ऐसा काम न था जिसे नहीं कर सकते थे। इन्हें अपने भाई, बहन, बच्चे, यहां तक कि अपने प्राण भी इतने प्रिय नहीं थे जितना अपना देश। इस वंश के अग्रगण्य दो वीर पुरुष थे। बड़े का नाम टीटस और उसके छोटे भाई का नाम मार्कस एण्ड्रोनीकस था। टीटस ने अपने नगर की रक्षा में बड़े-बड़े पराक्रम कर दिखाये थे। कहा जाता है कि उसके २१ लड़के रोम के शत्रुओं से लड़कर मारे जा चुके थे, परन्तु वह इसको अपना बड़ा भाग्य समझता था कि उससे उत्पन्न हुए पुत्रों का इसी वीरता से अन्त हुआ।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय टीटस और उसके पुत्रों ने गाथ लोगों पर विजय पाई थी जो बहुत दिनों से रोम से शत्रुता रखते थे। और उनकी महारानी तमोरा को उसके तीन पुत्रों अलार्बस, डिमीट्रियस और चीरन सहित पकड़ कर रोम में ले आये थे। इस लड़ाई में टीटस के भी कई पुत्र मारे गये थे, जिनकी लाशें मृतक संस्कार के लिए अपने देश में लाई गई थीं।

उस समय रोम के लोगों में एक भयानक रीति यह थी कि वे अपने शत्रुओं को मार-मारकर अपने देवताओं को बलि प्रदान किया करते थे। इसलिए जिस समय इन पुत्रों के मृतक संस्कार का समय आया तो इनके भाइयों ने अपने पिता से प्रार्थना की कि हम महारानी तमोरा के सबसे बड़े पुत्र की बलि देना चाहते हैं जिससे हमारे भाइयों की आत्मा को शान्ति

हो सके; क्योंकि उन्होंने इन्ही गाथ लोगों के विरुद्ध लड़कर अपने प्राण दिये है। टीटस ने उत्तर दिया कि मैं हर्षपूर्वक तुमको आज्ञा देता हूं कि इस अभागी महारानी के सबसे बड़े पुत्र की बलि चढा दो।

विचारी तमोरा इस आज्ञा के पाते ही खडी-खडी सूख गई और आंखों में आसू भरकर कहने लगी—

"विजयी टीटस! मेरे आंसुओं पर दया करो। एक माता के आसुओं का ध्यान करो जो वह अपने प्रिय पुत्र के लिए बहा रही है। यदि कभी तुमको तुम्हारे लड़के प्यारे थे तो याद रक्खो कि उतने ही मेरे बच्चे मुझे प्यारे है। यही काफी है कि हम और हमारे बच्चे कैद होकर आपके इस विजय-उत्सव की शोभा को बढाने के लिए यहा खींच लाये गये है। अब क्या आप इन वीर पुत्रों का रोम की गलियों में वध करना चाहते हैं; जिनका अपराध केवल इतना ही है कि वे अपने देश के लिए जी तोड़ कर लडे थे। यदि अपने देश और राजा के लिए लड़ना तेरे पुत्रों के लिए यश और प्रशंसा का कारण है तो मेरे लड़कों के लिए भी होना चाहिए। एण्ड्रोनीकस! अपने वंश की समाधियों को रुधिर से अपवित्र न करो! यदि तुम देवतों के समान हुआ चाहते हो तो दया करो! क्योंकि दया ही भद्र पुरुषो का चिह्न है। वीर टीटस मेरे ज्येष्ठ पुत्र पर कृपा करो!"

टीटस ने तमोरा के विलाप की कुछ भी परवा नही की और लोग अलार्बस को पकड़कर ले गये, क्योंकि टीटस ने कहा था कि हमको धर्म-कार्य्य करना है। लाशों को समाधिस्थ करते समय बलि चाहिए और बलि के लिए अलार्बस ही सबसे उत्तम पुरुष है।

तमोरा ने रोते हुए कहा—"हाय! यह कैसा निर्दयी धर्म है?"

चीरन—सिथिया वाले भी इतने जंगली नही थे।

डिमीट्रियस—अरे कुछ परवा नही। अलार्बस के लिए यह बहुत अच्छा हुआ! अब वह शान्ति की नींद सोवेगा और हम टीटस के क्रोधानल में जला करेंगे। हे रानी! साहस करो जिन देवतों ने ट्रोय[1] की रानी को साहस दिया था वे ही तुमको भी बल देंगे।

---

१. ट्रोय की रानी का वर्णन होमर ने अपने काव्य में किया है।

टीटस के पुत्रों ने अलार्बस के टुकड़े-टुकड़े करके देवता पर चढ़ा दिये और अपने पिता को अपने कार्य्य की समाप्ति की सूचना दी !

जिस समय गाथ वालों पर रोमन लोगों ने विजय पाई उन्हीं दिनों रोम के राजा का देहान्त हो गया था और उसकी गद्दी के लिए सेटरनीनस और बैंसियेनस दोनों भाई आपस में झगड़ा कर रहे थे। टीटस के रोम में आने पर दोनों ने इसकी सहायता चाही। परन्तु टीटस सेटरनीनस को चाहता था। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जब कोई नया विजयी किसी बड़े देश पर विजय प्राप्त करके आता था तो रोमन लोग उस समय के लिए उस विजयी पर अपना सर्वस्व वार दिया करते थे, फिर चाहे थोड़े दिनों पीछे वे उसका कुछ भी क्यों न करें। इसी रीति के अनुसार लोगों ने टीटस को राजा बनाने का विचार प्रकट किया। परन्तु हम ऊपर कह चुके हैं कि टीटस राजभक्त था; वह अवसर पाकर राज छीनना नहीं चाहता था। अतएव अपने विचारानुसार उसने सर्वसाधारण में आग्रह करके सेटरनीनस को राजा बना दिया।

सेटरनीनस ने राजा होकर टीटस को कोटिशः धन्यवाद दिये और उसका मान बढ़ाने के लिए उसकी बेटी लैवीनिया से विवाह करने की इच्छा प्रकट की, जिससे टीटस की कन्या रोम की महारानी हो सके।

टीटस ने राजा की बात मान ली और अपनी कन्या देने को उद्यत हो गया। विवाह की तैयारियां होने लगीं और पुरोहित भी संस्कार के लिए आ उपस्थित हुआ। परन्तु वास्तव में लैवीनिया का बैंसियेनस से प्रेम था और उन दोनों की मंगनी भी हो चुकी थी। इसलिए यही उचित था कि लैवीनिया बैंसियेनस की स्त्री होती। यद्यपि बैंसियेनस राज्य दे देने पर राज़ी हो गया था परन्तु स्त्री भी दे देना उसे पसन्द न था। अतएव उसने टीटस के भाई मार्कस और उसके लड़कों लूशियस, क्विण्टस और मार्शस की सहायता से लैवीनिया को बीच मन्दिर से हरण कर लिया और जितनी देर में टीटस और राजा की आंख उधर को उठे थान की आन में भगा ले गया और विवाह कर लिया। टीटस को अपने वंशवालों के इस अनुचित व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया और जब वह उनका पीछा करने को चला तो उसका छोटा पुत्र म्यूशियस अपनी बहन को बचाने के लिए दौड़ा।

इस झगड़े में टीटस ने अपने इस पुत्र को मार डाला और अपने लड़कों के अत्याचार पर पश्चात्ताप करने लगा!

सेटरनीनस को स्त्री-हरण-रूपी अपमान असह्य हो गया और चूंकि वह उसी समय अपना विवाह करना चाहता था इसलिए रूपवती तमोरा से अपनी शादी कर ली। इस प्रकार अभागिनी तमोरा एक देश को छोड़ कर फिर दूसरे देश की महारानी हो गई और उसके पुत्र बिना किसी दण्ड के स्वतन्त्र कर दिये गये। परन्तु तमोरा को टीटस से वैर था, क्योंकि टीटस के द्वारा ही उसका राज्य नष्ट हुआ, उसी के द्वारा उसके पुत्र मारे गये और उसी के कारण यह सब अपमान सहना पड़ा। इसलिए रोम में शक्ति पाकर तमोरा तन-मन-धन से एण्ड्रोनीकस वंश को निर्बीज करने के उपाय सोचने लगी। हमारी शेष कहानी में केवल यही वर्णन किया जायगा कि किस प्रकार तमोरा को प्रथम अपने मनोरथ की प्राप्ति में सफलता हुई और फिर किस प्रकार उसका भी नाश हो गया।

लैवीनिया के हरण पर सेटरनीनस टीटस और उसके भाई बेटों के साथ नाराज़ हो गया। परन्तु तमोरा एक बनी हुई औरत थी। वह उसी समय से इनके नाश का उपाय सोचने लगी और चूंकि टीटस का रोम में बहुत ज़ोर था, इसलिए केवल बनावट के लिए राजा को समझाकर उस समय मेल करा दिया। राजा ने न केवल टीटस को ही क्षमा कर दिया किन्तु अपने भाई बैसियेनस और लैवीनिया तथा उसके सब भाइयों का अपराध भी क्षमा कर दिया। और एण्ड्रोनीकस वंश को राजा की ओर से जो पहले सन्देह था वह जाता रहा!

डिमीट्रियस और चीरन जो तमोरा के पुत्र थे, दोनों के दोनों लैवीनिया के रूप पर आसक्त हो गये। परन्तु लैवीनिया एक सती स्त्री थी और बैसियेनस को मारना भी सरल कार्य नहीं था। इसलिए उन्होंने एरन नामी एक हब्शी की सहायता से जो तमोरा का गुप्त प्रेमी था लैवीनिया का सतीत्व भंग करने की ठान ली।

तमोरा बड़ी दुष्टा थी, जिस समय एरन ने इस विचार को उस पर प्रकट किया तो बड़ी खुश हुई, क्योंकि उसे टीटस के वंश का अपमान होना देखकर बड़ी खुशी होती थी। थोड़े दिनों में एक दिन राजा शिकार को

गया और रोम की सब बड़ी-बड़ी स्त्रियां भी अपने पतियों के साथ गईं। मार्ग में बहुत से गुप्त स्थान थे, जहां पुरुष छिप सकते थे। पहले तो एरन और तमोरा वहां खड़े-खड़े गुप्त बातें करने लगे। फिर जिस समय बैसियेनस और लैवीनिया उसी स्थान पर होकर गुजरे तो बिना बात के तमोरा ने उनसे झगड़ा करना आरम्भ कर दिया। बात का बतगड़ हो गया और कोलाहल तक नौबत आ गई। इधर एरन ने डिमेट्रियस और चीरन को सिखाकर वहां भेज दिया। जिस समय यह युवक अपनी कुटिला माता के पास पहुंचे, तमोरा चिल्ला-चिल्लाकर सहायता के लिए पुकारने लगी। इन लोगों को तो हत्या करने की सूझ रही थी। झट अवसर पाकर बैसियेनस को मार डाला और रानी लैवीनिया को पकड़ कर ले गये। उस बिचारी ने तमोरा और इन दुष्टों से बहुत कुछ प्रार्थना की कि चाहे प्राणदण्ड दे दिया जाये परन्तु उसके सतीत्व पर आक्रमण न किया जाय! लेकिन किसी ने उसकी विनती न सुनी और एकान्त स्थान में जा उसका धर्म भ्रष्ट कर उसके दोनों हाथ और जीभ काट ली जिससे वह इस अत्याचार का हाल न कह सके और न लिख सके। इधर तो लैवीनिया की दुर्गति करके उन्होंने जंगल में छोड़ा उधर बैसियेनस की लाश को एक गहरे गड्ढे में डाल दिया और उस गड्ढे पर इस प्रकार घास बिछा दी कि जो कोई वहां पर आवे वह उसमें गिर पड़े।

एरन ने टीटस के पुत्रों—क्विण्टस और मार्शस से कहा कि अमुक गड्ढे में मैंने एक तेंदुआ सोते हुए देखा है। चलो इसे मार लाएं। जब मार्शस उस स्थान पर पहुंचा तो झट गिर पड़ा और जब उसका भाई क्विण्टस उसको निकालने के लिए झुका तो वह भी उसी गड्ढे में गिर गया। वहां जाकर उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने बैसियेनस की लाश को वहीं पड़ा हुआ देखा। वे घबराने लगे।

जिस समय क्विण्टस और मार्शस को एरन ने तेंदुये के शिकार के बहाने से इधर भेजा था उसी समय उसने रुपयों की एक थैली एक वृक्ष के नीचे गाड़ दी और मार्शस के हाथ का लिखा हुआ एक जाली पत्र बनाया, जिसमें मार्शस की ओर से किसी शिकारी के लिए लिखा गया था कि हम बैसियेनस को मार कर ला रहे हैं सो तुम अमुक वृक्ष के तले एक

गड्ढा खोद रक्खो जिससे बिना किसी के जाने हुए हम उसको दबा सकें। इसके पुरस्कार में हमने रुपयों की थैली तुम्हारे लिए उसी स्थान पर गाड दी है। यह पत्र एरन ने अपनी मनोरथसिद्धि के लिए राजा को दे दिया।

राजा यह समझा कि इन्होंने अवश्य मेरे भाई को मारने का इरादा किया है। इसलिए ज्यों ही वह शिकार से लौटा उसने क्विण्टस को गड्ढे में गिरते हुए देखा, और कहा—

"अरे तू कौन है, जो इसमें कूद रहा है ?"

मार्शस—श्रीमन् ! मैं वृद्ध एण्ड्रोनीकस का अभागा पुत्र हूं जो इस दुर्दशा से यहां गिर पड़ा हूं। यहां आपका भाई मरा पड़ा है।

सेटरनीनस—(टीटस से) दुष्ट ! देख, तेरे लडकों ने मेरे भाई को मार डाला !

यह कहकर राजा ने दोनों को पकडवा लिया और जब पत्र के अनुसार वे सब लोग वृक्ष तले गये तो वहां देखा कि रुपये गड़े हुए हैं। अब तो सबको निश्चय हो गया कि बैसियेनस के घातक यही दोनों हैं। इसलिए राजा ने उनको प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी।

यद्यपि टीटस को इस कपट की कुछ खबर नहीं थी परन्तु उसे यह बात भले प्रकार विदित थी कि मेरे पुत्र अपने बहनोई को नहीं मार सकते। इसलिए वह बहुत ही शोकातुर हुआ और रो-रोकर मजिस्ट्रेटों से प्रार्थना करने लगा कि जो सेवा मैंने अब तक अपने देश की की है उसके बदले में मेरे पुत्रों को क्षमा कर दिया जाय। परन्तु कौन उसकी सुन सकता था। क्योंकि तमोरा और एरन ने भली भांति राजा के कान भर दिये थे।

टीटस जिस समय इस प्रकार अपने पुत्रों के लिए रुदन कर रहा था उसी समय लैवीनिया भी अपने चचा मार्कस के साथ अपने पिता के पास आई। उसके मुंह से खून निकल रहा था और उसकी बांहों की जगह केवल दो ठूंठ से लगे हुए थे। वह अपने मन ही मन में अपनी दशा का विचार कर रही थी क्योंकि इसके प्रकाशित करने के समस्त साधन उससे छीन लिये गये थे। मार्कस और टीटस दोनों बड़े आश्चर्य में थे कि किस

हत्यारे ने इसके साथ यह दुष्टता की। टीटस को अपनी कन्या की दुर्गति पर अत्यन्त शोक हुआ और वह दाढ़ें मार-मार कर रोने लगा। उनका लड़का लूशियस भी छाती पीटने लगा; क्योंकि उनकी समझ न नहीं आता था कि किस मनुष्य ने यह घोर हत्या की है।

परन्तु अभी एरन और तमोरा के छल की समाप्ति नहीं हुई थी। वे टीटस के इतने ही दुःख पर सन्तुष्ट नहीं थे। इसलिए एरन ने टीटस से आकर कहा—

"हमारे राजा ने संदेसा भेजा है कि अगर तुम अपने लड़कों को बचाना चाहते हो तो तुम या मार्कस या लूशियस, कोई एक अपनी भुजा काटकर राजा के पास भेज दो। इसी को काफ़ी दण्ड समझा जायगा और मार्शस और क्विण्टस को जीवित वापिस कर दिया जाएगा।"

टीटस—भले एरन, आपने अच्छी बात सुनाई। मैं अभी अपनी भुजा काट कर राजा के पास भेजता हूं। कृपया इसके काटने में सहायता करो।

लूशियस—ठहरिए पिता जी! आपका पूज्य हाथ, जिसने अपने देश के लिए ऐसे-ऐसे काम किये हैं, कदापि नहीं भेजा जा सकता। मेरी भुजा इस समय काम दे जायगी।

मार्कस—तुम दोनों की भुजायें इस रोम के लिए बड़ी लाभदायक है। तुम दोनों ने शत्रुओं के दल में खलबली मचा दी है। इसलिए अपने भतीजों की जान बचाने के लिए मैं ही अपनी भुजा काटूंगा।

एरन—जल्दी करो, क्योंकि फांसी देने का समय निकट है।

मार्कस—मेरा हाथ जायगा।

लूशियस—नहीं जा सकता।

टीटस—क्यों लड़ते हो। यह सूखी भुजायें कटने ही योग्य हैं।

मार्कस—नहीं, मैं ही अपनी भुजायें भेजूंगा।

टीटस ने यह देखकर कि वे दोनों राजी नहीं होते उनसे कहा कि अच्छा तुम ही अपनी भुजा भेज दो और तलवार ले आओ। जिस समय लूशियस और मार्कस तलवार लेने गये, टीटस ने जल्दी से एरन द्वारा अपनी भुजा कटवा कर राजा के पास भेज दी। परन्तु वास्तव में राजा ने कोई संदेसा नहीं भेजा था, यह सब एरन की कुटिलता थी। इसलिए जब

तक भुजा राजा तक पहुची टीटस के दोनों लडको के सिर काट दिए जा चुके थे, जिनको राजा ने टीटस को दुःख देने के लिए भुजा सहित उनके पास भेज दिया।

अब तो एण्ड्रोनीकस वश का दुःख क्रोध मे बदल गया और उन्होंने दृढ़विचार किया कि जिस प्रकार हो सके सेटरनीनस से बदला लेना चाहिए। इस कामना की सिद्धि के लिए टीटस का बचा हुआ पुत्र लूशियस रोम को छोड कर भाग गया और गाथ लोगो से मिल गया जिससे वह एक दिन बहुत बडी सेना लेकर रोम पर आक्रमण कर सके और सेटरनीनस को उसकी कृतघ्नता का स्वाद चखा सके।

अब टीटस, मार्कस, लैवीनिया और लूशियस का लडका घर पर रह गये और रो-रोकर दिन काटने लगे। एक समय जब वे सब भोजन करने के लिए बैठे थे, टीटस ने कहा—

"केवल इतना खाओ जिससे हममे बदला लेने की शक्ति बनी रहे। मार्कस ! मै और तेरी भतीजी दोनो निहत्थे है। और हाथ जोडकर अपने शोक को प्रकट नही कर सकते। मेरा दाहिना हाथ रह गया है, जिससे मै अपनी छाती पीट लेता हूँ। (लैवीनिया से) बेटी, तू तो इतना भी नही कर सकती। हे दुःखियारी अपने दातो मे चाकू पकड कर अपने हृदय में छेद कर ले, जिससे आखों द्वारा धीरे-धीरे निकलने वाले आसू शीघ्रता से निकल जायें।

मार्कस—धिक् भाई, धिक् ! भला तुम उसे अपने मरने का उपाय क्यो बतलाते हो !

टीटस—हाय ! भाई क्या कहते हो। भला इसे क्या सुख है जिससे जीवन प्रिय हो सके।

लूशियस का पुत्र—(रोकर) बाबाजी ! आप बुआ को क्यो दुःख दे रहे है, कोई अच्छी बात कहिए !

मार्कस—बालक भी शोक के मारे रो रहा है।

टीटस—चुप बालक, चुप ! तू तो आसुओ का बना हुआ है और यह निकलकर तेरे जीवन को समाप्त कर देंगे।

इस समय मार्कस ने थाली पर बैठी हुई मक्खी को चाकू से मार

दिया ! इस पर टीटस कहने लगा—

"भाई, तूने बड़ा पाप किया ! निरपराधी का मारना टीटस के भाई को उचित नहीं है।"

मार्कस—मैंने केवल एक मक्खी मारी है।

टीटस—क्या इस मक्खी के मा-बाप विलाप न कर रहे होंगे ?

मार्कस—क्षमा कीजिए। इसकी शक्ल तमोरा के प्यारे हबशी की थी, इसलिए मैंने मार दिया।

टीटस—तब तो अच्छा किया !

यह कहकर वह रोने लगा। क्योंकि टीटस बहुत दिनों से पागल हो गया था और शोक के मारे उसकी मति भंग हो गई थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब लूशियस का लड़का किताबें लिये पढ रहा था लैवीनिया ने अपने हाथ के ठूठों से [1]ओविड की बनाई हुई मेटा मोरफोसिस नामी पुस्तक खोली और फ़िलोमिला की कहानी की ओर संकेत किया ! टीटस और मार्कस ने फ़िलोमिला की कथा द्वारा यह समझ लिया कि जो दशा इसकी हुई थी वही लेवीनिया की हुई होगी। क्योंकि फिलोमिला को भी जंगल में पकड़ कर उसका धर्म नष्ट किया गया था। परन्तु अब यह जानना था कि किसने ऐसा किया। मार्कस ने अपने दांतों में कलम पकड़ कर काग़ज़ पर कुछ लिखकर बतलाया कि लैवीनिया भी बिना हाथो के उस हत्यारे का नाम लिख सकती है। इस प्रकार लैवीनिया ने चीरन और डिमेट्रियस का नाम लिख दिया। इनके देखते ही टीटस की आखें लाल हो गईं और क्रोध के मारे कापने लगा। परन्तु मार्कस ने कहा कि भाई यद्यपि हमारे दुःख के कारण नगर भर मे गदर मच सकता है, क्योंकि ब्रूटस ने इसी घोर पाप के कारण एक समय राजवश को देश-बाहर कर दिया था, परन्तु इस समय यदि हम कुछ कहेंगे तो तमोरा शीघ्र ही हमारा अन्त कर देगी। इसलिए इस समय चुप ही भलो है। हम बदला लेने के दूसरे उपाय करेंगे।

थोड़े दिनों में डिमेट्रियस और चीरन की भी एरन से लड़ाई हो

---

१. इटली का एक कवि।

गई; क्योंकि दुष्ट आदमियो मे कभी नही बन सकती। इस झगड़े का कारण यह था—

हम कह चुके है कि तमोरा का एरन से गुप्त प्रेम था। वह गर्भवती थी। जिस समय उसके लडका हुआ तो वह ऐसा ही काला था जैसा हबशी ! यह देख कर तमोरा डर गई, क्योंकि सेटरनीनस उसे मरवा डालता। इस कारण उसने लडके को एरन के पास भेज दिया कि उसे मार डालो ! एरन ने इसे अपना लडका समझ कर मारना पसन्द नही किया। परन्तु चीरन और डिमेट्रियस ने अपनी माता का अपमान समझ कर यह लडका लेना चाहा। एरन की उनसे लडाई हो गई और वह वहा से लडके को लेकर भाग गया। इस समय उसने धाय को भी मार डाला जिससे कोई बालक पैदा होने की साक्षी देने को बाकी न रहे।

जब एरन भागा जा रहा था उस समय लूशियस गाथवालो की बडी भारी सेना लिये रोम पर चढ़ाई करने आ रहा था। लूशियस ने एरन को कैद कर लिया और साथ-साथ रोम को ले आया।

जिस समय टीटस ने लैवीनिया के धर्म नष्ट करने वालों का नाम सुना था वह क्रोध मे भर गया था और राजा को दण्ड देने के लिए उसने अपनी कमान से ऐसे तीर छोडे कि वह राजा के लगे। राजा को बड़ा क्रोध आया और तीरों सहित सभा में आकर रोमन लोगों को टीटस के विरुद्ध भड़काने लगा।

परन्तु उसी समय लूशियस की चढ़ाई की खबर मिली। जिसके सुनते ही राजा के घर में अशान्ति फैल गई और उसने अपना अन्त निकट समझ लिया। लेकिन तमोरा ने उसको ढारस दिया, क्योंकि उसे अब भी अपनी चालाकियो से टीटस को फुसलाने की आशा बनी हुई थी।

इस काम को पूरा करने के लिए वह अपने पुत्रों सहित टीटस के घर गई और दरवाजे पर खटखटाया। टीटस उस समय शायद अपने लड़के के लिए पत्र लिख रहा था। इसलिए उसने उत्तर दिया—

"अरे कौन है जो मुझे इस प्रकार तग कर रहा है। जो कुछ मुझे लिखना था सो मैं लिख चुका !"

तमोरा—टीटस ! मैं तुमसे बातचीत करने आई हूं।

टीटस—नहीं ! नहीं ! मैं कुछ बात नहीं कर सकता, क्योंकि उसके अनुकूल करने के लिए मेरे हाथ ही नहीं है !

तमोरा—अगर तुम मुझे पहचानते तो अवश्य बातचीत करते।

टीटस—मैं पागल नहीं हूं। मैं तुझे पहचानता हूं। महारानी तमोरा मेरा दूसरा हाथ भी लेने आई हैं।

तमोरा—अरे मैं तमोरा नहीं हूं। वह तो तेरी शत्रु है और मैं मित्र ! मैं बदला लेने वाली देवी हूं, जिसे पाताल लोक से इसलिए भेजा गया है कि तेरे वैरियों को दण्ड दिया जाय !

टीटस—ये दोनों कौन हैं ?

तमोरा—एक का नाम हत्या और दूसरे का नाम भ्रष्टता है।

टीटस—यह तो तमोरा के से पुत्र मालूम होते हैं। पर हमारी आंखें ठीक नहीं रहीं। शायद जो तुम कहती हो वही सच हो। इन हत्या और भ्रष्टता को मार क्यों न डालें।

तमोरा—नहीं। हत्या हत्यारे को मारेगी और भ्रष्टता उसका नाश करेगी जिसने किसी का सतीत्व नष्ट किया हो !

टीटस—ठीक ! अच्छा (कीरन से) तुम अपनी शक्ल के जिस मनुष्य को देखो उसे मार डालना।

कीरन—अच्छा।

टीटस—(डिमेट्रियस से) और तुम भी।

डिमेट्रियस—बहुत अच्छा।

अब तमोरा चलने लगी। परन्तु टीटस ने कहा कि इन दोनों साथियों को छोड़ जाओ, जिससे मुझे कुछ सहायता हो। मैं अभी अपने पुत्र लूशियस को बुलाता हूं और राजा को भी निमन्त्रित करूंगा। यदि तुम इनको न छोड़ोगी तो मैं अपने बेटे को न बुलाऊंगा।

तमोरा ने यह समझा कि जब लूशियस और राजा सहभोज के लिए आवेंगे तो उनमें मेल हो जायगा। इसलिए वह दोनों लड़कों को वहीं छोड़ गई। परन्तु टीटस ने उन दोनों को मार कर उनके मांस को पकवा लिया।

जब राजा और तमोरा टीटस के घर खाना खाने आये तो उससे कुछ पहले लूशियस भी वहां आ गया। उसने एरन की ओर संकेत करके अपने

चचा से कहा—

"चचाजी, आप इस हवशी को बिना भोजन दिये क़ैद रखिए। मैं रानी के आने पर इसके पापो की पोथी खोलूंगा। यह बड़ा दुष्ट है!"

थोड़ी देर बाद खाना परोसा गया और टीटस पाचक के भेस में सब प्रबन्ध करने लगा।

सेटरनीनस ने कहा "टीटस, यह भेस क्यों धरा है?"

टीटस—इसलिए कि आपको कुछ कष्ट न हो और आपके भोजनों का यथोचित प्रबन्ध हो जाय।

तमोरा—हम आपके कृतज्ञ है।

टीटस—राजन्! क्या वर्जीनियस ने अपनी पुत्री को असतीत्व से बचाने के लिए मार डालने में कुछ बुरा किया?

सेटरनी०—नही!

टीटस—क्यों!

सेटर०—इस लिए कि उसका असती होकर जीना लज्जाप्रद था!

टीटस ने "ठीक" कहकर लैवीनिया को वही पर मार डाला!

सेटरनी०—अरे दुष्ट! क्या किया!

टीटस—मार डाला। क्योकि इसके दुःख मे रोते-रोते मेरी आखे अन्धी हो गईं। मुझे भी वही दुःख है जो वर्जीनियस[1] को था। अब इसकी

---

१. वर्जीनियस रोम का एक मनुष्य था जिसकी युवती और रूपवती कन्या वर्जीनिया पर एपियस नामी एक मजिस्ट्रेट मोहित था। जब वर्जीनिया उसके हाथ न लग सकी तो उसने क्लौडियस नामी एक दूसरे मनुष्य से अपनी कचहरी मे एक अर्जी दिलवाई कि वर्जीनिया मेरे गुलाम की लड़की है और वर्जीनियस झूठ-मूठ अपनी लड़की बताता है। इस मुकद्दमे को एपियस ने क्लौडियस के अनुकूल निश्चित किया और लड़की क्लौडियस को मिल गई। जब वर्जीनियस को अपनी कन्या के सतीत्व और जीवन दोनों को बचाने का कोई उपाय न रहा तो उसने जीवन के बदले सतीत्व बचाना ही उचित समझा और उसको झट से कसाई की एक दूकान मे खींच कर चाकू से मार डाला! मारते समय उसने कहा—"प्यारी बेटी मै, इस उपाय के सिवा किसी तरह तेरा धर्म नही बचा सकता।"

समाप्ति हो गई।

सेटर०—इसका सतीत्व किसने नष्ट किया ?

टीटस—आप भोजन पाइए !

सेटर०—अपनी बेटी को क्यों मारा ?

टीटस—मैंने नहीं मारा। चीरन और डिमेट्रियस ने उसका सतीत्व नष्ट किया और जीभ और हाथ काट लिये।

सेटरनी०—अच्छा। उनको बुलाओ।

टीटस ने मांस की ओर उंगली उठाकर कहा कि "देखिए वे दोनों यहां उपस्थित हैं। इन्हीं का मांस तो आप खा रहे हैं। तमोरा ! आप उसी मांस को खा रही हैं जो आपके उदर से निकला था।"

यह कहकर टीटस ने तमोरा को मार डाला ! तमोरा को मारते देखकर सेटरनीनस ने टीटस को समाप्त कर दिया। इस पर लूशियस ने सेटरनीनस को ठण्डा कर दिया।

अब रोम वालों ने सर्वसम्मति से लूशियस को राजा बनाया, जिसने अपने पिता तथा बहन और राजा का आदरपूर्वक मृतक संस्कार किया। परन्तु तमोरा की लाश फेंक दी गई और उसका काला लड़का भी मार डाला गया ! एरन भी दुर्गति करके मारा गया। इस प्रकार तमोरा और एरन को अपने किये की सज़ा मिली और एण्ड्रोनीकस वंश को देश-सेवा के बदले राज्य मिला।

ट्रोइलस और क्रैसीडा

(TROILUS AND CRESSIDA)

एशिया कोचक के पश्चिमोत्तरी कोने मे पुराने समय में ट्रोय (Troy) नामी एक प्रसिद्ध नगर था, जहा का राजा प्रियम था, प्रियम के पाच लडके थे, जिनके नाम ये है—हैक्टर, ट्रोइलस, पेरिस, डैलाफोबस और हैलीनस। पेरिस एक बार स्पार्टा में जाकर वहां के राजा मैनीलस की स्त्री हैलिन को जहाज़ मे बिठाकर हर लाया! इस पर यूनान की सब रियासतें बिगड गईं और बड़ी भारी तैयारी करके ट्रोय पर आक्रमण कर दिया। इस सेना मे अगामैम्नन, अजाक्ष, अकीलिस उलीसिस, नैस्टर, डायमोडीस, पैट्रोक्लस आदि बड़े-बड़े योद्धा थे। इन सब ने ट्रोय को चारो ओर से घेर लिया[1]।

ट्रोय के एक पुजारी काल्कस की पुत्री क्रैसीडा बडी रूपवती थी और राजकुमार ट्रोइलस उसके रूप पर मोहित था। क्रैसीडा यद्यपि ट्रोइलस से प्रसन्न थी परन्तु वह अपने मन के हाव-भाव को कभी किसी पर प्रकट नही करती थी, जैसा कि स्त्रियों का क़ायदा है। ट्रोइलस क्रैसीडा का चचा पण्डारस के द्वारा अपनी प्रेयसी की प्राप्ति का उपाय किया करता था। परन्तु जब पण्डारस क्रैसीडा के पास जाकर ट्रोइलस के गुणो तथा वीरता का वर्णन करता तो क्रैसीडा सुनी-अनसुनी करके उसका तिरस्कार किया करती थी।

एक दिन क्रैसीडा अपने नौकर के साथ नगर की एक गली मे तमाशा देखने के लिए खड़ी हुई थी; क्योंकि उसी ओर होकर लड़ाई से पलटे हुए

---

१. इस आक्रमण का पूर्ण वृतान्त यूनान के प्रसिद्ध महाकवि होमर ने अपने महाकाव्य इलियड (Illiad) में लिखा है।

योद्धा गुजरने वाले थे। इतने मे उसने दो स्त्रियां निकलती हुई देखीं। क्रैसीडा ने पूछा—"ये कौन है।"

नौकर—महारानी हक्यूबा[1] और हैलिन।

क्रैसीडा—ये कहां जा रही है ?

नौकर—पूर्वी महल को। वहां से ये लड़ाई की बहार देखेंगी। आज हैक्टर बड़े क्रोध में हैं।

क्रैसीडा—क्यों ?

नौकर—कहते हैं कि यूनानियो की सेना में हैक्टर का भानजा है, जिसका नाम अजाक्स है।

क्रैसीडा—तो क्या!

नौकर—वह एक वीर पुरुष है! वह अपनी ही टांगों खड़ा होता है!

क्रैसीडा—यह कौनसी वीरता है ? सब अपनी टांगों खड़े होते हैं, अगर वे नशे मे न हों, या रोगी न हों या लंगड़े न हों!

नौकर—देवि! इसने बहुत से पशुओं के गुण छीन लिये हैं। वह सिंह के समान वीर है और हाथी के समान मन्द!

क्रैसीडा—मुझे तो इन बातों से हंसी आती है। फिर हैक्टर क्यों नाराज हो गया ?

नौकर—कहा जाता है कि कल उसने रणक्षेत्र में हैक्टर को पछाड दिया, जिसकी लज्जा के कारण हैक्टर न तो सोया और न उसने भोजन किया।

क्रैसीडा—हैक्टर बड़ा वीर है ?

नौकर—हां!

इस समय पण्डारस भी उसी स्थान पर आ गया और कहने लगा—"क्रैसीडा! तुम क्या बातें कर रही हो ?"

क्रैसीडा—यही कि हैक्टर नाराज है।

पण्डारस—हां यह बात ठीक है। मुझे उसके नाराज होने का कारण भी मालूम है। आज वह उसे अवश्य पछाड़ेगा! आज ट्रोइलस भी गया

१. हक्यूबा प्रियम की स्त्री थी।

है। वह भी अपने बड़े भाई से पीछे नहीं रहेगा!

क्रैसीडा—क्या वह भी नाराज़ है?

पण्डारस—कौन? ट्रोइलस? ट्रोइलस इन दोनों में अधिक वीर है।

क्रैसीडा—मेरे भगवान्! यह तुलना नहीं हो सकती!

पण्डारस—क्या ट्रोइलस और हैक्टर में भी तुलना नहीं हो सकती? क्या तुम किसी आदमी को देखकर पहचान सकती हो?

क्रैसीडा—हां! अगर पहले देखा हो!

पण्डारस—हां तभी तो मैं कहता हूं कि ट्रोइलस ट्रोइलस ही है।

क्रैसीडा—यही तो मैं कहती हूं कि वह हैक्टर नहीं है।

पण्डारस—हां और हैक्टर ट्रोइलस नहीं है।

क्रैसीडा—यह सच है। एक दूसरा नहीं हो सकता।

पण्डारस—हैक्टर ट्रोइलस से अच्छा नहीं है।

क्रैसीडा—क्षमा करो।

पण्डारस—वह केवल बड़ा है।

क्रैसीडा—क्षमा करो! क्षमा करो!

पण्डारस—हैक्टर में उसके से गुण भी नहीं हैं।

क्रैसीडा—क्या हानि?

पण्डारस—और न रूप है।

क्रैसीडा—यह बात नहीं है।

जिस समय ये बातें हो ही रही थी हैक्टर, पेरिस, ट्रोइलस इत्यादि उसी गली के निकट होकर निकले। ये लोग रणभूमि से आ रहे थे और अस्त्र, शस्त्र तथा कवच धारण किये हुए थे। पण्डारस ने ट्रोइलस की ओर संकेत करके उसकी बड़ी प्रशंसा की और क्रैसीडा का चित्त उसकी ओर आकर्षित किया।

पण्डारस के द्वारा ट्रोइलस और क्रैसीडा का सम्बन्ध निश्चित हो गया। हम ऊपर बता चुके है कि क्रैसीडा वास्तव में ट्रोइलस से प्रेम करती थी, परन्तु मान के कारण इसे प्रकट नहीं करती थी। अपने चचा का संकेत पाकर उसने झट ट्रोइलस से विवाह करना स्वीकार कर लिया और जिस समय ये दोनों स्त्री पुरुष रंगरलियों में लगे हुए थे एक ऐसी दुर्घटना

हुई, जिसके कारण वडी कठिनाई से मिले हुए प्रेमियो का फिर वियोग हो गया। इसका हाल हम आगे लिखेंगे।

यूनानी सेना को ट्रॉय मे पड़े हुए बहुत दिन हो गये थे। उन्होने चारों ओर से इसे घेर लिया था और ट्रॉय-निवासियों का नाक मे दम था। एक दिन ट्रॉय-नरेश प्रियम ने अपने सब पुत्रो को बुलाकर युद्ध के विषय में उनकी सम्मति मागी। क्योकि यूनानी जनरल नैस्टर का सदेसा आया था कि या तो हैलिन को वापस दे दो और जो कुछ हमारा नुक़सान हुआ है उसका प्रतिकार कर दो; नही तो हम तुम्हारे नगर को जलाकर राख मे मिला देंगे। इसके अतिरिक्त प्रियम की एक लडकी कैसेण्डरा, जो फलित ज्योतिष की विदुषी थी, यही कह रही थी कि राजन् युद्ध में तुम्हारी पराजय होगी। इन सब कारणों से प्रेरित होकर राजा ने पहले हैक्टर से पूछा कि "तुम्हारी क्या राय है?"

हैक्टर—श्रीमन्! मुझे यूनानियो का कुछ भी भय नही है। परन्तु इसमे सन्देह नही कि युद्ध का भविष्यत् सदिग्ध है। कौन जानता है कि कल क्या हो। इसलिए हैलिन को जाने दो। वे सब आदमी जो हैलिन के लिए रण मे काम आये है, हैलिन से अधिक उपकारी थे। एक ऐसी चीज़ की रक्षा के लिए जो न तो हमारी है और न रखने योग्य है इतनी जानो का नाश कर देना उचित नही है। इसलिए मेरे विचार में तो यही आता है कि आप हैलिन को वापस भेज दें।

ट्रोइलस—धिक्कार है भाई। तुम ऐसे ऐश्वर्यवान् राजा के गौरव को ऐसा तुच्छ समझते हो। क्या महाराज के अनन्त यश को आप कौड़ियो मे नापते हैं। धिक्! धिक्!

हैक्टर—भाई! यह इस योग्य नही है कि इसके लिए इतनी हानि उठाई जाय।

ट्रोइलस—इससे क्या होता है? यदि आज मैं किसी स्त्री से विवाह करूं तो मैं उसे अपनी इच्छा के अनुसार पसन्द करूंगा। और यदि कल को मुझे वह अच्छी न लगे तो क्या लौटा दूंगा। हम लोग एक बार बजाज से रेशम लेकर फिर उसे लौटा नही देते। पहले यही उचित समझा गया था कि पेरिस यूनान मे जाकर यूनानियो से उनके इस

अपराध का बदला ले कि वे एक वृद्ध स्त्री को यहां से क्रैद कर ले गये थे। पेरिस आप सबकी सलाह से यूनान मे गया और एक ऐसी सुन्दर और रूपवती रानी को भगा लाया जिस पर देवता भी मोहित होते हैं। अब आप ही कहते है कि क्या यह रखने योग्य है? हा अवश्यमेव! वह एक ऐसा मोती है जिसका मूल्य हजारो जहाजों से भी बढ़कर है। यदि आप कहते है कि पेरिस ने यूनान जाने मे बड़ी बुद्धिमत्ता की (आपको यह कहना पड़ेगा क्योंकि आप सब कहते थे कि पेरिस जाओ!) पेरिस जाओ! और यदि आप कहते है कि पेरिस एक बहुमूल्य रत्न ले आया (यह भी आपको स्वीकार करना पड़ेगा क्योंकि हैलिन के आते समय आप सबने हर्ष प्रकाशित किया था) तो फिर आप किस मुंह से उसे लौटाना चाहते है।

जब ट्रोइलस यह कह रहा था कैसेण्डरा वहां पर आ गई और अपनी भविष्यद्वाणी कहने लगी—

"अब ट्रोय और ट्रोयवासी कोई न बचेंगे क्योंकि हमारा भाई पेरिस सबका दाह किये देता है। अरे हैलिन को जाने दो नही तो ट्रोय की खैर नही है!"

हैक्टर—वीर ट्रोइलस! क्या हमारी बहन की भविष्यद्वाणी यह नही कह रही कि हम देश की रक्षा करने मे सफल न होगे!

ट्रोइलस—भाई! बहन के उन्मत्त प्रलाप का विश्वास नहीं करना चाहिए। वह तो यों ही कहा करती है। ऐसा करने से हमारी मानहानि होती है।

पेरिस—आप विचारिए तो ऐसा करने मे मेरी भी मानहानि होगी। ईश्वर जानता है कि आप सबकी सलाह से मैंने यह काम किया था। आप जानते हैं कि मेरी अकेली भुजायें क्या कर सकती हैं? परन्तु यदि मुझ मे इच्छा के समान शक्ति भी होती तो मैं अपने किये को अन-किया करने को तैयार नही हूं।

प्रियम—पेरिस! तुम तो अपने आनन्द के मारे कहते हो। तुम्हारी वीरता ऐसी प्रशसनीय नही है; क्योंकि तुम्हारा तो इसमें हित है।

पेरिस—श्रीमन्, मैं अपने स्वार्थ से नही कहता। हममें कौन ऐसा कायर है जो हैलिन की रक्षा के लिए रक्त बहाने को उद्यत न हो? अब

यहां यश और अपयश का प्रश्न है।

उपर्युक्त वाद-विवाद के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि लड़ाई जारी रखनी चाहिए। और हैक्टर ने ईनियस नामी सेनापति को दूत करके यूनानियों के समीप भेजा कि तुम जाकर उनसे कह दो कि यदि कोई योद्धा यूनान मे ऐसा हो जो अपने प्राणो को अपने यश से तुच्छ समझता हो तो मैं उससे धर्मयुद्ध करना चाहता हूं।

हैक्टर के इस आवाहन को अजाक्ष ने स्वीकार कर लिया, जिनके विषय में हम ऊपर कह चुके हैं कि वह प्रियम की बहन का लड़का था और यूनानियों से जा मिला था।

क्रैसीडा का पिता काल्कस कैसेण्ड्रा की भांति एक ज्योतिषी था। उसने भी जान लिया था कि ट्रॉय का सर्वनाश होने वाला है। इसलिए वह आरम्भ से ही ट्रॉय से भाग कर यूनानियों से जा मिला था और उनकी बहुत कुछ सेवा की थी, जिसके बदले में अगामैम्नन ने, जो यूनानी सेना का अध्यक्ष था, उसे मुंहमांगा इनाम देने के लिए कहा था। अब काल्कस की यह इच्छा हुई कि किसी प्रकार अपनी पुत्री क्रैसीडा को भी बुला लेना चाहिए। उस समय भाग्यवश यूनानियो ने ट्रॉय के एक वीर सेनापति एण्टीनर को क़ैद कर लिया। ट्रॉय वाले सर्वस्व देने के लिए तैयार थे यदि उनको एण्टीनर वापस मिल जाय। क्योंकि वह बड़ा भारी योद्धा था। इसके अतिरिक्त यूनानियों ने ट्रॉय वालों से कई बार क्रैसीडा को मांगा था, परन्तु वह उसे देना स्वीकृत नही करते थे। अब काल्कस ने अगामैम्नन से प्रार्थना की कि आप कृपा करके मेरी सेवा के बदले मुझे एक वर दीजिए, अर्थात् एण्टीनर के बदले क्रैसीडा को मांग लीजिए। मुझे विश्वास है कि वे अवश्य क्रैसीडा को देकर एण्टीनर को लेना पसन्द करेंगे।

अगामैम्नन ने काल्कस की प्रार्थना स्वीकार कर ली और एक यूनानी जनरल डाइमीडीस से कहा कि तुम क्रैसीडा को ले आओ।

ट्रॉय वाले इस बात पर राज़ी हो गये और क्रैसीडा को देने की तैयारियां होने लगी।

क्रैसीडा इस समय अपने प्यारे के साथ बैठी बातचीत का सुख प्राप्त कर रही थी कि उसका चचा पण्डारस हाय-हाय करता हुआ वहां पहुंचा।

क्रैसीडा घबरा कर कहने लगी—

"प्यारे चचा ! क्या बात है ? आप क्यों इस प्रकार दुःखी है ?"

पण्डारस—आज यदि मैं मर जाता तो अच्छा होता।

क्रैसीडा—क्यों ! क्यों !

पण्डारस—अच्छा होता अगर तू जन्मते ही मर जाती। हाय हाय ! अब ट्रोइलस पर कैसी बीतेगी ! दुष्ट एण्टीनर का सत्यनाश हो।

क्रैसीडा—क्यों ! क्यो ?

पण्डारस—अब तुझे जाना होगा ! अब तुझे जाना होगा ! एण्टीनर के बदले तुझे दे दिया है। अब तू अपने बाप के पास जाती है। ट्रोइलस से अब तेरा मिलना न होगा।

क्रैसीडा—हे भगवन् ! मैं नही जाने की।

पण्डारस—तुझे जाना पड़ेगा।

क्रैसीडा—मैं नही जाऊंगी। मैं तो अपने पिता को भूल गई। अब ट्रोइलस के समान मेरा कोई हितू नही है। चाहे मेरे प्राण ही क्यों न जायं मैं ट्रोय से नहीं जाऊंगी !

अब वह ट्रोइलस से कहने लगी—"क्या यह सच है कि मुझे ट्रोय से जाना होगा !"

ट्रोइलस—(उदास होकर) हां सच है।

क्रैसीडा—क्या ट्रोइलस से भी ?

ट्रोइलस—ट्रोय और ट्रोइलस दोनो से !

अभी ये बातें हो ही रही थी कि ईनियस और डाइमेडीस क्रैसीडा लेने के लिए वहां पर आ गये। क्रैसीडा कहने लगी—

"क्या अब मैं यूनान जाऊंगी ?"

ट्रोइलस—कुछ उपाय नही है।

क्रैसीडा—क्या अभागी क्रैसीडा प्रसन्नचित्त यूनानियों के घर जायगी ! हाय ! अब तुमसे कब भेंट होगी ?

ट्रोइलस—प्यारी सच्ची रहना !

क्रैसीडा—मैं सच्ची ! यह क्या ?

ट्रोइलस—क्षमा करो ! मैं जानता हूं कि तुम्हारे हृदय में कोई कपट नही

है। परन्तु चलते समय मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हू कि यदि तू सच्ची रहेगी तो मैं तुमसे अवश्य भेंट करूंगा।

क्रैसीडा—मैं तो सच्ची रहूंगी। परन्तु आपको आने मे बडी आपत्ति का सामना करना होगा।

ट्रोइलस—मैं इस दस्ताने को देता हू। इसे अपने पास रक्खो। तुम्हारे मिलने के लिए मैं हर एक आपत्ति को तुच्छ समझता हूं।

क्रैसीडा—आप भी इस दस्ताने को रखिए। अब तुम कब मिलोगे?

ट्रोइलस—मैं यूनानी द्वारपालो को फुसलाकर रात के समय तुम्हारे पास आया करूंगा! परन्तु सच्ची रहना।

क्रैसीडा—हाय हाय! फिर वही बात!

ट्रोइलस—मैं ये सब बातें इसलिए कहता हू कि यूनान के लोग बड़े योग्य, सुन्दर, शान्त-चित्त, नीरोग तथा प्रेमशील हैं। इसलिए मुझे डर लगता है कि कहीं तुम्हारा मन विचलित न हो जाय।

क्रैसीडा—शिव! शिव! तुम मुझसे प्रेम नही करते!

ट्रोइलस—यदि ऐसा हो तो ईश्वर मेरा बुरा करे। ऐसा कहने से यह तात्पर्य नही है कि मुझे तुम्हारे सतीत्व पर सन्देह है, किन्तु अपनी योग्यता पर। मुझे ऐसी बातें बनाना नही आती जैसी यूनानियों को। इसलिए उनके छल में न फंस जाना।

क्रैसीडा—क्या तुम समझते हो कि मैं फस जाऊंगी?

ट्रोइलस—नहीं-नहीं! परन्तु मनुष्य कभी-कभी धोखा खा जाता है।

अब इन दोनों के बिछुड़ने का समय आया और क्रैसीडा डाइमोडीस के हवाले कर दी गई।

जिस समय क्रैसीडा यूनानी कैम्प में पहुंची, वे लोग बहुत खुश हुए और उसका बड़ा आदर किया गया। काल्कस अपनी पुत्री को देखकर बड़ा आनन्दित हुआ और क्रैसीडा डाइमोडीस के संरक्षण में रहने लगी।

हम ऊपर कह चुके हैं कि अजाक्स और हैक्टरका मल्ल युद्ध होनेवाला था। अब उसका समय निकट आ गया और नियत स्थान पर अखाड़े में वे दोनों योद्धा कवच धारण किये हुए आ गये। इनके अतिरिक्त दोनों दलों के प्रसिद्ध वीर पुरुष तमाशा देखने के लिए वहां उपस्थित हुए। अखाड़े में

आते ही दोनों की मुठभेड़ हुई और दोनों एक दूसरे पर झपट करने लगे। परन्तु युद्ध समान रहा और अन्त में दोनों एक दूसरे का आलिंगन करके अलग हुए।

इसके पश्चात् हैक्टर ने यूनानी कैम्प में भोजन किया और सब लोगों से भेंट की। हैक्टर के साथ उसका छोटा भाई ट्रोइलस भी था, जिसने अपनी प्रियतमा क्रैसीडा से भेंट करने का प्रण कर रक्खा था। जब अन्य ट्रोय-निवासी वहां से चले आये तो ट्रोइलस रह गया और उलीसिस से कहने लगा—"श्रीमन् उलीसिस ! कृपा करके मुझे बतलाइए कि काल्कस कहां रहता है।"

उलीसिस—राजकुमार ट्रोइलस ! काल्कस इस समय मैनीलस के डेरे में रहता है। डाइमोडिस भी आजकल वहीं है जिसकी दृष्टि न आकाश की ओर उठती है और न भूमि पर पड़ती है, किन्तु निरन्तर रूपवती क्रैसीडा के ही मुख पर लगी रहती है।

ट्रोइलस—क्या श्रीमान् मेरे ऊपर इतनी दया करेंगे कि मुझे काल्कस के स्थान तक पहुंचा दें।

उलीसिस—मैं सब तरह आपका सेवक हूं। परन्तु यह तो बताइए कि आपके ट्रोय में क्रैसीडा का कैसा सम्मान होता था? क्या वहां उसका कोई ऐसा प्यारा नहीं है जो उसकी अनुपस्थिति पर आज शोक कर रहा हो?

ट्रोइलस—कृपा करके मुझे ले चलिए। उसके प्यारे थे जिनसे वह भी प्यार करती थी और वे अब भी हैं, वह अब भी उनको प्यार करती है। परन्तु बात यह है कि सुख वही भोगता है जिसका भाग्य हो !

अब वे दोनों काल्कस के स्थान को चल दिये। ट्रोइलस का हृदय धीरे-धीरे धड़क रहा था, जिस प्रकार किसी बड़े उत्सुक पुरुष की दशा होती है जबकि उसकी अभीष्ट वस्तु प्राप्त होने वाली हो ! ट्रोइलस को आशा थी कि जिस प्रियतमा का वह बहुत दिनों से चिन्तन कर रहा था उससे अब भेंट होगी। परन्तु मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ और है। दैवगति विचित्र है। भावी को किसी ने नहीं देखा।

जिस समय ट्रोइलस काल्कस के डेरे से थोड़ी दूर पर पहुंचा, उसने

देखा कि क्रेसीडा और डाइमोडीज़ अगाध प्रेम के साथ मुंह पर मुंह रखे हुए बातें कर रहे हैं। ट्रोइलस ने दूर से इतनी बात सुनी—
डाइमोडिस—अहो प्यारी क्रेसीडा !
क्रेसीडा—प्यारे संरक्षक ! एकान्त में एक बात सुनिए।
यह गुप्त वार्तालाप ट्रोइलस के कानों तक न पहुंच सका, परन्तु उसे मालूम हो गया कि जिस क्रेसीडा पर पहले उसे शंका होती थी और जिससे वियोग के समय उसने न भूलने और सच्ची रहने के लिए प्रतिज्ञा कराई थी वही क्रेसीडा उसके शत्रु से ऐसा व्यवहार करने लगी मानो ट्रोइलस उसके सामने कुछ भी न था अथवा ट्रोइलस को उसने कभी नहीं देखा था। उसके मन को बड़ी चोट लगी। फिर उसने सुना—
डाइमोडीस—याद रखना।
क्रेसीडा—याद ? अवश्य ! अवश्य !
डाइमोडीस—याद रखना और अब भी बात का पालन करना।
क्रेसीडा—प्यारे यूनानी ! इससे अधिक मुझे न फुसला।
डाइमोडीस—तो नहीं—
क्रेसीडा—मेरी बात तो सुनो।
डाइमोडीस—तुम झूठी हुई जाती हो !
क्रेसीडा—कदापि नहीं ! तुम मुझसे क्या चाहते हो ?
डाइमोडीस—तुमने मुझे क्या देने के लिए कहा था ?
क्रेसीडा—उस बात को जाने दो, और जो चाहो सो करूं।
डाइमोडीस—अच्छा ! प्रणाम !
क्रेसीडा—डाइमोडीस !
डाइमोडीस—नहीं ! नहीं ! मैं जाता हूं। मैं तुम्हारी घातों में न आऊंगा !
क्रेसीडा—कान में एक बात सुन लो !
अब उसने कुछ कान में कहा। इस पर डाइमोडीस क्रुद्ध होकर चलने लगा। तब क्रेसीडा बोली—"तुम गुस्से से जाते हो। एक बात और सुनते जाओ।"
डाइमोडीस—तो क्या तुम अपने वचन को पालोगी ?
क्रेसीडा—न पालूं तो कभी विश्वास न करना।

डाइमोडीस—अच्छा कुछ चिह्न दो।

क्रैसीडा—(ट्रोइलस का दिया दस्ताना देकर) लो इस दस्ताने को रक्खो!

अब क्रैसीडा को ट्रोइलस का खयाल आ गया और दस्ताने को पीछे हटा कर कहने लगी, "वह मुझे प्यार करता था। मैं अब इसको न दूंगी।"

डाइमोडीस—यह किसका है?

क्रैसीडा—इससे क्या प्रयोजन! अब मेरे पास न आना! चले जाओ!

डाइमोडीस—मैं इसे लेकर जाऊंगा।

क्रैसीडा—क्या इसे?

डाइमोडीस—हां इसे!

क्रैसीडा०—(दस्ताने को चूमकर) तेरा स्वामी आज अकेला पलंग पर पड़ा हुआ मेरी और तेरी याद कर रहा होगा! और मेरे दस्ताने को इसी प्रकार चूम रहा होगा जैसे मैं तुझे! (डाइमोडीस से) इसे मत लो! मैं तुमको और चीज दूंगी।

डाइमोडीस—मन तो दे चुकीं अब इसको भी दे दो।

क्रैसीडा—नहीं दूंगी।

डाइमो—मैं तो लूंगा। यह किसका है?

क्रैसीडा—मैं नहीं कहूंगी।

इस झंझट के बाद क्रैसीडा ने दस्ताना दे दिया और ट्रोइलस का हृदय जो इस दुःखदायी दृश्य को दूर से देख रहा था टूक-टूक हो गया और बिना प्रिया से भेंट किये ही वह वहां से चल दिया। सच बात तो यह थी कि क्रैसीडा अब ट्रोइलस की प्रिया ही नहीं थी; किन्तु उसका चित्त डाइमोडीस की ओर लग गया था।

ट्रोइलस के वहां से चले आने पर कुछ दिनों पीछे यूनान और ट्रोय के दलों में बड़ा भारी युद्ध हुआ। हैक्टर मारा गया। ट्रोय वालों के बहुत से आदमी काम आये और यूनानियों की विजय हुई! ट्रोय का नाश हो गया!

□□□